UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182913

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 80.5 B57R Accession No. P.GH 3489

Author भाटी नारायणसिंह

Title राजवंशनी वात-संग्रह

This book should be returned on or before the date last marked below.

राजस्थांनी जात - संग्रह

संपादक

नारायणसिंह भाटी

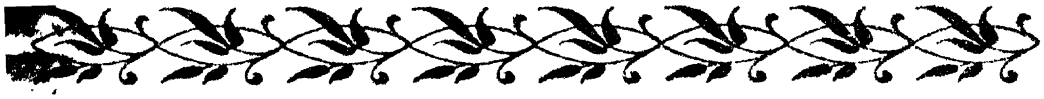

प्रकाशक
राजस्थानी शोध-संस्थान
जोधपुर

परम्परा—भाग ६-७

मूल्य : ६ रुपये

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस, जोधपुर

विषय - सूची

भूमिका	.	६
ढोला - मारू	.	२५
जलाल - बूबना	.	६३
डाढ़ाळौ सूर	.	१२७
राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात	.	१५१
सांई री पलक में खलक	.	१६५
पलक दरियाव री बात	.	२०३
सूरे खींवे कांधळोत री बात	.	२३५

परिशिष्ट

विवरण संकेत सूची	.	२५३
टिप्पणियाँ	.	२५६
बात सूची	.	२६३

विवेचन

अगरचन्द नाहटा

राजस्थानी लोक-कथाओं सम्बन्धी साहित्य के निर्माण और संरक्षण में जैनों का योग . २७१

डा० कन्हैयालाल सहल

लोक-कथाओं की एक प्ररूढ़ि—जादू की डोरी . २७५

कोमल कोठारी

कथा की बात . २८३

हमारे देश में ऐसे विचारवान् लोग हैं, जो सलाह देते हैं कि पहले सारा-का-सारा आवश्यक साहित्य तैयार हो जाय और तब हम अपनी देशी भाषाओं को अधिकार देने की बात सोचें। मैं अपनी सारी शक्ति से इस बात का प्रतिवाद करता हूँ। यह सोचने का गलत ढंग है और अपने प्रति विश्वास के अभाव का द्योतक है। कविगुरु रविन्द्रनाथ ने कहा है कि रास्ते पर निकल पड़ो। रास्ता ही तुम्हें रास्ता बतायेगा। हमें देशी भाषाओं का प्राप्य अधिकार उन्हें तुरन्त दे देना चाहिए। काम करते-करते जो साहित्य-निर्माण होगा, वही सही और प्रामाणिक होगा।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

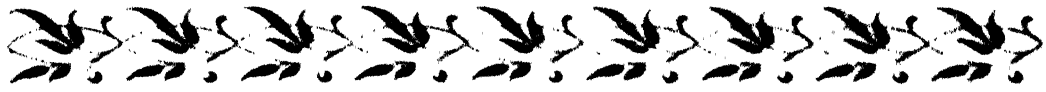

राजस्थानी साहित्य के उद्भव तथा विकास पर विचार करते समय विद्वानों ने आधुनिक भारतीय भाषाओं की परम्परा में उसे यथोचित महत्व दिया है। पर यह विचार प्रायः प्राचीन राजस्थानी काव्य की विशेषताओं के आधार पर ही होता रहा है। क्योंकि वीर, शृंगार एवम् भक्ति-रस की सृष्टि करने वाले कुछ प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थों का जो सम्पादन एवम् साहित्यिक तथा ऐतिहासिक मूल्यांकन यथेष्ट श्रम और सूझ-बूझ के साथ किया गया, उसमें राजस्थानी काव्य-सौष्ठव में निहित रूप तथा तत्वगत विशेषताओं को ही बारीकी से हृदय-गम करने का अवसर मिला।

पर इस विपुल काव्य-निधि के अतिरिक्त राजस्थानी गद्य साहित्य की भी बहुत प्राचीन और समृद्ध परम्परा रही है। उसका प्रकाशन तथा समुचित अध्ययन अभी नहीं हो सका, जिसके फलस्वरूप यह गलत धारणा बन गई कि इस भाषा का गद्य-साहित्य नगण्य अथवा गौण है।

प्राचीन राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज और उसके विस्तृत अध्ययन से पता लगता है कि इस भाषा का गद्य साहित्य भी उतना ही प्राचीन और विविधतापूर्ण है जैसा कि अन्य कई आधुनिक भारतीय भाषाओं में उप-लब्ध होता है।

राजस्थानी गद्य में यहाँ के समाज की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवम् नैतिक मान्यताओं को युगों-युगों से कलात्मक अभिव्यक्ति मिलती रही है। बात, ख्यात, पीढ़ी, वंशावली, टीका, वचनिका, हाल, पट्टा, बही, शिलालेख, खत आदि के माध्यम से समाज के संघर्षपूर्ण तत्वों, सौन्दर्य-भावनाओं, सृजनात्मक प्रवृत्तियों तथा अन्य कितने ही कार्य-व्यापारों का सुन्दर चित्रण हुआ है।

इसके अतिरिक्त स्थानीय राज्यों में राजकीय कार्यों के लिए भी बहुत समय तक इसी भाषा का प्रयोग होता रहा है जिससे हमें भाषा की जीवन्त शक्ति और समाजसापेक्ष अभिव्यक्ति-क्षमता का सहज ही अनुमान हो सकता है।

इस विविधतापूर्ण गद्य साहित्य में बातों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। कीट-पतंग और पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों से लेकर महान् ऐतिहासिक घटनाओं, इतिहास प्रसिद्ध पात्रों, प्रेम-गाथाओं तथा पौराणिक आख्यानों तक को इन बातों में स्थान मिला है।

ऐसी हजारों छोटी-बड़ी बातें उपलब्ध हो सकती है, जिनमें कई बहुत छोटी और कई इतनी बड़ी कि उनका लिपिबद्ध रूप सैकड़ों पृष्ठों में जाकर समाप्त हो। बातों के इस विशाल साहित्य को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वे बातें जिनका लिपिबद्ध स्वरूप बन गया है और जिनकी भाषा-शैली में स्थायी रूपगत विशिष्टता प्रकट होती है। दूसरी बहुत बड़ी संख्या उन बातों अथवा लोक-कथाओं की है जिनका कोई एक शैलीगत रूप लिपिबद्ध नहीं हो सका, पर वे अभी तक लोगों की जबान पर ही हैं।

स्थानीय प्रभावों के कारण उनमें अधिक विभेद पाया जाता है और लिपिबद्ध बातों में जहाँ घटनाओं का एक रूढ़ रूप परिपाटी से चला आया है वहाँ इन बातों में परिवर्तन के लिए सदैव गुंजाइश रहती है। बातों की रचना-प्रणाली पर विचार करने से यह बात और भी स्पष्ट हो जायगी।

लिपिबद्ध बातों का यही स्वरूप प्रारंभिक स्वरूप नहीं था। प्रारम्भ में इनका स्वरूप भी मौखिक ही रहा होगा, जैसा कि अन्य कितनी ही बातों का मिलता है। पर कालांतर में याद करने की सुविधा तथा संरक्षण के लिए प्रसिद्ध बातों को लिपिबद्ध रूप मिलता चला गया। लिपिबद्ध होने के पहले तो उनमें कई परिवर्तन हुए ही, पर लिपिबद्ध होने के पश्चात् भी समय-समय पर उनमें परिवर्तन होते रहे हैं। इन बातों के इस रूप तक पहुँचने में कई कथा कहने वालों की सूझ-बूझ तथा वर्णन-रुचि का सम्मिश्रण है। कभी-कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि किसी एक बात की घटनाओं का किसी अन्य बात के साथ सम्बंध जोड़ दिया गया है। यहाँ तक कि ढोला-मारू की कथा के साथ नल-दमयंती का कथा तत्व भी कई प्रतियों में मिलता है। कथाओं के मूल रूप में इसी प्रकार की कई घटनाओं और पात्रों का संयोग असंभव नहीं जिनके सम्मिश्रण से अंततः बातों का उपलब्ध रूप बन सका और यही रूप अब समाज में

मान्य हो गया है। ये बातें समाज की छोटी-बड़ी घटनाओं पर भी आधारित हैं, कपोल-कल्पित भी हैं और कई पौराणिक कथाओं के सहारे भी चली हैं। इन बातों की प्राचीनता के कारण अब यह कहना बहुत कठिन है कि किस बात में कितना मिश्रण हो जाने से उसका यह रूप बना। प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्रों से सम्बन्ध रखने वाली बातों का गम्भीर अध्ययन करने पर इस रचना-प्रणाली का आभास अवश्य मिल सकता है क्योंकि इतिहास की कसौटी पर आने से इनमें निहित सत्य और कल्पना के अंश को परखा जा सकता है।

यहाँ हम लिपिबद्ध बातों को ही ध्यान में रख कर उनकी विशेषताओं पर विचार करेंगे। इन बातों का विषयगत वर्गीकरण मोटे तौर पर निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है—

१—पौराणिक
२—ऐतिहासिक
३—वर्णनात्मक
४—सामाजिक
५—वीर भावात्मक
६—शृंगारिक और प्रेम सम्बन्धी
७—नीति सम्बन्धी
८—धर्म व्रत तथा देवी-देवताओं सम्बन्धी

बात साहित्य इतना विस्तृत तथा विविधतापूर्ण है कि उसका पूर्ण वैज्ञानिक वर्गीकरण करना संभव नहीं। फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए किसी एक बात की प्रमुख विशेषता को ध्यान में रख कर ही उसे वर्ग-विशेष के अंतर्गत लिया जा सकता है। वैसे शृंगारिक बातों में भी प्रायः वीरता का पुट, वर्णन की खूबी तथा अन्य कई नीतिपरक विवेचन मिल सकते हैं। प्रस्तुत संग्रह की 'ढोला-मारू' बात को पढ़ने से यह तथ्य स्पष्ट हो सकता है।

इन बातों की कुछ सामान्य विशेषताओं पर विचार करते समय सबसे पहली बात ध्यान देने की यह है कि मूल रूप से इन बातों का निर्माण कहे जाने के लिए हुआ है। इसलिए लिपिबद्ध होने के बावजूद भी उनकी वह शैलीगत विशेषता आदि से अंत तक देखने को मिलेगी। वर्णनों की अधिकता, भाषागत प्रवाह, वार्तालापों में निहित नाटकीयता और पद्यबद्धता आदि तत्वों का निर्वाह इस दृष्टि से ध्यान देने योग्य है।

बात का प्रारम्भ भी विशेष ढंग से किया जाता है। कथा कहने वाला एका-एक कथा प्रारम्भ न करके पहले-पहल उसकी भूमिका कुछ पद्यों के माध्यम से बाँधता है। ये पद्य प्रायः उस देश की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं के बारे में होते हैं जिसके साथ नायक-नायिका का सम्बन्ध होता है, या फिर बात की प्रशंसा में ही कुछ पद्य कहे जाते हैं—

बात भली दिन पाधरा, पैंडे पाकी बोर।
घर भीतळ घोड़ा जणै, सार मारै चोर॥

•

कोई नर सूता, कोई नर जागै।
सूतोंनां री पागडिया, जागता ले भागै॥

•

सार बाबा सार, मतांना भोळा।
दुखड़ा गा टार।

•

बाता हन्दा मामला, दरिया हन्दा फेर।
नदिया बहे अलावळी, फिर फिर पाणै घर॥

•

बात में हुंकारो, फौज में नगारो।
जीवै बात रो कहणवाळ, जीवै हुंकारा रो देणवाळ॥

फिर कहेंगे—रामजी घणा दिन दे, उज्जोण नगरी में देवसरमा नामै ब्राह्मण रहै आदि-आदि।

हस्तलिखित बातों की प्रतियों में ये प्रारम्भिक अंश लिखे हुए नहीं मिलते क्योंकि इनका प्रयोग प्रायः बात कहने वाले की अपनी रुचि पर निर्भर करता था। पर बातों के शिल्प को पूरी तरह समझने के लिए इन अंशों को जानना आवश्यक है।

इन बातों में वर्णनों की सूची बहुधा पाई जाती है। अधिकांश बातों का प्रारम्भ भी वर्णन से ही होता है चाहे वह पद्य में हो या गद्य में। बातों के बीच में तो जहाँ भी अवसर मिला है वहीं प्रकृति की अनुपम छटा, नगर की विशालता एवं सम्पन्नता, दुर्ग की अभेद्यता, युद्ध की भयंकरता, वीरों का रण-कौशल, हाथी-घोड़ों के लक्षण, नायिका का राशि राशि सौन्दर्य, उसके शृंगारिक उपकरण, विरह की सुकोमल भावनाओं का उद्वेलन और मिलन की सुखद घड़ियों का वर्णन अलंकृत शैली में जम कर किया गया है। ये वर्णन इतने सजीव

और मार्मिक हैं कि पाठक के कल्पना-पटल पर सजीव चित्र उपस्थित कर देते हैं। इसीसे अपेक्षित वातावरण की सृष्टि होती है जिसमें हमारी भावनाओं का तादात्म्य सहज ही उस काल के साथ हो जाता है। यहाँ संकलित बातों में इस प्रकार के वर्णनों को पढ़ने से इस तथ्य का प्रभाव सहज ही अनुभव किया जा सकता है। वर्णनों का आधिक्य कथा की प्रगति में अवश्य शिथिलता ला देता है पर उनकी सजीवता ही पाठक अथवा श्रोता को ऊबने नहीं देती।

इन वर्णनों में उपमाओं, दृष्टांतों और उत्प्रेक्षाओं एवं अतिशयोक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। उपमाओं में रूढ़ उपमानों के अलावा कितने ही मौलिक उपमान भी प्रयुक्त हुए हैं जिनमें स्थानीय विशिष्टताओं की खूबी (Local Colour) अद्भुत नवीनता और ताजगी के साथ प्रकट हुई है।

वार्तालापों में भी गद्य के साथ पद्य का प्रयोग मिलता है। कई कल्पित कथाएँ तो पूरी की पूरी पद्य में ही मिलती हैं। ये पद्यांश वर्णनात्मक भी हैं और भावनात्मक भी जिसमें दूहा, सोरठा, गाथा, सवैया, चद्दायण, गीत आदि छंदों का प्रयोग अधिक हुआ है। इनका काव्य-सौष्ठव, वयणसगाई के निर्वाह, अलंकारों की खूबी और भाषा की प्रौढ़ता के साथ-साथ मौलिक सूक्तियों से निखर उठा है। किसी एक बात के कुछ पद्यांश थोड़े बहुत हेर-फेर के साथ किसी अन्य बात में भी दिखाई दे जाते हैं, यह इनकी परिवर्तनशील रचना-प्रणाली के ही कारण है। गद्य और पद्य का यह मिश्रण एक दूसरे के पूरक के रूप में दिखाई पड़ता है। कई बातों में तो यह पद्य वाला भाग भी इतना पूर्ण और प्रभावोत्पादक है कि यदि इनके सूत्र को हटा लिया जाय तो पूरी बात विच्छिन्न गद्य खंडों के रूप में रह जाएगी।

सभी बातों के कथानक तत्कालीन समाज की भित्ति पर चित्रित हुए हैं इसलिए इनमें देशकाल का सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है। विभिन्न प्रकार और समय की बातों के अध्ययन से तत्कालीन समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों की जो महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है वह तथाकथित लिखित इतिहासों में उपलब्ध नहीं होती। प्रदेश का सामाजिक इतिहास लिखने में इस सामग्री मिलने वाली सहायता का महत्व असंदिग्ध है। मध्यकालीन राजस्थान के बहुत बड़े समाज का चित्रण इन बातों में हुआ है। यहाँ की शासन-प्रणाली, जागीर-प्रथा, जातीय-व्यवस्था, कलात्मक सृजन, साहित्यिक वातावरण, आमोद-प्रमोद, नैतिक मूल्य, भाग्यवादिता, रूढ़िनिर्वाह और जीवन-सिद्धांतों का बड़ा वैविध्यपूर्ण और

सर्वांगीण चित्र इन बातों के माध्यम से अंकित हुआ है।

सामाजिक परिस्थितियों की भूमिका में ही अपेक्षित सत्य की सांकेतिकता अपने जीवन्त और पूर्ण रूप में प्रकट हो सकी है जिससे कथानक के शिल्प में देशकाल की विशेषताएँ अपने पूर्ण औचित्य के साथ प्रकट होती हुई प्रतीत होती हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इन बातों की शैली में लम्बे समय से परिवर्तन और परिवर्द्धन होते आए हैं, फिर भी उनकी अपनी निश्चित शैलीगत विशेषताएँ अवश्य हैं।

आधुनिक कथा-साहित्य की शैली से इनकी शैली में बहुत भिन्नता है। आधुनिक कहानी के विकसित रूप में जो लेखक के व्यक्तित्व की निहति, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, जीवन-यथार्थ का उद्घाटन करने वाला शिल्प-नैपुण्य और कथा तत्व की गतिशीलता आदि गुण दिखाई देते हैं—वे चाहे इन बातों में न हों पर वर्णनों की सजीवता, औत्सुक्य का निर्वाह, लयात्मक भाषा में काव्य का-सा आनन्द और सामाजिक सत्य की सहज अभिव्यक्ति आदि कुछ ऐसे गुण हैं जिनके कारण सैकड़ों वर्षों से इन कथाओं का समाज में महत्व रहा है।

इन बातों की कथा के विकास में स्थान-स्थान पर ऐसी घटनाओं का आगमन हुआ है जिससे नायक अथवा नायिका की उद्देश्य-प्राप्ति में निरन्तर विघ्न उपस्थित होते रहते हैं। एक विघ्न के हटने पर जब कुछ आशा बंधती है तो दूसरा विघ्न उपस्थित हो जाता है। विघ्न उपस्थित करने वाली इन घटनाओं का आगमन इस तरह करवाया जाता है कि औत्सुक्य का निर्वाह बराबर होता रहता है।

इन घटनाओं व पात्रों की अवतारणा में भूत-प्रेत, शकुन, स्वप्न, देवी-देवता, आकाशवाणी, जादू-टोना आदि कितनी ही अलौकिक बातों का समावेश मिलता है। स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधे भी पात्रों के रूप में उपस्थित हुए हैं जिनके साथ वार्तालाप हुए हैं। पक्षियों के साथ तो पूर्ण विश्वास करके नायिकाओं ने अपनी प्रेम-विह्वल वाणी में प्रिय को संदेश भेजे हैं। कोकिल, कीर, भ्रमर और बादल के अतिरिक्त कुरजां ने भी विरहणी की पीड़ा को पहचान कर उसका कार्य किया है। अपने पंखों पर पानी तक लिख डालने की स्वीकृति दी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन बातों में मानव-हृदय का शेष सृष्टि के साथ बहुत सहज रूप में तादात्म्य स्थापित हुआ है। प्रकृति के साथ

मानव-भावनाओं का सीधा आदान-प्रदान एक बहुत बड़ी विशेषता है जिससे भावानुभूतियों को अधिक विस्तार मिल सकता है।

बातों में नाटकीयता लाने के लिए कथोपकथनों का प्रयोग हुआ है। कई कथोपकथन बहुत छोटे हैं तो कई बहुत बड़े। गद्य और पद्य दोनों के माध्यम से इनका प्रयोग हुआ है। पद्य में प्रायः वे कथोपकथन मिलेंगे जिनमें भाव-पूर्ण निवेदन अथवा व्यंग होगा। इनसे पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं के उद्घाटन में तथा कथा-सूत्र की प्रगति में सहयोग मिलता रहा है तथा कथा में रोचकता, सजीवता और भाव-प्रकाशन की अद्भुत क्षमता आ गई है।

जहाँ तक कथा-तत्व का सम्बन्ध है, इनमें मुख्य कथा के अतिरिक्त छोटी-बड़ी अन्य सहायक कथाओं का भी प्रयोग मिलता है। प्रासंगिक कथा में भी कई बार दूसरी कथा आ जाती है और कई कथाओं का क्रम तो एक दूसरी कथा में से निकलता हो चला जाता है। राजाभोज से सम्बन्ध रखने वाली कई कथाओं में इस तरह का तारतम्य मिलेगा। ऐतिहासिक पुरुषों से सम्बंध रखने वाली कई कथाओं में छोटी बड़ी कथाएँ जिनका एक दूसरी से विशेष सम्बंध नहीं है, मिल कर नायक की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालती हैं। संकलित बातों में महाराजा पदमसिंह की बात इसी तरह की है।

उपरोक्त शैलीगत विवेचन में यह बात भी ध्यान देने की है कि कथानक के कई स्थलों पर पद्य में कही हुई बात श्रोताओं अथवा पाठकों की सुविधा के लिए फिर से गद्य में दोहराई जाती है पर वर्णन-शैली की रोचकता के कारण पुनरावृत्ति दोष दिखाई नहीं पड़ता।

इन बातों की भाषा पुरानी राजस्थानी है पर समय के दौरान में भाषा का रूप निरंतर बदलता गया है, इसलिए सम्पादित बातों की भाषा का रूप अधिक प्राचीन नहीं है। यहाँ प्रयुक्त भाषा का सबसे बड़ा गुण उसकी सहजता और सजीवता है। वर्णनात्मक स्थलों पर इतनी सशक्त भाषा का प्रयोग हुआ है कि सहज ही में चित्र उपस्थित हो जाता है। वार्तालापों में प्रायः पात्रों के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग मिलता है। यहाँ तक कि कई बातों में तो मुसलमान पात्रों के मुँह से उर्दू अथवा फारसीमिश्रित भाषा प्रयुक्त हुई है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इन बातों की मूल प्रकृति कहे जाने की है, अतः भाषा में भी उसके अनुरूप ही लयात्मकता, रवानगी और सहजता है। भाव और वस्तु-वर्णन दोनों ही में भाषा की यह अभिव्यक्ति-क्षमता अपने औचित्य के साथ दृष्टिगोचर होती

है। जन-मानस के साथ इन बातों का बहुत नजदीक का सम्बंध है इसलिए जन-मानस की भाव-निधि को वहन करने की क्षमता इनकी सहज विशेषता है। डिंगल अथवा राजस्थानी के अतिरिक्त शुद्ध संस्कृत तथा अरबी फारसी के शब्दों का भी सम्मिश्रण हुआ है। मध्यकालीन राजस्थान पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव रहने से विदेशी भाषा का यह प्रभाव स्वाभाविक ही है। अरबी फारसी के कुछ शब्द तो राजस्थानी में घुलमिल कर एक हो गए हैं और उनका आज भी प्रयोग होता है।

इन बातों की समाज को बहुत बड़ी देन रही है। प्राचीन काल में जब शिक्षा और ज्ञान अर्जित करने के लिए आज की सी व्यवस्था न थी तो समाज को बहुधा आवश्यक ज्ञान इन्हीं बातों के माध्यम से दिया जाता था। जनता तथा शासक वर्ग के संस्कारों का निर्माण करने में इन बातों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। प्रायः कथा कहने वाले सन्ध्या के समय कामकाज से निवृत्त होकर जब कथा कहने बैठते थे तो धीरे-धीरे श्रोतागण एक कल्पना लोक में खो जाते और जहाँ बीच-बीच में रोचक वर्णन अथवा काव्य की पंक्ति आती वहाँ वाह-वाह की झड़ी लग जाती और कथा कहने वाला दूने जोश से कथा कहने लगता। इससे श्रोताओं का मनोरंजन तो होता ही था पर जाने-अनजाने वे कितने ही जीवन मूल्यों को भी ग्रहण करते थे। ऐतिहासिक कथाओं के माध्यम से इतिहास के ज्ञान के साथ-साथ आदर्श पुरुषों की चारित्रिक विशेषताओं का परिचय होता था। नीति संबंधी बातों से व्यवहारिक ज्ञान और प्रेम-संबंधी बातों से प्रेम का अलौकिक आदर्श ग्रहण होता था। पौराणिक बातों से आध्यात्मिक उन्नति के तत्व ग्रहण किये जाते थे। इस प्रकार ये बातें युगों-युगों से अपने नाना रूपों में जन-मानस को ज्ञान की गरिमा से विभूषित करती रही हैं।

अलौकिक तत्वों का प्रवेश व अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन देख कर इन्हें कोरी कपोल-कल्पित गप्पें समझ कर टाल देना बहुत बड़ी भूल होगी। इन बातों का सामाजिक मूल्यांकन करते समय इनसे व्यंजित होने वाले सत्य को ही ग्रहण करने की आवश्यकता है, क्योंकि वही इनकी उपादेयता है और इसीमें इनकी सार्थकता भी निहित है। यहाँ के मानव की परिवर्तनशील सामाजिक एवं नैतिक मान्यताओं को जानने का बहुत बड़ा साधन तो यह साहित्य है ही, इनके अतिरिक्त शाश्वत सत्य का उद्‌घाटन करने वाली कथाओं का सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक प्रभाव सदैव बना रहेगा, इसमें भी कोई संदेह नहीं।

सुन्दर अक्षरों में लिपिबद्ध की हुई और रंगीन कपड़ों की जिल्दों में बंधी हुई प्रेम-कथाओं को कितने प्रेमियों ने विरह के एकान्त क्षणों में पढ़ा होगा ? ढोला और मरवण के वार्तालाप कितनी प्रेमजन्य सुकोमल भावनाओं को उद्वेलित कर सके होंगे ? विकराल काल के चिर पाश में बंधे हुए मानव ने इनकी अलौकिक कल्पना में खोकर कितनी बार उन्मुक्तता की सांस ली होगी ? इस पर विचार करें तो बातों की अद्भुत महत्ता का आभास सहज ही हो सकता है।

बड़े ही आश्चर्य की बात है कि शताब्दियों से समाज की नानाश्लेष प्रवृत्तियों और समस्याओं का इतना बृहत् तथा जीवंत चित्र प्रस्तुत करने वाली बातों के साहित्यिक महत्व पर अभी तक गंभीरता से विचार नहीं किया गया। राजस्थानी गद्य की विविधता और उसके विकास को समझने के लिए इनसे बढ़ कर अन्य साधन शायद ही उपलब्ध हों। वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से इनका महत्व असंदिग्ध है। राजस्थानी काव्य के शोध कार्य में भी इनसे यथोचित सहायता मिल सकती है। क्योंकि कितनी ही काव्य-रूढ़ियों के साथ परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से इनका संबंध जुड़ा हुआ है। भारतीय कथा-साहित्य के आपसी संबंधों को जोड़ने वाले सूत्रों एवं प्रभावों को भी इनके माध्यम से सहज ही ग्रहण किया जा सकता है, क्योंकि कई बातों के विभिन्न स्वरूप अलग-अलग प्रांतों में भी उपलब्ध होते हैं।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य के नव-निर्माण में जहाँ कविता अपनी नवीन अभिव्यक्ति-क्षमता ग्रहण कर चुकी है वहाँ कथा साहित्य के क्षेत्र में भी प्रयोग होने लगे हैं। पर आधुनिक गद्य-रचना में मौलिकता और सहज साहित्यिक गांभीर्य लाने के लिए प्राचीन बात साहित्य का सर्वांगीण अध्ययन आवश्यक है। ऐसा किए बिना हम अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पोषित शिल्पगत विशेषताओं और भावगत सशक्त परम्पराओं से लाभ नहीं उठा सकेंगे और जिसके बिना हमारा साहित्य स्थानीय विशेषताओं को आत्मसात कर, विश्वास के साथ आगे नहीं बढ़ पाएगा।

यहाँ अब प्रस्तुत बातों के संपादन के संबंध में कुछ कहना आवश्यक है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, बातों का प्रारंभिक रूप मौखिक था, लिपिकारों ने उसे लिपिबद्ध किया है। लिपिबद्ध करते समय उन्होंने प्रायः वह सतर्कता नहीं बरती जिसकी अपेक्षा लिखित साहित्य में होती है। कई प्रतिलिपियों को देखने से यह भी आभास होता है कि लिपिकार की असावधानी या

अज्ञान से भाषा की अशुद्धियों के अतिरिक्त और कई त्रुटियाँ भी रह गई हैं। ऐसी स्थिति में बात को ज्यों का त्यों न रख कर कुछ परिवर्तन कर देना आवश्यक हो गया।

व्यक्तिवाचक शब्दों के भिन्न भिन्न रूप एक ही बात में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे मारवणि के लिए मरवण, मारू, मारवणी, मारवी आदि रूप मिलते हैं। हमने पहला रूप ही ग्रहण किया है। कई क्रिया-शब्दों के भी दो रूप मिलते हैं, जैसे बोल्यो और बोलियो, मेल्यो और मेलियो आदि। ऐसे शब्दों के दोनों ही रूप रखे गए हैं—पर वाक्य के प्रवाह को ध्यान में रख कर। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि पद्य में या स्थल विशेष पर अर्थ-विशेष में प्रयुक्त होने वाले शब्द-रूप में उसके औचित्य को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन नहीं किया गया है, इसलिए पद्य में मारवणि शब्द के उपरोक्त सभी रूपों को स्थान मिला है। बचपन की अवस्था में मारवणि के स्थान पर 'मारू' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसे उचित समझ कर उसी रूप में ग्रहण किया गया है।

राजस्थानी में 'व' तथा 'भ' के बीच की ध्वनि प्रकट करने वाला अक्षर व़ भी प्रयुक्त होता है। इसके उच्चारण में बड़ा सूक्ष्म भेद है। 'बात' शब्द स्वयं प्राचीन प्रतियों में 'वात' लिखा हुआ मिलेगा पर उच्चारण की सुविधा और सरलता को ध्यान में रखते हुए हमने 'व' के स्थान पर 'ब' का ही प्रयोग किया है।

इसके अतिरिक्त वाक्यों में जहाँ अपूर्णता अथवा अस्पष्टता लगी वहाँ भी आवश्यक परिवर्तन किए गए हैं।

मूल प्रतियों की लिखावट में पूर्णविराम का अवश्य कहीं-कहीं प्रयोग हुआ है पर पैराग्राफ तथा अल्पविराम आदि चिन्ह नहीं मिलते। प्रकाशन के आधुनिक ढंग और स्पष्टता को ध्यान में रख कर हमने यथा-स्थान इन चिन्हों को अपना लिया है। पद्यांशों में प्रायः दीर्घ ह्रस्व आदि की त्रुटियों को ठीक कर दिया गया है और मात्राओं की पूर्ति के लिए भी इसी प्रकार के कुछ आवश्यक परिवर्तन किए गए हैं। ढोला-मारू की बात के दोहों में इस प्रकार की त्रुटियाँ अधिक थीं जिनको शुद्ध रूप दिया गया। ऐसा करने में ढोला-मारू रा दूहा (संपादित) से भी पूरी सहायता ली गई है। पर सब मिला कर प्रयत्न यही रहा है कि बातें अधिक से अधिक अपने मौलिक रूप में पाठकों तक पहुँच सकें। राजस्थानी गद्य साहित्य की रचनाओं को प्रकाश में लाने का यह हमारा पहला प्रयत्न है इसलिए पूरी सतर्कता बरतने के बावजूद भी त्रुटियों का रह जाना

असंभव नहीं। आशा है इस दिशा में कार्य करने वाले विद्वान 'बात' साहित्य की इस अमूल्य निधि को प्रकाश में लाने का यत्न करेंगे। यह संग्रह तो केवल प्रारंभ मात्र है। परिशिष्ट में प्रसिद्ध बातों की सूची भी इसी उद्देश्य से दी गई है।

मंडावा कँवरसाहिब देवीसिंहजी, अगरचन्दजी नाहटा तथा सीतारामजी लालस का मैं आभारी हूँ जिनके सौजन्य से मुझे बहुत सी बातों का संकलन, चुनाव तथा अध्ययन के लिए मिला।

अंत में जिन महानुभावों ने जिस किसी रूप में हमें सहायता पहुँचाई है और परामर्श दिया है उनके भी हम आभारी है।

नारायणसिंह भाटी

राजस्थानी वात-संग्रह

ढोला मारू

ढोला मारू री बात लिख्यते—

सकळ[1] सुरां सुर सांमणी, सुण माता सरसत्त[2] ।
विनय करी नैछी[3] निवूं[4], द्यो मुझ अविरल मत्त[5] ॥

वचन विलास विनोद रस, हाव भाव रति हास ।
प्रेम प्रीत संभोग सुख, अे सिणगार अयास ॥
गाहा गूढ़ा गीत गुण, उकती कथा उल्लोल ।
चतुरां तणा चित्त री, कहिये कवि किल्लोल[6] ॥
नळ राजा नळवर तपै, सुत तिण साल्हकुमार[7] ।
पिंगळ-पति पदमण सुता, मरवण[8] प्रीत संचार ॥

*

पांणीपंथ तुरंग, खग चंगो खुरसांणी
बीजा नयर वसत्र, निरमळ गंग नियाणी
पट कूल पटणी देस, भोगी धर दक्खण
कुंजर कदळी खंड, विप्र रू, तिये विचक्षण
तिम चंद वदन चंपक वरण, दंत झबूकण दांमणी
सारंग नयण संसार इण, मनहर मारू कांमणी

---

[1]सकल [2]सरस्वती [3]नीचे [4]नमन करूं [5]मति
रा दूहा' का रचयिता [7]कथा का नायक [8]कथा की नायिका ।

मरुधर देस मंझार, सयल धन धन प्रसिधौ
नांमे पुंगळ नयर[1] पुह, विस गळै प्रसिधौ
राज करै रिमराह, खगट[2] पिंगळ प्रथवीपति
प्रतपै जसु प्रताप, दांन जळहर जिम दीपति
देवड़ि नांम उमा घरणीं, मरवणि तस धू कुंवरि
चौसठि कळा सुन्दर चतुर, सिरै नार गुण सुन्दरि।

मरुधर देस रै विखै[3] सगळा ही सहरां प्रसिद्ध पुंगळ नांमै अहवो नगर। तिण रै विखै रमी राजा राज करै छै। तिण रै पिंगराजा पुत्र छै—बडो प्रथीपत दातार। जळहर जिम दीपै छै। तिणरै ऊमादे बड़ी अस्त्री छै। तिणरी वात कविस्वर विस्तार करनै कहै छै—

देसां मांहे दीपतौ[4], परगट मरुधर देस।
तिहां नर नारी ऊपजै, नरां उत्तम नरेस॥
ऊंचा मिन्दर चोखणा, ऊंचा घणौ अवास।
अजब झरोखा जाळियां, सीसै सूधा वास॥
राज करै राजा तिहां, पिंगळ जांण प्रवीण।
बींभळियां[5] भीनौ रहै, निस दिन नेहे लीण॥
अंतरां अहिनिस करै, अमल सोहड अतिरंग।
कोटड़ियां कळियळ[6] हुवै, राग छतीस सुरंग॥
भल सोहड अर हास भल, भली राज गति रीत।
राजलोक रांणी भली, पाळै अहिनिस प्रीत॥

मरुधर देस रै विखै पुंगळ नांमै नगर, तठै पिंगळ राजा राज करै छै। आठ हजार घोड़ा छै। दोय सौ हाथी छै। पांच हजार पायक[7] छै। बारै बरस रो पिंगळ राजा टीकै[8] बैठो छै। तीन बरस मांहे बैरी दुस्मण मारि नै आपणी आंण[9] मनावी छै। पनरै बरस में राजा हुवौ छै। अति रूपवंत भोग भंमर[10] छै।

अेक समै राजा सिकार चढ़ियौ छै। कटक[11] सरब साथै लीधा छै। पण असवार जुदा जुदा बिखर गया। राजा अेकलो रण[12] रै विखै भमतौ भमतौ थाकौ। उन्हाळा[13] री रात हुती, तिणसूं राजा नै त्रिखा[14] घणी व्यापी। जितरै अेक

---

[1]नगर [2]योद्धा [3]में [4]देदिप्यमान, [5]आंखों में [6]राग-रंग [7]पैदल [8]उत्तराधिकार प्राप्त किया [9]प्रभुत्व स्वीकार कराया [10]आनंद लूटने वाला [11]फौज [12]अरण्य, जंगल [13]गर्मी [14]प्यास।

मोटो ब्रिख दीठौ, तिण हेटे जाय ऊभौ रह्यौ। आगे देखै तौ अेक भाट बैठौ छै, तिण कन्है पांणी रो वागळो[1] भरियो छै। राजा भाट नै बतळायौ। तरै भाट आय मुजरो कियौ, सीतळ पांणी पायौ। तद राजा तिरपत हुवौ। भाट राजा सूं बहोत राजी हुवौ। राजा भाट नै पूछण लागौ—भाटजी, थे अठै किसै कांम पधारिया छौ। कठै रहौ छौ। तद भाट बोल्यौ—महाराज हूं नळवर-गढ़ रहूं छूं, मांगणी करणै निसरियौ छूं। और तौ बड़ा-बड़ा गढ़पति सगळा[2] ही जाच्या[3], अबै पिंगळ राजा री कीरत सुण जाचवा आयौ छूं। तरै राजा भाट नै आपरो नांम बतायौ। तरै भाट राजा नै ओळखियौ[4]। मन मांही उछाह आयौ छै। वळे राजा पूछियौ—भाटजी, थे किसा गांव नगर दीठा सो कहौ।

भाट कह्यौ—म्हें इतरा देस दीठा : मरहठ देस, मेवात, बंग देस, गौड़, कुंकण, कछ, पंचाळ, दक्खण, माळवो, मुल्तांन, कासमीर, खुरसांण, इतरा देस दीठा। वळे सिंघल दीप दीठौ, जठै पदमणी अस्त्री छै। गुजरात, सोस्व, सवाळख, सिन्ध और ही समुद्र परे बडा बडा सहर दीठा। तरै पिंगळ राजा बोलियौ—थे इतरा सहर दीठा छै त्यां मांहे कोई अपूरब[5] वस्त दीठी होय सु कहौ। तद भाट बोल्यौ—महाराज, म्हें तो अपूरब वस्त अनेक दीठी छै सो कहतां अंत न आवै। पण आपरै मन में जिकण री दरकार[6] होय सु कहौ। राजा बोल्यौ—थे इतरा सहर दीठा छै, त्यां मांही कोई रूपवंत अस्त्री, हंस रो बच्चो, केळ रो गरभ, किरती रो भूमको, चौसठ कळा री जांण, बुध निधांन, अगनयणी इसी अनोपम अस्त्री होय तो म्हांनै परणीजण री खांत[7] छै। थे कोई दीठी हुवै तो कहौ।

भाट बोल्यौ—महाराज हूं बरस पच्चीस बारे फिरियौ—परखंडां[8]। तठै रूपवंत चतुर अनेक अस्तरियां दीठी पण अेक जाळोर नगर छै तठै सांवतसी देवड़ो राज करै—

गिर अढ़ार[9] आबू धणी, गढ़ जाळोर दुरंग।
तिहां सांवतसी देवड़ो, अमलीमांण[10] अभंग॥

जाळोर नगर रो धणी सांवतसी देवड़ो छै। तिण रै झाली पटरांणी छै।

---

[1]पानी रखने का बरतन-विशेष [2]सब [3]याचना की [4]पहिचाना [5]अपूर्व [6]चाह [7]इच्छा [8]अन्य पृथ्वी-खंड [9]घनी वनस्पति वाला पर्वत [10]अधिकार का उपभोग करने वाला।

तिणरी पुत्री ऊमादे बडी छै, तिका जांणीजे—विधाता आप हाथ घड़ी छै। वळे किसड़ीक छै—

चंदन वदन चंपक वरण, अहर अलता[1] रंग।
खंजन नैण खीण कटी, चंदन परिमल अंग॥
अति अद्भुत संसार इण, नारी रूप रतन्न।
आखै ऊमादे कंवरि, कोमळ कंचन वन्न॥
तूझ सरीखो जो जुड़ै[2], भांमण[3] नै भरतार।
जोड़ी राई कान्ह ज्यूं, कर मेल्है करतार॥

इतरी भाट पिंगळ राजा नै कही, तद राजा खुस्याळी[4] होय कह्यौ—ओ काज प्रमांण चढ़ै,[5] इसी कोई अकल बतावौ? इतरी बात करतां राजा रो कटक बिखर गयौ हुतौ सो आंण भेळो हुवौ। तद राजा नगर मांहे आयौ। भाट नै साथे ल्यायौ। अबै राजा री हजूर भाट बैठौ रहै छै। नवा दूहा गाहा कहि नै राजा नै रिझावै[6] छै। पण राजा ऊमा देवड़ी नै खिण मात्र विसरै नहीं।

अेक दिन राजा आपरा परधांन बुलाया। जैसळ खवास बुलायौ। सारां ही नै मसलत[7] बूझ नै जाळोर सारूं तयारी कीधी। पछै भाट नै केई अमोलक[8] वस्त्र गहिणा देय नै साथै मेलिया। घणी भळावण[9] दीन्ही अर कह्यौ—ओ कांम प्रमांण चढ़ै ज्यूं कीजै।

हिवै अठासूं घणो साथ लेनै भाऊ भाट नै जैसळ खवास चाल्या तिके जाळोर नगर आय उतरिया। तरै सांवतसी देवड़े पिंगळ राजा रा परधांन आया सुण नै घणी मनुहार कीधी। पछै परधांनां नूं पूछियौ—थांनू अठै पिंगळ राजा किसै काम मेलिया छै। परधांन बोलिया—थां सूं अेक अरज छै। थांरी कुंवरि अपछर जिसी, तिण रो रूप कांनां सुणियौ जद राजा रै मन उछब ऊपनौ, तरै आप कन्है म्हांनै मेलिया छै। थांरी कुंवरि[10] मांगै छै। तरै सांवत सी देवड़ो बोलियौ—कुंवरि री तो सगाई कीवी। पैली तौ जूनागढ़ रा धणी मांगी हुती। पछै बींद घणा बरसां मांहे देखनै उत्तर दीधौ[11]। अबै उदैचंद राजा चावड़ो छै, तिण रै रिणधवळ कंवर पुत्र छै। सत्रह सै गुजरात रो धणी छै। तिणनै म्हे ऊमादे कुंवरि दीधी। पण भाली रांणी अजे बात मानै न छै। रोगी देस छै।

---

[1]लाल [2]मिले [3]स्त्री [4]खुशहाल [5]पूरा हो [6]रिझाता है
[7]सलाह [8]अमूल्य [9]जिम्मेवारी [10]कुंवरी [11]दिया।

भूंडो, निरलज्ज तिको गुजरात छै। निबळ पुरख छै। अस्त्री निलज्ज छै, तठै राजकुंवरि क्यूंकर दीजै। सगाई करण नै तौ कीधी हुती पण अबै तौ म्हांने कुंवरि द्यो।

इतरी बात राजलोक मांही झाली सांभळी तरै परधांनां नै मांहे बुलाया अर अेक उपाय रांणी कीधौ। जैसळ नै कहण लागी—जोतखियां[२] कह्यौ बरस अेक तांई बाई नै सावो[३] सूझै नहीं। बरस अेक पछै लगन थापस्यां। महिना अेक पहिली अेक असवार थां कन्है मेलस्यां,[४] सो थे जांन री सजाई[५] कर नै आबूजी री जात्रा[६] रै मिस आय उतर ज्यो। तद कुंवरि पिंगळ राजा नै परणाय देस्यां। उदैचंद रिणधवळ नै, कुंवरि परणीज सी जद अेक दिन पहली आदमी मेलस्यां सु अेक दिन में कोई आवणी आवै नहीं। लगन तो टळै नहीं, तरै म्हे पण निरदोस रहस्यां, इसो मतो थापनै परधांनां नै सीख दीवी। घणौ द्रव्य सिरपाव देय विदा किया। परधांन पुंगळ आय पहुंता[७], पिंगळ राजा सूं मिल्या। सारा समाचार कह्या तरै राजा घणौ खुस्याळ हुवौ।

अब छांनै परधांन अर कागळ[८] आवै जावै छै। सांवतसी पण बहोत राजी छै। अबै तौ सावा आडो अेक महीनो आय रह्यौ। सांवतसी देवड़े असवार मेल पिंगळ राजा नै समचौ[९] दियौ। तद पिंगळ राजा जांन री सजाई कीधी। घणा घोड़ा, ऊंठ, हाथी, सेझवाळ[१०] तयारी किया छै। बडा बडा गढ़पती जांनी हुवा छै। इण तरै सूं केसरिया बागा करि घणा आडंबर सूं जांन चढ़ी छै। दिन दस मारग मांहे लागा। लगन रै दिन जाळोर नगर आंण उतरिया। सांवतसी देवड़ो आया सुण बहोत राजी हुवौ। कटक[११] देख लोक खळभळिया। परजा पूछण लागी—अे राजा कुण छै, सिध पधारसी? तरै पाछौ उत्तर कहै छै—कोई डरो मती। पूंगळगढ़ रो धणी पिंगळ राजा छै। आबूजी री जात्रा करण नूं जाय छै।

इतरै गोधूळक[१२] वेळा हुई। तरै सांवतसी देवड़े अर झाली सांम्हेळो[१३] करि पिंगळ राजा नै मांहे लिया। पछै ऊमा देवड़ी नै परणाई। पिंगळ राजा री सूरत

---

[१]सुनी [२]ज्योतिषियों [३]लग्न [४]भेजेंगे [५]तय्यारी [६]यात्रा [७]पहुँचे [८]कागज [९]संकेत [१०]परदा लगी हुई गाड़ियां [११]फौज [१२]गौधूलि वेला [१३]वर को शादी के पहले घर के अन्दर ले जाने की रस्म।

देखि सांवतसी देवड़ो अर झाली रांणी दोनूं राजी हुवा। बीजा ही लोक राजी हुवा। सोळह बरस रो वर छै। तेरह बरस री कुंवरि छै। इसी जोड़ी हर तूंठा-हीज जुड़ै।

तरुणी तेरा वरस री, सोळह वरस भरतार।
जोड़ी इसड़ी तौ जुड़ै, जे तूठै[1] करतार॥

सांवतसी देवड़े भलो विवाह कियौ। जाळोर नगर मांहे भला द्रव्य खरचिया। दोनूं सगा मांहोमांही राजी हुवा।

हिवै[2] पाटनगर उदैचन्द राजा नै आदमी मेलियौ छै, तिण जाय मुजरो कियौ। पछै लगन दीधौ। लगन वांच उदैचन्द राजा कहण लागौ—लगन आडो अेक दिन छै—इतरो मोड़ो[3] क्यूं आयौ? तरै आदमी बोल्यौ—रोगी देम छै सु मारग में आवतौ ही मांदो[4] पड़्यौ। म्हारो दोस नहीं। तद राजा नै रीस चढ़ी। आदमी री बांह पकड़ी नै बारे काढ़ दीन्हौ। राजा विचारियौ—रखै[5] म्हांरी मांग कोई बीजो परणै। तरै जांन री सजाई कर, छड़ी असवारी सूं चढ़ियौ। जाळोर आंण पहुंतो। परणायां[6] पछै दूजे दिन सांवतसी देवड़ो मन में आलोच[7] करै छै। रखै रिणधवळ कंवर री जांन आवै तौ पिंगळ राजा सूं लड़ाई हुवै। इसो विचार करै छै। इतरै च्यार च्यार कोस ऊपरै टूंकिया[8] राखिया छै, त्यां आय नै कह्यौ—उदैचंद आयौ। इसो सुण सांवतसी सोच ऊपनौ। राजा महिलां चढ़ि देखै तौ सातसै उपाड़ै चढ़ियौ आवै छै। त्यांरी गिरद उडती दीठी। वळै[9] नगारो वाजतौ सुणियौ। इतरै नेड़ा आय लागा। नीसाण दीसै लागा। इसी फौज वणी देख सांवतसी विचारियौ—अबै बात बिगड़ै छै। पिंगळ राजा रै साथ थोड़ो, उदैचंद कटक घणौ ल्यायौ। लड़ाई होवै तो म्हांनै कळंक चढ़ै। रांणी अर सांवतसी दोनूं आलोच करै छै। तद पिंगळ राजा नूं कह्यौ—थांरै म्हांरै सगपण तौ रहै छै। थांरा देस नूं अवार चढ़ौ तौ पाछा सूं ऊभणा[10] री तयारी करस्यां। कुंवरि नै सासरे मेलस्यां[11]।

---

[1]खुश हो [2]अब [3]देरसे [4]बीमार [5]ऐसा न हो कि [6]शादी करने पर [7]गंभीर विचार [8]किसी ऊँचे स्थान पर बैठ कर, चारों ओर से आने वाले लोगों की निगाह रखने वाले व्यक्ति [9]फिर [10]शादी के बाद दुबारा पीहर से लड़की को ससुराल भेजने की रस्म, [11]भेजेंगे।

पिंगळ राजा उणहीज[1] घड़ी चढ़ियौ। ऊमा देवड़ी नै पीहर राखी। पिंगळ राजा परणीज नै पुंगळ नगर कुसळे खेमे आय पहुंता। इतरै रिणधवळ री जांन आई। तरै सांवतसी देवड़ो साम्हो जाय मिळियौ। 'घणी-अरज' करनै जाय कहचौ—राज मोड़ा क्यूं पधारिया? अबै कांई करां? म्हांरो तौ दोस कोई नहीं। दोस आदमी रो छै। म्हे तौ लगन वेळा तांई वाट जोई[2]। राज पधारिया नहीं। सोच घणोई ऊपनौ[3]। राज सरीखा सगा कठा सूं मिळै? वळे कुंवरि रा करम में इसो घर नै वर लिखियौ नहीं। अनै जोऊ लगन टळतौ, पांच वरस तांई[4] सावो सूझै नहीं। इतरै अेक पुंगळ गढ़ रो धणी पिंगळ राजा आबूजी री जात्रा जावतौ हुतौ सु अठै आय निसरियौ। तिणनूं कुंवरि परणाय दीधी।

इसो सुण रिणधवळ कुंवर रिसाणौ[5]—म्हांरी मांग पिंगळ राजा नै परणाई? उदैचंद राजा बोल्यौ—म्हांसूं सांवतसी घात खेली। मन मांहे क्रोध आंण आपरै सहर गयौ। पछै यांरै माहोमांही खेध[6] लागौ। सोवनगिर[7] सूं चारूं कांनी गांव लूटण लागा। देस वसै नहीं। इसी बात पिंगळ राजा सांभळी। सांवतसी देवड़ा नै कहायौ—थे कहौ तौ म्हे परण थांरी भीड़ आवां। तरै सांवतसी कहायौ—राज तकलीफ मती करावौ। सोवनगिर किणही सूं भी लिवै नहीं। आपै झखमार परा जासी।

पुंगळ नगर मांहि जैसळ नांम खवास छै। आपरा मन में बुध[8] केळवै छै। घरे गायां घणी छै, तिण मांहे धोळी गाय दोय निपट[9] सखरी[10] छै, त्यांनै सगळी गायां रो दूध भेळो करिनै पावै। वां दोन्यू गायां रै केरड़ा[11] हुवा, तिके निपट सखरा छै। त्यांनै दूध अणभावता पावै छै। घोड़ा दांयर राखै छै। घोड़ां री पायगा मांहे बंधीजै छै। घोड़ां बराबर ग्रास पावै छै। यूं जाबता करतां बैलिया घणा आछा हुवा। पछै अेक हळवी[12] व्हैल[13] करवाई। दोनूं धवळ[14] जोतरिया। जैसळ आप चढ़चौ। दिन दिन रै विखै अेके कोस वधारै

---

[1]उसी [2]देखी [3]उपजा [4]तक [5]नाराज हुआ [6]झगड़ा [7]पर्वत विशेष [8]बुद्धि [9]अत्यंत [10]अच्छी [11]बछड़े [12]हल्की [13]सवारी की बैलगाड़ी [14]बैल।

छै। यूं करतां महिना बारा हुवा। बैलियां नै घणा समझाविया। पछै राजाजी नै दिखाया। राजा देख बहोत खुस्याळ हुवौ छै।

पिंगळ राजा सांवतसी देवड़ा नै आदमी मेल कहायौ—अबै थे आणौ[1] करौ। तद सांवतसी घणोही विचारियौ पण बात बांध कोई बैसे नहीं। कुंवरि नै ऊभणो दे मेलीजे। तद ऊंठ, घोड़ा, रथ, सेजवाळ, खवास, पासवान साथे हुवा सो उदैचंद खमै[2] नहीं। वाट रोक्या छै। अनरथ होय, माल जाय। तरै सांवतसी आदमी नै कहचौ—जे मारग विखम छै। आप छांनै[3] परधांन मेलो तौ आणौ करां। कुंवरि नै घरे पहुंचायां पछै सारी बात सोरी[4] छै। इतरो कहि आदमी नै सीख दीधी। आदमी पाछै आय पिंगळ राजा आगे मारग री सगळी बात कही। बात सुणि पिंगळ राजा जैसळ खवास[5] नै बुलायौ, पछै कहण लागा—सांवतसी कहायौ छै—छांनै परधांन मेलौ ज्यूं आणौ करावां। तिणसूं इतरो कांम तूं वळे करि–

जैसळ नै पिंगळ कहै, करि आंणौ परियांण।
दिन अेकण में देवड़ी, जद आवै इण गांम॥
सांचो छोरू[6] तूं सही, तूं सेवक तूं स्यांम।
आगे तें परणावियौ, कर वळ अेतो कांम॥
सोवनगिर थी चहुं दिसे, रूंधा[7] मारग घाट।
पंथी को पूंगळ तणौ, वही न सकै वाट॥
कटकी को आपां करां, तौ मन रूसै नाय।
सांवतसी बैठां थकां, बन्धन कैसे काय॥

इतरी बात पिंगळ राजा जैसळ नै कही, ताहरां जैसळ बोल्यौ—

बचन सुणे राजा तणौ, जैसळ कीध प्रणांम।
तौ हूं छोरू तांहरो[8], जे सारूं अे कांम॥

पिंगळ राजा नै जैसळ कहै छै—देवड़ीजी नै दोय दिन मांहे आंणूं तौ चाकर। इतरो कह वैल सझै कीधी। वेही धवळ जोतरिया[9]। बैलिया किसा'क छै—घड़ी मांहे दोय जोजन[10] जाय तोही थकै नहीं। लोही भरै नहीं। अब जैसळ दीठै मारग चालै छै। वाट घाट सगळा जांणै छै। मारग में और ही नांम ले, अर

---

[1]गौना [2]बरदाश्त [3]चुपके से [4]आसान [5]नाई [6]सेवक [7]बन्द हुए [8]तुम्हारा, आपका [9]जोते [10]योजन।

ही कांम बतावै, और ही गांव बतावै। परभात रो चाल्यौ दिन आंथमते[1] जाळोर आंण उतरियौ। जद सांवतसी राजा सांम्हळियौ। ताहरां जैसळ नै मांहे बुलाय मिळिया। पछै झाली नै वात पूछी। अेकण रात में मारा ही समझ गया। बीजै दिन छांनै चलै रहचौ। कुंवरि रो हलांगौ कियौ—ओ किणही जांण्यौ नहीं। अेक लाख रो ऊझणों दीधौ छै सु म्हे अठे राख्यौ छै। म्हारा मन में छै सु मोसै, पाछा सूं पोंहचावस्यां[2]। अवारूं[3] तौ कुंवरि नै मेल्हां छां। सारी सजाई कर नै सांझ रै समै मुकळावौ कीधौ। ऊमा देवड़ी नूं सीख दीधी। उठा सूं हालिया। बिसांमो कठेही लै नहीं। पवन ज्यूं चालिया जाय छै। पूंगळ नगर रै बिखै आय पुहंता छै। बहिल[4] छोड़ नै उतरिया तद पिंगळ राजा आपरो कटक[5] परवार लेनै सांम्हौ आयौ। पछै ऊमा देवड़ी अर राजा रै मोड़ बांध नै घणा आडम्बर सूं, घणा गाजां बाजां, चंवर ढुळंतां मांहे पैसारौ[6] कियौ। पटरांणी लेनै घरे आयौ—आ बात उदैचंद रिणधवळ सांभळ नै दिलगीर[7] हुवौ।

पटरांणी पिंगळ तणी, अपछर रै उणिहार।
आखै ऊमा देवड़ी, सुन्दर इण संसार॥
मोड़ ज बंधी मारवी, आय अवतरी पेट।
पूरे मासे पदमणी, जनमी रायज नेट॥
सुन्दर रूप सुहामणो, कै उरवसी[8] अवतार।
सबद यूं आखै पदमणी, भमर करै गुंजार॥
भूपति भाऊ भाट नै, कीधौ कोड़ पसाव[9]।
चाल्यौ नळवर गढ़मणी, प्रणमि पिंगळ राव॥

राजा भाऊ भाट नै लाख पसाव करि सीख दीन्ही। राजा रा मन में घणौ उछाह छै। पटरांणी सूं प्रेम घणौ छै। सुख भोगतां रांणी रै आधार रह्यौ। नव महिना पूरा हुवा। पुत्री जनम हुवौ। नांम मारवणि दीधौ। अपछर रै उणिहार छै। भमरा कनै रहै छै सु सगळा ही पदमणी कहै छै।

बरस दोढ़ बोल्यां पछै, कदेन बूठौ मेह।
खड़[10] पाखै सविलोक खड़, बसवा गया विदेह॥

---

[1]अस्त होने होते [2]पहुँचाएँगे [3]अभी [4]बैल गाड़ी [5]फौज [6]प्रवेश [7]खिन्न चित्त [8]उर्वशी [9]कवि को दिया जाने वाला करोड़ रुपये की कीमत का इनाम [10]जानवरों के लिये घास।

मारवाड़ रा देस में, अेक न जावै पीड़ ।
कै तौ होय अबरसगौ, कै फाकौ कै तीड़ ॥
जळ खड़ कारण खोजिग्या, देसै दाउद खांन ।
पोहकर[1] खड़ पांगी प्रबळ, सुगि पिंगळ राजांन ॥

आ हकीकत जांण घास पांणी री सुगि नै पिंगळ राजा उछाळा[2] री तयारी कीवी । आपरो भाई गोपाळदास छै, तिणनै गढ़ री घणी भळांमण दीधी । घरगौ खजांनो, सांमान गढ़ में ही राख्यौ । भाई नै कह्यौ—गढ़ री तरफ सूं म्हे थां थकां नचीता[3] छां । तद गोपाळदास बोल्यौ—महाराज, आप जमा खातर राखौ । किणही बात री चिन्ता मत करौ । अवै राजा पिंगळ सगळौ सराजांम[4] राजलोक, हाथी, घोड़ा ऊंठ, गाय, भैंस, जाचक[5] लेर उछाळो कियौ छै ।

पिंगळ ऊछाळौ कियौ, आयौ पोकर नीर ।
खड़ पांगी परघळ[6] तिहां, हुवौ ज सुख सरीर ॥

राजा पिंगळ बूढ़ै पोहकर आंण उतरियौ । उठै नीला खड़[7] छै । निरमळ पांणी भरचा छै, तिण सूं गायां भैंस्यां रो दूध सवाद ज्यादा होवण लाग्यौ । राजा अर प्रजा सुखी हुवा, तिण सूं छावण करै उठै हीज नैठा कर दीना ।

आ तौ बात, मारवणि री उतपति री कहि । हिवै मालहकुंवर री उतपति कहै—

हिव किव ढोलो नीपजै, देव तणौ परभाव ।
लेख मिळै अणचिंतव्यौ, जांण म जांणै भाव ॥

नळवरगढ़ में नळ राजा राज करै, तिण रै दमैती पटरांणी छै । पण राजा रै पुत्र नही, तिण री चिंता घणी छै—

नळ राजा नळवर रहै, आछी रिद्ध अपार ।
भली अनोपम भांमणी, सुख मांणै[8] संसार ॥
इक चिन्ता मन में घणी, नाहीं पुत्र रतन्न ।
तिण पाखै लागै इसो, जांणि अलूणौ अन्न ॥
माहा मांणस पूछियौ, कहियौ तेण उपाय ।
पुत्र सही थापै भलौ, पोहकर देव मनाय ॥

---

[1]पुष्कर [2]शहर छोड़ कर विदेस के लिए रवाना होना [3]निश्चिंत
[4]सम्पूर्ण व्यवस्था [5]कुल [6]पर्याप्त [7]घास आदि [8]उपभोग करते हैं ।

नळ राजा पुत्र रै वास्तै अनेक उपाय किया। गोगा गुसांई, खेतपाळ, देवी देवता, झाड़ा कळवांणी, जड़ी मूळी, ओखद[1] घणां ही उपाय कीधा तौ ही पुत्र नहीं। इसै समै अेक परदेशी ब्राह्मण आय निसरियौ—वेद-वक्ता, तिण नै राजा पूछियौ। तद ब्राह्मण कह्यौ—थे बाराहजी री जात्रा[2] बोलौ। थांरै पुत्र होवै। तरै राजा रांणी पोहकर बाराहजी री जात्रा बोली, तद रांणी दमैती रै आसा[3] रही। महिना पूरा हुवा। पुत्र रो जनम हुवौ।

जात्रा बोली राय घण, प्रगटयौ पूत रतन्न।
उच्छब[4] घण मंगळ हुवा, लोक कहै धिन धिन्न॥

राजा रै घणी खुस्याळी हुई। बधाई बंटी। बंदीवांन[5] छोडिया। उमरावां नै घोड़ा सिरपाव दिया। खट वन्न पोखिया। राजा प्रजा रै घणी खुस्याळी हुई। पुत्र रो नांम सालहकुंवर दीधौ। माता अनवारो दोस जांणि ढोलो नांम दीधौ। बरस तीन हुवा, राजा रांणी बेऊ[6] जणां अेक रात सूता, तरै सपनो लाधौ—जांणूं पोहकरजी री जात्रा करां। परभात हुवौ जद नळराजा परधांन नै राज भुळायौ। आप लोक सहित घणौ द्रव लेय जात्रा सारूं तयार हुवा। राजा दळबळ सहित रवानै हुवौ। पोहकर आंण उतारौ कियौ।

राजा मनमें चिंतवै, जाय करीजै जात।
राज भळायौ आपणौ, परधांनां परभात॥
साथै रिध[7] लीन्ही घणी, आयौ पोहकर तीर।
जात करी मन हरखियौ, निरमळ सरवर नीर॥
जात्रा कीधी जतन सूं, पूजा करै पवित्र।
अरज अेह तोसूं करूं, सालम रखि मो पुत्र॥

राजा नळ प्रथम तौ बाराहजी पूज्या। पोहकर सनांन करि और ही सघळा[8] देव पूज्या। राजा रांणी खुस्याळी हुवा। जात्रा प्रमांण चढ़ी—

इण अवसर घण उनमियौ, प्रगटयौ पावस मास।
पासै पिंगळ राय नै, किया उतारा वास॥
उनम्यौ उत्तर दिसि, गयण[9] गरजै घोर।
चहुं दिस चमकै दामिनी, नाचै सुगणा मोर॥

---

[1]औषधि [2]देवता के स्थान पर जाकर प्रसाद चढ़ाना [3]गर्भ
[4]उत्सव [5]कैदी [6]दोनों [7]धन-दौलत [8]सभी [9]आकाश।

चार मास निस्छळ रह्या, सरवर तणै प्रमंग ।
रांमत ख्याल विनोद रस, मनै रहै रस रंग ॥

बरसाळौ लागौ जद पिंगळ राजा रा डेरा पाखती[1] नळ राजा पण डेरा कर दिया । पिंगळ राजा रै बहोत प्यार छै । अेक दिन नळ राजा सिकार निसरियौ हुनौ । इतरै मूंडा आगै अेक सुसी[2] आय निसरियौ[3], तिण लारां नळ राजा घोड़ो दियौ । सुसी पिंगळ राजा रा डेरा मांही धस गयौ ।

अेक दिनां नळ राजवी, चढ़ियौ आप सिकार ।
सुसौ दीठौ न्हासतौ[4], दीन्हौ घोडो लार ॥
जातौ पिंगळ राय रै, गयो ज डेरा मांहि ।
सूती ऊमा देवड़ी, कड़ि[5] नीचै वो जाहि ॥
दीठी राजा देवड़ी, रांणी दीठौ राय ।
मन मांहीं अचिरज[6] थियौ, अइयो रूप अथाह ॥
देखी ऊमा देवड़ी, राजा थांभी वाग[7] ।
जो मांगइ अे नारि नै, तिणरौ मोटो भाग ॥
तुरत राय पाछौ वळचौ, आयौ सगळां सत्थ ।
पिंगळ आडो आवियौ, मिळिया भर नै बत्थ ॥
साथ सहू तिह ऊतरचौ, नळ राजा ससनेह ।
कीधी भगत भली परै, पिंगळ राजा तेह ॥

राजा बाग थांमै ऊभौ रह्यौ । पाछौ फिरण लागौ इतरै पिंगळ राजा बारै आयौ । दोनूं राजा माहोमांहि मिळिया । उतरि मतवाळ मांडी । कसूंबा[8] कढ़ाया । गोठ ठावकी कर जीमण री तयारी करी । पांतियां दे दोनूं राजा भेळा जीमिया । पछै दोनूं राजा चौपड़ रमै छै । इतरै मांहे मारवणि री धाय आपरा घरां सूं राजलोक मांहे जाय छी सु ढोलाजी रै धाय ताय दीठी तद अेकण पिंगळ राजा रा चाकर नू पूछियौ—आ कुण छै ? उण कह्यौ—मारवणि री धाय छै । ताहरां[9] वळे पूछियौ—आ गोद में बेटी कुण री छै ? जद धाय बोली—बेटी पिंगळ राजा री छै । जद ढोलाजी रै धायभाई पूछियौ—धायजी, थांरो नांव कासूं ? धाय बोली—म्हांरो नाम है मां धाय । वळे पूछियौ—राजाजी रै कितरी महळ[10] छै ? बाई दोहिती कुणरी छै ? धाय बोली—राजाजी रै

---

[1]पास [2]खरगोश [3]निकला [4]दौड़ता [5]कटि [6]आश्चर्य
[7]लगाम [8]अफीम [9]तब [10]स्त्री ।

महळ च्यार छै। बाई दोहिती देवड़ां री छै। वळे धायभाई पूछियौ—राजाजी रो अठै आवणौ क्यूं हुवौ ? धाय बोली—अठै पांणी घणा अर उठै मेह न बूठौ, जिण सूं खड़[1] पांणी रो कसालौ[2] हुवौ, तद अठै आय रह्या। इतरी बातां आपस में हुई। पछै नळ राजा पिंगळ राजा कनां सूं सीख मांग ऊठिया।

मारग में आवतां ढोलाजी रै धायभाई राजा नळ सूं मारवणि री सगळी हकीकत कही। वळे कहण लागौ—मारवणि बहोत सरूप[3] छै। आ ढोलाजी नै परणाईजै तौ भली। पछै राजा नळ डेरै आयौ। आय दरीखांने बैठौ। परधानां उमरावां मारी मारवणि री हकीकत कही। वळे कह्यौ—आ सगाई होवै तौ भली। राजा नळ राजलोक मांहे गया। रांणियां आगे मारवणि री सरब हकीकत कही। मारवणि सूं ढोला रो विवाह करस्यां। जद रांणियां कह्यौ—भली बात छै। राजा नळ बारे आय कामदारां, परधानां नै कह्यौ—आप म्हे पिंगळ राजा रै उठै जावां तद थे उगांरा ठावा मागसां सूं सगाई रो कहाव कीजौ। परधानां कह्यौ—प्रमांण चढ़ै। पछै नळ राजा पोसाक सारा साथ रै वगाय, सुखपाळ[4] वैभि कोतल, छड़ीदार, चोबदार, नकीब भली सजाई इतमांम[5] सूं पिंगळ राजा रै डेरै आया। डोढ़ियां आंण उतरिया। ताहरां चौबदारां पिंगळ राजा नै गुदरायौ[6]। आंपणै डेरै नळ राजा पधारिया छै। इसो सुण नै पिंगळ राजा सांम्हा जाय मिळिया। दोनूं राजा दरीखांने[7] गिलमां[8] रा बिछांवणा ऊपर बैठा। दोनूं राजा राजा बातां करै छै। इतरा में नळ राजा रै परधांन पिंगळ राजा रा परधानां नूं कह्यौ—थांरै डेरै राजा नळ मारू मांगण पधारिया छै। आ हकीकत पिंगळ राजा रा परधानां आपरा धणी नूं कही—मारवणि ढोला नै परणावौ, राजा नळ भोत चाहै छै। राजा कह्यौ—भली बात। पछै राजा पिंगळ नळ राजा सूं अरज करण लागौ—म्हारा देस मांहे घास पांणी रो कसालौ हुवौ जद म्हे रावळी धरती मांहे आंण रह्या छां। इसो सुणि नळ राजा बोलियौ—आ किसी बात। धरती राजरीज छै। म्हांरी थांरी अेक हीज छै।

राजा नळ आदर कियौ, जिम राजा बड़ लोग।
देस वास सै रावळा, अै घोड़ा अै लोग॥

---

[1]घास [2]अभाव [3]सुन्दर [4]विशेष प्रकार की सवारी [5]ठाट बाट से
[6]खबर की [7]मर्दाना बैठक का कमरा [8]गिद्दे।

पिंगळ राजा घणौ खुस्याळ हुवौ। ताहरां राजा नळ बोल्यौ—मारू म्हांरे खोळै[1] घालौ। ताहरां पिंगळ बोल्यौ—आप फुरमावौ[2] सु कबूल कियौ। पण म्हे अबार बीखै आया छां। ताहरां नळ राजा बोल्यौ—बीखौ क्यांरौ छै? ज्यांरै हाथी घोड़ा हसम[3] रैत सारी ही साथै छै। थे मारू म्हांनै द्यौ, तिण सूं आपणै विसेख हितारथ[4] होय। ताहरां पिंगळ राजा कह्यौ—प्रमांण। आप राजी तिकूं कबूल। आ मारवणि म्हे आपरै खोळै घाली। इसो सुण नळ राजा खुस्याळ हुवौ।

सगपण होवै जो गुणी, वधै[5] प्रीत असमांन।
नळवर राजा पिंगळै, कहिया अेहवा बैण॥
कुंवर अनोपम मांहरै, सम जोड़ी संसार।
तिण नै मारू दीजिये, दीसै देवकुमार॥
तब राजा पिंगळ कहै, बात अेह प्रमांण।
सही करै सैणां तणौ, पछी नै परियाण॥

नळ राजा बोल्यौ—अेकरसां कुंवरि नै बुलावौ, ज्यूं म्हे देखां। हेमां धाय मारू नै नळ राजा री हजूर ल्याई। नळ राजा देख खुस्याळ हुवौ।

नळ जद निरखी मारवी, जांणै बियौ[6] मयंक।
उभाखौ[7] आनीर अति, कोई नही कळंक॥

नळ राजा मारवणि री खोळ भरी। सीख दीवी। पछै नळ राजा पिंगळ राजा कनां सूं सीख मांग डेरै आया।

राजा नळ राजलोक मांहे गयौ अर कह्यौ—म्हे कंवर री सगाई कीवी। ताहरां सारो राजलोक राजी हुवौ। राजा पिंगळ पण राजलोक मांहे गयौ। मारवणि नै लडावण[8] लागौ। तद ऊमा देवड़ी बोली—आज बाई नै क्यूं लडावौ छौ। ताहरां पिंगळ राजा हंस नै कह्यौ—मारवणि ढोला नै दीधी। आज सगाई करी। आ हकीकत सुणि ऊमा देवड़ी बोली—धिग[9] म्हारो सूहाग। म्हांरी डीकरी मोनूं विण पूछियां ही दीधी। म्हांरै तौ बेटी जीव छै।

आखै[10] ऊमा देवड़ी, मालम हीय विचार।
मोह पियारी मारवी, दीधी समदां पार॥

---

[1]गोद [2]कहो [3]सेना [4]हितार्थ [5]बढ़े [6]दूसरा [7]उजाला [8]प्यार करने लगा [9]धिक [10]कहती है।

कंथा अणदीठी कुंवर, कियौ ज सनमन[1] काय ।
पटरांणी मू पी कहै, जिहां सीर त्यां जाय ॥
राजा रांणी सूं कहै, देखे कंवर बुलाय ।
तौ सगपण कीजौ तरै, दीठां आवै दाय ॥

ताहरां पिंगळ राजा री रांणी नळराजा नूं कहाड़ियौ—जु आवतही कंवरजी नै हेकर सांमेळज्यौ । ताहरां नळ राजा पोसाक वणाय, सिरपाव पहिराय मेलियौ ।

नळवर नळ राजा तणौ, ढोलो कंवर अनूप ।
रांणी राव पिंगळ तणी, रीझै देखी रूप ॥

रांणी कंवर नूं देख वहोत राजी हुई । खोळ भराई । सीख दीधी अर पिंगळ राजा सूं कह्यौ—

पिंगळ रावरी मारवी, दीधी समदां पार ।
आखै ऊमा देवड़ी, वालम हीय विचार ॥

रांणी बोली—महाराज, आप सगाई कीवी सो तौ भलो कांम कियौ पण अबै विवाह तौ पिंगळ जाय दीजौ । अवार विदाह करस्यां तौ लोग कहसी—बेटी देय बीग्वौ काढियौ ।

रांणी राजा सूं कहै, वात विचारौ जोय ।
बिखै दियां ज डीकरी[2], हांसौ करसी लोय[3] ॥

ताहरां पिंगळ राजा बोल्यौ—

जिम थे जांणौ तिम करौ, रांणी सुणौ सविद्ध ।
राजा रांणी सूं कहै, म्हे यो सगपण किद्ध ॥

इतरी वारता राजा रांणी रै हुई । पछै भला पिंडत बुलाय लगन थापियौ[4] । रंगराग हुवै छै । पथर रा तोरण थांभ रोप्या छै । घणा उछाह[5] करै छै ।

नीले नेत्रे मांड्हो[6], तोरण थंभ अमोल ।
गांव वघेरे परणिया, मारवणी नै ढोल ॥
पिंगळ विवाह रचावियौ, पढ़िया वेद पुरांण ।
धण भटियांणी मारवी, ढोलो कूरम रांण ॥
पिंगळ राजा री कुंवरि, नळ रो कंवर सगाह ।
ढोलो मारू परणिया, छोटी ऊमर मांह ॥

---

[1]सगाई [2]लड़की [3]लोक [4]निश्चित किया [5]आनन्द [6]वधू पक्ष के लोग ।

मौज सगप्पै मांगणा, वंस वधारै वांन ।
ढोले परणी मारवी, दे कोड़ी लख दांन ॥
मारू रिरै महळियां[1], ढोलो सिर कंवरांह ।
कड़वा बोल न जांणहि, मीठा बोलणियांह ॥
अति मोटै आडंबरां, किधौ विवाह जेण ।
अरथ गरथ खरचा बहुत, पिंगळ नरवर तेण ॥

इण तरै घणा उछाह सूं विवाह कीधौ । पछै पिंगळ राजा डायजै[2] घोड़ा, ऊंठ, चाकर, छोकरी, सोना-रूपा रा थाळ और ही घणौ द्रव्य दीन्हौ । नीलकरि[3] सुखपाळ, रथ १२, सेजवाळ १२, इतरा डायजे दीन्हा ।

अबै पुंगळ नगर सूं पिंगळ राजा रै भाई गोपाळदास कागद मेल्हियौ—आप वेगा[4] आवज्यौ । अठै सुगाळ हुवौ छै । पछै कागद लेनै राजा पिंगळ नळ राजा रै डेरै आया । कागद दिखाय नै अरज कीवी—अबै म्हांनूं घरां री सीख होवै । पछै नळ राजा घणी मनुहार सूं गोठ जिमाई । पिंगळ राजा नै सीख दीवी । नळ राजा पण पहुंचावण आया छै । उठै नळ राजा कहयौ—थे इतौ डायजो दीन्हौ सु तौ वडो कांम कियौ पण मारू नै अेकरसां मेल्हौ । ताहरां पिंगळ बोल्यौ—मारू भोळी छै । धाय विनां, भाय विनां घड़ी अेक रहै नहीं । अबार तौ वरस मास अथवा आठ तांई कोई मेल्हां नहीं । ताहरां नळ राजा पण सीख मांग पाछौ आयौ । आपरा देस नै चढ़ियौ ।

पिंगळ पुंगळ आविया, देसे थयौ सुगाळ ।
तिन्है न मेली सासरै, अजेस मारू बाळ[5] ॥
नळ राजा हिव आपणा, आयौ नरवर देस ।
गांम गांम रा लोक सह, लेवे आया पेस ॥
नळ राजा आवै सकळ, परजा वात सुणाय ।
जात करै आया घरै, ढोला नै परणाय ॥

नळ राजा परधांनां, लोकां आगे, कंवर परणायां रा सगळा समाचार कहया । रावणौ[6] सारो ही राजी हुवौ । पिंगळ राजा पण भाई गोपाळदास आगै और ही रावणां आगै मारू परणायां रा समाचार कहया । तरै सहकोई राजी हुवा । वळे कहण लागा—थे वडो कांम कियौ ।

---

[1]महिलाओं में [2]दहेज में [3]हाथी विशेष [4]जल्दी [5]छोटी [6]राजवर्गी ।

यूं करतां मारवणि वरस तेरा री हुई। ढोलो कंवर पण वरस सोळा रो हुवौ छै।

साल्हकुंवर आयौ हिमै[1], जोवन में भरपूर।
राजा मन में जांणियौ, पिंगळ हुई जहूर[2] ॥
मत कोई जांणावज्यो, मारवणि विरतंत[3]।
भुंय अळगी नै भुंच नर, थळ नै भुरट अनंत ॥

नळ राजा आपरा खवास पासवानां सगळांहीनै बरजिया—ढोला नै मारवणि री दिस जणावौ मती। ढोला री सगाई माळवै करस्यां।

माळव देस सुहामणौ, जंह सुखिया सहलोक।
परणावीजै साल्ह नै, देसी सगळा थोक ॥
माळव देस सुहावणौ, भीमसेन भूपाळ।
माळवणि धी तसु तणि, सुन्दर नै सुकुमार ॥

माळव देस रै विखै भीमसेन राजा कनै नळ राजा परधांन मेल्हिया। तद परधांनां भीमसेन राजा नूं कह्यौ—राजा री कुंवरि नळ राजा मांगै छै। कंवर आपरी झोळियां[4] घालै छै। तद भीमसेन राजी हुवौ। आपरा कुटंब राजलोकां नै पूछी सावो थापियौ। सावो देनै आपरा परधांन साथै मेल्हिया तिकै आंण नळ राजा सूं मिळिया। सावो झिलायौ[5]। नळ राजा जांन करि चढ़ियौ। आय नै ढोला नै माळवणि परणाई।

माळव देसावर धणी, राजा भीम नरिंद[6]।
तासु तणी धी माळवणि, सुन्दर सिर मकरंद ॥
साल्हकुंवर रो नातरौ, कियौ मन आणंद।
मजणां में सोहै कुंवर, ज्यूं तारां में चंद ॥
खरचै अरथ गरथ घणा, पण पा इधकी प्रीत।
सारीखी दांई[7] बिना, चउटै नांही चीत ॥
हाथ मुकावण हाथियां, दीन्हा तिण सै पंच।
नगर पचास दिया वळे, अेराकी सै पंच ॥
ढोलो तिण परणावियौ, अणगळ दीधा हत्थ।
ढोलो अति सुख भोगवै, माळवणि रै सत्थ ॥

भीमसेन राजा आपरो बेटी ढोला नूं परणाई। घणो दत्त डायजौ ३०५ हाथी,

---

[1]अब [2]प्रकाशमान [3]व्रतांत [4]गोद [5]तय किया [6]राजा [7]जोड़ी।

पांच सौ घोड़ा, पचास नगर इतरा दे सीख[1] दीवी। नळ राजा ढोले नै परणाय घरे आया। माळवणि अति चतुर छै तिण सूं कंवरजी अति हेत राखै छै। महलांहीज रहै छै—

आया नळवर गढ़ हिवै, जोबन जोग प्रताप।
आया मन अति रंग सूं, सुख मांहे दिन जात॥
चतुरपणै लागी हिवै, ढोला सेती प्रीत।
लागौ रंग मजीठ ज्यूं, चतुरपणै बहु चीत॥
ढोलो माळवणि हिवै, करै कनहळ केळ।
ढोलो मनमांनी घणौ, माळवणि मनमेळ॥
सोळैज बरसां माळवि, कंतज बरसां बीस।
जोड़ी इसड़ी तो मिळै, जो तूठै जगदीस॥
हंसै विकसै माळवी, अर गळ लावै कंत।
ढोलो मोहित अति घणौ, दाड़िम जेहा दंत॥
माळवणि जांणै घणू[2], मारू माथै सल्ल[3]।
पिण ढोलो जांणै नहीं, बीद्धड़िया वेवल्ह॥
वैण न लोपै माळविण, इणनै खंडै नेह।
प्रीत वधारण सुखकरण, बलि मीठे वयणेह॥
नित नवळी मौजां करै, नित नित नवळी सेज।
ढोलो माळवण अेकठा, इधकै[4] इधकै हेज[5]॥
ढोलो मोहचौ[6] माळवि, ज्यूं मधुकर वयणेह।
बहु वां मन लागौ इसौ, सारीखै सयणेह॥

ढोलोजी माळवणि रै वसि हुवौ छै, तिण सूं माळवणि ऊपर मासू घणी रीस में छै।

अेक दिन रै समाजोग कंवरजी पण वारै पधारिया छै। खवास पासवानां मुजरो कियौ, तद माळवणि विचारियौ[7] आज तो मासू रै पगै लागण जावूं। ताहरां घणां अहंकार मांन सूं पगे लागण चाली। मासू माळवणि नै देख बोलती हुई—हूं तो अठा सूं परी ऊठस्यूं। माळवणि रो मुंहडौ[8] देखूं नहीं। पगे लगाड़ूं नहीं। तरै सास रा मुंहडा आगै दोय च्यार पुरुषती-वडेरी लुगायां[9] हुती, त्यां

---

[1]विदा [2]बहुत [3]शल्य [4]असाधारण [5]प्रेम [6]मोहित किया
[7]विचार किया [8]मुँह [9]स्त्रियाँ।

कह्यौ—थे गुनौ माफ करौ। पगे लागणदयौ। तद वांरौ कह्यौ मांनियौ। माळवणि आय पगे लागी। जद सासू बोली—कोई नहीं, अर कहण लागी—

गरव गहेली माळवण, कहियौ कोइक बोल।
मारवणि अळगी हुई, तद मोहयौ तैं ढोल॥

सासू आपरी सखियां नूं कहै लागी—बड़ी वहू मारवणि रो आंणौ करस्यां। इसौ सुण माळवणि सासू कन्हां[1] सूं मुरड़ि[2] परी ऊठी। माळवणि घरे जाय विचारियौ—सासू सुसरौ मो ऊपर गाढ़ा रीस में छै, सु मारवणि रो आंणौ करासी। म्हांरी दौड़ तौ कंवरजी तांई छै, सु हूं म्हारै जतन गाढ़ौ करूं।

तरै पाधरी कंवरजी री हजूर आई। कंवरजी ढोलिये बैठा छै। माळवणि आंण मुजरौ कियौ, तद कंवरजी हाथ पकड़ नै घणा आदर सूं माळवणि नै ढोलिये बैसाणी। पण माळवणि बेदल[3] घणी छै। तद कंवरजी पूछियौ—थे दिलगीर क्यूं? माळवणि बोली—हज आज मोनूं सखियां कहे लागी—तूं इतरौ सुहाग रो गरव करै सु तौने कंवरजी सुहाग रो कासूं[4] दीन्हौ? ढोलोजी बोलिया—थें फिकर मत करौ। कहस्यौ तिको देस्यां। थां उपरन्त[5] म्हांरै कांई छै। म्हारो जीव छै सोही म्हे थांनूं दीन्हौ छै। और ही थांरे जोईजे सो मांगौ। हूं थांनै देस्यूं। तद माळवणि बोली—आप देस्यौ पण सुसरोजी नहीं देसी। ढोलोजी बोलिया—मोनूं चावसी सु थांरो हुकम कोई लोपै नहीं। ताहरां माळवणि बोली—च्यारे दिस रा मारग म्हांनै सूंपीजै। डोढ़ी म्हांनै सूंपी जै। म्हारै बिगर[6] हुकम आपसूं कोई पगे लाग मिलण पावै नहीं। वळे डोढ़ीदार, खवास, पासवान, रावळीहजूर सारे ही म्हांराहीज रहै। इतरो कंवरजी कन्हां सूं मांगूं छूं।

कंवरजी इण बात रो कागद लिख दीन्हौ। कबूल कियौ। माळवणि आपरा इतबारी चाकर, भला भला ठावा मांणस आदमी सै दौड़ बुलाया। तिणां नै घोड़ा सिरपाव[7] धणौ द्रव दे राजी किया। पछै कितराहेक नै कह्यौ—थे आदमी चाळीस अथवा पचास तांई[8] तौ च्यारां ही कांनी नळवरगढ़ रा दरवाजां रहौ। कितराहेक नै डोढ़ियां राख्या। कितराहेक नै कंवरजी री हजूर राख्या। मांहिलां बारलां सै कोई नै कह्यौ—कोई पूंगळगढ़ था आदमी आवै तिण कन्है

---

[1]पास [2]गुस्से में बल खाकर [3]हताश [4]क्या [5]बढ़कर [6]बिना [7]पूरी पोसाक [8]तक।

मारवणि रो कागद होय तौ कागद खोस नै फाड़ नांखज्यौ अथवा म्हांनै पहुंचतौ करज्यौ। आदमियां नै मार नांखज्यौ। इसी भळांवण[1] दे, च्यार दरवाजां आदमी राख्या—

तिहां माळवग्ग राखिया, पीहर पोहरायत[2]।
पंथी जु पिंगळ गारगां, मारचा जावै नित्त॥

इण भांति माळवणि ढोलाजी नै वसि किया छै।

इतरा मांही नळवरगढ़ में अेक परदेसी घोड़ां रो सौदागर घोड़ा लेय नै आयौ छै। उणांरा घोड़ा घणा ढोलाजी लिया। नाहरां सौदागर माग पांच नळवरगढ़ मांहे रहचौ। उठा सूं पईसा घोड़ां रा चुकाय दिया तद सौदागर परो हालियौ। पूंगळगढ़ आंग[3] उतरियौ छै। अठै पिंगळ राजा घणी मनुहार करि राखियौ। घोड़ा दो च्यार मोल लिया। हिवै मारवणि री बात चालै छै।

जिम जिम घग्ग अमलां[4] कियां, तार चढ़ंती जाय।
तिम तिम मारवणी तग्गौ, तन तरग्गायौ[5] थाय॥
हंस गवग्ग कदळी सुजंघ, कटि केहरि जिम खीग्ग।
मुख ससहर खंजन नयग्ग, कुच श्रीफळ कंठ वीग्ग॥

मारवणि पदमणि, नै चंद्रमा सो वदन, अगलोचणी, हंस की सी गति, कटि सिंघ सरीखी छै। काया सोळमो सोनौ, मुख री सौरभ किस्तूरी जिसी छै। गात री सौरभ[6] चंदण सरीखी छै। नासिका जांणै सुवा री चांच तथा दीपक री सिखा सरीखी छै। पयोधर श्रीफळ जिसा। वांणी कोयल जिसी। दांत जाणै दाड़िम कुळी। वेणी जांणै नागणी। बांह जांणै चंपा री डाळ। अेजो सुपारी सी नै एगथळी स्यांन[7] री जीभ सरीखी छै। वळे मारवणि मांहे तौ अनेक गुण छै पण कवेस्वर कहै छै—अेकण जीभ करि कितराहेक गुण कहचा जाय। वळे मारवणि रै सातबीसी सहेल्यां छै तिके पण महा सुघड़ छै। त्यांसूं मारवणि बात विगत करनै दिन बितावै छै।

इसै समै मारवणि गांव सूं अध कोसेक बाग छै उठै खेलग्ग नै गई। उठै ही सौदागर उतरिया छै।

---

[1]भलावग्ग [2]पहरेदार [3]आकर [4]अधिकार [5]उभार पर [6]सौरभ [7]स्वान।

सांभ गमै सौदागरे, आ यण नयर उचार।
बैठा हंस तिण अवसरे[1], नयणां नीर निवार॥

सौदागर मारवणि नै महा अद्भुत देवंगना जिसी देखनै कहचौ—

सुन्दर सोहग सुन्दरी, अहर[2] अलता[3] रंग।
केहर लंकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरंग॥

वळे राखियां नै पूछियौ—

तिण देखत ही पूछियौ, कुण है राजकुमारि।
किह पीहर किह सासरौ, विगत कहौ सुविचारि॥

सहेलियां बोली—

कुवरि पिंगळ राव री, मारवणि इण नांम।
नळवरगढ़ ढोले कुवर, परणी पोहकर[4] ठांम॥
बात सुणी सौदागरे, जाण्यौ सर्व वृतांत।
बाळपणे परण्यां विन्हे[5], अन्तर पड़चौ अनन्त॥

फर सौदागर कहयौ—

सौ जोयण जे मेल्हिया, ढोले कुंवर तुम्हां।
को अवगुण थां गोरड़ी, विध दाखवौ[6] अम्हां॥
सिन्ध परै सौ जोयणा[7] झिळमिळ वीजळियांह।
ढोलो नरवर सैरियां[8] मरवण पुंगळियांह॥

इतरा मांहे सखियां बोली—सौदागरजी, थे कठासूं पधारिया छौ? ताहरां सौदागर बोल्यौ—हूं नळवरगढ़ घोड़ा बेचण गयौ छौ. उठै महीना पांच-सात रहचौ। ढोलेजी म्हांरा घोड़ा लिया। सोसूं घणी महरवानगी करै छै। म्हारै भाई हुवा छै। तद सहेलियां बोली—उठा री म्हांने हकीकत तौ कहौ। कासूं रंग-ढंग छै? इतरै सौदागर नळवरगढ़ री हकीकत कहै छै।

इतरै समै[9] पिंगळ राजा रो खवास घोड़ो फेरवा[10] सारूं आंण निसरियौ[11] सु ऊ पण वैस गयौ। मारवणि छांनैसी बातां सांभळै[12] छै। सौदागर बोल्यौ—ढोलाजी तौ भीमसेन राजा री बेटी माळवणि परणियौ छै, तिण रै वस[13] घणौ

[1]अवसर पर [2]अधर [3]लाल [4]पुष्कर [5]दोनों [6]कहो [7]योजनों पर [8]शहर में [9]समय [10]टहलाने [11]निकला [12]सुनती है [13]वश में।

छै। च्यारां ही दरवाजां आपरा आदमी राख्या छै। खवास ढोलाजी कनै आपरा पीहर रा राख्या छै। डोढ़ियां आदमी आपरा पीहर रा छै। अठा सूं आदमी मेल्हौ छै जिको तौ नळवरगढ़ में ही धसण[1] पावै नहीं। कागळ[2] खोण लेवै सु तौ माळवणि नै जाय सूंपै अर आदमी नै मारनांखै छै।

आ हकीकत सुणि राजा रै खवास राजा री हजूर कही। ताहरां पिंगळ राजा सौदागर नै बुलाय सारा समंचार पूछिया। सौदागर सारा ही कहचा। वळे सौदागर बोल्यौ—कंवर मोटौ दातार, कामदेव रो अवतार छै। आपरी बेटी पण पदमणी छै। इतरी हकीकत सुण सौदागर नूं सीख दीवी। पिंगळ राजा रै मन में चिन्ता घणी छै—

सौदागर संदेसड़ा, सांमळिया श्रवणेह।
मारवणि मनमथ हुई, मूक्यौ[3] जळ नयणेह॥
सबै सहेली साथ करि, घरि आवै मैमंत[4]।
स्यामा[5] श्रावण सालियौ, चलै न चाहौ चित्त॥

मारवणि विरह री मैमंत हुई थकी सखियां साथै चाली आवै छै। इसै समै उतराद री घटा हुती तिण मांहे मेह गाजियौ। तद मारू बोली—

वीजळियां निलज्जियां[6], जळहर तूंही लज्जि।
सूनी सेज विदेस पिव, मुधरइ मुधरइ गज्जि॥

इतरै वीज[7] खिवी[8] ताहरां वीज नै दूहो कहचौ—

वीजुळियां चहळावहळि, आभइ आभइ अेक।
कदी मिळूं उण साहिबा, कर काजळ की रेख॥
वीजुळियां चहळावहळि, आभइ आभइ च्यारि।
कद रे मिलूंली सज्जणा, लांबी बांह पसारि॥

इतरी बात करती थकी, विरह-मैमंत हुई मारू घर आई। पण सखियां सूं बात विगत करै नहीं। मन मांही कुंवरजी बस रहचा छै सु रातै सूतां गणनो लाधौ—जांणै कंवरजी आण मिळिया छै। जागी जद देखै तौ क्यूंही नहीं। जद मारू अेकण सहेली नूं कहै—

---

[1]घुसने [2]कागज [3]ढलकाये [4]विभोर [5]स्यामा [6]निर्लज्ज [7]बिजली [8]चमकी।

जांगूं हूं हिवड़ै हुवौ, सैंगां हूंदो[1] साथ।
जे सुपनौ सांचौ हुवै, तौ घालूं गळ बाथ॥

सुहिणा[2] आया फिर गया, मैं सर भरिया रोय।
आय सुहागण नींदड़ी, सजना देखूं सोय॥

जद जागूं तद अेकली, जद सोऊं तद बेल[3]।
सुपना मोनै छेतरी[4], बीजी तीजी हेल॥

सुपना तौ मोनै दही[5], तोनै दहज्यौ अग्ग।
सौ कोसां सज्जण वसै, सूती थी गळ लग्ग॥

सुपना में सज्जण मिळ्या, मैं भर घाली बत्थ।
नींद गई पिउ बीछड़्या, जागत पटकूं हत्थ॥

जब सोऊं तब जागवै, जब जागूं तब जाय।
मारू ढोलो संभरै[6], इण पण रयण विहाय॥

सहियां सोइ विदेस पिव, तन हि न जावै ताप।
बावहिया[7] आसाढ़ जिम, विरहण करै विलाप॥

सौ जोजण[8] सज्जण वसै, रैण सतावै आय।
इण परदेसी वल्लहै[9], खरी सताई माय॥

सपनै सज्जण पाइया, हूं सूती गळ लाय।
और न खोलूं अंखड़ी, मत सज्जण फिर जाय॥

सखी सहेजां मांणसां[10], सुपनां पिव मिळियांह।
फिट रै नयण कुलक्खणा, जागी नै गमियाह[11]॥

मारवणि सखियां नै पूछै—

मारवणि सखियां कहै, मो परणाई केथ।
पीव कठै जांणां नहीं, हूं अेकलड़ी अेथ॥

इतरा विलाप करण लागी तद सहेल्यां बोली—

इक म्हां मन इचरज[12] हुवौ, सांभळ[13] बात सप्रेम।
त्यां अणदीठा[14] सज्जणां, क्यूं कर लागौ प्रेम॥

---

[1] का [2]सपना [3]दो [4]छली [5]जलाई [6]याद करती है
[7]पपीहा [8]योजन [9]वल्लभ [10]आनन्द लूटेंगे [11]खोगये [12]आश्चर्य
[13]सुनो [14]अनदेखे।

सगळी सखियां मारू नै कहै लागी—बाईजी थांनै विनां देख्यां प्रेम उलटियौ सु कांई जांणीजै ? परणिया जद तौ बरस डोढ़ रा छा। कंवरजी तीन बरस रा छा। वीवाह थाळी मांहे हुवौ छौ सु थांनै याद ही आवै नहीं। कंवरजी नूं पिछांणौ[1] ही नहीं, अर प्रेम इतरो लगायौ छै। थे रात दिन कंवरजी रो समरण[2] करौ छौ। अेक पल भूलौ न छौ सु म्हांनै घणौ इचरज हुवै।

सखियां आखै[3] मारवी, तूं मन निहचै[4] राख।
आळजंजाळ[5] मत करै, म्हांस् मांची आख॥

तद मारू बोली—थे अणदीठां री बात कही सु मांची, पण सिंघ रा बच्चा नूं हाथी मारणा कुण सिखावै छै ? अर थे कांई और बात मन में विचारता होस्यौ पण म्हारै तौ मन अेक निकेवळ[6] ध्यांन कंवरजी रो हीज छै। कंवरजी री सूरत म्हांरा हिरदा में वस रही छै। रात सूती नै कंवरजी आंण जगावै छै। रात-रात भर नींद आवै नहीं। म्हांरी खोड़[7] तौ अठै छै अर जीव नळवरगढ़ में छै। थे धीरज बंधावौ सु म्हे बात जांणां छां। पण मन कंवरजी सूं मिलण नै घणौ आखतौ[8] पड़ै छै।

सखी थे सज्जण वल्लहा, जे अणदीठा तोय।
पल पल भीतर संभरै[9], न विसरै खिण कोय॥
स सनेही समदां परै, वसै जु हीय मझार।
कु सनेही घर आंगणै, सात समंदां पार॥
जे जीवण ज्यांही तणौ, सो ज्यां चित्त बसंत।
धारा दूध पयोहरां, क्यूं बाळक चूघंत॥

यूं विलाप करतां रात नीठ[10] काढ़ी। परभात रै समै सखियां जाय रांणी देवड़ी आगे मारवणि री सारी हकीकत कही—

सखियां रांणी सूं सकळ, विवराये[11] सहनांणि।
साल्हकुंवर सुपनै मिळै, पदमण अंग कुमलांणि॥
ढोला सूं सुपनै मिळै, मारू चित्त उदास।
कागद वेगा मोकळौ[12], खबर मंगावौ जास॥

---

[1]पहिचानते [2]स्मरण [3]कहती हैं [4]निश्चिन्त [5]टालमटोल
[6]केवल मात्र [7]शरीर [8]उतावला [9]याद करती है [10]मुश्किल से
[11]वर्णन किया [12]भेजो।

अवै रांणी सखियां गोढ़ै आई। तरै समाचार सांभळ[1] नै सखियां नूं पाछौ कहै लागी—ढोलोजी तो माळवणि रै वस छै मु माळवणि मारग आपरै वसि कीना छै। आपणौ कासीद जाय तिको मारियौ जाय छै। मैं तौ कागळ समाचार घणा ही मेल्या पण पाछौ कोई आवै नहीं। वळे आदमी मेल्हूं जिका मरण सं डरता जाय कोई नहीं।

पूंगळ थी नित परठिया[2], ढोले निरत न होय।
माळवणी मारै तिहां, पूगळ पथी कोय॥
वाट न कोई बहि सकै, रूंधा घाट खळांह[3]।
नळवरगढ पहुंचै नही, संदेसा सयणांह॥

वळे रांणी सखियां नै कहै—

रांणी सखियां नै कहै, सुण वातड़ी समद्ध।
समझाई राखौ सवै, मारू महिलां मद्ध॥

सखियां पाछी मारवणि कन्है आई। पाछा सू राणी वळे आदमी मेल्यौ—ढोलाजी कन्है। साथे कागद दीन्हौ, तिण मांहे घणी मनुहार लिखी। कासीद[4] नळवरगढ़ जाय पहुंतो[5]। तद माळवणि रा आदमियां कासीद नूं मार नांखियौ। कागद लेजाय माळवणि नै सूंप्यौ, तिण कागद बांच फाड़ नांखियौ। आदमियां नूं सिरपाव दियौ। यूं करतां बरस बीतौ पण ढोलाजी तांई कागद कोई पहुंतो नहीं। अेक दिन रै समाजोग तिखंडिये महल मारवणिजी पोढिया छै। इतरै पपीहो बोल्यौ, तिण नूं कहै लागी—

काम जगावण पिय कहण, बोल न बाबहियाह[6]।
हूं छूं चाकर गोरड़ी, कहि प्रिय आवण काह॥

सखियां भो परदेस पिव, तन ही न जावे ताप।
बाबहिया आसाढ़ जिम, विरहण करें विलाप॥

बाबहिया नै विरहणी, यां बिहुं अेक सभाव।
जब ही बरसै घन घणौ, तबहि कहै पिव आव॥

बाबहिया डूंगर दहण[7], छंडि हमारो गांव।
मारी रात पुकारियौ, ले ले पिव को नांव॥

---

[1]सुनकर [2]भेजे [3]दुश्मनों से [4]पत्रवाहक [5]पहुंचा [6]पपीहा [7]जलाने वाला।

बाबहिया नील पंखिया, मगर[1] ज काळी रेह ।
मत पावस सुणि विरहणी, तलफ तलफ जिव देह ॥

बाबहिया चढ़ि डूंगरे, चढ़ि ऊंचे री पाज ।
मत ही साहिब बाहुड़ै, सुण मेहां की गाज ॥

विलापात करतां करतां मारवणि नूं घड़ी दो मींट लागी छै । इसै समै सर मांहे कुरभां बोली । तद मारू जाग नै कुरभां सूं बोली—

कुरभड़ियां कुरळाइयां[2], घरि पाछिले दरंग[3] ।
मूती मज्जण संभरया[4], करवत बूही अंग ॥

कुरभड़ियां कलिअळ किसै, सरवर पहली तीर ।
निमि भर मज्जण मल्लियां, नयणे वूहा नीर ॥

सखियां कुरभां नै कहै छै—म्हारी बाईजी थांनै ओळंभो[5] देवै छै । थे अबोली रहौ । मारू नै थांरो साद ओरमो[6] लागै छै । थे रात नै क्यूं कुरळौ छौ । थांरा भरतार[7] तौ कन्है छै । बीजी थांनै किण बात री चाह छै सु थे कुरळौ ? म्हांरी बाई नै थांरो साद सुणियां विरह उलटै छै, जद थानै ओळंभा देवै छै । इतरौ सुण कुरभां बोली—

जुरा झंप जोबन खिसै, घटै ज नवळो नेह ।
अेक दिहाड़ै[8] सज्जणा, जम करसी जुध अेह ॥

मारू बोली—

रातै सारस कुरळिया, गाजि रहे सब ताल ।
जांकी जोड़ी बीछड़ै, ताको कूण हवाल ॥

वळे मारू कुरभां नै कहै लागी—

कुरभड़ियां द्यौ पांखड़ी, थांकउ विनउ वहेसि ।
सायर लंघी[9] प्री मिळउ, प्री मिळि पाछी देसि ॥

म्हे कुरभां महिरांण री, पांखां किणहि न देसि ।
भरिया सर देखी रहां, उड आघेरि[10] वहेसि ॥

---

[1]पीठ पर [2]करुण स्वर में बोलने पर [3]पानी के गड्ढे पर [4]याद किया
[5]उपालंभ [6]अनखावना, विरह-व्यथा जगाने वाला [7]पति [8]दिन
[9]लांघकर [10]बहुत दूर ।

आथमगी[1] उपराठियां, दिक्खण सांमहियांह[2] ।
अेक संदेसो कुरभड़ी, ढोला नूं कहियांह ॥
मारूस हवां त मुख चवां[3], म्हे छां कूभड़ियांह ।
पिव संदेसो पाठविसु, लिखदे पांखड़ियांह ॥
पांखे पांगी थांहरइ, जळि काजळ गहिळाइ ।
सयणां तणा संदेसड़ा, मुख वचने कहिवाइ ॥

इतरा दूहां विलापात रा मारवणि कहिया तिके ऊमा देवड़ी सरव सुण्या । सुण नै पिंगळ राजा आगे जाय हकीकत कही—

गहि प्रियतम संदेसड़ा, मारवणि कहियाह ।
माता मन में जाणियौ, विरह वियाप थियाह ॥
रांणी ऊमा सांभळचा[4], मारू तणा ज वैण ।
ऊमा मन में जांणियौ, मारू मेलूं मैण ॥
आखै ऊमा देवड़ी, सांभळ पिंगळ राव ।
विरह वियापी[5] मारवी, नहिं राखण रै दाव ॥

ऊमा देवड़ी राजा पिंगळ नै सारी हकीकत कही । ताहरां राजा पिंगळ बोल्यौ—

नित नित नवळा सांडियां, नित नित नवळा साज ।
पिंगळ राजा पाठवै, ढोला तेड़ण काज ॥
उहां था इथ आवै नहीं, इहां का उथ न जाय ।
ढोला-मारु संदेसड़ा, बीच बटाऊ[6] खाय ॥

पिंगळ राजा ऊमा देवड़ी नै कहण लागौ—करां कांई, आदमी तौ घणा ही मेल्हिया[7] पण पाछौ कोई आयौ नहीं । सारा ही मारिया गया ।

राजाजी घणा दलगीर थका बैठा छै, तरै रांणी बोली—मैं तौ आपनै कह्यौ छौ—इतरी अळगी[8] मत द्यौ । तद राजा बोलियौ—सू तौ पार पड़ी पण अबै थे कहौ तौ भीमसेन पुरोहित नै मेल्हां[9] । रांणी बोली—भली बात छै, मेल्हौ । तद भीमसेन पुरोहित नूं हजूर बुलाय नै राजा कह्यौ—पुरोहितजी, थे नळवर-गढ़ पधारौ । कंवर नै बुलाय ल्यावौ । ताहरां पुरोहित कह्यौ—प्रमांण ऊंचा लेस्यूं । इतरा मांहे मारवणि री अेक सहेली सुणती हुती तिण आय मारवणि नै कह्यौ—

---

[1]पश्चिम [2]सामने, तरफ [3]कहें [4]सुने [5]व्याप्त हुई [6]बटोही [7]भेजे [8]दूर [9]भेजें ।

वालंभ[1] अेक हिलोर दे, आइ सकई तौ आइ ।
बांहड़ियां बे थकियां, काग उडाइ उडाइ ॥

हिवै ढाढ़ी पूंगळगढ़ सूं चालिया छै । पोहर रात गयां ऊहड़ सोळंखी रै गांव आण उतरिया छै । पछै डेरौ कर, दोन्यूं भाई सुभराज करण नै ऊहड़ सोळंखी रै दरबार गया । उठै जाय सुभराज कियौ । उरली-पैली बात करनै पूछियौ—ठाकरां, राजरा गांव सूं नळवरगढ़ कितरा कोस छै ? ऊहड़ बोलियौ—थांरै नळवरगढ़ कासूं काम छै । तद ढाढ़ी बोलिया—राजा नळ बड़ौ दातार छै, तिण नै जाचवा जावां छां । ताहरां ऊहड़ बोलियौ—जाचण जावौ छौ सु म्हांनै मालम छै । अर थे म्हासूं डरो मती । म्हे थानूं नळवरगढ़ रा मारग समाचार कहस्यां ।

जाचिग[2] जाचण हालिया[3], ऊहड़ सांम्हा तोय ।
उणरै अेसी गोरड़ी, जाण न पावै कोय ॥
थे जावौ छौ नळवरे, ढाढ़ी सुणा ज बात ।
माळवणी चौकी रहै, पंथियां करै ज घात ॥

मारा ही नळवरगढ़ रा समाचार ऊहड़ सोळंखी ढाढ़ियां नै कहचा । माळवणि री चौकी[4] रहै छै तिकी सारी हकीकत कही । ढाढ़ियां नै घणौ आदर दीन्हौ । सखरी जायगां डेरौ दिरायौ । ढाढ़ी रातै उठै रहचा । परभात ही डेरौ लाद ऊहड़ सोळंखी कन्है आया । आय नै सुभराज कियौ—

ऊहड़ मोटौ राजवी, सोळंखी सिरताज ।
थांसू मिळियां मन महे, आणंद हुआ ज आज ॥

ऊहड़ कनां सूं सीख मांग ढाढ़ी आगा चालिया छै । मारवणि पूगळ बैठी दिन गिणै छै । ढोला री वाट देखै छै । नितका[5] काग-मोर उडावै छै । एक दिन रै समाजोग[6] परभात ही मारवणि ऊठ झरोखै बैठी छै । इण समै काग आंण मोड़ै[7] बोलियौ । ताहरां मारवणि बोली—कंवरजी पधारै तौ उडज्या । इण भांत थाकी काग-मोर उडावै छै । वळै काग नै कहै छै—

कागा पीव न आवियौ, कियौ बडेरो चित्त ।
लकड़ी होय त दांय जळि, हूं अेकलड़ी नित्त ॥

---

[1]प्रिय [2]याचक [3]चले [4]पहरा [5]हर रोज [6]इत्तफाक [7]दरवाजे पर ।

कागा जेथां पिव वसै, उडी तिहां चलि जाय।
ले मारू की पांमळी[1], ढोला देखत खाय॥

मारवणि वायस सूं इण भांति विलापात करै छै। ढाढ़ी ऊहड़ सोळंखी नखे[2] सूं चालिया हुता सो कितराहेक दिनां में नळवरगढ़ जा पहुंता।

आगै दरवाजां चौकीदार बैठा छै त्यां सूं ढाढ़ियां रै धकौ[3] हुवौ। चौकीदार मार–मार ऊठिया। तद दोनूं भाई ढाढ़ी अर पांच सात चाकर हुता तिकै तरवार ढाल तीर कांबठा उभारचा[4]। वळे कहण लागा—ठाकर पधारौ छौ तिणहीज भांत पधारज्यौ। तरै वां पण जांणियौ—अवै तो सरीखीज[5] बाजै। ताहरां चौकीदारां मांहे अेक दांनौ[6] आदमी हुतौ, तिकौ कहण लागौ—इणां नूं हकीकत पूछ खानाजंगी[7] करौ। ताहरां चौकीदार पूछण लागा—थे कठाती आया? कठै जास्यौ? तद ढाढ़ियां कहचौ—देस मांहे राजा नळ नूं जाचण आया छां। म्हे यूं जांणता कै राजा मांगण आवै त्यांनै मरावै छै, तौ कोई आवता नहीं। तद चौकीदार बोलिया—थे पुंगळगढ़ रहौ छौ, मारवणि रा समाचार ल्याया छौ तौ आंपणै बाधौ[8] होसी। ताहरां ढाढ़ी बोलिया—म्हे तौ पिंगळगढ़ को दीठौ, न सुणियौ, न कोई मारू नै ओळखां[9]। थे भला रजपूत होय इसी बात कासूं कहौ? चौकीदारां ढाढ़ियां नै ऊंचा नीचा घणा ही लिया पण ढाढ़ी मधीर[10] रहचा। पछै चौकीदारां ढाढ़ियां रौ सगळौ डेरो भांत–भांत कर पांच सात वार उथळ-पुथळ दीठौ तौ ही कागद कोई निजर आयौ नहीं। तद ढाढ़ी बोलिया—बडा रजपूतां म्हे तौ जाचण आया छां। म्हां कनै क्यांरा कागद होसी। बेकांम म्हांमें फोड़ा[11] क्यूं पाड़ौ। ताहरां ढाढ़ियां नै छोड दीन्हा। वळे कहण लागा—कागद ल्यावसी सु अेकलौ आवसी, इतरा क्यांनै आवसी। पछै ढाढ़ियां आपरै किसब[12] सूं गाय-बजाय गाढ़ा राजो किया। तद चौकीदारां ढाढ़ियां नै उठै राखिया। अेक रात घणा हीड़ा[13] किया। सहर री पण सारो हकीकत कही—च्यार दरवाजा छै, वे तौ मारवणि री चौकी छै। उठै थां सूं खेचल[14] करसी। अेक बारी छै—उत्तर दिस नूं बाल्हा कुंआरी रा घर कन्है।

[1]पसली [2]पास [3]टक्कर [4]बाहर निकाले, संभाले [5]बराबरी का झगड़ा [6]बूढ़ा, पुराना [7]झगड़ा-फिसाद [8]झगड़ा [9]पहिचानते हैं [10]दृढ [11]तकलीफ [12]हुनर [13]बेगार [14]छेड-छाड।

11.29

वालंभ[1] अेक हिलोर दे, आइ सकई तौ आइ ।
बांहड़ियां बे थक्कियां, काग उडाइ उडाइ ॥

हिवै ढाढ़ी पूंगळगढ़ सूं चालिया छै । पोहर रात गयां ऊहड़ सोळंखी रै गांव आण उतरिया छै । पछै डेरौ कर, दोन्यू भाई सुभराज करण नै ऊहड़ सोळंखी रै दरबार गया । उठै जाय सुभराज कियौ । उरली-पैली बात करनै पूछियौ—ठाकरां, राजरा गांव सू नळवरगढ़ कितरा कोस छै ? ऊहड़ बोलियौ—थांरै नळवरगढ़ कासूं काम छै । तद ढाढ़ी बोलिया—राजा नळ बड़ौ दातार छै, तिरा नै जाचवा जावां छां । ताहरां ऊहड़ बोलियौ—जाचण जावौ छौ सु म्हांनै मालम छै । अर थे म्हासूं डरो मती । म्हे थानूं नळवरगढ़ रा मारा समाचार कहस्यां ।

जाचिग[2] जाचण हालिया[3], ऊहड़ सांम्हा तोय ।
उणरै अेसी गोरड़ी, जाण न पावै कोय ॥
थे जावौ छौ नळवरे, ढाढ़ी सुणां ज बात ।
माळवणी चौकी रहै, पंथियां करै ज घात ॥

मारा ही नळवरगढ़ रा समाचार ऊहड़ सोळंखी ढाढ़ियां नै कहचा । माळवणि री चौकी[4] रहै छै तिकी मारी हकीकत कही । ढाढ़ियां नै घणौ आदर दीन्हौ । मखरी जायगां डेरौ दिरायौ । ढाढ़ी रातै उठै रहचा । परभात ही डेरौ लाद ऊहड़ सोळंखी कन्है आया । आय नै सुभराज कियौ—

ऊहड़ मोटौ राजवी, सोळंखी सिरताज ।
थांसू मिळियां मन महे, आणंद हुआ ज आज ॥

ऊहड़ कनां सूं सीख मांग ढाढ़ी आगा चालिया छै । मारवणि पूगळ बैठी दिन गिणै छै । ढोला री वाट देखै छै । नितका[5] काग-मोर उडावै छै । एक दिन रै समाजोग[6] परभात ही मारवणि ऊठ झरोखै बैठी छै । इण समै काग आंगा मोड़ै[7] बोलियौ । ताहरां मारवणि बोली—कंवरजी पधारै तौ उडज्या । इण भांत थाकी काग-मोर उडावै छै । वळै काग नै कहै छै—

कागा पीव न आवियौ, कियौ बडेरो चित्त ।
लकड़ी होय त दोय जळि, हूं अेकलड़ी नित्त ॥

---

[1]प्रिय [2]याचक [3]चले [4]पहरा [5]हर रोज [6]इत्तफाक [7]दरवाजे पर ।

कागा जेथां पिव बसै, उडी तिहां चलि जाय।
ले मारू की पांसळी[1], ढोला देखत खाय॥

मारवणि वायम सूं इण भांति विलापात करै छै। ढाढ़ी ऊहड़ सोळंखी नखे[2] सूं चालिया हुता सो कितराहेक दिनां में नळवरगढ़ जा पहुंता।

आगै दरवाजां चौकीदार बैठा छै त्यां सूं ढाढ़ियां रै धकौ[3] हुवौ। चौकीदार मार—मार ऊठिया। तद दोनूं भाई ढाढ़ी अर पांच सात चाकर हुता तिकै तरवार ढाल तीर कांबठा उभारचा[4]। वळे कहण लागा—ठाकर पधारौ छौ तिणहीज भांत पधारज्यौ। तरै वां पण जांगियौ—अबै तो सरीखीज[5] बाजै। ताहरां चौकीदारां मांहे अेक दांनौ[6] आदमी हुतौ, तिकौ कहण लागौ—इणां नूं हकीकत पूछ खानाजंगी[7] करौ। ताहरां चौकीदार पूछण लागा—थे कठाती आया? कठै जास्यौ? तद ढाढ़ियां कहचौ—देस मांहे राजा नळ नूं जाचग आया छां। म्हे यूं जांगता कै राजा मांगण आवै त्यांनै मरावै छै, तौ कोई आवता नहीं। तद चौकीदार बोलिया—थे पुंगळगढ़ रहौ छौ, मारवणि रा समाचार ल्याया छौ तौ आंपणै बाधौ[8] होसी। ताहरां ढाढ़ी बोलिया—म्हे तौ पिंगळगढ़ को दीठौ, न सुणियौ, न कोई मारू नै ओळखां[9]। थे भला रजपूत होय इसी वात कासू कहौ? चौकीदारां ढाढ़ियां नै ऊंचा नीचा घणा ही लिया पण ढाढ़ी मधीर[10] रहचा। पछै चौकीदारां ढाढ़ियां रौ सगळौ डेरो भांत—भांत कर पांच सात बार उथळ-पुथळ दीठौ तौ ही कागद कोई निजर आयौ नहीं। तद ढाढ़ी बोलिया—बडा रजपूतां म्हे तौ जाचण आया छां। म्हां कनै क्यांरा कागद होसी। बेकाम म्हांमें फोड़ा[11] क्यूं पाड़ौ। ताहरां ढाढ़ियां नै छोड दीन्हा। वळे कहण लागा—कागद ल्यावसी सु अेकलौ आवसी, इतरा क्यांनै आवसी। पछै ढाढ़ियां आपरै किसब[12] सूं गाय-बजाय गाढ़ा राजी किया। तद चौकीदारां ढाढ़ियां नै उठै राखिया। अेक रात घणा हीड़ा[13] किया। सहर री पण सारो हकीकत कही—च्यार दरवाजा छै, वे तौ मारवणि री चौकी छै। उठै थां सूं खेचल[14] करसी। अेक बारी छै—उत्तर दिस नूं वाल्हा कुंवारी रा घर कन्है।

---

[1]पसली [2]पास [3]टक्कर [4]बाहर निकाले, संभाले [5]बराबरी का झगड़ा [6]बूढ़ा, पुराना [7]झगड़ा-फिसाद [8]झगड़ा [9]पहिचानते हैं [10]दृढ़ [11]तकलीफ [12]हुनर [13]बेगार [14]छेड़-छाड़।

उठै उणरो जादतौ छै सु उणनै थे राजी कर लीज्यौ। इतरी हकीकत सुण राजी हुवा। परभाते[1] चालिया सु सोच करता जाय छै। गढ़ री झांकी[2] छै तठै गया। कुंभारी न्याव[3] पचावर्ती[4] हुती तठै ढाढ़ी जाय कहचौ—बाई अठै म्हांनै आछीसी जायगां डेरा नै बतावौ। कुंभारी बोली—थे मारू रा समाचार ल्याया छौ। ताहरां दूजो भाई बोलियौ—म्हे तो जांणां नहीं मारू कुण छै, कठै बसै छै? वळे हाथ सूं अेक मोहर कुंभारी नूं देवण लागौ। वा बोली कांई छै? ढाढ़ी कहचौ पछै देख लेई। कुंभारी देखै तौ मोहर छै। तरै घणी राजी हुई। कुंभारी रो घर दरवार कन्है हिज छै। तठै कुंभारी ढाढ़ियां नै ले गई। ले जाय आछी जायगा डेरौ दिरायौ—

कूड़ कपट मन केळवी, आया नळवर देस।
नळवर कुंवर भेटस्यां, मन में चिंत असेस॥

ढाढ़ियां कुंभारी नूं कहचौ—बाई ढोलाजी री हजूर माळवणि न होय जद तूं म्हांनै खबर दीजै। कुंभारी बोली—माळवणि न होय जद क्यूं? तद ढाढ़ियां कहचौ—लुगाई नै मुजरो नहीं करण रो म्हांरै नेम[5] छै। तठा पछै बाल्हा कुंभारी रो भांणजो डोढ़ियां रहण लागौ।

अेक दिन रै समै माळवणि नवबीसी सहेल्यां साथै लेय नै बाग मांहे खेलण नूं गई छै। तद कंवरजी बारै पधारिया। ताहरां खवास पासवानां सगळां आंणि मुजरो कियौ। कंवरजी दरीखांनै[6] बैठा छै। इसे समै कुंभारी रै भांणेज आंण ढाढ़ियां नै कहचौ—थे औसर चावै छा तिकौ अवार छै। कंवरजी दरीखांनै आया छै। इसौ सुण ढाढ़ियां सिरपाव पहरिया। बीण सरू कर मुजरा नै चालिया। ढाढ़ियां जाय दरवान नै खमाहै कहवायौ—बारै ढाढ़ी ऊभा छै। कंवरजी कहचौ—हजूर आवै। पछै ढाढ़ियां आय नै सुभराज कियौ। कंवरजी फुरमायौ—हेटा बैठौ। पछै कंवरजी फुरमायौ—गावौ। ताहरां ढाढ़ियां मारवणि रा संदेसा रा दूहा मारू राग मांहे गाया।

ढाढ़ी गाया निसह भरि, सुणियौ साल्ह सुजांण।
ओछै पांणी मच्छ ज्यूं, वेलत थयउ विहाण[7]॥

---

[1]प्रभात में [2]राजा के दर्शन देने का स्थान [3]आवा [4]पकाती [5]पण [6]बैठक [7]सवेरा।

ढाढ़ियां संदेसा रा दूहा पोहर दिन छतां गावणा मांडिया छा सु गावतां गावतां आधी रात गई। जद कंवरजी नै तौ व्याळू तांई रसोड़ै बुलाया। ढाढ़ियां नै सीख दीवी। जा'ब पूछियौ कोई नहीं। ढाढ़ियां साथै बुनियादी आगलौ चाकर छौ तिण नै मेल्हियौ—इणांरी जबता खावण-पीवण री, मांचा बोजा री सारी ही थारै हवालै छै। घणा जतन करजै। इतरी कहि आप रसोड़ै आरोगण पधारिया। सै कोई उमरावां नै पण आप कन्है बैसांणिया। आपरै थाळ आयौ। सह कोई सिरदारां नै थाळी आई। यूं आरोगतां मतवाळ करतां रात पाछली पोहर अेक आय रही। कंवरजी घणा दिनां सूं बारे पधारिया छै सु सै कोई उमराव लोक मुजरे आंण भेळा हुवा छै। सै कोई साथ बातां-विगतां करतां रात वतीत हुई। कंवरजी पण रात नीठ नीठ काढ़ी। मन में अचंभौ छै। देखां ढाढ़ियां नै पूछूं—अेड़ा ढोलो मारवणि कुण हुवा छै।

पौ फाटी दी ऊगियौ, आया पूछण वत्त।
कहौ ज तिण की वारता, जिणकी गाया रत्त॥
कवण देस तैं आविया, किहां तुम्हारो वास।
कुण ढोलो कुण मारवी, राति मल्हाया जास॥

तद ढाढ़ी कहै लागा—

पूंगळ हूंता आविया, पूंगळ म्हांकौ वास।
पिंगळ राजा तास धू, मेल्या थांकै पास॥
मारवणी पिंगळ सु धू, अपछर रै उणिहार।
बाळपणै परणी पछै, भूल न लीन्ही सार॥
संदेसे ही घर भरचा, कइ आंगण कइ वार।
अवसि ज लागा दीहड़ा[1], सेइ गिणइ गंवार॥

ताहरां ढोलाजी बोलिया—आ हकीकत ब्योरा सूं कहौ। ढाढ़ी बोलिया—कंवरजी म्हांरी तौ कहण री आसंग[2] कोयनी। आपरा उमराव, खवास, पासवान साराही जांणै छै। यांनै पूछौ। ताहरां ढोलाजी सह कोई नै पूछियौ। मारवणि सूं डरता कोई बोलै नहीं। सह कोई कहण लागा—ढाढ़ियां नै हिज पूछौ। वळे ढोलेजी कहचौ—ढाढ़ियां थे हिज कहौ। ढाढ़ी बोलिया—कंवरजी कहां तौ मारिया जावां। ढोलोजी बोलिया—थांनै किण रो डर छै? वळे

[1]दिन [2]हिम्मत।

बांरा[1] जावता नै कंवरजी आपरा चाकरां नै ढाढ़ियां दोळा[2] राख्या। ताहरां ढाढ़ी बोलिया—पूंगळनगर रो धणी पिंगळ राजा, तिण री बेटी मारवणि उणरा मेल्या म्हे अठै आया छां। वळे ढाढ़ी कहण लागा—

चंद मुखी हंसा गवणि, कोमल दीरघ केस।
कंचन वरणी कांमणी, वेगौ[3] आव मिळेस[4] ॥

तद ढोलाजी रै मन भाव ऊपनौ—

ढोले मन आरित[5] हुई, सांभळि अे विरतंत।
जे दिन मारू विण गया, दई[6] न ग्यांन गिणंत ॥

ढोलोजी आ हकीकत सुण गाढ़ा राजी हुवा। वळे कहण लागा—बांरा हाथ रो कागद छै? ताहरां ढोलियां कहयौ—हूंगी, राज बांचस्यौ? तद कंवरजी ढाढ़ियां नै घणौ सनमांन दीधौ।

राजा घण आदर दियौ, पूछी कुसळ खेम।
संदासा सुणियां पछै, हिवड़ौ[7] थयौ ज हेम ॥

वळे ढोलाजी पूछियौ—मारवणि रूड़ी[8] छै? ताहरां ढाढ़ी बोलियौ—

धन दिहाड़ौ धन घड़ी, धन महूर[9] धन वार।
मुखलीणी सुन्दर तणी, साहिब पूछी सार ॥

वळे ढोलाजी पूछियौ—मारवणि किमीहेक छै? ताहरां ढाढ़ियां कहयौ—

मगर चाल विसेख किय, वामा हंस वखांण।
मारू ज्यां निरखी नहीं, ज्यांही जनम प्रमांण ॥

हेकण जीहा किम कहूं, मारू रूप अपार।
संकर तूठां पाइयै, उण उदार अवतार ॥

वळे ढाढ़ियां नै मुख वचन समाचार मारवणि कहया छा सु सगळा ही कहया। पण ढाढ़ी डरै छै। ताहरां ढोलोजी बोलिया—थे वेदल[10] छौ। तद ढाढ़ी बोल्या—कंवरजी आपनै दीठां तौ घणा राजी छां परण मरण सू डरां छां। अठा तांई तौ म्हे झूठ सांच कर जीवता आया। दूजा कागद लेयनै आवता जिका पूगळ देसरा सौ आदमी मारचा गया छा। ताहरां ढोलोजी ढाढ़ियां नै घणी दिलासा दीवी।

---

[1]उनके [2]चारों ओर [3]शीघ्र [4]मिलो [5]आतुरता [6]विधाता
[7]हृदय [8]अच्छी [9]महूरत [10]हताश, भयभीत।

कह्यौ—थे म्हारा जीव सुवाणा[1] छौ। ताहरां ढाढ़ियां बीण[2] री नाळी खोल नै मारवणि रा हाथ रो कागद कंवरजी रै हाथ दीन्हौ। कंवरजी कहण लागा—वाह-वाह बड़ा जाबता सूं कागद ल्याया। ताहरां ढाढ़ी बोलिया—महाराज-कंवार कागद यूं न ल्यावता तौ किण विध पहुंचता। वळे कागद देखता तौ म्हे पण मारिया जावता। ज्यांरी वा'र[3] ही होती नहीं।

पछै ढोलांजी मारवणि रो कागद लेय छाती सूं भीड़ियौ[4]—

ढाढ़ी ले कागद दियौ, लिखियौ मारू तेह।
ढोले उर सू भीड़ियौ, सैणां तणौ सनेह॥

फेर ढोलेजी घणे हेत सूं कागद बांचणौ मांडियौ[5]। कागद मांहे घणी मनवार कीधी, तिका बांच-बांच कंवरजी हंसै छै। कागद मांहे दूहा लिखिया छै जिका बांचै छै—

कूकूं कागद अक्खरै, पाठवियौ[6] सयणेह।
धण चावंती गहळियौ[7], टपकंते नयणेह॥

दुरजण वयण न संभरै, हिरदा में विसरेह[8]।
कूझां लाल बचांह ज्यूं, खिण-खिण चीता रेह॥

कागद थोडौ हित घणौ, मोपै लिख्यौ न जाय।
सागर में पांणी घणौ, (सु) गागर में न समाय॥

कागद लिखूं कपूर सूं, बिच बिच लिखूं सलाम।
साहिब मुख दीठां बिनां, सुख सोऊं तौ हरांम॥

अबकै जो प्रियतम मिळौ, पलक न छोडूं पास।
रोम रोम में छिप रहूं, ज्यूं कलियन में वास॥

सूता सपने में मिलै, इक सांसे सौ बार।
मन राख्यौ हि न रहै, कर मेल्है करतार॥

ढोला जे आया नहीं, थोड़ा दिनां ज मांह।
तौ आयां न लाभसी[9], मारू पंजर मांह॥

ढोले कागद वांचियौ, जाग्यौ नवळ सनेह।
मिळवा हिवड़ौ हूलस्यौ[10], जिम बाबीहा मेह॥

---

[1]प्यारे [2]वीणा [3]पूछताछ, सुनवाई [4]लगाया [5]प्रारंभ किया
[6]भेजा [7]भिगोया [8]भूलता है [9]मिलेगी [10]हुलसित हुआ।

कागद बांच नै ढोलोजी बोलिया—

कागद आखर गाळिया, कांइक थई कुवांण।
कै पंथी भीना बुहा, (कै) लिखणहार अगजांण॥

इतरो सुण ढाढ़ी बोलिया—

भरै पलटै बीभरै, बीभर[1] ही पलटेह।
ढाढ़ी हाथ संदेसड़ा, धण विललंती[2] देह॥

कागद गळिया आंसुआं, नैणे नेह विलग्ग[3]।
पड़ि पड़ि बूद पयोहरां, उबट[4] उबट तिण लग्ग॥

कागद वळे छै—अेक नळ राजा नै, दूजौ दमैती रांणी नै जिके पण पहुंचाया। वे घणा राजी हुवा छै।

अबै ढोलेजी नै मारवणि सूं मिलण री चिंता घणी छै। ताहरां भाऊ भाट बोल्यौ—आपनै पण बेगो पधारणौ होसी। पण हमें ढाढ़ियां नै सीख द्यौ। वांरै सै कोई आतुर होसी। वळे माळवणि जांणियौ तौ यांसूं खेचल[5] होसी।

संदेसा सहु सविगत, कहियां तिहां संभाळ।
माळवणि सूं संकता[6], सीख दई ततकाळ॥
ढोला तणां संदेसड़ा, दिम सैणां कहियाह।
हूं आवूं छूं पांवणौ, बेगो ही बहियांह॥
सीख समीयैं ढाढ़ीहां, दीन्हौ लाख पसाव।
ढोलो मन में हरखियौ, हरख्यौ नळवर राव॥

ढाढ़ियां नै ढोलेजी सवालाख रो पसाव कियौ। घोड़ा दोय–हजार दोय रिपियां रा, दोय ऊंठ–दोय सै रिपियां रा, दोनां भायां नै सोना रा कड़ा, किरंगी सिरपाव, सोने री साकल, सोने रा हथियार और ही द्रव घणौ ही दीन्हौ छै। पांच सै रिपिया नळ राजा दिया छै। दोय सै रिपिया अर बीस सवागा[7] दमैती रांणी दिया छै। नळ राजा पिंगळ नै कागद लिख दियौ छै जिण में घणी मनुहार लिखी छै। कागद दमैती रांणी अेक तौ ऊमा देवड़ी नै लिखियौ अर दूजौ मारवणि न लिखियौ छै, जिण में घणो विलाप लिखी छै। वळे लिखियौ छै—थांनै लेण सारूं ढोलो आवै छै। थे जमाखातर[8] राखज्यौ। ढोलेजी पण घणी मनवार सूं मारवणि नै कागद लिख्यौ

---

[1]उद्वेग में आकर [2]बिलखती [3]लगकर [4]घुलकर [5]छेड़छाड़
[6]भयभीत [7]सुहागिन स्त्री की पोशाकें [8]पक्का, निश्चय।

छै। दस हजार रिपियां रो गहणो मेल्यौ छै। पांच हजार रोक[1] मेल्या छै। आपरा पैरण रा कड़ा-मोती मारवणि कन्है मेल्या छै। कागद में लिख्यौ छै—अे कड़ा-मोती थां कनै आस्यां जद पैरस्यां। हूं पण बेगौ आवूं छूं। म्हारो जीव थां कन्है छै, थां विन अेक घड़ी ही जाय छै सो अळखै[2] छै। इतरो कहि ढाढ़ियां नै सीख दीवी। आप घोड़े असवार होय पहुंचावण गया। भाऊ भाट पण साथे छै। घणी दूर तांणी पहुंचाया। ढाढ़ियां नै कह्यौ—मारग में जतनां सूं जाज्यौ।

ढोलेजी पाछा हजूर आय मां नूं पूछियौ—मांजी मोनै कठेई वळे परणायौ छै। मां बोली—बेटा पिंगळ राजा री बेटी मारवणि परणाई छी। व्याव रो बीजी सारी हकीकत कही। तद ढोलेजी मां सूं कह्यौ—राज हुकम करौ तौ अेकर सां पूंगळ जावां। तद मांजी बोलिया—पूंगळ सिधावौ[3] तौ और कांई जोईजै[4] छै। पण माळवणि हालण देसी नहीं। इतरै कंवरजी मां कन्हां सूं खीख मांग ऊठिया।

कंवरजी आया नहीं छै जितरै माळवणि कई बातां बिचारै छै। कंवरजी आपरै महल पधारिया सु पैजार[5] पहरियां ही ढोलिये बैठा। उदास थका सोच करै छै। माळवणि री बडायण[6] आय कंवरजी नै कह्यौ—अरोगण पधारौ। ढोलेजी तड़क नै कह्यौ—म्हांनै तौ अबार कोई भावै नहीं। तद बडारण पाछी जाय माळवणि नै कह्यौ। तद माळवणि कंवरजी री हजूर आय नै कह्यौ—राज पैजारां न खोली, कटारी न खोली। उदास थका बैठा सु कांई भलाई छै? तद ढोलोजी तड़क नै बोलिया—जे थे भूंडा रो कांई दीठौ? म्हे तौ रूड़ा[7] हीज छां।

मनह संकाणी[8] माळवणि, प्रियु कांई चळचित्त।
कइ मारवणि सुधि सुणी, कइ का नवळी वत्त॥
सज्जण हरख न बोलिया, मुझसों रीसा आज।
का थे ऊमणदूमणा[9], कहोस के वड काज॥
चिंता डाइण[10] ज्यां नरांह, त्यां दृढ़ अंग थाय।
जो धीरा[11] धीरप[12] करै, भीतर सेती खाय॥

[1]रोकड़ [2]अकुलाता है [3]जाओ [4]चाहिए [5]~~सपत्त मानि~~ [6]राज्य घराने की दासी [7]अच्छे-भले [8]सशंकित हुई [9]विक्षिप्त [10]डाइन [11]धैर्यवान [12]धैर्य।

ताहरां ढोलेजी मन री बात प्रकासी—माळवणि म्हांरै तौ अेक महळ और सांभळां छां। तद माळवणि बोली—आ बात झूठी छै। किण ही गोढ़े ठगाया न छौ? ताहरां ढोलेजी बोल्या—थेट सूं ढाढ़ी सेंगू आया छा त्यां साथे मारवणि रै हाथ रो कागद आयौ छै। त्यांनै लाख पसाव करि पाछी सीख दीन्ही। तद माळवणि बोली—मैं यूं सांभळियौ छौ कै हेक कंवरजी नूं ग्रह थौ तद राजाजी नूं पंडितां कह्यौ—हज कंवरजी नूं अेक नीच रै घरे परणावौ जिम भार[1] टळै। तद अेकण नीच रै घरे परणाया छा सु वा महळ होवै तौ जांणां नहीं। बीजो तौ कोई नहीं। आप सारा लोगां नै पूछे देखौ।

पैलां माळवणि सारा लोगां नै सिखाय मेल्हिया हुता। पछै कंवरजी लोगां नूं पूछियौ तद लोगां डरतां थकां वाहिज[2] बात कही। तद कंवरजी अेक पुरोहित घर रो धनवत[3] हुतौ तिण रै घरे गया। पुरोहित रो नांव श्रीकरण छै तिण आगे जाय ढोलेजी सारी हकीकत कही। अर वळे कह्यौ—

श्री करणू मनसमौ, जावौ मारू जोय।
मो मन दूहा रंजिया[4], नींद न आवै कोय॥

ढोलोजी पुरोहित नै कहण लागा—श्रीकरणजी थे पूंगळ जाय खबर ल्यावौ। देखां मारवणि रा संदेसा ढाढ़ी ल्याया छा सो आ बात सांची छै कै झूठ छै। म्हे तो मारवणि रा समाचार सांभळ्या छै। म्हांरै तौ मारू सूं मोह ज्यादा छै। माळवणि कहै छै, लोग कहै छै—आ बात झूठी छै। तिण री खबर लेय नै बेगा पधारज्यौ।

पूंगळ प्रोहित मेलिया, लारां चंद खवास।
मारू बसी मुझ मने, खबर ज ल्यावौ तास[5]॥

श्रीकरण पुरोहित साथे आप रो इतबारी चदो खवास छै, सु मेलियौ। बीस असवार साथे दीन्हा। पछै दिन दस बारह में पुरोहित जाय पहुंता।

राजा पिंगळ सांभळ बहोत राजी हुवौ। पूछियौ—पुरोहितजी, राज महरबानी कर पधारिया सु तो रावळो[6] घर छै पण कांई काम होय सो फरमावौ। तद पुरोहित कह्यौ—कंवरजी मारू री खबर करण नू मेल्हिया छै सु म्हे जाय पाछी

---

[1]नक्षत्र का कु प्रभाव [2]वही बात [3]धनवान [4]भाये [5]उसकी [6]आपका।

खबर देस्यां, तद कंवरजी अठै पधारसी। कंवरजी रो जीव मारवणि मांहे छै। इतरो सुण पिंगळ बोलियौ—म्हांनै इण री चिन्ता घणी छै, सु आ तौ कंवरजी म्हां ऊपर घणी महरबानी करी। इतरो कह पुरोहितजी नूं भली सी जायगा[1] डेरो दिरायौ। घणा हीड़ा[2] किया। दिन पांच सात राखिया। पछै पुरोहितजी मारवणि नूं कहायौ—आप म्हांनै अबै पाछी सीख दिरावौ। तद मारवणिजी पुरोहितजी नूं आपरी हजूर बुलाया। पुरोहित हजूर ऊभौ छै। मारवणि उरला-पैला[3] सुणाय ओळंभा देवै छै—हज मोनै कंवरजी मनां ही बिसार मेली। जाज्यौ म्हारौ भाग, हूं अबै किसै अधार जीवूं? अबै तौ कंवरजी नूं कहज्यौ—म्हांरी बेगी सम्भाळ[4] करै। तद पुरोहित कहयौ—भला राज प्रमांण। वळे कहयौ—मांजी सीख दिरावौ।

इतरो सुणि मारवणि परेच[5] ऊंदी करि पुरोहितजी रै हाथ सिरपाव बीड़ी देण लागी। इसै समै पवन सूं सारी परेच उड गई। ताहरां पुरोहित री अर खवास री निजर मारवणि आई। मारवणि री मीची देखतांई दोनूं मुरछागत आय हेठा पड़िया। तद सहेलियां दौड़ पींपळामूळ रगड़, सचेत कर उठाया। इतरै चंद खवास तौ अमूज में मुवौ।

सह सिंगार कर मारवी, सखियां लियां ज साथ।
मुरछे[6] चंदगियौ मुवौ, बीड़ौ रहियौ हाथ॥

पुरोहित सचेत होय मारू कन्है आय ऊभौ रहयौ। ताहरां मारू बोली—

प्रोहित ढोले मोकळयौ, मारू कहै वचन्न।
जोबन लहरां लेय छै, खीण[7] भयौ मो तन्न॥

कहती संकू[8] मन व्यथा, बिन कहियां तन ताप।
मां जोबन मैमत हुवौ, विरहण करै विलाप॥

परणी बरसां डोढ़री, जोवन पहुंतो आय।
प्रोहित थांसूं आखियौ[9], कीजौ मालम जाय॥

प्रोहित चाल्यौ सीख कर, राजी कियौ जुहार।
कंवर ढोले आखज्यौ, मती ज लावौ वार[10]॥

---

[1]जगह [2]सेवा-चाकरी [3]आगे-पीछे के [4]सुध लें [5]परदा [6]मूर्छा से
[7]क्षीण [8]संकोच करती हूं [9]कहा [10]देरी।

पुरोहितजी राजा पिंगळ अर मारवणि कन्हां सूं सीख मांग उतावळा खड़िया। दिन दस मांहे नळवरगढ़ आंण पहुंता।

इसै समै पोहर दोय रात गई छै। मेह वरसै छै। वीजळी झबूका[1] देय छै। सीळी[2] बाव[3] बाजै छै। कुंवरजी झरोखे बैठा मारवणि रो रूप खिण-खिण चिंतवै[4] छै। उण वेळा झरोखे कन्है पुरोहितजो आय निसरिया[5]। घोड़ा री पौड़ां वाजतां सुण झरोखा सू देखण लाग्या, तद पुरोहितजी निजर आया।

पुरोहितजी मनमें विचार करण लागा—अबार तौ कंवरजी पोढ़िया होसी तिण सूं अबार तौ आंपणै घरां जावां। परभाते कंवरजी री हजूर जास्यां। इसी बात सगळा साथ नूं कह सीख दीवी। आप घरे गया। पाछा सू कंवरजी मन में विचारियौ—मारवणि री जिका हकीकत हुसी सु लुगाई आगै पुरोहित कहसी। तद कंवरजी पण पाछा सू पुरोहित रै घरे तुलछी बीड़ो[6] छौ, तिण मांहे जाय बैठिया। इतरै पुरोहितजी हथियार खोल ढोलिया ऊपर बैठा छै। मूड़ा[7] आगै पुरोहितांणी बैठी छै।

पुरोहितांणी बोली—

जिण जोवण कज मेल्हिया, ढोले कुंवर तुम्हां।
कहौ गुण केहि गोरड़ी, विध दाखवौ अम्हां॥

तद पुरोहित बोल्यौ—

हेकण जीहा किम कहूं, मारू बौत गुणेह।
इन्द्र सेसजी गुण कहै, थाह न लाभै[8] तेह॥

इतरी हकीकत सुण ढोलाजी मन में खुसी हुवा अर महल पधारिया। पछै परभात रै समै पुरोहित कंवरजी री हजूर आयौ। तद कंवरजी पूछियौ—चंद खवास अठै क्यूं आयौ नही? तद पुरोहित कह्यौ—मारवणि रो रूप देख दोनां नै मुरछा आई। मनै तौ मसळ-कुसळ उठायौ, इतरै चंद खवास तौ मुवौ। तद ढोलेजो बोलिया—मारवणि इसी छै? पुरोहित कह्यौ—आप वखांणौ[9] बिसीज छै।

चंद बदनि अगलोचणी, लखण[10] बतीस विवेक।
मारू जेही[11] अपछरा[12], इन्द्र तणै नहिं अेक॥

---

[1]चमक [2]ठण्डी [3]पवन [4]चिंतन करते हैं [5]निकले [6]पौधों का झुण्ड [7]मुँह [8]मिले [9]प्रसंशा करते हो [10]लक्षण [11]जैसी [12]अप्सरा।

मारू नारी पदमणी, बोलै इमरत बोल।
अंग अंग की ओपमा, वरणै कवि किल्लोल॥

पुरोहित भांत-भांत सूं मारवणि रा बखांण किया। ढोलोजी सुण बहोत राजी हुवा। वळे पुरोहित नूं कहचौ—मारू सूं मिलण री तौ खांत घणी छै तौ ही माळवणि नै लोपे[1] नै हालणी पग आवै नहीं। इसो कहि पुरोहित नूं तौ सीख दीवी। आप माळवणि रै महल आय ढोलिया ऊपर बैठा। उरली-पैली बात कर ढोलेजी कहचौ—

माळवणि तूं मन-समी, जांणै सहू विवेक।
हिरणांखी हंसनै कहौ, (तौ) करां दिसावर अेक॥

माळवणि बोली—

गढ़ नरवर अति दीपतो, ऊंचा महल अवास।
घर कांमण हरणाखियां, किसौ दिसावर तास॥

तंती नाद तंबोळ रस, सुरह सुगंधी जांह।
पग मौजां आसण तुरी, किसौ दिसावर त्यांह॥

तद ढोलाजी कहचौ—

ईडर राजा ओळगण, जे थे कहौ त जांह।
ओथ घड़ावां आभरण[2], माळवणि मेलांह॥

माळवणि फेर कहचौ—

ईडर राजा ओळगण, थांनूं जांण न देस।
इध बैठा ही आभरण, मोल मूंहगा लेस॥

साहिब कच्छ न जाइये, तिहां परायो द्रंग[3]।
भींभळ[4] नैण सुचंग[5] धण, भूल्यौ जाइस संग॥

जिकै ज बांमण बांणिया, तिकै दिसावर जाय।
राज कुंवर राजा तणा, तोय दिसावर काय॥

साहिब रहौ न राखिया, कोड़ प्रकार कियांह।
का थां कांमण मन बसी, का म्हां दूहवियाह[6]॥

वळे माळवणि वीनवै, हूं प्री दासी तूझ।
चिंता जोइ भीतर बसै, सो प्रकासौ मूझ॥

---

[1]टाल कर [2]गहने [3]दुर्ग, देश [4]कजरारे [5]सुन्दर [6]नाराज हुए।

ढोला आमणदूमणौ, नख सूं खोदै भींत।
हमथी कुण छै आगळी, बसी तुहाळै[1] चीत॥

तद ढोलाजी कही—

सुण सुन्दर सांची चवां[2], भाजै मन री भ्रांति।
मौ मारू मिळवा तणी, खरी विलग्गी खांति॥

माळवणि कौ तन तप्यौ, विरह पसरियौ अंग।
ऊभी थी खड़हड़ पड़ी, जांणै डसी भुजंग॥

माळवणि मुरछागत आंणे हेठी पड़ी, जद सहेलियां पवन घाल पीपळामूळ घिस नीठ सावचेत करी।

सीतळ पांणी छांट मुख, वींझण[3] हन्दे वाय।
हुई सचेती माळविणि, पिव आगळ विललाइ॥

दाड़म अंबा मेल कर, चाखै क्राचर बोर।
कंत न जावौ उण दिसे, देस दई कौ चोर॥

सह पाछा ऊतर दियै, समझै नहीं गिवार।
वैण न मेल्है माळवण, नैण न खंडै धार॥

देस सुरंगौ भुंइ[4] सुजळ, मीठा बोला लोय[5]।
मारू कांमण भुंय दिखण, जे हर तूठै होय॥

विरहण काय अणखजै[6], मारू हूंदो देस।
महिळां सिरहर मारवी, मो मन लाग्यौ तेस॥

माळवणि बिचार कियौ—कंवरजी रहण रा नहीं; तद बोली—

थळ तत्ता लू सामुही, दाझौला पहियांह।
म्हांकौ कहियौ जो करो, घर बैठा रहियांह॥

ढोलोजी विचार कियौ—माड़ा-हालां[7] तौ लुगाई जीव देसी। तद दोय मास उठै रहिया।

नेहा बंध न बंधिया, वळि रहिया दुय मास।
स सनेह बोलै नहीं, मन मारू रै पास॥

---

[1]तुम्हारे [2]कहें [3]पंखा [4]धरती [5]लोग [6]तिरस्कार करना
[7]बुरे हाल में।

गोखां बैठा अेकठा, माळवणि नै ढोल।
अंबर ठीदौ ऊनम्यौ, तैं चीतास्यौ बोल॥

पग पग पांणी पंथ सिर, गड्ढी बादळ छांह।
पावस आयौ पदमणी, कहौ त पूगळ जांह॥

माळवणि बोली—

ढोला सांवण आवियौ, ऊमट आयौ मेह।
चमकण लागी बीजळी, दाझण[1] लागी देह॥

प्रीतम कांमणगारियां, थळ जळ बादळियांह।
घण बरसंतै सूकियां, लू सूं पांगरियांह॥

बाजरियां हरियाळियां, बिच बिच बेलां फूल।
जे भरि बूठौ भादवौ, मारू देस अमूल॥

डूंगरिया हरिया हुया, बनां झिंगोरै मोर।
इण रित तीनूं संचरै, चाकर मंगत चोर॥

फौज घटा खग दांमणी, बूंद लगै सर जेम।
पावस पिव बिन वल्लहा[2], कहि जीवीजै केम॥

जिण रुत बहु बादळ झरइ, नदियां नीर प्रवाह।
तिण रुत साहिब वल्लहा, मो किम रयण विहाय॥

सावण आयौ साहिबा, पगे विलूंबी गार।
ब्रच्छ विलूंबी बेलड़्यां, नरां विलूंबी नार॥

इतरो सुण ढोलाजी बोलिया—

आज धरा दिस ऊनम्यौ, काळी घड़[3] सिखरांह।
वा धण देसी ओळभा, कर कर लांबी बांह॥

माळवणि बोली—

ढोला न हुय उतावळौ[4], मिळस[5] दई कै लेख।
म्हांकौ कहियौ जो करौ, दसराहा लग देख॥

माळवणि कह्यौ जद ढोलाजी दसहरा तांई वळे रह्या।

दसराहा लग आलसै, माळवणि वैणेह।
मारू जिम जिम संभरै, जळ मूकै नयणेह॥

---

[1]जलने [2]वल्लभ, प्रिय [3]घटा [4]उतावला [5]मिलेगा।

माळवणि ढोलो कहै, हिव म्हां सीख करेह ।
ऊन्हाळा वरखा विन्हे[1], रहिया तूज सनेह ।।

तद माळवणि कहै—

सीयाळै तौ सी पड़ै, ऊन्हाळै लू वाइ ।
वरसाळै भुंइ चीकणी, चालण रितु न काइ ।।

जिण रित मोती नीपजै, सीप समंदां मांह ।
तिण रित ढोलौ ऊलटचौ, इम कौ माणस जाह ।।

जिण दीहे तिल्ली तिड़ै, हिरणी झालइ गाभ[2] ।
तांह दिहां री गोरड़ी, पड़तौ झालै आभ ।।

जिण रित नाग न नीसरै, दाझै वन खंड दाह ।
जिण रित माळवणि कहै, कुण परदेसां जाह ।।

दिन छोटा मोटी रयण, ठाढ़ा नीर पवन्न ।
तिण रित नेह न छांडियै, हे बालम बड़ मन्न ।।

सांभळ ढोलाजी कहचौ—

माह महारस मयण[3] सब, अति ऊलटै अनंग ।
मो मन लागौ मारवण, देखण पूंगळ द्रंग ।।

ढोलो हल्लारणौ[4] करइ, धण हल्लिवा न देह ।
झब झब झूंबै पागड़ै[5], डब डब नयण भरेह ।।

माळवणि बोली—

हालूं हालूं मत करौ, हियड़ा साल म देह ।
जे सांचै ही हालस्यौ, सूतां पल्लांणेह ।।

ढोलो कहै—

थां सूतां म्हे चालस्यां, अेह निचीती[6] होय ।
रइबारी ढोलो कहै, करहो आछौ जोय ।।

पलाणियौ पवने मिळै, घड़ियां जोयण जाय ।
रइबारी ढोलो कहै, सो मो आवै दाय[7] ।।

---

[1]दोनों [2]गर्भ [3]मयन [4]रवानगी [5]रकाव से [6]निश्चिन्त [7]पसन्द ।

रैबारी कह्यौ—

दूजा दौवड़ चौवडा, ऊंट कटाळा खांण[1] ।
जिण मुख नागरबेलियां, सो करहो केकांण[2] ॥
नागरबेली नित चरै, पांणी पीवै गंग ।
ढोला रइबारी कहै, करहो अेक सुचंग ॥

ढोलो आतुर होय कहै—

किण गळि घालूं घूघरा, किण मुख वाहूं लज्ज ।
कवण[3] भलेरो करहलो, मूंध मिळावै अज्ज ॥

करहो कहै—

मो गळि घालौ घूघरा, मो मुख वाहौ लज्ज ।
हूं ज भलेरौ करहलौ, मूध मिळाऊं अज्ज ॥

तद ढोलोजी करहा रै मोहरी घात पौळ रै बारणै आंण बांधियौ । ढोलोजी कम्मर बांधण नै महल पधारिया । इतरै माळवणि नै खबर हुई सु माळवणि करहा कन्है आई ।

माळवणी मन दूमणी[4], आई वरग विमास ।
रइबारी पूछी करी, आई करहा पास ॥

आय नै कह्यौ—

म्हारा भाई करहला, दांन इतौ मो देह ।
जद ढोलो चढ़ि नीसरै[5], तद खोड़ो हुय रेह ॥

तद करहो बाल्यौ—

खोड़ा हुवां त डांभिजां[6], बाधा भूख मराह ।
थे बे सज्जण रळि-मिळौ, म्हे बिच दुख सहांह ॥

माळवणि कह्यौ—

बांधू बड़ री छांहड़ी, नीरूं नागरबेल ।
डांभ संभाळूं हाथ सूं, चोपड़ सूं चंगेल ॥

---

[1]खाने वाले [2]घोड़े के समान [3]कौन [4]खिन्न [5]निकले
[6]डांभणौ—लंगड़े ऊंट का पैर ठीक करने के लिए गरम लोहे से दाग लगाना ।

करहो कहै—

अब ही मेली अेकली, करहो करइ कळाप ।
कहियौ लौपां सांमि कौ, सुंदरि लहां सराप ॥
सुन्दरि मो सारो[1] नहीं, कुवर वहेसी मग्ग[2] ।
साहिब चित्त उपाड़ियौ, जिम केकांणां वग्ग ॥

माळवणि कहचौ—

करहा सुण सुन्दर कहै, मिहर[3] करौ मो आज ।
साहिब म्हांरो ऊमहचौ, हिव सगळी तो लाज ॥
भाई कह बतळावसूं, नागरबेल निरेस ।
हउ हउ करहा कुवर नैं, मत लेजाय विदेस ॥

माळवणि करहा नैं आपरो करे पाछी महल आई । ढोलोजी कमर बांध करहा कन्है आया । करहा नैं उठाय ऊभौ कियौ सु तीन पगां रै पांण ऊभौ, हेकरा पग खोड़ो होय रहचौ । ढोलाजी रै चढ़ण री ताकीदी छै । इतरा में डावो विनायक बोलियौ तद माळवणि बिचारियौ—अै तौ चालण नैं सुगन सखरा हुवा । ताहरां विनायक ऊपरां री सांवळी, इतरै ढोलाजी रैवारियां नैं बुलाया । रैवारी आय ऊंठ दोळा फिरिया । ताहरां माळवणि री सखियां जाय नैं कहचौ—करहा नैं डांभै छै । ताहरां माळवणि अेकण सहेली साथै कहायौ—

ढोला म्हारा बाप रै, छो करहां रौ वग्ग[4] ।
जे करहो खोड़ो हुवै, (तौ) गादह दीजै दग्ग ॥

तद डावो विनायक (गधौ) बोलियौ छौ तिण नैं पकड़ मंगायौ अर डांभ दीन्हौ । तिण दिन रो ओ खांणो छै—'ऊंट खुड़ावे'र गधा डांभीजै' । तिण दिन तौ ढोलाजी रै चढ़ण रो महूरत सो तौ टळियौ । ढोलाजी महल पधारिया । करहा नैं तंबोळण रै घरै बांधियो । अेक रैवारी करहा रा जतन[5] सारू राख्यौ छै ।

पछै माळवणि पग ढोलाजी कन्है आई । दोनूं अेकण ढोलियै बैठा छै । माळवणि बिचारियौ—कंवरजी रहण रा नहीं—चालसी । ताहरां कहचौ—

पिव माळवणि परहरे[6] , हाल्या पूंगळ देस ।
ढोला विच में हेकला, वासा घणा सहेस ॥

---

[1]वश [2]मार्ग [3]महर, कृपा [4]टोला, झुण्ड [5]देख रेख [6]छोड़ कर ।

ढोलोजी कहचौ—

गोरी राख्या न रहां, जास्यां पूंगळ देस।
ढोला विच में हेकला, वासा घणा सहेस॥

गोरी क्यांन हव[1] करौ, थां क्यां नयण भरेस।
म्हे तौ राख्या ना रहां, ज्यास्यां पूंगळ देस॥

माळवणि तूं अत भली, तूं छै नीकी नार।
पूंगळ हंदै मुलक में, नहि मारू उणिहार[2]॥

माळवणि ढोलाजी नै घणा ही विलमाया पण ढोलाजी रहै नहीं। ताहरां माळवणि कहचौ—सो नै नींद आवै जद चढ़ज्यौ। ढोलेजी कहचौ—भली वात छै। थांन नींद आसी जद हालस्यां।

माळवणि घणौ ही हठ कियौ। पनरा रात दिन तांई सारीखी जागी। सोळवें दिन अेक घड़ी रात गयां कंवरजी कपट[3] नींद सोय रहचा। तद माळवणि विचारियौ--कंवरजी तौ पौढ़िया छै, हूं पण थोड़ी सी वार सोय रहूं। इतरै माळवणि तौ सोय रही सो अघोर-निंद्रा[4] आय गई। तद ढोलाजी छांनै ऊठचा। हालण नै आय करहो झेंकियौ।

घाली टापर वाग मुख, झेंक्यौ राज दुआर।
करह किया टहूकड़ा[5], निन्द्रा जागी नार॥

तद ढोलेजी कहचौ—

करहा तूं र जगावसी, म्हानूं जांगण न देस।
निंद्राळू जागै नही, (तौ) जास्यां पूंगळ देस॥

माळवणि जागै नहीं, करहा तू न जगाय।
जो सुन्दर जागै सही, तौ गळ लागै आय॥

ढोलेजी चढ़तां आधी रात रा पोळ किंवाड़ खिड़किया[6]। खोलतां वळे करहौ टहूकियौ तद माळवणि जागी। सचेत होय नै देखै तौ ढोलो नहीं। तद हियै निहाव पड़ियौ। ढोलेजी चढ़तां कहचौ—

ढोले करह चलावियौ, करि सिणगार अपार।
आस्यां तौ मिळस्यां वळे, नरवर कोट जुहार॥

---

[1]वम [2]समान चेहरे वाली [3]बनावटी [4]गहरी नींद [5]लंबी आवाज [6]बोले।

माळवणि पण विलाप करण लागी—

ढोलो चाल्यौ हे सखी, वाज्या विरह निसांण ।
हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुया संधाण ॥
ढोलो चाल्यौ हे सखी, वज्या दमांमा ढोल ।
माळवणि तीने तज्या, काजळ तिलक तंबोळ[1] ॥
सज्जण चाल्या हे सखी, दिस पूगळ दौड़ेह ।
सायधण[2] लाल कबांण ज्यू, ऊभी वड़ मोड़ेह[3] ॥
सज्जण चाल्या हे सखी, सूना करे अवास ।
गळे न पांणी ऊतरै, हियै न मावै सांस ॥
सल्ह चलंतै परठिया, आंगण बीखड़ियांह[4] ।
सो मो हियै लगाड़ियां, भरि भरि मूठड़ियांह ॥
सज्जण वल्ले[5] गुण रहै, गुण भी वल्लणहार ।
सूकण लागी वेलड़ी, गया ज सींचणहार ॥
अे वाड़ी अे बावड़ी, अे सर केरी पाळ ।
वे साजन वे दीहड़ा[6], रही संभाळ संभाळ ॥
बाबा बाळूं देसड़ौ, जंह डूगर नहिं कोय ।
तिण चढ़ि देवूं धाहड़ी, हियौ ज उरळौ होय ॥
सारसड़ा मोती चुगै, चुगै त कुरळै काय ।
सगुण पियारा जै मिळै, मिळै त बिछड़ै काय ॥
सज्जण हाल्या हे सखी, वड़ री डाहळ मोड़ ।
हियौ कळेजौ काळजौ, तीनूं लेग्या तोड़ ॥

इतरा विलापात कर नै माळवणि सखियां नूं ढोलाजी लारै दौड़ांणी—हज आज ढोलाजी नै पाछा वाळौ । सहेलियां दौड़ी पण करहा रो खोज न लाधौ । जिसै अेकण थळ रै पासे सारस बोल्यौ । सहेलियां जाण्यौ करहो बोल्यौ । आगै देखै तो सारस चुगै छै । तद कहचौ—

सारस रै मिस पांतरी[7], जांणै करह झकाय ।
देखूं थळ ऊपर खड़ी, जांण पंखेरू जाय ॥

---

[1]तंबोल [2]स्त्री, माळवणि [3]मोड़े हुए [4]पदचिन्ह [5]चले गये बिछुड़े [6]दिन [7]भूली ।

सहेलियां ढोलाजी नै पूगी नहीं, तरै माळवणि कन्है आई। आय नै कह्यौ— कवरजी तौ म्हांरो निजर कोई आया नहीं। इमो सुण माळवणि निरास हुई अर विलाप करण लागी—

हइ रै जीव निलज्ज तूं, निकस्यौ जात न तोहि।
प्रिय विछुट्त निकस्यौ नहीं, रह्यौ लजावण मोहि॥

सज्जणियां सिधाय कर, मंदिर बैठी आइ।
मन्दिर काळै नाग ज्यूं, लहरी दे दे खाइ॥

सज्जण गुणां समन्द तूं, तर तर थक्की[1] तेण।
अवगुण अेक न संभरै, रहूं विलूंबी जेण॥

सांई देदे सज्जणा, राते इण परि रून।
उर ऊपरि आंर ढळै, जांणि प्रवाळी चून॥

सोरठा

गया गळंती राति, परजळती पाया नही।
मे सज्जण परभाति, खड़हड़िया खुरसांण[2] ज्यूं॥

ढोलाजी अर माळवणिजी रै अेक सूवो हुतौ तिणनै माळवणि ढोलाजी पासै मेल्है छै।

सूवा अेक संदेसड़ौ, वार सरेसी तूझ।
प्रीतम पासै जायनै, मुई सुणाई[3] मूझ॥

इतरी हकीकत सुण सूवो उडियौ सो चंदेरो रै तळाव जाय पहुंतौ।

चंदेरी बूंदी बिचै, सरवर केरी तीर।
ढोलै दांतण फाड़िया, आय पहुंता कीर॥

ढोलेजी पूछियौ—

कह सूवा कित आविया, ढोलो पूछै कत्थ।
कै माळवण मेल्हियौ, कन्हा[4] अमीणै सत्थ॥

सूवो बोल्यौ—

साल्ह कंवर सूवो कहै, माळवणि मुख जोय।
प्रांण ज तजियौ माळविण, लंछण[5] लागै तोय॥

---

[1]थकी [2]तलवार [3]सुनाना [4]या [5]लाञ्छन।

इतरो कहचौ तोई ढोलोजी बोलै नहीं। तद सूवो कहै—

कहि न सकूं बीहतौ[1], हेकज बात हुईह।
राज अपूठा बाहुड़ौ[2], माळवणी मूईह॥

इतरो सुण ढोलेजी बोलिया—

वल्हा मांणस बीछड़यां, मुवौ न सुणियौ कोय।
सालर केरा रूंख ज्यूं, भुर भुर पीजर होय॥

भळे ढोलाजी कहण लागा—जे सांचांणी मुई छै तौ इतरी चाकरी म्हांरी तूं पण कर।

दस मण चन्दण मण अगर, तेल सुगंधी लेह।
गुण थांहरोई मानस्यां, माळवणि दागेह[3]॥

तद सूवो बोलियौ—

सिधौ सिधावौ सिध करौ, वेगा ही वळियांह।
ऊमर केरा रूंख ज्यूं, सहगोठा फळियांह॥
ढोल सुवा नै सीख दी, जा पंछी ग्रहवास।
उडि र पाछौ आवियौ, माळवणी के पास॥

सूवो माळवणि कन्है पाछो आयौ—कहण लागौ—

सूवो पाछो आवियौ, ढोलो गयौ ज आज।
मो कहियां वळियौ नहीं, तौ सों केहो काज॥
सूवे वैण सुणाविया, ढोले कहिया सोय।
थइ मरछागत माळवण, सकै न ऊभी होय॥

माळवणि सूवा रा कहचा समाचार सांभळ नै विलापात करै छै। ढोलोजी चंदेरी रा तळाव सूं दांतण कर चढ़िया सु चंदेरी रा बजार मांहे आया। ताहरां अेक व्यवहारियो बोलियौ—ठाकरां अठासूं साठ कोस ऊपर सहर छै सु थांरै मारग में छै। अेक सायत थे ठहरौ, आपनै कागद लिखदचूं जो आथण[4] तांई पहुंचै। ढोलो ऊभौ रहचौ। व्यवहारियो वांसै हेला करतौ आवै छै—बड़ा मिरदार, थां सरीसा पुरस आदमियां सूं ही म्हारो कांम सभियौ[5] नहीं तौ और सूं ही कांई सभसी। ताहरां ढोलोजी कहचौ—ऊभा रहचां तौ सभै कोनी। थांरै कांम छै तौ ऊंठ

[1]डरता हुआ [2]लौटो [3]दाह-कर्म करना [4]संध्या [5]पार पड़ा।

झेंकावूं[1] छूं । तूं लारे चढ़ि बैस । कागळ लिख मोनूं देय परो उतरे । ताहरां व्यवहारियौ ऊंठ ऊपर बैसि कागळ लिखण लागौ । कागळ पूरौ हुवौ जितरै सहर आय गयौ । व्यवहारियौ देख हियौ फूट मूवौ ।

पछै ढोलोजी पोहकर रा तळाव री पाळ आय निभरिया तठै थंभ-तोरण दीठा । हेकण आदमी नै पूछियौ—अै थंभ-तोरण कुणरा छै । अठै कुण परणिया हुता । ताहरां आदमी बोल्यौ—

अेथ ज चौक पुराविया, पढ़िया वेद पुरांण ।
धण भटियांणी मारवी, ढोलो कूरम रांण ॥

ढोलोजी पूछण लागा—अे ढोलो-मारवणि कठारा वासी हुता । आदमी बोल्यौ—नळवरगढ़ सूं नळ राजा आयौ छौ कंवरजी री जात्रा देवण नै अर पिंगळ राजा अठै बिखै आया छा । पिंगळ राजा री बेटी मारवणि अर नळवर राजा रो बेटो ढोलो यां दोनां रो विवाह अठै हुवौ छै ।

करहो घणौ तिसाहियौ[2] , आयौ पोहकर तीर ।
ढोले ऊतर पाइयौ, निरमळ सरवर नीर ॥

जंगळ देस अजंग थळ, कोहड़ै ऊंडा नीर ।
ढोलो खडै उतावळा, सैणां तणै ज सीर ॥

देस कुरंगी ढोलणा, भला विछूटा आय ।
मन वंछित लाभै नहीं, करहो कासूं खाय ॥

करहा नीरूं जव चणा, कंटाळौ अर फोग ।
नागरबेली करहला, थां चरणी नइ जोग ॥

करहा नीरूं सोइ चर, वाट चलंतउ पूर ।
द्राख[3] विजउरा नीरनी, सो धण रही स दूर ॥

इतरो सुण करहौ तौ मन में घणौ रिसाणौ[4] । ढोलोजी खड़िया ।

अति अणंद उमाहियौ[5] , वहे ज पूंगळ वाट ।
तांजै पहर लंघाहियौ, आडावळा रो घाट ॥

अवै करहो थाकौ । भूख पण लागी तिणसूं मुधरो[6] चालण लागौ । तद ढोलोजी बोलिया—

[1]बैठता हूं [2]प्यासा [3]दाख [4]नाराज हुआ [5]उमंगित हुआ
[6]मन्द गति से ।

करहा तूझ विसासड़ै, वीसरिया सह काज।
रखै बीच बासौ करै, मारु न मेळै आज॥

ताहरां करहो पण राजी होय कहण लागौ—

सड़ सड़ वाहि म कंबड़ी, रांगां देह म चूर।
बिहुं दीपां बिच मारवी, मां थी केती दूर॥

ढोलाजी उतावळा खड़िया जाय छै। इतरै थळां[1] मांहे ढोलाजी मारग भूला। अेक अेवाळ[2] तठै छाळियां[3] चरावै छै। तिणनूं पूछियौ—पूंगळ नगर रो मारग किसौ? तद अेवाळ कह्यौ—कासूं काम छै? ढोलाजी नै नकारे रौ अर झूठ बोलणै रो प्रतिबंध हुतौ। तद ढोलेजी बोलिया—म्हारो सासरो[4] छै। ताहरां अेवाळ सुसरा रो नै लाडी[5] रो नाम पूछियौ। ढोलाजी बोल्या—सुसरा रो नांम पिंगळ राजा अर लाडी रो नाम मारवणि। ताहरां अेवाळ बोलियौ—बडा ठाकर, पूंगळ री बेटी मारवणि तौ म्हारी साथण छै। काले तौ म्हांरै साथै छाळियां चारती हुती। इतरो सुण ढोलोजी मन-भंग[6] हुआ। पाछौ वळण[7] रो मनौ कियौ। तद करहै धीरज बंधाय कह्यौ—

क्रम क्रम ढोला पंथ कर, ढांग[8] म चूकै ढाळ।
आ मारू दूजी महळ, आखै झूठ अेवाळ॥

करहा रा कह्या सूं ढोलाजी वळे आघा हालिया। इतरा में ऊमर सूमरा नै ढोलाजी रै आवण री खबर हुई छै सु आपरो भाट पूंगळ राजा रै मारग में राख्यौ छै, तिण नै कह्यौ—तू ढोला नै मारवणि रा औगण[9] संभळाअे[10]। भाट मारग में ढोलाजी नै आय मिल्यौ अर पूछण लागौ—राज कठा सूं पधारिया? ढोलाजी कह्यौ—आया तौ नळवर सूं अर जास्यां पूंगळ। उठै म्हे परणिया छां। इतरी हकीकत कहि पछै ढोलाजी पूछियौ—भाट, थे कठासूं आया? भाट बोल्यौ—महाराजकंवार, हूं पूंगळ थी आयौ। तद ढोलेजी पूछियौ—थे पिंगळ राजा री मारवण दीठी? तद भाट बोल्यौ—

जिण धण कारण ऊमह्यौ, तिण धण संदावेस।
तिण मारु रा तन खिस्या[11], पंडर[12] हुवा ज केस॥

---

[1]टीबों में [2]गडरिया [3]बकरियाँ [4]ससुराल [5]बहू [6]हताश हुए [7]लौटने [8]ऊँट की तेज चाल [9]अवगुन [10]बताना [11]ढीले हुए, ढल गए [12]सफेद।

ढोला मोड़ौ आवियौ, गइ बाळापण वेस[1] ।
अब धण होई खोरडी[2] , जाए कहा करेस ॥

इतरो सुण ढोलाजी रो मन बेदिल हुवौ—

करहा कहि कासूं करां, जो अे हुई जकाह ।
नरवर केरा मांणसां, कासू कहिस्यां जाह ॥

अवै ढोलाजी बेदल थका हळवा-हळवा[3] चालिया जाय छै। इतरै अेक रैवारी-लुगाई साथै जाय छै। रैवारी ढोलाजी नै पूछियौ—राज कठासूं पधारिया, आगै कठै पधारस्यौ ? ढोलेजी बेदिल थका बोलिया—पिंगळ जास्यां । रैवारण चतुर छी, मारवणि भेळी रमी छी अर पिंगळ राजा ढाढ़ी खिनाया छा सु जांणे छी । तद रैवारण ढोलाजी नै कहण लागी—अेक म्हांरी अरज सुणौ—आपनै भाट मिळियौ सु ऊमरा रौ छै। वे आपणां लागू[4] छै। राज उणरी बात मानसी नहीं ।

दुरजण केरा बोलड़ा, मत पांतरजौ कोय ।
अणहूंती[5] हूंती कहै, सगळी सांच न होय ॥

डोढ़ वरस री मारवी, त्रिहुं वरसां रो कंत ।
उण रो जोबन बहि गयौ, तूं क्यां जोबनवंत ॥

ढोलोजी मन में राजी हुवा खड़िया जाय छै । आगै वारहठ मिळियौ तिण पूछियौ—कठा सूं खड़िया आवौ छौ ? ढोलोजी बोल्या—आया नळवरगढ़ सूं अर पूंगळ जास्यां । वारहठ कहचौ—राज[6] आपरी बाट जोवै छा । इतरो सुण ढोलो ऊंठ भेंक[7] नीचो उतर घणे हेत सूं मारवणि रा समाचार पूछण लागौ । तद बारहठ दूहा कहचा—

गति गंगा मति गोमती, मीता सीळ[8] सुभाय[9] ।
महिळां सरहर मारवी, अवर न दूजी काय ॥

नमणी खमणी बहुगुणी, सुकोमळी ज सु कच्छ ।
गोरी गंगा नीर ज्यूं, मन गरवी तन अच्छ ॥

मारू घूंघट दिट्ठ[10] मंड, अेता सहित फुणिंद[11] ।
कीर भमर कोकिळ कमळ, चंद मयंद गयंद ॥

---

[1]वयस [2]बुड्ढ़ी [3]धीरे-धीरे [4]दुश्मन, पीछे पड़े हुए [5]अनहोनी [6]पिंगळ राजा [7]ऊँट बैठा कर [8]शील [9]स्वभाव [10]देखे [11]नाग ।

मारू देस उपन्नियां, तांह का दंत सुसेत।
कृभ बचां गोरंगियां, खंजर जेहा नेत॥

अहर पयोहर दुइ नयण, मीठा जेहा मख्ख।
ढोला अेही मारवी, जांणै मीठी दख्ख॥

ढोला मायधरण मां'ण नै, झीणी पासळियांह।
कै लाभै हर पूजियां, (कै) हेमाळै[1] गळियांह॥

मारू सी देखी नही, अण मुख दोय नयणांह।
थोड़ो सो भोळौ[2] पड़ै, दिणियर[3] ऊगंतांह॥

तेता मारू मांहि गुण, जेता तारा अम्भ[4]।
उच्चळ-चित्ता[5] साजणां, कहि किम दाखूं सम्भ॥

वीसू चारण ढोलाजी नै कहै लागौ—राज वेगा पधारो, दिन थोड़ौ छै। मारू मांहे तौ गुण अनेक छै सो कहतां अंत न आवै।

इतरो सुण ढोलोजी बोलिया—अबार तो मारू रै गहणौ लेजावां छां सु औ आपरी निजर छै। आपरा कड़ा मोती दिया। लाख पसाव करि सीख दीवी।

दोनूं भाई ढाढ़ी जद नळवरगढ़ सूं हालिया छै अबै पूंगळ आण[6] पहुंता छै। दोनूं ढाढ़ी मन में बिचारै छै—हज म्हांनै आवतां मारग में घणा दिन लागा छै। ढोलोजी पधारिया होसी। पूंगळ आयनै ढाढ़ियां पूछियौ—ढोलोजी पधारिया कै नहीं? तद लोग बोलिया—कंवरजी तौ कोई पधारिया नहीं। वाट जोवै छै। पछै ढाढ़ी राजाजी री हजूर आया। नळ राजा रो कागद दीन्हौ। कागद वांच'र नळराजा घणौ खुस्याळ हुवौ, और ही ढोलाजी रा समाचार सुणि खुसी हुवा। कागद अेक दमैती रो ऊमा देवड़ी नै दीन्हौ। ढाढ़ियां नै मारवणिजी हजूर बुलाया, पछै समाचार पूछण लागा तद ढाढ़ियां मारग रा, उठा रा मगळा समाचार कहचा। वळे कहचौ—

मारू ढोलो दीठ[7] म्हे, सबै सुरंगौ सत्थ।
पग वां दीन्हा पागड़ै[8], वागां भालै[9] हत्थ॥

---

[1]हिमालय [2]भ्रम [3]सूर्य [4]अम्ब, आकाश [5]चंचल चित्त वाले
[6]आकर [7]देखा [8]रकाब में [9]पकड़ कर।

इतरो सुण मारू बोली—

सांझ पड़ी नह आवियौ, कोयक थयौ अहत्थ।
सर[1] चूकै पाराध[2] ज्यौं, मूंध[3] मरोड़ै हत्थ॥

इतरै ढाढ़ी ढोलाजी रै हाथ रो कागद मारवणि नै दीन्हौ। तद मारू कहचौ—

कागलिया[4] मत मांकळौ, मोल मुहुंगा लेह।
अख्खर भीजै आंसुवां, नैंण न वांचण देह॥
मारू जोवै वाटड़ी, ऊभी आंगण[5] छेह।
कागळ जळ भेळा करै, नांखै नैंण भरेह॥
मोह सुगंधी वाटली, मोती जड़ी ज हाथ।
जांणूं साल्ह जगाइया, सोता मांझल रात॥

इतरी सपना री बात सखियां नै कही अर ममाणी चारणी पण कन्हा थी तिकण में देवतणौ[6] हुतौ तिण आगै मारू कहे लागो—हूज म्हारै तौ आज सगळौ डावौ अंग फुरकै छै। तद चारणी बोली—

जांघ फरूकै कर फुरै, कर फुर अहर[7] फुरंत।
नाभि कुंडळ जै फुरै, तौ पिव बेग मिळंत॥
मारू निहचै राखि मन, चित्त डुलांवै मित।
सज्जण वेगा आवसी, मिळसी थारो कंत॥

ममाणी चारणी मारू नै धीरज बंधावै छै—कंवरजी आज सही पधारसी। अबै मारू थे संपाड़ा[8] री तयारी करौ। इसी बातां चारणी मारू नै कहै छै। अर ढोलोजी पण मारू खातर करहा नै उतावळो खड़ै छै—

करहो खड़े मन समौ, आयौ ढोलो अेह।
इतरी धरती लांघतां[9], पगां न लागी खेह॥

ढोलोजी पण पिंगळ आय पहुंता छै अर मारू नै पण आळगै[10] न छै सु रमण नै वारे आई छै। ममाणी चारणी पण साथै छै। सातबीसी सहेलियां अर बीजी लुगाइयां सहर री साथै छै। बाग में सह रमण[11] लागी छै। लूहर[12] गाईजै छै।

---

[1]तीर [2]शिकारी [3]मुग्धा, मारवणि [4]कागज [5]आँगन [6]देवत्व [7]अधर [8]स्नान [9]पार करने पर [10]जी लगना [11]खेलने [12]नृत्य के साथ गीत-विशेष।

इतरा में ढोलाजी पूंगळ रै गोरि[1] में आया छै। सूरज तद अस्त हुवौ छै तिण सूं गांव री खबर कांई पड़ै नहीं। बाग मांहे कोहर[2] छै, तठै सातबीसी सहेलियां सूं मारू रमती छी, तिण रो कोळाहळ सांभळि नै ढोलाजी कोहर दिस आया। इतरै ढोलाजी करहा नै कांब बाही[3]। ताहरां करहो करहूकियौ तद ममाणी चारणी बोली--

मारू ढोलो आवियौ, करहो कर हूकेह।
सहिज तूठा सज्जणा, दूधां वूठा[4] मेह॥

इतरै ढोलेजी पण कोहर आया। कोहर कन्है पांणी री खेळी[5] भरी छी तठ करहा नै पांणी पावणौ मांडियौ[6]। करहो पीवै नहीं तद ढोले कह्यौ--

करहा चरौ करेलिया, पांन चितारि म रोय।
सरवर लाभै सिरजियौ, खूहड़िय मुह खोय॥

मारवणि तौ ढोलाजी नै जांणै नहीं। ढोलोजी पण मारू नै जांणै नहीं। चारणी मांहे देवतण हुतौ सु वा जांण्यौ--ढोलाजी छै। ताहरां ढोलाजी कह्यौ--

सब ही ल्यौ वड बाळियां, सब ही के गळहार।
हेकण मारू बहिरी[7], सह बाइयां[8] जुहार॥

अबै मारू क्यूं तौ दीठी नहीं, दीठि घूंघटौ काढ़ सहेलियां मांहे धंस गई। पछै सहेल्यां माथे होय महल पधारिया।

ढोलोजी बाग मांहे उतरिया अर बागवान ऊंठ झालियौ[9]। अेकण बागवान जाय पिंगळ राजा नै बधाई दीन्ही--हूज ढोलोजी पधारिया छै। तद पिंगळ राजा ढाढ़ियां नै मेलिया--देखां देखौ कंवरजी बाग मांहे उतरिया छै। तद ढाढ़ियां मुजरो कियौ। ढाढ़ियां आय पिंगळ राजा नै खबर दी--महाराज कंवर पधारिया छै। जद पिंगळ राजा, ठावा[10] उमराव कंवर ढोलाजी सांम्हां आया। आयनै मुजरो कियौ। पछै ढोलाजी नै दरबार ले आया। राजा पिंगळ सूं आंणि मुजरो कियौ।

अबै पिंगळ राजा आपरा खवास नै कह्यौ--कंवरजी नै मरदन[11] करावौ,

---

[1]बस्ती की सीमा [2]कुआ [3]लगाई, मारी [4]बरसा [5]कुए पर जानवरों के पानी का स्थान [6]प्रारंभ किया [7]बिना, अलावा [8]लड़कियाँ [9]पकड़ा [10]समझदार [11]मर्दन।

पोसाक बणावौ। तद खवास कंवरजी नै संपाड़ौ[1] कराय सिरपाव कियौ। घणा केसर अरगजा में गरक[2] हुवा। ढोलाजी री रूप सीवी[3] देख नै सहेलियां सगळी राजी हुई।

अबै मारवणि पण सनांन कियौ। अनेक सोरंभ, सुगंध, चोवा-चंदन रा विलेपन किया। केसां में मोती सारि[4] सोळै सिणगार सभि तयार हुवा छै। हिवै पिंगळ राज्ञा कंवरजी नै कह्यौ--आप उतावळा खड़ नै पधारिया छौ सु थाका होस्यौ। महल पधारौ। सुख करौ। ताहरां ढोलोजी महल पधारिया। पिंगळ राजा रा खवास पागवान सारा ही साथे हुवा, तद ढोलाजी साळियां सहेलियां री सारी हकीकत वांनै पूछ लीन्ही छै।

पछै सहेलियां आय ढोलाजी री चतराई परखण लागी। मारू री छोटी बहन हुती--वालहकंवर तिण नै ढोलाजी कन्है मेली--देखां ढोलाजी पिछांणै'क[5] नहीं। तद ढोलेजी देख नै कह्यौ--आ मारू नहीं, मारू रो उणिहारो[6] छै। वळे कह्यौ--वालहकंवर पाधारौ, अर, घणौ आदर सनमान दियौ।

वालहकंवर तौ ऊपरां, लख अेक वारूं नार।
तिण मांहे इधकी तिका, मारू रूप अपार॥

सहेलियां कहण लागी--कंवरजी सरीखा चतर कोई नहीं। पछै सालहकंवर तौ उरळी-पैळी बात करनै ढोलाजी नखा परी ऊठी।

अबै मारवणिजी रै लारै सगळौ राजलोक, सरब सखियां साथै छै। लहरां लेती, मतवाळी थकी जांणै किरती रो झूंबकौ, असमांन री उतरी मोत्यां री लड़। थाका हंस सरीखी थेगा देती चली आवै छै। बीजौ राजलोक कहण लागौ--आज ढोलाजी नै रूड़ा देखस्यां।

मारू पैलां तौ करहा कन्है गई। जाय करहा री निछरावळ करी। तिणनै चौक रै बीचोंबीच बांधियौ छै। सहेलियां कन्हां सूं करहा रो डील झड़कायौ छै। ताहरां मारू बोली--

करहा तूं भल सिरजियौ, मेल्यौ साल्ह सुजांण।
नातर कदै न आवतौ, तूं हिज कारण जांण॥

---

[1]स्नान [2]सराबोर [3]छबि [4]पिरोकर [5]पहिचानते [6]स्वरूप।

इतरा में राजलोक आय करहा री निछरावळ कीधी। करहा रा घणा जतन किया। सहेलियां कहै—

कंवर भलांही आवियो, ज्यांरी छी मन चाह।
करहो भल ही आवियौ, मरवण मिळसी नाह॥

इतरी बात राजलोक करहा सूं कीवी। सात बीगी सहेलियां, मारवणि, राजलोक सारोही साथ ढोलाजी कन्है जाय छै—

मारवणी सिणगार करि, मंदिर कूं मल्हपंत[1]।
सखी सुरंगी साथ करि, गय गयगी[2] गय गंत॥

सोई सज्जण आवियो, जांकी जोती वाट।
थांभा नाचै घर हंसै, खेलण लागी खाट॥

घम्म घम्मंतई घाघरै, उलटचौ जांण गयंद।
मारू चाली मंदिरे, झीणे बादळ चंद॥

मारू चाली मंदिरे, चन्दउ बादळ मांहि।
जांणै गयंद उतट्टियौ, कज्जळ वन रै मांहि॥

मारू ढोलेजी री हजूर आय मुजरो कियौ। तद ढोलोजी ऊठि नै मारू नै घणौ मनमांन दीधौ। हाथ पकड़ ढोलिया ऊपर बैसांणी। आम्हा-सामहा चौ निजर हुवा।

ढोले जांण्यौ बीजळी, मारू जांण्यौ मेह।
च्यार आंख अेकठ हुई, सैणां बंध्यौ सनेह॥

मारू बैठी सेज सिर, प्री मुख देखै तास।
पूनम केरे चंद ज्यू, मंदिर हुवौ उजास॥

ढोले मन आणंद हुयौ, चतुर तणे वचनेह।
मारू मुख सौरंभियौ[3], आवि भमर भणकेह॥

कंठ विलग्गी मारवी, करि कंचूवा[4] दूर।
चकवी मन आणंद हुवो, किरण पसारचा सूर॥

आसा मूध उतारियो, धण कंचुली गळेह।
घूमै पड़िया हंसड़ा, भूला मानसरेह॥

---

[1]चली [2]गजगामिनि [3]सौरभयुक्त [4]कंचुकी।

ढोलो मारू अेकठा, करे कतूहळ केळ।
जांणै चंदण रूंखड़ै, विलगी नागरवेल॥

आजे रळी वधावणौ, आजे नवळा नेह।
सखी अमीणा गोठ में, दूधे वूठा मेह॥

ज्यूं सालूरां सरवरां, ज्यूं धरती सूं मेह।
चंपक वरणौ बाल्हमौ, चंदमुखी सूं नेह॥

ढोलो मारवणि रमता हितारथ सूं धापै न छै। वळे काव्य-रस लेवै छै—

सुंदर चोरे संग्रही, सब लीधा सिणगार।
नदफूली लीधी नहीं, कहि सखि कवण विचार॥

तद कह्यौ—

अहर रंग रत्तौ हुवै, मुख काजळ मसिवन्न।
जाण्यौ गुजाहळ अछै, जेण न ढूक्यौ मन्न॥

सहेल्यां जाळ्यां मांहे झांकती हुती तिके बोली—

सज्जण आया हे सखी, थांनै किण कहियाह।
राय चंपा रा फूल ज्यू, महले महमहियाह॥

ढोलोजी कहण लागा—अबै म्हांनै सीख दिरावौ। पिंगळ राजा बोल्यौ—घणा बरसां सूं कंवरजी पधारिया छौ, महीनो अेक अठै रहौ। जद ढोलोजी बोलिया—रह्यां सभै नहीं। सीख रो हुकम होवै। तद पिंगळ राजा कह्यौ—भली बात। अबै मेलण री तयारी करां छां, इतरै दोय दिन वळे रहौ। ढोलोजी बोल्या—रथ सेझवाळां रो काम नहीं। म्हे तौ अठारा हाल्या[1] ठेट नळवर जास्यां। बीच कोई रहां नहीं। म्हे हेकण ऊंठ चढ़ि ठेठ जास्यां। जद पिंगळ राजा कह्यौ—म्हांरी धरती खोटी[2] छै, अठै राज साथ लेनै पधारौ। आंपणे ऊमर सूमरौ लागू[3] छै। तद ढोलोजी बात मानी। राजा पिंगळ रथ जुताय मारवणि नै मांहे बैसांणी। सेझवाळां मांहे सहेलियां बैठी छै। दीवाधरी[4] साथै दीन्ही छै। सौ असवार साथै दीधा।

ऊमर सूमरा नै ढोलोजी आयां री खबर हुई छै सु मारग बांधिया छै—ढोला नै मारस्यां अर मारवणि नै उरी लेस्यां।

---

[1]चलते हुए [2]बुरी [3]पीछे पड़ा हुआ [4]वह दासी जो दीपक संजोती है।

सोव्रन जड़ित सिंगार बहु, मारवणि मुकळाइ ।
गय हैवर दासी बहुत, दीन्ही पिंगळ राइ ॥

हिव सूमर हेरा हुवै, मारू झूंबण हार ।
पिंगळ बोळावा[1] दिया, सोहड़ सौ असवार ॥

ढोलोजी पहल वामे थळां[2] में रह्या । अळगा-अळगा असवार चौकी रह्या छै । इसै समै दोनूं जणा बातां करै छै—अेकण सेज बैठा थका । ताहरां ढोलाजी पूछियौ—थे इतरा दिन क्यूंकर काढ़िया[3] । ताहरां मारू बोली—कंवरजी साहब, किनरा हेक दिन तौ मोनूं खबर न छी । सौदागर आयां पाछै खबर हुई छै । तठा पछै दिन दोरा घणा ही निसरिया । आप तांई[4] आदमी मेलवा सूं आदमी सौ मारिया गया ।

पछै ढोलोजी कहै—थां विनां दिन गया तिके बरस ज्यूं बीत्या । वळे कहण लागा·—

मारू थांरा गुण घणा, किम हूं कहूं ज सार ।
आखर तौ बावन रह्या, तुझ गुण अंत न पार ॥

यूं बातचीत करतां राति-वासो[5] लियौ अर नींद आय रही, तद दोनूं पोढ़ि रह्या । मारवणि रै सरीर री सौरम किस्तूरी जिसी छै । उठै पीवणा सांप घणा हुता तिण सूं रात सूती मारवणि रो सांस पीग्या, तिण सूं मारवणि निरजीव होय गई । परभाते जगाई जागी नहीं । ताहरां ढोलोजी, दीवाधरी सखी नै सगळा ही आंणि भेळा हुवा । ढोलोजी अति विलापात करण लागा—

निसि भर सूती सुंदरी, वालम कंठ विलग्गि[6] ।
मोहण-वेली मारवी, पीधी नाग भुयंगि ॥

जिण देसे विसहर घणा, काळा नाग भुयंग ।
सुती निचंती मारवी, ढीला मेल्है अंग ॥

वाही[7] थी गुण वेलड़ी, वाही थी रस वेलि ।
पीणे पीवी मारवी, चाल्या सूर्ता मेलि ॥

मारू मारू कळइयां, ऊजळ दंती नार ।
हंस नै दै हुंकारड़ौ, हिवड़ौ फूटणहार ॥

---

[1]पहुँचाने के लिए [2]रेगिस्तान [3]निकाले, बिताये [4]लिए [5]रात भर का विश्राम [6]लगाकर [7]बोई ।

बोलाऊ कहण लागा—कंवरजी दुख मती करो। मारू नै दाग द्यौ अर थे पाछा चालौ। मारवणिजी री तीजी बहन चंपावती थांनै परणावस्यां[1]। ताहरां ढोलोजी बोल्या—

इण भव मारू कांमणी, अन पाणी इण सथ्थ।
पूंगळ नूं सह को वळउ[2], न करउ म्हांकी कथ्थ॥

ढोलोजी घणा ही साद[3] दिया पण मारू जागी नहीं। ढोलोजी कहै—

वळतौ ढोलो इम कहै, कळ[4] अखियात[5] करेह।
मारवणी पीणै डसी, हूं ही साथ करेह॥

तिण वेळा सिव पारवती समाजोग सूं तिण ठौड़ आय निसरिया। तद जोगी रै भेख सिवजी बोलिया—

नर नारी सूं क्यूं जळै, नर सूं नारि जळंत।
सालहकुंवर जोगी कहै, अहळौ[6] केम मरंत॥

तद पारवती कहै—

संकर सूं गवरी कहै, प्रीत मिळै किण पाड़ि।
जो स्यांमी[7] कहियौ करै, तौ मारवणि जीवाड़ि॥

पछै पारवतीजी अेक थळ पाछै छिप रह्या। महादेवजी रो जीव तातूं-माघू[8] करण लागौ। तद पारवतीजी पाछा आया तौ सिवजी बोल्या—थांनै दीठां विनां घड़ी अेक हूं घणौ अचैन पायौ। तद पारबतीजी बोलिया—महाराज, इणी पीड़ लुगायां री सारांही नै हुवै छै। मारवणि रै हेत ढोलो लारै बळै छै। इण री दया देख मारवणि नै जिवाड़ौ। सदा सिवजी ढोला नै कहण लागा—लुगाई री लारां मती वळौ। तद ढोलोजी बोलिया—

सिव हूंतां ढोलो कहै, कूड़ी गल्ल न कथ्थ।
हूणा जीणा अेकठा[9], मरणा मारू सथ्थ॥

महादेवजी विचारियौ—ढोलो खरै-मने[10] बैठा छै। ताहरां सिव अम्रत छांटियौ, मारवणि जीवती हुई।

---

[1]ब्याह देंगे [2]लौटो [3]आवाज [4]कलयुग [5]प्रसिद्ध, अमर [6]व्यर्थ
[7]स्वामी [8]बेचैन [9]एक साथ [10]पक्का विचार।

हुई सचेती मारवी, ढोले मन आणंद।
जांण अंधारी रयण में, प्रगटचौ पूनमि चंद॥

मारवणि नै सचेत करि सिव-पारवतीजी अलोप[1] होय गया।

मारवणि ढोलेजी नै पूछण लागी—लकड़ा भेळा कासूं कीधा? तद ढोलोजी बोलिया—मारवणि, थे निरजीव होय गया छा। पीवणो सांप थांनै रात नै पी गयौ छौ। अबै हालण री तयारी करै छै—

के मेल्या पूंगळ दिसइ, किहीं भळाया भार।
साल्हकुंवर करहे चढ़्यौ, वांसे चाढ़ी नार॥

ऊमर सूमरे नै ढोला-मारू रै आवण री खबर मिळी तद आय मारग वांधियौ। बैठा मतवाळ कर रह्या छै। तद अै मारू री निजर आया। ताहरां मारवणि बोली—कंवरजी, अे भला न छै। यां सूं टळ[2] नीसरौ[3]। अे आंपणा दुसमण छै। ढोलाजी नै टळण री सौगन हुती, तिण सूं टळिया नहीं। इतरा मे ऊमर सूमरो आडो आय फिरियौ—

ऊमर दीठौ करहलो, दीठा मारू ढोल।
आवौ कंवरां मद पिवां, बोलै मीठा बोल॥

ऊमर ढोलाजी नै कहै लागौ—राज उरा[4] पधारौ। टळ'र क्यूं नीसरो छौ। घड़ी अेक ऊतरौ ज्यूं भेळा अमल-पांणी करां[5]। पछै म्हे म्हांरै गेनै[6] जास्यां, राज राज रै मारग पधारज्यौ। इतरी मनुहार करि करहा री मोहरी झालि[7] करहा नै झेंकायौ। तद ढोलाजी ऊंठ री मोहरी मारवणि नै झिलाई, आप ऊमर सूमरा सांम्हे गया। आगे गलीचां रा बिछावणा हुइ रह्या छै, जठै ढोलोजी जाय बैठा छै। तद ऊमर कह्यौ—

ढोला थांका देस में, निपजै तीन रतन्न।
इक ढोलो बीजि मारवि, करहो कुंकु वन्न[8]॥

ताहरां मारवणि रै लारां पीहर री डूमणी ऊभी छै तिण विचारियौ—अे घात खेलै छै। म्हैं यां रा वाला[9] कवा[10] खाया छै। कांई समझावण करूं। ऊंठ रो गोडो पण बंधियौ छै—यूं सोच करै छै।

---

[1]अदृश्य [2]टल कर [3]निकलो [4]इधर [5]अफीम आदि लें [6]रास्ते [7]पकड़ कर [8]वर्ण [9]प्यारे, मीठे [10]कौर।

गीत गावती डूमणी, खेली नवळी घात।
करहा ढोलो ऊबरै, कहि समझाऊं वात॥

तांत तणक्कै पिव पियै, करहो ऊगाळेह[1]।
भल काढ़ेसी दीहड़ा, विहि[2] जु काढ़ग देह॥

सयग्ग खळां में मडियो, अेहज रंग कुरंग।
धग्ग लीजै पिव मारिजै, छोडि विडाग्गो[3] संग॥

मारवणी तू अति चतुर, हियै जु चेत गिमार।
जो कंता मू कामड़ो, करहो कांबे मार॥

डमणी रा कहचा सं मारवणि समझी। करहा नै कांव वाही जद करहो ऊठ तीनां पगां सूं हालतौ हुवौ। तद ऊमर बोलियौ—करहो जाण पावै नहीं। ताहरां राजपूत झालण नै ऊठिया। तद मारू बोली—ठाकरां, क्यांनै दोड़ौ ? थां कन्हां पकड़ावै नही। इणरा धणी नै मेल्हौ जु विसाम[4] नै पकड़ै। तद ऊमर कहचौ—ढोलाजी करहो पकड़ वेगा पधारौ। राजपूतां नै कहचौ—थे ढोला दोळा[5] रहज्यौ। पछै ढोलोजी करहा नै जाय पहुंता। विसासि नै करहा नै ऊभौ राखियौ। तद मारवणि कहचौ—

ततखिग मारवणी कहै, सांभळि कंथ सुजांग।
आपां चूकौ ऊमरौ, क्यूं रक्खै आपांग॥

आ हकीकत सुणि ढोलोजी झैंकि चढ़िया। ढोलोजी मारू सांम्हौ जोयौ। मारू री आंख्यां में इमरत वसै छै, तिण सूं ढोलाजी रो अमल उतर गयौ। तद मारवणि कहचौ—आप करहा नै तातौ[6] खड़ौ। जद ढोलोजी करहा नै कांव वाही। ताहरां ऊंठ तीन पागां रै पाण पंखेरू ज्यूं उडियौ जाय छै। ताहरां ऊमर बोलियौ—ढोलो जांणे न पावै। ताहरां ऊमर सूमरो पांचसै असवारां थां[7] चढ़ियौ—

ऊमर ऊतावळि करे, पल्लाणिया पवंग[8]।
खुरमांणी सूधा खयंग[9], चढ़िया दळ चतुरंग॥

हळ हल्यौ ऊमर कहै, पंथी पड़ै पयांग।
जो झालै तिण लाख दयूं, करहा नै कैकांग॥

---

[1]जुगाली कर रहा है [2]विधि [3]पराया [4]विस्वास में लाकर [5]पास, चारों तरफ [6]तेज [7]से [8]घोड़े [9]घोड़े।

ऊमर बिच छेती घणी, घाते गयौ जहाज।
चारण ढोले सांमुहौ[1], आइ कियौ सुभराज॥

अबै ढोलाजी रै नै ऊमर सूमरा रै आंतरो[2] घणौ पड़ियौ। आगै मारग जातां ढोलाजी नै चारण मिळियौ तिण कहचौ—ठाकुरां आला, ऊंठ रो गोडो बंधियौ छै। थे दोय जणां चढ़िया। इतरी करहा मांहे कासूं चूक छै? इतरो सुणि ढोलोजी दलगीर हुवा। कमर मांही सूं कटारी काढ़ बंध काटण रै लियै चारण नै दीन्हीं। भळे कहचौ—आ न्यांणी[3] ऊमर सूमरा नै दिखाजौ। कहज्यौ—तीनां पगां सूं हिज करहै विषम थळ लंघिया। अबै तो च्यारां पगां सूं पंथ काटै छै।

पछै चारण नै ऊमर सूमरो दूजै दिन मिळियौ। तद चारण कहण लागौ—

ऊमर सुण मुझ वीनती, दउडि म मार तुरंग।
करह लंघियौ[4] कूटियौ, आडावळा बड बग॥

चारण बोल्यौ—ठाकरां, घोड़ा मत मारौ। ढोलो कोई हाथ आवै नहीं। वै तौ हमें नळवरगढ़ पहुंता छै अर वळे न्यांणी रो सैनांण बतायौ। तद ऊमर सूमरो फीटो पड़[5] आपरै घरे गयौ।

ढोलोजी नळवरगढ़ जाय वाग में उतरिया। बागवान जाय नळ राजा नै खबर दीवी—कंवरजी पधारिया छै। मदळ साथै छै। ताहरां नळराजा बागवान नूं घणी वधाई दीवी। राजलोक सू घणी बधाई दिरीजी, जिण सूं बागवान रा दळीदर[6] दूर हुवा।

पछै नळराजा सुखपाळ विनाई[7]। सुखपाळां मांहे सगळौ राजलोक बैठो छै। सखियां सेझवाळां मांहे बैठी छै। रांणी दमैती पण आई छै। बाग मांहे कनातां[8] तांण, विछायतां कीवी। मारवणि नूं हजूर बुलायी। सासू मूंडो दीठौ तद घणी रजाबंद[9] हुई। और ही सारो राजलोक राजी हुवौ। मारू नै मूंडा दिखाणी सासू दस गांव दीधा। तद सहेलियां बोली—कंवरजी, मारवणि वास्तै नींद न लीवी छी, सु मारवणि इसीज छै।

---

[1]सामने [2]दूरी [3]वह रस्सी जिससे ऊँट का पैर बाँधा जाता है [4]लांघ गया [5]शर्मिन्दा होकर [6]दरिद्र [7]भेजी [8]पर्दे [9]प्रसन्न, संतुष्ट।

पछै राजा नळ पंडितां नै बुलाया, समूरतौ बूझियौ। ताहरां पंडित कह्यौ—महाराजजी, आज रो समूरत तौ आछौ छै। जद राजा नळ आपरो खवास खिनायौ अर कहाड़ियौ—आज रो महूरत आछौ छै। कोट में पधारौ। कंवरजी कह्यौ—भली वात, सेभवालां जुपावौ। अबै कंवरजी घोड़ै चढ़िया छै। सारी सहेलियां मंगळ गावै छै। डूमणियां वधावा गाय रही छै। बत्तीस वाजित्र[1] बाजै छै। नाटिक नृतकारी कर रह्या छै। इण भांत सांमेळौ करि[2] वधाय नै ढोलाजी नै गढ़ मांहे लिया। आयनै नळराजा रै पगे लागा। नळराजा वहोत राजी हुवौ। खवास पासवान उमराव सारांही कंवरजी सूं मिळिया। मुजरा पछै नळ राजा कंवरजी नै सीख दीवी सु महलां-दाखल[3] हुवा। सारा ही सहर मांहे वधाई वंटी। उछाह हुवौ। ढोलाजी महलां जाय सारा राजलोक सूं मुजरो किगौ। राजलोक सारे ही निछरावळ[4] कीवी। पछै ढोलेजी खवास पासवानां नै सीख दीवी। इतरा मांहे मारवणिजी ढोलाजी री हजूर आई। पछै माळवणि पण सिणगार करि सखियां रै झूलरै ढोलाजी री हजूर आई। तीनूं ही जणां भूमि[5] मांहे बैठा छै। राजलोक सारो ही जाळियां मांहे झांकै छै।

मारवणि नै माळवणि, ढोलो तिण भरतार।
अेकण मंदिर रंग रमै, की जोड़ी करतार॥

ताहरां माळवणि ढोलाजी नै पूछण लागी—कंवरजी, किसी भांत पधारिया, किण विध आया। ताहरां ढोलेजी अेवाळ री, भाट री, चारण री, मारग में जिको हकीकत हुई छै तिकी सारी ही कही। वळे ढोलेजी पूंगळ रा घणा घणा वखांण[6] किया। पिंगळ राजा रा, आपरी सासू ऊमा देवड़ी रा घणा वखांण किया। ताहरां माळवणि बोली—

ततखण माळवणी कहै, सांभळ भंत सुरंग।
सगळा देस सुहामणा[7], मारू देस विरंग॥
बाळू बाबा देसड़ौ, पांणी संदी तांति।
पांणी केरे कारणै, प्री छंडै अधराति॥

---

[1]वाद्य यंत्र [2]स्वागत करने की रस्म अदा कर [3]महलों में प्रविष्ट हुए
[4]आत्मीयजन के सिर पर कोई वस्तु या द्रव्य घुमा कर दान कर देना
[5]झूला [6]बखान, प्रशंसा [7]सुहावने।

बाबा म देई मारुवां, वर कुंआरि रहेमि ।
हाथ कलोळो[1] सिर घडो, सींचंती य मरेमि ॥

जिण भुइ पन्नग पीयणा, कयर कंटाळा रूंख ।
आके फोगे छांहडी, हूंछां[2] भांजै भूख ॥

ताहरां मारवणि बोली—

वळती मारवणी कहै, मारू देस सुरंग ।
बीजा तौ सगळा भला, माळव देस विरंग ॥

बाळू बाबा देसडौ, जंह पांणी नेवार[3] ।
ना पगिहारी झुलरै[4], ना कूवै लैकार ॥

बाळू बाबा देसडौ, जंह फीकरिया[5] लोग ।
अेक न दीसै गोरियां, घरि घरि दीसै सोग ॥

तद ढोलाजी बोलिया—

मारू देस उपन्निया, त्यांका दल सुरंत ।
कुंभ-बची-गोरंगियां, खंजर जेहा नेत[6] ॥

मारू देस उपन्निया, सर ज्यूं पाधरियांह ।
कड़वा कदे न बोल ही, मीठा बोलणियांह ॥

देस सुरंगो भुंइ निजळ, न दियौ दोस थळांह ।
घर घर चंदवदनियां, नीर चढ़ कंवळांह ॥

सुणि सुन्दर केतां कहां, मारू देस बखांण ।
मारवणी मिळियां पछै, जांण्यौ जनम प्रवांण ॥

ढोलोजी मारवणि रा अर मारवाड़ रा बखांण किया ताहरां झगड़ो भागौ[7] । वळे माळवणि जांण्यौ—घणौ कहचां तौ कंवरजी बुरो मानसी तिण सूं मरावै[8] पण हासौ[9] करती जाय छै । माळवणि इण विध सराह पण करै, मसकरी पण करै तोही ढोलो मारू रो बुरो न मानै । बीजो राजलोक आपरै ठिकाणे गयौ ।

ढोलोजी अर दोनां राणियां बैठा बात करै छै ।

---

[1]कटोरा [2]भुरट [3]ऊंचा [4]झुण्ड [5]फीके, कमजोर [6]नेत्र
[7]समाप्त हुआ [8]सराहना करती है [9]हंसी-मजाक ।

जिम मधुकर नै केतकी, जिम कोइल[1] सहकार।
मारवणी मन हरखियौ, तिम ढोले भरतार॥

मारवणि नै माळवण, पायौ छै भरतार।
महलां मांहे रंग रमै, विलसै सखरी वार॥

रायजादो ढोलो रमै, प्रिया ज मारू संग।
केसर वरणी साथ में, अेमौ मारू अंग॥

मारवणि सूं ढोलाजी रो हेत घणौ छै। घर रा महल-माळिया सगळा दिखाया छै। तद बीजा राजलोक बोलिया—आज तौ मारवणि नै बाग दिखावण लेजावां। तद सगळो राजलोक भेळो होय नै बाग गया। उठै मारू नं सगळी जायगा दिखाई। पछै राजलोक मारवणि नै कहण लागा—थे उठै पूंगळ में दूहा कह्या सो म्हे अठै सांभळिया[2]। राजलोक कहै—

मारू तूं तौ मोहणी[3], सह सिणगार सपूर।
महिलां मांहि उजासड़ौ[4], जांणु क ऊगौ सूर॥

इतरी बात तौ बाग मांहे हुई, पछै सारो राजलोक महिलां पधारियौ। ढोलोजी पण दरीखाना सूं ऊठ महल पधारिया। मारवणि ढोलाजी रै हजूर आई। तद ढोलोजी बोलिया—

मारू महलां संचरी, कनक वरणे तास।
पूगळ मांहे ऊपनी[5], नरवर हुवौ उजास॥

ढोलाजी मारू सूं अति प्यार राखै छै। सासू-सुसरा पण मारू रो मांन घणौ करै छै। मारू पण सासू-सुसरां रा कथन में रहै छै।

अबै पिंगळ राजा डायजो मेलियौ छै। मारवणि रा सासू-सुसरां नै सवागा, करहा, कैकांण घणा ही दीधा। मारवणि रै पचास हजार रिपियां रो गहणो—पांच हजार रो सोना रो गहणो, मोतियां रो गहणो, हार-गजरा मेलिया छै। सातबीसी सहेलियां मेलो छै ज्यांनै च्यार हजार रो रूपा रो गहणो। दस हजार रो सोना रो गहणो सहेलियां सारूं मेल्यौ छै। पिंगळ राजा रो परधांन डायजो ले'र आयौ छै, तिण रो ढोलाजी अर नळराजा घणी मनवार करै छै। साथे ढाढ़ी पण आयौ छै।

---

[1]कोकिल [2]सुने [3]मोहिनी [4]प्रकाश [5]उत्पन्न हुई।

आणंद घणा उछाह अति, नळवर बाज्या ढोल ।
ससनेही सयणां तणा, कळि[1] में रहिया बोल ॥

ढोले मारू घणा सुख विलास कीधा नै जुग-जुग त्यांरा बोल रहसी । ढोला मारू रा बात दूहा मगर-वल्ह[2] गाया तिणां नै लाखपसाव ढोलाजी दियौ ।

अबै ढोला मारू री बात सुणसी तिणां नै ढोला मारू रो सुख होसी । दुख उपजै नहीं । दिल खुस्याळी रहसी ।

इति श्री ढोला-मारू री वारता, दूहाबंध संपूरण
संवत् १८७२, भादवा सुदि १४

[1]कलियुग [2]दोनों ढाढ़ियों के नाम जो मारवणि का संदेश नळवरगढ़ ले गये थे ।

जलाल - बूबना

बेटा कुलनहसीब का, जास गाहणी माय[1]।
जिसकी औरत बूबना, सो मुमना न सुहाय॥

थटाभखर रो बादसाह अगतमायची। तिणरी बहण, तिकी बुलख रै बादसाह कुलनहसीब नूं परणाई। तिणरो गढ़ गजनीपुर राजस्थांन[2]। तिणरै बेटा दोय हुवा। पछै बादसाह फौत हुवौ।

सो बादसाह फौत हुवौ जांण भोमिया[3] ऊपर आइया[4]। उमराव फोड़िया देखनै, गाहणी दोनूं बेटां नूं लेयनै, थटेभखर आई। भाई कन्है भांणेज दोनूं मिळिया। तरै[5] अगतमायची बादसाह महरबान होय मनसब दियौ। पण जलाल वयूं ही सहूर[6] में निजर अव्वल आइयौ। रूप रंग में जसो बादसाह रो छोहरू[7] होवै तिसौ हीज दीसै। उदार चित्त, घणौ मांणगर[8], सो छोटे थकां ही री निजर ऊमदा[9]। तरै जलाल नूं हजार दस री जागीर दीन्ही और हजार तीन रोकड़ खजाना सूं हाथखरच रा आवै। तनोंमनों यार नै गखड़ो ढाढ़ी गावै। आगै ओसाप परवाड़ा[10] बूढ़ां रा, दातारां रा, मांणगरां रा सुणावै। ताजियो गुहलोत तिको जलाल आगै देसां विदेसां री गल्हां[11] करै। फूलमदवो खवास खवासी

---

[1]माता [2]राजधानी [3]जागीरदार विशेष जिनकी जागीर भाम कहलाती है
[4]आए [5]तब [6]ल्याकत [7]लड़का [8]उपभोग करने वाला [9]बढ़िया
[10]प्रवाड़ा [11]गप्पें, बातें।

करै । रात दिन इतरा हजूर मांही रहै । यूं रहतां करतां जलाल बरस बारह में हुवौ । तरै हथियार बांध बादसाह कन्है मुजरै आइयौ । तरै खवास बादसाह रै नै जलाल रै बिचै खांडो खड़ो कियौ । जलाल सलांम कीवी । तरै मांमे पूछियौ—जे भांणेज, कमर बांध किम तरफ तयार हुवे, और बीच में खांडा क्यूं खड़ा किया है ? तद जलाल बोलियौ—जे हूं ही बादसाह रो लड़को छूं सो सलांम तौ बरोबरी रै दावे नहीं करूं, तींसूं खांडो बीच रै मांही खड़ो कियौ । और सिपाही छां कठे ही पेट भरणो नूं चालस्यां । बादसाह कही—दस हजार री जागीर पावौ छौ, सागे तीन हजार रोकड़ हथखरच[1] रा ही पावौ छौ, तोही निबाह[2] क्यूं ना हुवै ?

तद जलाल बोलियौ—चाकरी खूब करावौ पण बादसाहां रो अमल-दस्तूर[3] दुरस्त करियौ चाहौ तौ म्हारे मुरातबा[4] माफक मनसब[5] देवौ । बादसाह कही—मनसब क्या लेवोगे ? जलाल कही—पाऊं तोपकसो पण पक्को हपतहजारी[6] मनसब देवौ, तिणसूं चौदह हजार असवार अेकां मौजूद पास रहै नै लाख अेक रिपिया छैमाहिया देवौ । तिण में सात हजार ढळैत राखूं रै हजार सात बरकमदाज रहै । मिळिया मिळिया हजार चौदह असवार रहै । हजार चौदह पियादा रहै । जुमो हजार अगई लोग सिपाही रहै । तरै खुसी आवै सो चाकरी करावौ । करड़ी मुही[7] में भेजौ । इतरी देवौ तौ रहूं । चाकरी हजूर री करूं ।

तरै बादसाहजी हंस नै फुरमान कियौ—हपतहजारी मनसब रिपिया लाख रो छै । तरै जलाल जागीर में आदमी भेज्या । भला सिपाही, साखदार[8] खांप-खांप रा राखिया । हमेसां सुधा में गरकाब[9] रहै । कलावंत[10] तवायफां[11], सात चाकर राखिया । राग-रंग में मस्त रहै । अमराव मुजरै नूं आवै त्यांनै कस्तूरी कपूर री चोळी कर निपट मुंहगे मोल रो बीड़ो देय इतर में गरकाब रहै । हमेसां गोठां हुवै । दूबळा-लोग[12] जिका आवै धाप-धाप जावै । गरीब

---

[1]हाथ खर्च [2]निर्वाह [3]राज्याधिकार देने की रस्म [4]रुतबे के [5]पद विशेष जिसमें रोकड़ या सवार रखने का खर्चा दिया जाता है [6]मनसब विशेष [7]कठिन परिस्थिति [8]खानदानी [9]पगा हुआ [10]गायक, गाने वाली एक जाति [11]गाने का पेशा करने वाली औरतें [12]गरीब लोग

खैरात पावै। गरीबां नूं नितका[1] नाज, कपड़ो जिको चावै सो पावै। ढाढ़ी, गुणीजन आवै। इनाम पावै। पेटिया खावै। गुण गावै। मौजां करता जावै।

बागां मांही सैलां करै। गुलाबजळ री तूंगां[2] सूं सांपड़ै[3]। छिड़काव गुलाब रो हुवै। केसर-कस्तूरी, भीमसेनी कपूर रो मरदन हुवै—तिणरो कीच मंचियौ रहै। सो इण भांत जलाल गहरी मौज आणंद सूं रहै। फूलां री तिवारा[4] दारू पी'र लाल रहै। दिनरात सारो साथ मतवाळो छकियौ रहै। सो इण भांत जलाल राजस करै।

तिण समै सिंध समुद्र रो बादसाह भंवर, तिण रै जीवणी बेगम जचणजात, तिणरी कूख दोय बेटी हुई—बड़ी मूमना, छोटी बूबना। बड़ी बरस अठारह में, छोटी बरस पनरै मांही हुई; जद बादसाह खासा[5] हजूरियां नूं फुरमाई—जे बाथां मोटी हुई। जमी बाथां छै तिसाही बर जोवौ। भो बादसाह जलाल री बात सुणी थी:—

जलाल हाथां ऊपरै. वारूं अमुरांगीह[6]।
कपणां[7] कितां विमाह[8] व्है, मान जां गाहणीह॥

मांगीगर दातार में, रसवंगौ[9] जस खग्ग।
जायौ अर नह जनमसी, जलाल जैसो नग्ग॥

अै दोहा गुण नेप गाहणी री दात पूछै। तरै बादसाहजी कहियौ—जलाल बड़ो दातार, भोगी-भंवर[10] छैल छै, तिणसूं बूबना तौ जलाल नूं देवौ। आ पण बहोत सुपड़ छै। मूमना विसेस समझदार नहीं छै, तिणसूं आ बादसाह अगलमाथची नूं देवौ। तिणरै तीन सौ साठ हुरमत छै, पण मोटौ सगौ छै। इतरो विचार कर दरबार रा आदमी सागे देय काजी नै मुद्दै कर, हाथी घोड़ा कपड़ो मेवौ रोकड़ बेवड़ा नारेळ टीके मेलिया। हकीकत सारी कही। सो चालतां-चालतां थेट थटेभखर पहुंचिया।

बादसाह नूं खबर हुई—सिंध समुद्र रै बादसाह रै दोय बेटी छै, त्यांरा नारेळ

---

[1]सदैव [2]तरल पदार्थ रखने का बड़ा बर्तन [3]स्नान करते हैं [4]तीन बार भट्टी पर चढ़ाया हुआ तेज शराब [5]खास [6]मुसलमान स्त्री [7]कंजूसों के [8]विवाह [9]रस-कुशल [10]रसिक, बहुत उपभोग करने वाला।

आइया छै। बड़ी मूमना तिकी बादसाह नूं। छोटी बूबना तिकी जलाल नूं छै। बादसाह दोनां री बात सुणी थी तींसूं कही—छोटी हमारे होवै तौ आछी। तरै काजी अरज करी—जलाल सुघड़ छैल छै, नै बूबना पण सयाणी छै—तिणसूं जोड़ी देख भेज्या है। बादसाह कही—सुघड़ छैल क्यूं करके जांणिये। तरै कह्यौ—सांपड़ै[1] जणां माथा रा केस उळझाय देवै पछै कांगसी केसां रै ऊपर धरै तिकी पाधरी[2] चली आवै, अटकाव नहीं होवै, धरती तक चली आवै, सो पूरो सुघड़ छैल कहीजै। सो इसड़ौ जलाल छै। और आप बड़ा हो तिणसूं बड़ी लड़की आपरै तांई देणी फुरमाई है। तरै बादसाह कहियौ—तुम जलाल रै पास जावौ और छोटी रा नारेळ हमारे ठहरावौ तौ हम रजामंद है। इतरो कह काजी नूं चाहियौ[3] लालच दियौ सो काजी ललचाय गयौ। तद बूबना रो नारेळ बादसाह नूं अर मूमना रो नारेळ जलाल नूं बंधायौ। आया था तिका नूं रीझ-मौज[4] मिजमानी देय विदा किया।

पछै बादसाह जलाल नूं कहियौ—ब्याहणे कूं चढ़ौ। तरै जलाल कहियौ—मामाजी, हूं कहूं जितरो सामान दिरावौ। तद बादसाह हंस'र पूछी—मांगौ। तद जलाल कही—सात सौ घोड़ा कंधारी, इकमोला हजारी तिकी गुनहरी रूपहरी साखत दिरायजे और खजाना सूं रोकड़ दिरायजे। बीजो साथ सामान भगळौ म्हारो छै हीज।

तरै नवलाख रिपिया रोकड़ हाथखरच नूं दिराइया[5] और आवतां जावतां रो रोकड़ खरच दिरायौ। और बादसाह खुस होय कह्यौ—जलाल बादसाहां रै पूगड़ा[6] होय जैसा ही है। रोजगार रो हुकम गयत हुवौ। तद जलाल आपरा सात सौ सांईना—अेक रंग, अेक रूप, अेक अवस्था त्यांनै आप जसी पोसाक कराई। केसरिया, बादलाई पारचो, कबल, बागा, कपड़ो, कमरबंध, पाग सब नूं बंधाई। घोड़ा सातसौ अबलख, समदा भंवर, गंगाजळ, संजब, कुम्मेद और गुलदारी फुलवारी तयार कराया त्यांरै सुनहरी, रूपहरी सागे साखत साज सजाया। जड़ाऊ पलांण मंडाइया छै सो सारीखां नूं सरबरा[7] कर चढ़णे नूं दिया। बादसाह कह्यौ—जे चाहौ सो और लेवौ। तद हाथी तीन सौ गहणा सूं गरक

---

[1]स्नान करते समय [2]सीधी [3]मनचाहा [4]प्रसन्न होकर इनाम आदि देना [5]दिये [6]शाहजादा [7]खातिर।

थका लिया। सो हजार चौदह घोड़ा और हजार चौदह प्यादां सूं चढ़ियौ। सवारी बणाय बादसाहजी रै मुजरै नूं आइयौ। बादसाह झरोखे आय सवारी देख बहुत ही खुस हुवौ अर कह्यौ—जे मेरा बेटा जलाल अैसा नजर आवै है—जैसा आपणा दंतन खांडे रै बळ आप लेवेगा।

बादसाह आपरो खांडो सिणगार हाथी रा मेघाडंबर[1] मांहो खवास रै हाथ देय विदा कियौ तिके जलाल मजल दरमजल चाल, सिंध समुद्र जाय डेरा दिया।

बादसाह भंवर अजेस[2] जांणै छै—जे बूबना जलाल नूं छै, तिसै भरम उपजियौ। तठा पाछै सांझ समै तोरण मारण रै तांई जलाल सातसौ असवार अेक रंग सूं बणाव[3] कर, हाथियां री कोर लगाय, नोबत बाजा बजावता, तवायफां नचावता चालिया। खलक[4] लोग तमासो देखै। जलाल कहै—छड़ी[5] मतां करौ। तमासौ देखगे देवौ। सोने रूपे रा फूल उछळता आवै। खैराती[6] अरज करता आवै, सो खैरात पावै छै। इण भांत हाथी रै मेघाडंबर चंवर ढ़ळतां थकां सूरजमुखी लागियां जलाल आइयौ।

जलाल रै सिर सेहरो, बूबना सिर सिन्दूर।
जांणै सिंध समुद्र में, पद्मगंध दा सूर॥

इसी भांत तोरण मार मांही नूं गया। चंवरी बैठ नका पढ़णे लागिया। तरै काजी कामदार बोलिया—बूबना बादसाह नूं दीवी है। इतरी बात बादसाह भंवर सुण काजी कामदार सूं नाराज हुवौ और कही—हम मारीखी जोड़ी देख भेज्या था। तुम लालच पड़ कर फेरासारी[7] कीन्ही है। तद काजी नूं खूब पैजारां[8] पिटवायौ। काज सूं दूर कियौ। घरबार लुटाय-खुसाय दीन्हौ नै तोखां[9] मांही दीन्हौ—

जलाल बातां फेरतां, फिरियौ भंवर साह।
काजी काज चुकावतौ, पड़ियौ कजिया[10] मांह॥

इतरो कियौ पण फेरासारो नह हुवौ। बूबना नूं पोसाक पहराय खांडा कन्है आंणी[11] और मूमना री चालढ़ाल देख कही—

---

[1]हौदे का छत्र [2]अभी तक [3]साज-शृंगार [4]दुनियां [5]छेड़छाड़ [6]खैरात लेने वाले [7]उलट-फेर [8]जूतों से [9]लोहे का भारी डंडा गले में मोड़ कर लटका दिया [10]झंझट [11]लाए।

चंवरी बैठी बूबना, भळहळ बदन भळाह ।
जलो कहै पतसाह रा, अइयो भाग अलाह ॥

इमी ताह नका पढ़ी नै जलाल मनभंग[1] थकियो पोढ़णै गयो । बीबी आवै तैसे बूबना री खवास नेत्रां बांदी तिणनूं जलाल कही—नेत्रां खवास, तुम्हारी बीबी बूबना हमारी आरती मनुहार नहीं कीन्ही । तद नेत्रां खवास कही—जलाल साहिब, बीबी आवै । तैसे बूबना अम्मां नूं कही—जलाल साहिब नूं देखणे जावूं । कछु निछरावळ[2] जे करूं ? तद मां हुकम दियो, जणां बूबना आपरी सखी-सहेली, नेत्रां खवास नू आगै धर, जठे जलाल महल में बैठा छै, उठै आई । तीनू आवती देख जलाल कही—

अटल मोती सिर तिलक, वेणी अधिक बणाय ।
जांण'क हंस मळफियो, मानसरोवर मांय ॥
कहर किया वे बूबना, हंजी हंजली हाय ।
पड़िया तड़फै ताल मे, ज कार्जा करद किया ॥

इतरै बूबना आय खड़ी रही, तद जलाल कही—

न जांणू तैं क्या किया, लाड[3] गहेली[4] मुज्झ ।
नैणां नींद न जीव सुख, जदे न देखू तुज्झ ॥

तरै बूबना कहै—

बेटी भंवर साहरी, जवणी जचण माय ।
परणी ही पतांण का, तन मन दियो तुमाय[5] ॥

जलाल साहिब, हमारे अगतमायची पिता थांन कहे । इतरो जवाब कर अन्दर गई । मां सू बहोत बेदिल[6] थकी मिळी ।

कितरा अेक दिन पाछै बादसाह जलाल नूं सीख दीन्ही । दत्त-दाखजो दियो, बूबना नूं छतीस पाण दायजे दीन्हा, नेपडायो पड़दार[7] साथे जावनै नूं दीन्हो, तिको जनम रो आंधो पण हिया री इमी समझ जे देखतां नू खबर नहीं पड़ै । तिका महाडोल मांही बैठांण सखी सहेलियां, दासियां रै घणा जलूस सूं विदा किया । सो मजल छोटी-छोटी हुवै । कारण माहण-वाहण[8] घणा तिण सू बीजी मजल जाय डेरो हुवो ।

---

[1]निराश [2]वार-फेर [3]प्यार [4]पागल [5]तुझको [6]हताश
[7]उचोढ़ीदार [8]घोड़े की सवारी ।

उठे जलाल रो डेरो बूबना रै डेरा री कनात[1] सूं कनात, तणाव सूं तणाव अड़ाय हुवौ। तठै पाछलो पोहर हुइयो जणां मूमना अलियार वांदी नूं सागे लेय बूबना रै डेरै आई। तरै बूबना ऊठ नै मिळी। तरै बूबना मूमना चौपड़ रो खेल मांडियौ छै। मोहर पन्द्रह री वाजी लगाई। बूबना नै नेत्रां खवास अेक तरफ नूं हुई। और मूमना नै अलियार वांदी अेक तरफ नूं हुई। अेक रामत[2] री वाजी बूबना जीती। तरै बीजी वाजी मांडी सो मूमना री जीत नजर आई।

इतरै जलाल रै मन मांही बूबना बस रही सो जांणी। डेरा री कनात अेक लाग रही छै, नै बूबना देखूं, इसी विचार नै कटार हाथ लेय ऊठियौ। आपरी तरफ सू बूबना रे डेरा री कनात जरड़[3] देगी फाड़ी और मूंडो कनात मांही काढ़ियौ। उठी मूमना रो मुंहडो सांम्हौ थो और बूबना री पीठ थी। जलाल रो सूरज सो मुंहडो मूमना नूं नजर आइयौ सो मूमना रै हिया में झाळ ऊठी। तरै पासो न्हाखती हाथ रो झालौ[4] परे जांणे नूं कियौ। जे खोजो नाजर देख लेसी तौ बादशाह नूं कह देसी तौ फिसाद होसमी। बादसाहां रा मांणस देखीजै छै इसी साजस कीधी। इतरै नेत्रां खवास रे नजर आयौ, जद जलाल बेमन थकियौ मसनद ऊपर जाय बैठचौ।

इतरै मूमना बाजी जीत, बिखेर, बेखातिर[5] होय ऊठ आपरगे डेरै मांही आई। इतरै रोसनी हुई। दासी सहेलिगां आ मुमारखी दीवी। तरै नेत्रां वांदी नूं बूबना पूछी, कहणे लागी—मूमना जीती बाजी बिखेर बेदिल थकी क्यूं उठ गई? तरै नेत्रां खवास कही—बेगम साहिबा रै देखणे तांई जलाल साहिब कनात तोड़ी, तिण में मंहडो[6] घाल देखता था, तुम्हारी पीठ थी, मूमना साम्हो थी सो तिणनूं देख बेखातिर हुई। मूमना नै जलाल साहिब कुछ लेखो नहीं छै। इतरी बात सांभळ बूबना नेत्रां वांदी ऊपर रीस कीवी—जे जलाल साहिब पधारै अर तूं हमारे तांई सैन[7] में कहै ही नहीं। आप ही रातदिन जलाल करती रहै।

इतरै डेरा उठाय चालिया। तीसरी मजल जाय ठहरिया। उठै अेक आंबा रो बड़ो पेड़ तिणरी डाल सूं बूबना हींडो बंधायौ और चाहियौ—जे इण हींडे हींडती कनात ऊपर होकर जलाल साहिब नूं देखस्यूं।

---

[1]मजबूत पर्दा [2]खेल [3]कपड़े के फटने की आवाज [4]इशारा, संकेत [5]हताश [6]मुँह [7]संकेत।

आंम डाळ में बांधियौ, पाटै[१] पीठ विजूह[२]।
हींडै ला डग हेलिया, सैणां[३] सांम्हे यूंह॥

इण भांत कितरा अेक दिन चालतां-चालतां थटेसर आइया। बादसाह नूं मालम हुई तरै बादसाह बूबना नू महल दियौ, बादसाह सूं मुजरो कियौ। पण बारो[४] बरस मांहें अेक आवै। बादसाह बरसां पुखतो तिणसूं इयांने जावतौ देय डचोढ़ी राख्या।

जलाल बादसाह सू मिळियौ। सारी हकीकत कही। बादसाह सुण राजी हुयौ। तरै जलाल नै पहरो चोकी खासी सौंपी।

गढ़ रै पाखतो जलाल रो महल छै, उठे मूमना रहै नै जलाल चौकीखाने दोय घड़ी दिन चढ़तां आवै। सो सातसौ खासा यारां सूं भुजाई[५] आरोगै और मंगत जन भाट चारण सारा मुंहडा आगै बैठ जीमै और रांधियौ कोरो लंगर बंटै। उण वखत भुजाई में छप्पन भोग, छत्तीस व्यंजन सगळौ साथ अेक सारीखो भोजन हुवै। जिण नूं कटे ही मिळै नहीं सो उण वखत भुजाई में जलाल री रहवास आवै सो मनमांनिया भोजन जीमै। बड़ो हंगामो[६] लागियो रहै। जीमियां पाछै पान सुपारी सारां नू देवै। कवीस्वर आसीस जयकार पढ़ै तिण रो हंगामो इसो हुवै जाणै सावण भादवै रो आभो[७] गरजै। इण भांत आरोगै, वळे पाछो चौकीखांने आय बैसै।

बूबना रा महल नीचै अेक बड़ो दरीखानो। मुंहडा आगै छप्परबांध, तिण नीचै सारा उमराव आय बैसै। मनसबदार बड़ा-बड़ा आवै, त्यां मांही जलाल पण बैसै। सो बीजा उमराव मनसबदार गल्लां-बातां[८] करै। जलाल तौ बूबना रा महल रा झरोखा सांम्हो जोवतौ[९] रहै, पण बूबना रो दीदार[१०] पावै नहीं। जलाल कहै—

लोचण[११] प्यासे दीद के, तिरखत नित का नित्त।
दरसण ही पावै नही, मित अेक हो कित्त॥

इमें सन्ध्या समै रोसनाई हुवै, तहां बीजा उमराव तौ ऊठ डेरै जावै और जलाल रात घड़ी दोय जातां ऊठै। फूलमदवो खवास अरज कर डेरै लेय जावै।

---

[१]पटड़ा [२]मजबूत [३]प्रिय [४]बारी [५]भोजन [६]चहल-पहल [७]आकाश [८]गप्पें-बातचीत [९]देखता [१०]दर्शन [११]लोचन।

इण भांत मास दस बीतिया पण दीदार दोनां ही नूं नहीं हुवा। इतरै जलाल अेक दिन ऊठतौ कहै—

इत न्यारा बैठा रहां, साह लोग री कांण[1]।
ओळग[2] नैड़ी सज्जणा, भावै जांण म जांण॥

अेक दिन बूबना नेत्रां खवास नूं पूछी—कदे जलाल साहिब बादसाह रै मुजरै नूं आवै है कि नहीं? नेत्रां खवास कही—जलाल साहिब तौ चौकीखांने महल रै तळै[3] नितं बैठा रहै।

आंख्यां आक चराह, पारै वे जम रतियां।
हिवड़ौ तुझ घरांह, वेगो ऊठण ना करै॥
लाल सुरंगे कापड़े, सावर धी नयणांह।
गेहाणी फेरा दिये, ज्यूं दांणी दांणांह॥

तद बूबना कही—देखें तू मिळनै पूछ। बात कर मेरे तांई आय कहीजे।

इतरै जलाल रात घड़ी दोय तीन बीतियां निमाणो[4] मेल, फूलमदवा खवास नूं खांडो झलाय ऊठिया। इतरै में नेत्रां खवास आय कही—

आवंदा[5] हिज म चवौ, ऊठंदा[6] पिछताय।
हं तुझ पूछूं हे जिया[7], तुझ उर वेदन काय॥

तद जलाल कही—

की चवां[8] की न चवां, कौण सुणंदा[9] बात।
मनड़ौ जाणै रैण दिन, सयणां[10] हंदो साथ॥

इतरी कही नै डेरै आइयौ। नेत्रां खवास बूबना नूं जाय कही, तद बूबना कहै—

सांई हंदा हाथ सूं, गमरू अै पै ठौर।
कैसी आखूं वत्तड़ी, हम सांई बंदे चोर॥
आखर पिय रै नांम के, लिखे कळेजा मांहि।
धरती पांणी ना पिऊं, मतहि विधोरा[11] जांहि॥
अेक घड़ी आधी घड़ी, ताहू आधो आध।
जद ही मिळ के बैठिये, सो ही सुखिया साध॥

---

[1]आन [2]कीर्ति, यश [3]नीचे [4]निस्वास [5]आते [6]उठते [7]जीव
[8]कहें [9]सुनता है [10]प्रिय [11]मिट जाना।

बूबना जलाल सूं मिळणो पावै नहीं, इण तरह विरह करै। बीजे दिन नेत्रां खवास नूं बादसाह री हजूर मेल अरज कराई—जे हुकम हुवै तौ बड़ी बहण रै मिळणै जाऊं। बहोत दिन मिळियां नूं हुवा। बादसाह कही—जावो, बेगा आइ जाज्यो। तरै नेत्रां खवास बोली—जलाल साहिब, बूबना बेगम बड़ी बहण सूं मिलणो जाती है, बेगम साहिबा का रथ है। इतरो सुण जलाल सहेलियां मांही पैस रथ भीतर जाय बैठियौ। सहेलियां लखियौ नहीं, रथ खड़ो राखियौ, बूबना उतरी नै सलाम कीन्हीं। तद जलाल कही—

आस[1] धरंदा आज सो, मिळियौ जोग दिखाय।
हम भूखे तुझ नेह के, अंबूड़ा[2] ज चखाय॥

सुण कर बूबना कही—

जलाल अहड़ी ना कहौ, सांची बात सुहाय।
खेत धणी[3] ना चाखिया, पंथी कहां चखाय॥

तद जलाल कही—

झूठी झूठ न बोलिये, सांची बात कहंत।
लड़ी पड़ी जे खेत में, ढांडा ढोर चरंत॥

इतरी सुण बूबना लाज कर चुप रही, तरै जलाल बांह घाल, आलिंगन कर चुंबन कियौ। मांहो-मांही अेकमेक हुइया। घणा दिन रो विरह दूर भागियौ। कांम कोट मांही लुट पड़ी। दोनूं खुसहाल हुवा। सीख करी। जलाल बाहर आयौ। बूबना भीतर गई, सूमना सूं मिळी। तद इतरी खुसबू जलाल री सूमना लखी[4], नै बोली—

बिजय पड़ी क्या पंथ में, मिळियो बीच पठांण।
हेली तोरा कापड़ां, मो पिय हुंदी घांण[5]॥

बूबना कही—

अेसी बातां ना कहौ, समझ राख तूं भांण।
धोबी धोया कापड़ा, केठां[6] विलगी[7] घांण॥

---

[1]आशा [2]आम [3]मालिक [4]समझी, जानी [5]सुगन्ध [6]कहाँ [7]लगी।

मूमन हांसी[1] ना भली, बदसा हंदे धाम।
अेसा सूधा नित का, पिहरे भखर साम॥

सोहण सोह न देखिया, अंखिये दीनी व्याह।
दुख भरा इस अप्पणे, अेह सुणंदां साह॥

मासे मासे मुहर दे, सूंघो लेय तुलाय।
हेली गरब न कीजिये, भंवर साह तमाय॥

हेली थारो करहलो[2], मोही बिलगो बार।
कै कांटां री बाड़ कर, कै घर बांधो चार[3]॥

मूमना कही—

चंदण नीरूं वण[4] चरै, वण नीरूं सण खाय।
अे हर ढीलो करहलो, जित बरजूं तित जाय॥

तरै बूबना कही—

काची कळी न हेळियो[5], गुणे न रीझवियोह।
हेली थारो करहलो, गहमाती गमियोह॥

मूमना कही—

चंपो मरवो केवड़ो, नीरूं तीने थोक।
अे हर ढीलो करहलो, झुकियो नावै[6] झोक[7]॥

करहो काची ना चरै, पाकी दिसां न जाय।
अधर बिलंबी बेलडी, तिण नै घणो झुराय[8]॥

इण भांत सूं बातां कर बूबना आपरै महल आई। इतरै सांवण रो महीनो आइयो। तरै तीज रै दिन नेत्रां खवास नूं कही—आज जलाल साहिब नूं कहि आवजे—तयार रहज्यो, म्हे लेवणे नूं आवां छां। महल रै तळे बाग है, उठै बिराज जे। इतरो कहि नै पाछी आई।

बूबना कहियो तरै घणो राजी हुवो नै सिणगार कियो। पोसाक-बणाव[9] कियो। अपाणी सूं सारो साथ सदोरो कर आप सदोरो हुवो। घणा अतर सुगंध

[1]हंसी [2]करहा, छोटा ऊँट [3]चरा [4]कपास का पौधा [5]आदी होना [6]नहीं आता [7]बैठने की जगह पर [8]झुरता है, आतुर होता है [9]शृंगार।

सूं फेर गरकाब हुओ। घड़ी तीन दिन थकां अेकलो ही चालियौ, तिण बेळां थंभो भाई, तनोमनो यार, फूलमदवो खवास, गखड़ो ढाढ़ी, ताजियो गेलोन देखनै बात करणै लागिया—आपां बिनां कदे अेकलो नहीं जातौ, नै अमलांचाक, पोसाक कर आज अेकलो ही मुळकतौ थकियो चालियौ सो भलो नहीं। कूठौड़ां जाय छै। आगे बादसाह नूं क्यूं भरम छै। आपां बरजां तद थंभो कहै—

जला जेथ न जाइये, खड़हड़िये नीवाण[1]।
आलरंतौ ढहि पड़ै, जग हंसी घर हांण[2]॥

जलाल सुणी अणसुणी कर उतावळा[3] पांवडा देय बाग मांही जाय बैठियौ। घणी चमेली जूही री झंगी में छिप बैठियौ। तरै माळी पण बात सुणी थी सो माळी जांणी—आज साह जलाल बूबना रै महल जायसी, गो भोळप[4] करै छै। दगो खायसी। तद माळी कही—

मास्यां बोल्यौ मोरिया, ऊंचो कर[5] की ग्राह।
जेथ पाधरी झूंपड़ा, चुगवा तै थम जाह॥

ओ दूहो जलाल सुण नै बोलियौ—रै माळी, के कहै छै? माळी कही—महरवान, मोर बैठ्यो झिगौर[5] करै छै तिण नूं कहूं छूं। जलाल कही—कुट्टण, मैं सब जानता हूं पण फूलां री माळा खूब कर ल्याव। तरै माळी चौसर अेक अबल आंण नजर कियौ। जलाल हार लेय जेब मांहीं सूं पांच मुहर काढ माळी नूं दीवी। माळी बहोत राजी हुवौ।

अठी बूबना नेत्रां खवास नूं कही—मताव[6] जाय जलाल साहिब नूं लेय आव। तरै नेत्रां दासी पांच साथ लेय तीसरी। बीच में डचोढ़ीदार पड़ाई बैठो छै सो पग बाजता सुणि बोल्यौ—नेत्रां खवास तूं है? तद नेत्रां हूंकारो दियौ। जणां पड़ाइये कहियौ—किसे काम गैर बेळा जावो छौ। तरै नेत्रां कही—बादसाह साहिब आज बूबना रै महल पधार सै तिण वास्तै मेज बिछावण नूं फूल ल्यावण पांच जणी साथै जावूं छूं। तरै पड़ाइये कही—म्हारै हाथ ऊपर हाथ मेल कर जावौ तरै पांचूं जणी हाथ ऊपर हाथ मेल मुळकती हुई गई। जलाल साहिब था जठै गई। मुजरो कियौ। मालण फूल सेर पन्द्रह बीण राख्या था तिकै बड़े डालै में फूल बिछाय नै बीच मांहीं जलाल साहिब नूं बैठाण कर ऊपर फूल

ढांक मालण रै माथै बोझो[1] देय ड्योढ़ी लेय कर आई। तरै पड़ाइये[2] कही—नेत्रां खवास, फूल ले आई ? तद नेत्रां खवास कही—जीवेजी ड्योढ़ीदारजी, लेय आई। तद पड़ाइये कही—भली करी। पण मेरे हाथ पर हाथ मेल कर जावौ। तरै नेत्रां और वे पांचू जणी हाथ पर हाथ मेल अन्दर आई, नै मालण आय कही—पड़दारजी हूं फूल लेय आई छूं। पड़ाइये कही—हाथ मेल। तद मालण हाथ मेल्यौ। तद पड़ाइये कही—अरी मालण, फूलां रो तौ बोझ नहीं, बोझा मांहीं मरद है, सो जलाल है—

पैर धम्मकौ सो हिये, माथे गर बोझाळ।
धीरी धीरी मालणी, तौ सिर साह जलाल॥

तद नेत्रां खवास कही—आगे तौ आंख्यां हीज फूटी थी आज तौ थारो हियो ही फूटियौ। इतरी सुण पड़ाइये कही—जे लांडो मारी जायसी, तूं सांच नूं झूंठ बतावै छै। देखां बोझो उरो लाय[3]। तरै जलाल जांणी—ओ तौ पीहर रो छै तींसूं झड़क[4] देसां। बोझा सूं निकळ नै बोल्यौ। तद पड़ाइये कही—

जला अखाज[5] न खाइये, केही पड़ै कुबांण[6]।
माया सू विन तांणिये, गेहांगी पग जांण॥

जलाल कही—

लागी भूखां खाइये, अखज्ज तीजे दीह।
गिर दीन्हौ बूबन सटै, केहो[7] राखां बींह[8]॥

इतरो सुण पड़ाइये कही—हूं बूबना रै पीहर रो छूं, पूरो हमारो विसवास छै सो मोनूं ही मरावस्यौ नै आपने ही जोखिम छै, पण आज तौ जावौ। बूबना रो मुलाहिजो टूटै नहीं। यूं सुण जलाल भींतर गयौ। घणी ही खुसहाली हुई।

अबै मांही रहितां दिन तीन हुइया, तद लोगां जांणी—जे जलाल बूबना रा महल मांहीं छै सो सोकां[9] जाय नै बादसाह नूं अरज करी—बूबना बेगम रै महल मांहीं जलाल छै। तद बादसाह रीस मांन बूबना रै महल आंणै लागियौ। जद नेत्रां खवास बोली—बेगम साहिबा, बादसाह सलामत आवै छै। बादसाह आय च्यारूं तरफ जोवणे लाग्यौ सो कै तौ महल मांहीं ढोलियो छै, कै खूंणा में

[1]भार बंधा पुलंदा [2]पहरेदार [3]इधर ला [4]डाँट देंगे
[5]जो खाने योग्य नहीं [6]बुरी आदत [7]कैसा [8]डर [9]सौतों ने।

फूलां रो ढंग दीसै । और क्यू ही दीखै नहीं । अर जलाल डर सूं फूलां मांहीं दबियौ सांस लेवै तींसू फूल धीमे धीमे हालै । तद नेत्रां खवास कही—

भंवरा कळी लपेटिया, कायर कांपै काय ।
जांविये जुग मांणसां[1], मुवौ त मोटै ठांय ॥

ओ दूहो सुणि बादसाह कही—रे बांदी, या बात किण नू कही ? तरै बूबना सम्हाळ लीन्ही और बोली—जी हजरत, इस बाग में अेक कमल है, सो उसमें अेक भंवरा दिनछते[2] आ बैठिया था । दिन अस्त होते फूल मुंद गया और वो भंवरा भीतर रह गया सो कहती है । बादसाह कही—खूब, अब उसे छोड़ दो । बादसाह कहीं कुछ दीठौ नहीं तौ कही—मेरा पड़ाई बड़ा सच्चा है । इसके पास मेरे घर में मोरिया[3] पैसे नहीं । यू विचार बादसाह महल पधारिया । जिण चुगली की थी तिण पर बादसाह रीस फुरमाई ।

दिन ऊग्यां थेभो बादसाह रै मुजरै गयौ तद बादसाह फुरमाई—जे, जलाल नूं दिन च्यार हुआ, मुजरे नूं नहीं आया सो वो कहां गया है ? तद थेभो अरज कीवी—जी, वे हजरत सलामत जिसके हजरत मे मामू[4], आ जवानी, मूमना सरोखी औरत पाई तिससे गैर महल मस्त हुवा रहै है । तद बादसाह राजी होय नै सुंघाखाने सूं अंतर चोखो तेल, कस्तूरी, कपूर, केसर थोभे साथे जलाल नूं मेल्या, सो लेय थेभो डेरे आइयो । पण घणो बदिल[5] रहै । तनोमनो यार, गखड़ो ढाढ़ी, फलमदवो खवास, ताजियो गुलाम अे मारा ही मिळ मजकूर करै । हमेसां वाट जोवै । इसा छै महीना मांहीं रहचौ ।

अबै जलाल बूबना सूं सीख कीवी । तरै झरोखा सू रेसम रै लच्छां सूं उतरियौ । सो सूवे भीनौ थकियो, अंतर रा झोला पड़ता, दोय लाख रो मोतियां रो हार गळे में पहरियां थकां महल नू आवै छै, सो थेभो व तनोमनो सगळां नूं सुवास रो झोलो पवन सू आयौ । बारह मोहर तोळा रो इतर जलाल लगातौ, तिण री सुवास रा झोला पड़ण लाग्या । तद सारां ही कही—खुसबू रा झोला आवै छै, सो देखो तौ सही जलाल आवै छै । पहलां तौ सारा ही जांणता था, जे वो मारियो गयौ । महीना ६ होवण नू आया पण ओ तौ जीवै छै ।

---

[1]आनन्द लेंगे [2]दिन रहते [3]मोर (जलाल) [4]मामा [5]अनमना

सो सारा ऊठ मांम्हा चालिया। इतरै कस्तूरिया म्रग जिमा लाल नेत्र कियां घूमतौ थको आवै छै। अे देख नै घणा-घणा राजी हुवा। जलाल थेभे नूं मुजरो कियौ। यां सगळां जलाल नूं मुजरो कियौ, मिळिया। थेभो कही—

जला जेथ न जायजै, केहर[1] री झोकांण[2]।
अम्हां लगाइ समै हुणौ, (तू) मराइसै आपांण॥

और आगे हालियौ जद तनोमनो यार कही—

आकां दतुण[3] न कीजिये, संपां न खाजे मांस।
जला जेथ न जायजे, जेठां जंद विनास॥

तरै जलाल कही—

आकां दांतुण म्हे करां, सरपां मीठा मांस।
जला वी ठां जायसै, जेठां जंद विनास॥

तद गखड़े ढाढ़ी जांणी, जे सीख री बात तौ दाय आवै नहीं तरै गखड़े कही—

ज्यां बेल्यां पोहरा पड़ै, कसिया रहै तुरंग।
जे झल[4] जलाल चाखिये, महला घाल पिलंग॥

जल्लै हंदा दंतड़ा, बूबन हंदा गाल।
जांणौ कंचन ऊपरा, भला विराजी लाल॥

अंबर लागा बेलड़ा, जिण फळ लागै लाल।
तो विन किण न चाखिया[5], हो गाहणी जलाल॥

जलाल अे दोहा सुण यहोत ही राजी हुवौ और कही—जे गखड़ा, तैं बहुत भलां कही। यूं कहि रीझ कर सगळौ गहणो उतार दियौ। तद थेभो जांणी—जे कह्यां तो क्यूं ही बणे नहीं, जद कही—

चलियौ जाय जलालिया, सैणां हंदे साथ।
अंबर लागे फूलड़ा, सो क्यू आवै हाथ॥

तद जलाल कही—

ऊंचा हूं नीचा हुवै, जे करतार करेह।
बावड़ हंदे फूल ज्यूं, आवे ऊंझाडेह॥

---

[1]सिंह [2]गुफा, बैठने की जगह [3]दतुन [4]पकड़कर [5]चखे।

इण तरै बात करतां थकां डेरै आया। जलाल मूपना रै महल गयौ तौ ममना कही—

पर घर रीझण करहला, नीघरिया घर आध।
बीजां[1] अेक झबूकड़ा[2], बेजां अेको साव॥

तद जलाल कही—

चूड़ाळी क्यूं खै चवै, मन में क्यूं जांणे न।
अेकां फळ खारा हुवै, अेकां . खाइज फैन॥

इयां गल्हां कर बादसाह रै दरबार आयौ। खग बीच राख मुजरो कियौ। बादसाह जलाल रो रूपरग पोसाक सुगंध देख प्रसन्न हुवौ। तरै मन में कही— मेरी बेटी रांडां विचारा मोरिया कू मरावरणे नूं तयार हुई थी पण भोगेज जैसा छैल है तैसा दूजा नहीं। तद बादसाह सलामत कही—

मृमन हंदा महल में, खेल खिलाडी ख्याल।
चुग चाहिया वे मोरिया, जोखां[3] रंग जलाल॥

तद जलाल कही—

वासां[4] भूख न भाज ही, ओसां[5] भजै न प्यास।
सज्जण रहतां संग में, बरस थया[6] इक मास॥

बादसाह रा मन में चमक[7] छै पण क्यूं देखै तौ कहै। माल छ मांही गिळियौ सो मोतियां री माळा, जड़ाव रा फूलां री ढाल, जड़ाऊ खंजरी, किलंगी बगसिया[8]। जलाल डेरै बाहुड़ियौ[9]। बादसाह कही—

जलाल कानां देय कर, सुण हम बातड़ियांह।
झकड़ी बातां बूझ कर, रमजौ रातड़ियांह॥

तद जलाल कही—

भूखी अपणा ना गिणै, पीढ़ी डाकणियांह।
सिर ऊपर ऊठा फिरै, दईज डरपै त्यांह॥

इतरी कहि जलाल डेरै आयौ। महल मांही रहै।

---

[1]बिजली [2]चमक [3]स्त्री का [4]सुगन्ध से [5]ओस से [6]हुआ [7]वहम [8]बक्शीश किये [9]लौटा।

बूबना सासू रै पगां लागणे आई तद सासू बदन देख कही—

सासू पूछै हे बहू, तोहि न आवै लाज।
काल सिवायौ कांचळा,[1] सो क्यू फाटचौ आज॥

बूबना कही—

बोदा कपड़ा बहुत रंग, सींवणहार कुढ़ंग[2]।
धड़हड़ टांका ऊधड़ै, धण मोड़ंती[3] अंग॥

सास कही—

उत्तर देवै छोकरी, उत्तर देय न जांण।
लाग्या छै कर छैल का, दरजी अैब लगाण॥

इसा वचन सुण बूबना बिलखी हुई महल आई। इब जलाल हमेसां महल गयौ रहै। खूब कांम-कौतूहळ करै। तिण समै सोकां बादसाह नूं फेर कही—जे जलाल और बूबना अेक रात ही अळगा[4] नहीं रहै।

तद बादसाह सिकार नूं तयारी कराई और जलाल नूं बुलाइयो। सो बातां करता दोनूं साथ साथ जाय छै सो बोस कोस गया। बादसाह तुरकी घोड़े सवार छै। आगे अेक आंबा रो बड़ो पेड़ देख डेरा दिया। डेरा पेसखानो[5] तो पहुंचियौ नहीं अने बिछायत पहुंची हती सो हुई। नैणां तर करणे नूं बैठा छै। घोड़ा कायजे ही खड़ा छै। पाछलो साथ आवै छै, आंबा पाखती छै त्यां नीचै उतरै छै। तद जलाल बादसाह नूं आरोगण[6] मारू माजूम[7] लायौ और अरज करी—मांमूजी, घोड़ा सूं खेद हुवौ छै, माजूम आरोगजे जो खेद रो रेजलो[8] दूर होवै। बादसाह मोळै मन रो, तिको मनमें जांणियौ—मेरा बेटा मोरिया हमारे डील का जतन करता है, इसकी चुगली करे सो झूंठा।

देखू अब कोन जावेगा, बूं जांण माजूम खाई। चांनणी रात खिल रही छै। बादसाह गाढ़ो खेदोरो माजम सूं हुवौ सो नींद सूं आतुर हुवौ। तद मसनद सहारे होय जलाल नूं छाती सूं लगाय सोय रह्यौ। खिदमतगार दुड़बड़ी[9] देवै छै। इतरै बादसाह नसा री नींद में बेचेत हुवौ। या जांण खिदमतगार अळगा जाय सोय रह्या। अब जलाल सब नूं सोया देख ऊठ्यौ और बादसाह री सवारी रै घोड़े पर चढ़ कही—

---

[1]कंचुकी [2]अनाड़ी [3]मोड़ती है [4]दूर [5]तरतीब से [6]खाने को
[7]भंग मिला कर बनाई हुई मीठी वस्तु [8]भारीपन [9]पैर दबाता है।

पच कोसी पाळौ रहै, दस कोसी असवार।
तौ जांणी जे दुहुं जणां, लगी न प्रीत लगार॥
यूं क्यूं मनमें जांणिये, घोड़ां थी घर दूर।
टुक ऊंचे रासां[1] किये, जावै परबत चूर॥

सो रात आधी ढळतां बूवना रै महल आयौ। बूवना बाट ही जोहती[2] थी सो सुगंध रा झोलां सू जांण, तुरत छीकां नीचो न्हाकि नै ऊपर लियौ। घड़ी पांच-सात मांहीं रहि हंस-खेल रळामन्द होय फेर पाछौ आय सो रह्यौ।

घड़ी दोय पाछै बादसाह जागियो गो देखै तौ जलाल छाती आगै सूतौ छै। इतरै जलाल आळस मोड़ बैठो हुवौ। जंगळ निपटण गयौ, जद बादसाह कह्यो—मेरे बेटे लोग मोरिये कू कूड़ा[3] हींज तूफान लगाते हैं। इतरै चुगलखोर कही—घोड़ो जाय संभाळो, आसूचे छै कै दोड़ियौ छै। बादसाह घोड़ो देखै तो पसेवां में गरकाब[4] छै। गरद में गरक होय रह्यौ छै, तद भरम उपजियौ। इतरै जलाल आयौ जद बादसाह कही—जलाल, मेरा घोड़ा दौड़ कर आया हो तैसा दीसै है। जलाल कही—मेरा घोड़ा देखौ, खुररे बिगर[5] कियां, सब यूं ही है। इन घोड़ां नै इतरी दौड़ किस रोज करी है, तिसमें जल्दी रखी है। जलाल रो घोड़ो देखै तौ चौकड़ो चवै छै। तंबोळ पड़े छै। काठा पसेवीजै छै। पाछै बादसाह जांणी—दुनिया कूड़ी ही लगावै छै। यूं जांण नै पाछा सहर मांहीं आया।

इतरै सिरदरगढ़ रो परगनो, तिण री खबर आई। तिण ऊपर बड़ा-बड़ा उमराव पांच-सात मेलिया जिके केइक तौ बांध आणा, केई लाज गुमाय नै भागिया। इण बात रो बादसाह रै मन बड़ो सोच हुवो। जिण नै कहै गोठी हां नहीं करै। तद चुगलखोर कही—पक्को गफलतजाणी मनाय आवै छै, लाख रिपिया हर माह पावै छै, तरवारी[6] हुइयो रहै छै, तिण सूं जलाल नूं ही मेल जे। बोही इण काम लायक है। बादसाह कही—खूब याद दिलाई है। अब वो बूवना से किस तरह मिल सकेगा? तद जलाल नूं बुलाय कही—तुम ही जावौ। जद जलाल कही—सरंजाम[7] पाऊं सो पार[8] कर आंण मूजरो करूं, कै कागदां में ही लपेटियो आऊं[9]। इसी सुण बादसाह फुरमाई—तुम जे कहौ सो सरंजाम

[1]लगाम [2]देखती [3]झूंठ [4]सराबोर [5]झाड़े बिना [6]तलवार चलाने में निपुण [7]पूरी व्यवस्था, सामान आदि [8]जीत [9]मेरी मृत्यु का समाचार ही कागज में लिखा हुआ आए।

तयार कराऊं । उहां पर कै तौ तुम जावौ कै हम ही जावें । जलाल कही—इसा पाजियां रै ऊपर आपका पधारना ठीक नहीं है । आप मुझको हुकम करौ । ११ लाख नकदी खरच और रिसालौ पाऊं। तद बादसाह खांनसामे नूं फुरमाई—जे खजाने सूं नकदी दिरावौ और फौज रै बगसी नूं कही—जे रिसाला तयार कर देवौ । और तोफखाने रै दरोगे नूं फुरमाई—जे हुकम माफक तोफखानो सताब[1] तयार करा कर जलाल रै डेरै दाखल करौ । देर ना हो । ढील हुई तौ ओळभा[2] तुमको होवेगा । फरासां नूं फुरमाइयौ—खासा डेरा जाय खड़ा करौ । बादसाह जलाल नूं कही—तुम्हारी कही माफक सरंजाम तयार हो गया, अब तुम आज ही जाय डेरां दाखल हुवौ । तद जलाल सिरोपाव पहर उमी ही सायत डेरां जाय दाखल हुवौ ।

बूबना सुणी तद नेत्रां खवास नूं कही—जलाल साहिब करड़ी मुहिम नूं जावै छै । उठै आज आय सकसी नहीं, तिणसूं सुखपाळ तयार करायजे । आपां चाल मिळसां । सो नेत्रां खवास सारी तयारी कर राखी । रात पहर डयोढ़ गयां महल सूं उतर सहेलियां रै कांधे सुखपाळ बैठ चाली । नेत्रां खवास आगे जाय बधाई दीवी । तद जलाल बहोत प्रसन्न होय अेक लाख मोतियां री माळा पहरियां बैठा था सो उतार इनाम में दीवी । इतरै बूबना मांही आई सो सांम्हा जाय दोय लाख रो जवाहरात रो गहणो बूबना री निछरावळ[3] कर सहेलियां नूं दियौ । और जलाल बूबना रो हाथ झाल[4] पिलंग पर लेय बैठयौ । घणा खुस हुआ । बातां हंसीखुसी री करी । राजीवाजी हुआ । पछै सखरी[5] सलाह देय, घणी भोळावण देय पाछी महलां नूं सीख मांगी, तद उठा सूं ऊठतां बूबना कही—

सांई दीजे सज्जणा[6], ऊतर अे जांणांह ।
म्हारो[7] जिवड़ो थांव सू, थांरी नह जांणांह ॥

तरै जलाल कहै—

जीव हमारा तैं लिया, पंजर भी अब लेहु ।
तेरे सिर पर वार के, फेर फकीरां देहु ॥

---

[1]जल्दी [2]उलहना [3]वार-फेर [4]पकड कर [5]अच्छी [6]सज्जन [7]मेरा ।

तरै बूबना कही—

मैं मन दीन्हो तोय, नैणां जिण दिन देखिया।
सुधि क्यों रही न मोय, प्रेम लाज अब राखियां॥

फेर जलाल कहै—

अेसी विधि ले कीजिये, मित्रां सूं मन मेळ।
मरसै सरस विरसै विरस, ज्यूं पत्तो अहिबेल[1]॥

फेर बूबना कही—

मेरे सज्जण मीत तुम, प्रीतम तुम परमांण।
मोनूं पग री मोचड़ी[2], जलाल करियो जाण॥

संजव फळज्यो फूल ज्यू, बड जिमि विस्तरजै[3]।
मासां[4] पखवाडां मिळै, इण हिज रग रहिजै॥

जावो जीभां ना कहूं, वधो सवाई वट्ट।
ऊघडसी थां आवियां, हेतारथ[5] रा हट्ट॥

जलाल जेठां[6] थे बसो, धन बाढ़ो जस देस।
चोघे नयणां लोगड़ा, वा रीति ना करेस॥

बूबना कही—जे परमेसर कियौ तौ बादमाह नूं कहि नै घणो बेगो बुलायस्यूं। पण थे मांवण री तीजां ऊपर आया रहिजौ। गेलो ज्यू गळै लाग नै कहै छै। दोनां ही नूं टकटकी लाग रही छै। तद नेत्रां खवास कही—

पाछा पग न भराय, सज्जण तजै घरां दिसि।
तिरपति कदे न थाय, जो सिर अमृत पीवतां॥

इतरी कहि बूबना नू खेंच निरजीव थकी नू सुखपाळ मांही सुवाणी। फेर महलां मांही ले आई। दिन ऊगतां जलाल कूच कियौ, तिको जाय बारह कोसां डेरो कियौ। बूबना सांभळ नै कही—

तौ विन दीसै तेहड़ो, गेहांणी गोठांह[7]।
घरै पुहतां जांणियां, जिहड़े मांझड़ियांह॥

---

[1]लता-विशेष [2]जूती [3]पसरना [4]महिनो [5]हितार्थ, प्रेम
[6]जहां [7]गोठ में।

ग्रेह ज मिन्दर ये नगर, ये पिलंग ये ठौर।
मन मोनै सज्जण बिनां, सह लागै कुछ ग्रौर॥

महलां दीपक जोइवा[1], बाहर कूं इमि जाय।
जतन करै को हर इता, मो पर बाट लगाय॥

बिछुड़तां ही सज्जणा, कासूं कहणा लेध।
तिण वेळा सर सन्धियौ, जांणे सींघी खेध॥

ग्रबकी सज्जण जे मिळै, कबहुं न छोडूं संग।
पी हरणां हरणांख ज्यूं, होय रहूं ग्ररद्धंग॥

सूतां नीद न जीव सुख, जबहि न देखूं तूझ।
ना जाणूं तें क्या किया, प्रांण पियारे मूझ॥

चांनणी रात नूं देख बूबना कही—

ग्रेहो उजळी रातड़ी, किण दुसमण दी बाळ।
पड़ी जळूं मैं भवन में, प्रीतम बिन बेहाल॥

मत किण ही नूं लागजौ, छोनौ बैरी नेह।
धुकै न धूग्रो नीसरै, जळै सुरंगी देह॥

ग्रग मराऊं चंदला, इतने सिंघ पठाय।
रैन करूं उछाह सूं, कै बाघां उर लाय॥

जीव उहां पिंजर इहां, हिवड़ै हूला-हूल।
रे परदेसी वल्लहा, वेल विहूणा फूल॥

इण तरह विलपती[2] देख नेत्रां खवास कहण लागी—

बूबन मन में माठ कर, पिउ नित प्रीत न पाय।
रजपूतां र सिपाहियां, ग्रळगे सदा रहाय॥

इसी भांत बूबना नित बिलखै[3], ग्रेक टंक खाणो खावै, नेत्रां खवास बहोत धीरज बंधावै, बिलमावै[4] पण मानै नहीं ग्रर धरती पर पड़ी रहै। पांन ग्ररोगै नहीं, सुगंध लगावै नहीं, नवोड़ो गहणो, कपड़ो—कपड़ी पहरै नहीं। खैरायत-खाणो डोढ़ौ ठौड़-ठौड़ फकीरां नूं कर राखियौ छै, जे जलाल री खातिर दुग्रा करावै। ग्रठी तौ बूबना री इसी हालत छै।

---

[1]संजोने को [2]विलाप करती हुई [3]बिलखती है [4]जी बहलाती है।

उठी जलाल गिरवरगढ़ सूं कोस दस जाय डेरो दियौ। हजार पचास फौज छै। आगे जोहियां रै गढ़ में साथ भेळो हुवौ सो हजार चाळीस सिपाही छै। गढ़ जुदो[1] सजियौ। सहर जुदो सजियौ। च्यारूं पासां[2] मोरचाबंदी कर रह्या छै। इतरै जलाल जासूस मेल खबर मंगाई। जासूस सारी खबर आंण[3] मालम कीवी। दींसू[4] जांणी पहुंच सकां नहीं। साथ सामान भारी। गढ़ भेळण[5] नूं गाढ़[6] करां तौ पण सजै नहीं।

तद आदमी अेक ठावौ[7] मेल गढ़ में कहायौ—बादसाह जबरन सूं म्हांनूं आंख्यां अदीठ कीन्हा छै, सो साथ लेय सांच-कूड़ कर अठे दिन काढ़णे नूं आया छां। ओ थांरो मुलक छै। खावौ-पीवौ। जैसी कीन्ही तैसी पाई। परेसान था तिकां खरच पायौ। हमें थे बैठा जोखिया[8] करौ। थांरी छाया सूं म्हे गुजरांण करस्यां। फेर छांने कागज भेजै, हमेसां आछी वस्तुआं कपड़ो मेवो मेल्है-मंगावै, सो जोहियां नूं बातां सूं चांप लिया। वांरा आदमी जलाल कनै आवै सो आछा खाणा नियामतां खवायजे। रीझ-मौज दीजे, तींसू सगळा बात ऊपर जीव टेक्यौ[9] और जोहियां बूवना री बात सुण पाई, तींसूं जांणी। इणनूं मरावणे नूं हीज मेल्यौ छै, सो जोहियां कहायौ—थे सगळा आया सो हमें जांणी, पण सूधां[10] बैठिया रहौ। थांरी हमारी सला छै। आदमी अे समाचार आप कहिया तद जलाल घोड़ो सिरोपाव जुहार फेर देय मेल्हिया, सो जोहियां उरा लिया पण गढ़ रो साज-सामान ज्यू रो त्यूं राखियौ, कढ़ाइयौ नहीं। अर जलाल आसोज रै महीनै हालियौ थो जिको उचरी धरती में सूधो थको बैठियौ छै। साथ सगळां नूं बरजिया—जे कोई घास-फूस ल्यावौ जिको मोल देय ल्यावज्यौ, किहरी कूक-फरियाद आई तौ खराब होसी।

यूं रहितां जेठ काढ़ियौ। आसाढ़ लागतां ही अमापी[11] बरखा हुई। तद जोहिया रै कटक[12] खटण जोहियो सरदार थो सो कही—खेती करता तौ भलो। कहो तौ आप आपरै गांवां जाय हळ जुताय आवां। जलाल तौ दिन काढ़णे नूं बैठियौ छै। आपां सूं मिळियौ छै। जद सगळा साथ नूं सीख हुइ गई सो सारो साथ विखरियौ। गढ़ मांहीं ठावा सरदार चार सौ रहिया। आदमी हजार दोय

---

[1]अलग [2]तरफ [3]लाकर [4]उससे [5]जीतने को प्रवेश करना [6]लड़ाई [7]विश्वस्त [8]मौज [9]धैर्य धरा [10]सीधे [11]अनाप-शनाप [12]फौज।

खेर-खेर रहिया, तद जासूस जलाल नूं आय खबर दी। जद जलाल कटक मांहीं बात कीवी।

ष्रवानो पाछा बुलावणे रो बादसाह रो आयौ तद नागारो करायौ। सवारी बाहिर चलती कीवी। कोस पन्द्रह रो डेरो ठहरायौ और आप पण तोपखानो सारो साथ लेय थटेभखर सांम्हो कूच कियौ। कोस दोय गयौ तद जोहियां नूं हलकारा[1] जाय कही—जे जलाल नूं इसी ताकीद आई छै सो दर-मजल ताकीदी सूं जायसी। तरै खटणजोहियो राजी हुवौ, सादीयाना[2] बजाया, मोरचा उठाय दीन्हा। इतरै जलाल उमरावां नूं कही—जे पाछो मुंह गढ़ कांन्ही फेरै तद सवार हजार बीस, पैदल हजार चवदह, तोपखांनो पाछो घेरियौ सो पाछली रात रा अचानक जाय कर गढ लागियौ, नै निसरिणियां कराय राखी थी सो पैदल आदमी कोट ऊपर चढ़ भीतर जाय कूदियौ। तरवारियां रो रीठ[3] दियौ सो जोहियां रो सारो साथ मार उतारियौ। खटणजोहियो चार सौ सवारां सूं काम आइयौ। केई नूं पकड़ लीन्हा छै। घड़ी दोय दिन चढ़तां नौ फतै रा सादियाना बजाय दीन्हा। आंणदांण[4] फेरी, घोड़ा हाथी खजानो हाथ आयौ। दुहाई जलाल साहिब री फेरी। फेर तुरत ही घोड़ां रा झुण्ड कर देसां ऊपर दौड़ाया सो जोहियां रै आदमियां नूं सै[5] पकड़ लिया और मारिया। पाछै थटै-भखर बादसाह नूं मूमारखी[6] फतै पाई री मेल्ही।

जे जोहिया बारे था जिका पेसकसी[7] देय टाबरां नूं छुड़ाइया। बादसाह रो अमल[8] करड़ौ कियौ। और भी सगळा भोमिया जलाल सू आय-आय मिळिया। पेसकसी सारां री चूकै छै। सगळा जमींदार पायनांमी[9] हुइया। रिपिया तीस लाख और हाथी घोड़ा जितरा आया सो सगळा बादसाह रै पास भेजिया। अरजी लिखी सो बादसाह सुण नै घणो ही रजावन्द हुयौ। जलाल री सिपत[10] तारीफ बहोत-बहोत करी। बड़ो खुसी हुओ। सिर-पेच, मोतियां री माळा, खलित, तरवार, हाथी, पालकी, झालरदार साही नौबत इतरी निवाजस भेजी और लिखियौ—उमराव थांरे आगे आछौ हुवै तींरी खबर तोनूं छै। थांरी

---

[1]खबर देने वाला [2]बाजा-विशेष [3]झड़ी [4]अधिकार की सूचना दी
[5]सब [6]सूचना [7]कर, जुर्माना [8]अधिकार की रस्म

मरजी माफक रीझ-बकसीस दीज्यौ, सारी कबूल छै। सो जलाल सारां नूं रीझ-मौज जसा दीठा जिसी दीधी। सारा रजामन्द[1] हुवा। धरती सारी पर अमल अव्वल तरह रो हुवौ। ग्रामियो भोमियो कोई सिर उठावणे वाळो राखियौ नहीं।

अब सांवण री तीज रै आडा सात दिन आय रहिया। तद बूबना नेत्रां खवास, दास्यां, सहेल्यां, बांदियां सै नूं लेय बादसाह री हजूर आई। नादिर[2] हाथ खबर कराय अन्दर नूं आई। सलाम कीवी, तद बादसाह फुरमाई—कीं तरह आज आवणो हुवौ। जद बूबना कही—

मेरी बहनां मूमना, तासु पिया परदेस।
तीनू चैन तनक नहीं, निद्रा पड़ै न लेस॥

म्हारी बहण मूमना है, उसका खाविन्द जलाल साहिब लड़ाई लड़णे गये हैं। अब सावण की तीज आवै है। उसको तनक भी चैन नहीं सो अरज करणे आई हूं। तद बादसाह सलामत फरमाई—मूमना नूं बुलावौ, उसके तांई पूछें, या तुम ही कह रही हो। सो नादिर नूं भेजियौ। उवो[3] मूमना नूं बुलावणे गयौ। जद बूबना नेत्रां खवास नूं कही—मूमना कुछ बोले या न बोले पण तू हाथ झाल[4] बाहिर लेय जायजे और बूबना आप बादसाह सलामत नूं अमल-पांणी कराय, हाव-भाव बतायनै बस[5] करिया। इतरै मूमना आई सो मुस्कराती हुई आई। बादसाह तींनूं फुरमाई—जलाल नूं बुलावणा है क्या? जद मूमना आमरे होकर गद्-गद् कंठ कुछ बोली, कुछ नहीं बोली। उसमें बादसाह कुछ तो समझे कुछ नहीं समझे। इतरै बूबना अरज करी—हजरत सलामत जलाल रै बिनां मूमना बहुत दुखी है। बात तक कहणी नहीं आवै, तींसू ही बहन रा दुख री खातिर अरज है। बादसाह सलामत इतरी सुण तुरत फरमाई—जे तुम ही परवाना लिख देवौ। हम उस पर दस्तखत मुहर कर देवेंगे। तद बूबना तुरत ही फरमान लिखियौ। मुहर दस्तखत कराय कागद ले घर आई, कासिद[6] बुलाय हुकम कियौ—जे तुरत जाय। और आप आपरी तरफ सू कागद घणा पड़ोज मनुहार सू लिखियौ। नीचे अेक ओ दूहो लिखियौ—

कागद थोड़ो हित घणौ, मो पै लिख्यो न जाय।
सागर मां पांणी घणौ, सो गागर नांहि समाय॥

---

[1]खुश [2]नाजर [3]वह [4]पकड़ कर [5]वश [6]पत्रवाहक।

कागद कासिद नूं सौंपि, रीझ देणी कर ताकीद पोंहचणे[1] नूं करी। इतरै जीं सोक री रात नूं बारी थी सो कही—जे बूबना जलाल नूं बुलायौ छै। वींरो मन तीं मांही बहोत छै। तद बादसाह रा समुद्र रै टापू मांही तीर सूं कोस अेक ऊपर महल था उठे बूबना नूं परगह[2] सूधां[3] राखी। तीं महल रै दरवाजा तीन था, तिण में अेक दरवाजा ऊपर किण ही रीत सूं अजगर राखिया, दूसरै दरवाजा ऊपर सिंघ राखिया और तीसरै दरवाजा ऊपर पांचसौ चौकीदार राखिया; त्यां चौकीदारां नं हुकम दियौ—जे थांरी नजर चढै तिण नूं ही मार देवौ। भावै[4] सोही होवै। फिकर नहीं। हमारा हुकम है। अब देखूं लोग कहते हैं—जलाल आवेगा तब पहले बूबना रै पास जावेगा, सो अब कैसे जावेगा, और जो गया ही तौ मारा जावेगा। इसा जतन[5] देख बूबना कही—

जळ बिच कीन्ही कोटड़ी, सरपां किया किंवार।
जलाल सो बिन ना रहै, भावै गरदन मार॥

इतरै कासिद कागद भेजाय जलाल नूं दियौ सो बांच तयार हुवौ। तद थेभो जांणी—इतरा दिन तौ टळिया, जे अब भी टळै तौ आछो। असी जांण लिखी—

खाया पीया मांणिया, मन कारज फळियाह।
आयौ जोये भरमला, गैवर[6] सूं टळियाह॥

जद जलाल पाछी लिखी—

कै हत्थां गैवर हणूं, कै फाटूं बड़ डार।
कै धण मांणूं[7] बूबना, कै छोडूं संसार॥

ई तरह कहि देस गढ़ सहर रो भोळावण देय असवार पांच सौ सूं चढ़ कढ़िया तिको डाक चौकी चालियौ। मजल तीन सूं पछै साथ तूट गयौ सो असवार अेक सौ सूं थटेभन्वर सूं कोस दोय आय डेरो कियौ। बादसाह नूं मालम हुई, जे जलाल आयौ। दिन घड़ी दो रहितां साथ सूं सहर में दाखिल हुवौ। आप अमलां सदोरो होय बाकरां रा पींडा[8] घोड़े री पताका[9] लगाय, फूलमदवा खवास नूं साथ लेय बूबना री दिस हालियौ। जद जलाल कहै—

---

[1]पहुँचने [2]नौकर साथ [3]सहित [4]जँचे सो [5]यत्न-प्रयत्न [6]हाथी [7]उपभोग करूं [8]बकरे के पैरों का हड्डी सहित मांस [9]घोड़े की जांघ पर मामान टाँकने का स्थान।

सरपां हंदी बाड़ कर, सिहां रो परबंध[1]।
जो जम रांणौ पोहरू, सैणां मिळवौ संध॥

इतरै चौकी में गयौ सो चोकीदार ओळखियौ[2]—जलाल आयौ। जलाल चोकीदार, ठावा मांणसां नूं पिछांण ओट[3] में जाय बैठ्यौ। हकीकत कही। गहणो लाख अेक रो थो सो उतार चोकीदारां नूं दियौ, और कही—जे तुम कहौ तौ आगै जाऊं। म्हारो जीव इण मांहिली[4] सूं लग्यौ है। चोकीदार गहणो देख ठंडा पड़ गया। चोकीदार कही—जलाल बादसाह सलामत रो भांणेज छै और बूबना इणरी मांमी छै। काल क्यू रो क्यू विचारसी। मांमी कन्है जाय छै और धुराऊ प्रीत छै और फेर या मांग[5] ही जलाल री छै पण बादसाह कूड़[6] कर जे परणी छै और बादसाह रै ३७० बेगम छै सो इण बूबना नूं कोई वारो ना दीन्हो छ तौ आपां किण वास्ते बरजां। जांणे देवौ। सो चौकीदारां कही—म्हे तौ सीख दीवी पण आगे जतन सूं जायज्यौ। तद जलाल कहै—

सज्जण नेहे कारणै, मैं अरप्यौ[7] तन प्रांण।
जीवां तौ वांसूं मिळां, मूवां अमर रहांण॥

यूं कहि फूलमदवा खवास नूं घोड़ो देय सीख दीन्ही। आप दोन्हूं बकरां रा पींडा लेय आगे हालियौ। इतरै नाहर भूखा त्यांनूं पींडा गेरिया सो धाप गया। आगै हालियौ सो अजगर आया पण वे तौ इतर री खुसबू में मस्त हो सोय गया। उणां नूं खुसबू सूं घणी सीतळता बापरी, तिण में नींद वस हुआ। आगै दरियाव आयौ सो जलाल वींमें कूद पड़्यौ सो धमाको सुण बूबना नेत्रां खवास नूं कही—घड़नाव[8] तूं लेजाय। इब जलाल आयो छै सो तकलीफ पायसी। सो नेत्रां खवास घड़नाव लेय हाली और तुरत आय जलाल नूं नाव मांहि चढ़ायौ। जलाल क्यूं थाकियो हुवौ थो ही सो नाव पर चढ़ कर कही—खूब बखत पर आंण करके पहुंचो—

बूबन रा बड़ भाग है, जलाल कहिया बैन।
भमर[9] पड़ै थो बीच में, तीं में प्रांण रहै न॥

---

[1]प्रबंध [2]पहिचाना [3]ओट में [4]महल के अन्दर वाली (बूबना) [5]मांग—जिस लड़की की किसी पुरुष के साथ एक बार शादी की बात तय हो जाती है, पुरुष उसे अपनी मांग समझता है [6]झूठ [7]अर्पण किया [8]खाली घड़ों को बाँध कर बनाई हुई नाव [9]भँवर।

नाव महल पास पहुंची जद जलाल उतर महल मांही गयौ। बूबना मुजरो करती सांम्ही आई। हाथ पकड़ भींतर लेय गई। पोसाक बदळाय, पलंग पर बैठाय, निछरावळ कर नेत्रां खवास नूं दीन्ही। मांहोमांहे मिळिया। घणा दिन रा वियोग री तपत[1] मिटाई।

सूरत पाक सरीर सब, बोलत अम्रत बैण[2]।
दोपहरां तक थिर रह्या, निरख निरख वे नैण॥

काजळ तेल तंबोळ कर, चलणै नूं अब चाह।
जांणै निकस्यो जात है, मयंक बादळ मांह॥

बूकच भरिया प्रेम मद, हाले नांहि पयाल।
पावै गोरी बूबना, पीवै साह जलाल॥

नेत्रां खवास अे दूहा कह्या तौ जलाल खुस होय मोतियां री माळा अेक लाख री उतार बूबना पर वार नेत्रां नूं दीन्ही। पाछै फेर खूब आनन्द-विनोद सुख-साथ कर रात घड़ी दोय रहितां[3] नाव बैठ, तीर आय, उतर नाव पाछी भेजी।

आप आपणै महल आय पोढ़ रह्यौ। इतरै बादसाह नूं सोकां कही— जी हां बादसाह सलामत, जलाल आपसूं आंण कर मिळिया कै नहीं? तौ बादसाह कही—वो थकिया[4] आया है, अभी आराम करता होवेगा। बहुत दिनां सूं आया है। मूमना सूं मिळेगा, फिर वो हमारे पास आवेगा। तद सोकां बोली—हजूर वो तौ बूबना के महल होवेगा। मूमना नूं तौ नजर सूं भी नहीं देखता है। जद बादसाह नादर नूं हुकम फुरमायौ—जाकर देखौ, जलाल महल में है कि नहीं। तद नादर गयौ। महल जाय देखै तौ जलाल साहिब ढोलिये पोढ़िया छै। नादर मूमना नूं पूछो—क्या जलाल सोय रहे हैं? मूमना कही—

कुंण जाणै रहियौ कठै, रस-रमतौ[5] इण रात।
हारचौ थकियौ आइयौ, कीन्ही कछू न बात॥

इतरी सांभळ नादर अणबोलियो गयौ। नादर संहदो[6] थो तींसूं दीठौ सो कहचौ, सुण्यौ सो नहीं कहचौ। बादसाह कही—रांडां जलाल जैसे मेरे भांणेज कूं मराणा चाहती हैं।

---

[1]ताप [2]बैन [3]रहते [4]थका हुआ [5]रति-क्रीड़ा करता हुआ
[6]परिचित।

परभात जलाल साहिब बादसाह सलामत रै दरबार मांही आयौ जद बादसाह घणौ सनमान[1] कियौ। मनसब बधवारो[2] कियौ। हाथी घोड़ा सिरोपाव तलवार कलंगी मोतियां री माळा देय घर नूं सीख दीवी सो आय अपणै डेरै रह्यौ और बादसाह सलामत बूबना नूं दरियाव रा महल सूं बुला'र पहलां रै महल हीज राखी।

अबै जलाल साहिब नितका बूबना रै महल जावै। चार पहर रात रमै-खेलै। घणौ-घणौ रागरंग रस होवै। अेक दिन झरोखे रै मारग न जाय सकियौ। रेसमी रस्सो थौ जे टूटो थौ, तद पहलां री भांत नेत्रां खवास आ फूलां रै बोझे[3] बैठांण, मालण रै माथे घर भीतर नूं लेय हाली। इतरै पड़ाइये पड़दार बोझे हाथ घालियौ नै कह्यौ—हरामजादी लौंडी, हमेसां जलाल कूं ल्यावती है? बादसाह रै महलां भीतर इसा अन्याव करती है? तद नेत्रां खवास कही—रे पड़ाइया, थारो हियौ ही फूलौ दीसै छै। इतरै पड़ाइया रै हाथ मांही बैत री छड़ी थी सो ऊठतां जलाल रै भाड़ी[4] सो जलाल रै जामां री चाळ[5] ऊपर लागी। इतरै जलाल रै हाथ खांडो थौ सो पाछो घिर दीन्हौ सो पड़ाइये रा दोय टुकड़ा हुया। तद नेत्रां खवास कही—जलाल साहिब, भलौ दुष्ट काटियौ। इतरी कहि पड़ाइया नूं उठाय तहखाना मांही नांखियौ[6]। जलाल भीतर गयौ। बूबना पड़ाइये री मरण री सुण राजी हुई। जलाल बूबना दोनूं हंस-खेल कर रात बिताई। परभात रा जलाल ऊठ छीके सूं उतर कर डेरै आयौ। सोकां बादसाह नूं जाय कह्यौ—जे पड़ाइये पैड़दार नूं रात जलाल मारियौ। इसी बात बादसाह सलामत सुण फुरमाई—जावौ, जलाल रा हाथ काटौ। आ खबर बूबना नूं हुई सो तुरत नेत्रां खवास नूं साथ लेय बादसाह री हजूर आई। मुजरो करनै कही—

जलाल हंदा हाथड़ा, न जोगा अहीयांह।
सार पछंटण[7] बैरियां, का रमावण सहियां॥
जलाल दोऊ हाथड़ा, कै मूंछां कै मूठ।
गोरी कठण पयोधरां, अेराकी[8] री पूठ॥

[1]सम्मान [2]बढ़ाया [3]पुलन्दे में [4]लगाई, मारी [5]जामे के नीचे का लम्बा हिस्सा [6]डाला [7]पछाड़ने को [8]घोड़े।

अे दोहा सुण बादसाह सलामत कही—तुम क्यूं अरज करती हो ? तुमको जलाल क्यूं प्यारा लगता है ? तद बूबना कही—जी हजरत सलामत, मेरा बहनोई है। बहन को दुख होयगा सो मुझसे क्यों सहा जायगा। बड़ी बहन नै मुझको कहाया है तौ जांणी और उमी के दुख सूं अरज करणे आई हूं। तद बादसाह सलामत फरमाई—जे जलाल नै बड़ा खून किया। हमारे डयोढ़ीदार पड़ाइये कूं मारिया। तद बूबना कही—हजरत, जलाल साहिब आपकी हजूर आता था सो मेरी डयोढ़ी नजदीक आय निकळिया। इतरै पड़ाइया नै गाळ[1] अचानक दीन्ही, बेजबानां[2] बोली। सुणी जद वो भी हजूर का फरजन्द[3] था, फेर सिपाही था, उसकूं भी रीस आई, तद क्यूं पाछो जावाब कहियौ। जद पड़ाइये छड़ी चलाई तौ जलाल साहिब खांडो चलाइयो। जलाल साहिब रीस कर पाछा डेरे गया। मेरे तांई पड़दार रै मरणे री खबर जद आई, गांनूं घणी रीस आई, बहुत गुस्से हुई, पण पाछै म्हारी सहेली नेत्रां सवाप सारी हकीकत कही तद म्हारी रीस उतरी छै। पड़ाइयो बेजबांन ज्यादा बोलियौ। इतरी सुण हजरत सलामत फरमाई—जावो हमें तकसीर[4] माफ करी, खूब काम किया, सिपाही इसी नहीं सह सकै। भला तुम तौ डेरे जावौ। तद लोग कहणे लागिया—

तमायची रै सहर में, अेक बड़ो अन्याव।
चंगो माड़ू[5] मारियौ, पूछै नहीं नियाव॥

इतरी बात जलाल री मां सुणी—जे जलाल नूं पड़दार गाळ काढ़ी। जद मां बेटै नूं साथ लेय बादसाह री हजूर आई और अरज कीवी—

लाखां काज सुधारणा, लाखां सूधी बात।
लाखां रीझै आंपणौ, तै क्यूं कटियै हाथ॥

इतरी बात सुण बादसाह लाजियौ। ऊठ नै बारै आइयौ। पड़दार नै मरियां री लोग कहै—खोटी हुई। तद खास खेळी[6] रा लोग था तांनै बादसाह कहचौ—मेरा बेटा जलाल खून रै ऊपर खून करै है। इसकूं मारिया चाहिए। तद चाकर कहै—

भायूं बीज दहै भड़ां, पूतां रियौ पठांण।
जलालिये सूं अेकलो, कूण सहे केवांण[7]॥

---

[1]गाली [2]अनुचित [3]सन्तान तुल्य [4]गुनाह [5]मनुष्य [6]मंडली, टोली [7]तलवार।

यूं सोच करै छै, इतरै जलाल आयौ। बादसाह सूं मिळियौ। बूबना कह्यौ थो त्यूंही अरज कीवी। तद बादसाह कही—खूब किया तैंने। सिपाही की राह यही है। यूं दिलासा कर सीख दीवी, सो जलाल बूबना रा महल नीचै आय निकळियौ। तद बूबना झरोखे आई। मांहे-मांहे नैण मिळिया। जद बूबना कही—

सज्जण सेरी सांकड़ी, कावरजाळौ[1] लोग।
नैणां मुजरो मांनजे, नांही मिलणो जोग॥

ऊंचा गोखां बैठणौ, नीचै बहै खलक्क[2]।
खलक जेम सजणां मिळै, अइयो वाह हलक्क[3]॥

जलाल इतरी बात सुण ऊं ठांव सूं आगे हालियौ। पाबासर रा थाकिया हंस ज्यूं मन में मुळकतौ[4] थकियौ खुसहाल छै।

जलाल फूलमदवा खवास नूं कही—

तीखा नैण तनारसी[5], सायक काजळ सार।
छातां छेदै छैल की, निकस्या परलै पार॥
नैण भळक्का लागिया, पंजर पड़ी पहार।
कै ओ घायल जांणसी, कै वो बाहणहार॥
घायल तन घायल कियौ, महल अपूठा दीठ।
नैन दुवा सूं दे गया, घाव न दीसै पीठ॥

यूं बातां करतौ हंसतौ मुळकतौ डेरे आइयौ। गोठां करै। रीझ-मौज हमेसां करै।

अबै बादसाह चिंता करै। जे कांई बुद्धी उपाय सूं जलाल नूं मारणौ। सो उण साइत[6] मजकूर करि कहियौ—बड़ो डेरो हमारे झरोखे साम्हो खड़ो करौ और तणाव ढीलो राखौ। जिको आवसी सो डेरे तळाकर[7] आवसी। सो जलाल आवै उस वख्त तणाव छोड़ दीजै जे जलाल दब जायसी, फेर तींनूं पकड़ लीज्यौ। पछै चाहस्यां सो ही करस्यां। अबही तौ आसंग[8] किण ही री न पड़ै। यूं विचार नै गजर डेरो खड़ो करायौ और जलाल नूं बुलायौ। सो जलाल खवास नूं साथ लियां डेरा नीचै आइयौ। इतरै तणाव छोडिया सो जलाल डेरो पड़तौ देख कटार हाथ में थी सो ऊंची की तिण सूं डेरो फाट चौड़ो पड़ गयौ। सो डेरो

---

[1]षड़यंत्रकारी [2]दुनियां [3]बहार [4]मुस्कराता हुआ [5]धनुष [6]क्षण [7]नीचे होकर [8]हिम्मत।

पड़तां पहलां कूद निकळ गयौ। खवास दव'र मुवौ। बादसाह झरोखे बैठ्यौ देखै छै। जे जलाल कुसळ रह गयौ, सो बादसाह फरास सूं रिसायौ—कुट्टण[1] जलाल जैसा फेर कहां मिलता? अैसा ढीला तणाव क्यूं बांधिया? यूं कहि निछरावळ मेल, हजूर मांही बुलाय, मिळ, हाथ फेर, कुसळ-समाध पूछ सीख दीवी। जलाल दोय लाख रिपिया खैरात किया। बूबना निछरावळ मेली। लंगर बांटियौ[2]। माता लंगर बांटियौ। थेभो भाई सूं मुहिम छै। जलाल कही—

कैकांणां[3] विण पंथड़ौ, धण विण रैण विहाय।
गो भायां विण आंगिणयौ, यू ही अकारथ जाय॥

नेण दोठां क्या हुवै, जै न हमेळौ[4] थाय।
पेट पड़्यां ही धापियै, ऊवै खेज गमाय॥

जे बिगुचण डर करै, तै क्यूं नेह कराय।
हिरणां हरिया खेत ज्यूं, हाकंतां चर जाय॥

जलाल यू कहितौ रहै। अेक दिन बादसाह कहै—जलालिये के मारण का इलाज कोई नजर नहीं आवै। तद अेक हजूरिये कही—जो हजरत सलामत, जे तकसीर[5] माफ हुवै तौ अरज करूं, बेअदबी री अरज छै। जद बादसाह फरमाई—माफ करी, तद उण कही—

जलाल मरिया जे सुणै, बूबन अपणे कांन।
जीवित फिर नांही रहै, तुरत छोड़दै प्रांण॥

इतरी सुण बादसाह कही—आछी बात।

दूसरे ही दिन बादसाह सिकार नूं हालियौ और जलाल नूं आपरै साथ लियौ। करोलां[6] री साथ सिकार खेलै छै। इतरै जलाल रो अेक चाकर थौ सो अबार गैर चाकरी में थौ, तिणनूं बादसाह लालच दिखाय बेदिल थकियौ बुरी तरह रोवतौ-पीटतौ सहर नूं मेलियौ। तिणनूं सिखाय दियौ—जे तूं रोवतौ-रोवतौ जाय गाहणी नूं खबर कर, जे आज सिकार में जलाल और सेर रै आपस में खुस्ती हुई गो जलाल तौ सेर नूं मारियौ और सेर नोचियौ[7] तींसू

---

[1]दुष्ट [2]गरीबों को खाना खिलाया [3]घोड़ों [4]मिलाप [5]गुनाह
[6]वे आदमी जो शिकार को घेर कर लाते हैं [7]नोचा।

जलाल मर गयौ। सो चाकर जाय इण भांति ही गाहणी नूं खबर सुणाई। गाहणी सुण पछाड़ खाय गिरी। छाती कूट बुरी तरै रोवणे-पीटणे लागी। सारै हाहाकार मच गयौ। सुणतां ही बूबना रो जीव हकारै साटै निसर गयौ। ऊभी थी सो ढह पड़ी[1]। नेत्रां स्वास नै बीजी सारी सखियां-सहेलियां रोवणे-पीटणे लागी। चाकर जाय बादसाह नूं खबर सुणाई—जे बूबना फौत हुई। जलाल आ बात सुणी सो सुणतां ही प्रांण निसर गया। बादसाह घणो ही प्रसन्न मन हुवौ। जलाल नूं उपाड़ लेय सहर आइया। जद बादसाह फरमाई—जे दोनां में नेह बहुत था सो दोनों को अेक ही कबर में दफनावौ। बादसाह री इजाजत मूधा[2] दोनूं अेक कबर में दफनाया गया। तद तनोमनो यार कही—

आज न दीसै गोठ में, मज्जण थारो दीह।
तारौ दीसै डांखरौ, सेरी बंधियौ सीह॥
जलाल तौ बिन कोटड़ी, चन्द विहूणी रैण।
तौ आयां चांनण हुवै, दीसै भलौ मैण॥

बादसाह सलामत इब बहुत खुस हुवा। सोकां सारी अपणे-अपणे महल मांही घणी-घणी खुसी री बधाई बांटी। मूमना दुखी थी।

तीसरै दिन श्री संकर भोळानाथजी पारवती साथै जलाल री कबर कनै आय निसरिया। तीं समै वीं[3] कबर रै ऊपर भंवरा गुंजार कर रहिया, सुगंध इतर री सारै फैल रही, तिणसूं सारी वनस्पती सुगन्धित होय रही छै। जद पारवतीजी सदाशिवजी नूं पूछी—

ना गुलाब ना केतकी, संकर इहां दिखाय।
सुगन्ध सब ठां व्है रही, फिरै भंवर की दाय॥

सुण कर श्री भोळानाथ हंसता हुवा पारवती नूं कही—

सुण गिरजा ई[4] कबर में, प्रेमी प्रेम निभाय[5]।
जला बूबना सो रहे, बिना काळ गम खाय॥

तद पारवतीजी हाथ जोड़ विनय करी—महाराज, अेक बार उवै दोनू प्रेमी मोनू दिखावौ। जद श्री संकर भोळेनाथ नांदिया सूं उतर अपणे चीमटै सूं धूळ हटाय, जलाल-बूबना समीप लेटिया दिखाया, सो देख पारवती गद्-गद् होय कही—

[1]गिर पड़ी [2]सहित, अनुसार [3]उस [4]इस [5]निभा रहे है।

जीव दांन देवहु इन्हैं, मरण जोग ये नांहि।
संकर भोळानाथ मैं, करूं विनय तुम पांहि॥

पारवती री हठ देख कैळासनाथ आप उग रै छींटा दोन्हा सो दोनूं जी ऊठिया। सामनै श्री संकर पारवती नूं देख स्तुति करी। जद महादेव पारवती रजामन्द होय कही—आज सूं तीसरै दिन अगतमायची फौत होयसी। थारै टीको होयसी। इतरी कहि सिव-पारवती अलोप हुवा।

दोनूं ऊठ बाग में आया। माळी नूं मेल तनेमने यार नूं और गाहणी नूं खबर कराई। सुणतां ही उवै सताब लेय सांम्हां आय निछरावळ करी। जलाल मुजरो कियौ। खैरात करी। गाजै-बाजै सूं सारा तीसरै दिन सहर मांही आया। अगतमायची दोनां नूं आया सुण तुरत मुवौ।

जलाल बादसाह हुवौ। बूबना मूमना नूं साथ लेय सुख साथै राज कियौ। गाहणी नूं सुख दियौ। धरती सारी अमन-चैन हुई। जैजैकार हुवौ।

जलाल बड़ो आलीजो भंवर बादसाह थौ।

पढ़ै सुणै जिनसे इहै, जलाल साह री बात।
सुख-संपति संकर तिन्है, अमर सुयस दै तात॥

उनीसौ पिचयांनवै, सुभ सिवरात्री जांण।
नारायण परसाद नै, लिखी लिखी परमांण॥

जलाल-बूबना री बात समाप्त।

डाढ़ालौ सूर

जम्बू दीप भरतखंड में अढ़ार गिर, पण अढ़ार गिरां रो सिरौ[1] अरबद[2] किसौहेक छै—

बनस्पती पाखर वणी, वणिया टोक विहद्द।
पटा विछूटा नीझरण[3], आयौ मद अरबद्द॥

घेघू बीलू बींघटा, सिखर पखिया सद्द।
लग सूं सूवा वाळिया, आजूणो अरबद्द॥

चंपा मांणै निर चढ़ै, आंबा भखै अवल्ल।
अरबद सू अळगा रहै, ज्यांरा कूण हवल्ल॥

आबू गढ़ रा खेतड़ा, केतकियां री बाड़।
अग देरी अंजस करै, सीस पागड़ी चाढ़॥

जांणै जिके सुजांण नर, ना जांणै सो बोक।
जमी'र असमानां बिचै, अरबद तीजो लोक॥

जिण अरबद ऊपर अढ़ारह भार-बनस्पती[4] झुक रही छै। घणौ ही चंपो, चमेली, मोगरो, जुही फूल रहिया छै। फेर अड़सठ तीरथ आय विसरांम[5] लियौ छै। श्री अचलेसरजी रै दरसण करण रै पगां[6] फेर अठ्यासी रिसी, नवनाथ,

[1]सिरोमणि [2]आबू [3]निर्झर [4]घनी वनस्पति [5]विश्राम [6]लिए।

चौरासी सिद्ध, निन्याणवे किरोड़ राजा, सिद्ध, तैतीस किरोड़ देवता मेळै भरै। इसौ अरबद छै। मृत्युलोक मांही सरग छै।

तिण ऊपर अेकल डाढ़ाळौ तपस्या करै। अेक भूंडण तिण अरबद ऊपर तपस्या करै। दोनां नूं बारह बरस तपस्या करतां नूं होवता आया, अेक दिन आडो छै। सो विधना रै लेख सूं भूंडण प्रातःकाळ घड़ी दोय रै तड़कै ऊठ सूरजकुंड में स्नान करणे नूं गई। वींही समै देवजोग सूं डाढ़ाळौ वींही सूरज-कुंड मांही स्नांन करणे आयौ, सो देखै तौ भूंडण स्नांन कर रही छै। तद सूर पासै[1] आयौ। भूंडण कही तूं कुण? तौ डाढ़ाळौ कही—हूं अेकल डाढ़ाळौ छूं। सुणि भूंडण कही—मोनूं आज बारह बरस तपस्या करतां हुआ, आज तक मरद सूं संभासण नहीं कियौ। न कीं मरद रो मुंह दीठौ। पण तू मौनूं आज दीठौ, संभासण आय कीन्हौ तींसूं बारह बरस री तपस्या गई। हूं तौनूं सराप[2] देयस्यूं, सो झाल[3]। तद डाढ़ाळौ सुण कही—मौनूं ही आज बारह बरस तपस्या करतां हुआ छै। पण हूं किही स्त्री रो मुंहै नीं दीठौ, न संभासण ही कियौ पण आज तूं आगे आई। थारी सिखा रा म्हारै छींटा लागिया तींसूं म्हारी तपस्या में कजी पड़ी। सो हूं तोनूं सराप देयस्यूं, तूं झाल।

यूं लड़ता-झगड़ता दोनूं नवनाथ चौरासी सिद्धां रै नेड़ै गया। तद उहां[4] इण री बातां सुण इणरै पूरव जनम री बात जांण'र कही—

सफळ तपस्या जांण, दोनूं श्रापौ नांहि।
विधना री गत श्रांण, सुख भोगौ जग मांहि॥

जद उहां अरज करी—जे हमां घणां वरसां कस्ट उठायौ, श्री सदाशिवजी रो ध्यान कियौ, ब्रह्मचार[5] रो पालन कियौ सो इव इसौ काम क्यूं कर करां। आयुस[6] रो किही भरोसो नहीं तोंसूं कमायोड़ौ[7] क्यूं गमावां। म्हानूं तौ स्परस[8] रो ही पातक[9] लागसै। और घरवास कियां तौ सारी तपस्या हीण होय जासी। आगै तौ क्यूंही करम किया तीं कर निक्रष्ट जूंण पाई। इव की होणहार छै?

तद नौ नाथ चौरासी सिद्ध कही—जे थे दोनूं ही पूरव जनम में यक्ष था, सो कुबेर रै खजांने पर रुखाळा था। सो अेक दिन कुबेर रै पाक सिद्ध हुओ,

---

[1]पास [2]श्राप [3]पकड़, स्वीकार कर [4]उन्होंने [5]ब्रह्मचर्य [6]आयु [7]कमाया हुआ [8]स्पर्श [9]पाप।

तींमें थां स्त्री पुरुष दोनूं पहलां भोजन कियौ सो कुबेर लखियौ जद रीस कर थांनूं कही—थे सूकर री ज्यूं क्यूं खावौ। जावौ थे सूकर जाय हुवौ। श्राप सुण थां दोनूं ही हाथ जोड़ कै अरज करी—जे म्हांरै साधारण अपराध बदळै दंड मोटो दियौ। यूं कहि दीनता करी। तौ कुबेर कृपा करि कही—जे श्राप तौ मिटे नहीं, भोगियां हीज सरसी, पण थां जाय आबू पर जनम पावौ। तपस्या कर महादेव श्री अचलेसरजी रो ध्यांन धरौ। उठै थे दोनूं भेळा रहौ। थांरी घरवास होयसी। पाछै थांरै पांच पुत्र होयसी। फेर थां साहसी थकिया लड़ कर काम आवस्यौ—

इण भांति सारी कथा, दीन्हीं तिन्है बताय।
समझा कर आग्या दई, घर वासहुं इब जाय॥

सुण कर डाढ़ाळौ भूंडण नूं आपरी थेह[1] लेय आयौ। वीं समै भूंडण रितुमती हुई थी सो भूंडण नै आसा[2] रही। महीना पूरा हुआ जद चील्हर[3] पांच जाया। उवां में बड़ा रो इसी पुळ में जनम हुओ जे जरब में आग लागै, बनस्पती जळै। बीजै रो इसी पुळ में जनम हुवौ जे इणां सूं अरबद छूटै। तीजै रो इण बखत जनम हुवौ जे आपरो पेट सोहरो[4] भरै। चैथे रो इसी घड़ी में आ जनम हुवौ जे धरती रै धणी सूं राड़[5] हुवै। पांचवें रो इसी पुळ मांही जनम हुवौ जे बाप-भाई काम आवै, मां सती हुवै और आप राड़ में घणां नूं मार जीवतौ घर में आवै। इसी नखत-पुळ में पूत पैदा हुवा। दिन-दिन मोटा हुवै।

मास दोय रा हुवा और डूंगर में आग लागी। वनस्पती, कन्दमूळ, घास व फळफूल सह बळिया, नीली पाती न रही। सूरजकुंड रै आसपास दूबड़ी रही, जे चील्हरां नूं चरावै। डाढ़ाळौ नै भूंडण बड़ा दिनकसालौ काढ़ै।

अेक दिन सारो परवार लियां डाढ़ाळौ नै भूंडण सोय रह्या छै। इतरै जांझरकैं री बखत री ठाडी पवन आई। तीं पवन री साथ हरिया जवां री बोय[6] आई। तद भूंडण ऊठ बैठी हुई और कही—हरिया जवां री खुसबू आवै छै। हालौ जौ चरां। जद डाढ़ाळौ कहो—जव सिरोही रै धणी रा छै। इयां जवां ऊपर कजियौ[7] होयसी। चोल्हर नैन्हा छै। मारिया जासी। बीजै लोगां रा

---

[1]रहने की गुफा [2]गर्भ [3]बच्चे [4]आसानी से [5]झगड़ा, युद्ध
[6]गन्ध [7]झगड़ा-फिसाद।

जवां रा खेत परलै पासै छै और राजा रा जव उरली आडी छै। तींसूं इयां जवां पर कजियो भारी होसी। तौ भूंडण कहणे लागी—

डाढ़ाळा भूंडण कहै, बछड़ा भूख न मार।
लिखिये मरसी आपरै, भावै[1] जव ना चार॥

तद भूंडण रै कहै डाढ़ाळौ अरबद सूं उतरियौ सो सिरोही आयौ। सिरोही री सबजी[2] बरणी नहीं जाय। साखियात[3] इन्दर लोक समांन सोभा छै। दूसरी अमरावती हीज छै। जव गेहूं चणां री क्यारियां मांही नै खुसबू छाय रही छै। तिजरो फूल रह्यौ छै। गूंदगरी, रामगरी, गुळवाड़ री बाड़ां लाग रही छै। पग-पग नाळा-नीझरणा बह रह्या छै। घणा ही आंबा-महुवां रा मोर झुक रह्या छै। अढ़ार भार बनस्पती झुक रही छै। भंवरा ऊपर गुंजार कर रहिया छै। सारसां बोल रही छै। मयूर झिंगोर[4] करै छै। अनेक भांत रा पसुपक्षी कलोळ[5] करै छै। सो इसी दीसै जांणजे कैळासपुरी[6] कनां[7], अमरावती कनां, बरुणपुरी, असी सिरोही बिराज रही छै। वीं ठांव बडो राव वीसलदे बाघेलो राज करै, जिण रो इसो तेज अमल छै सो नाहर-बाकरी भेळा चरै। गाय-सिंघ अेक घाट जळ पीवै, सांढ़ियां रा वरग[8] सूना ही चरै, बाजारां री हाट में कोई बोपारी ताळौ न मारै। बड़ी बांकी भोमीचारै री जायगां छै तिणरै चिलोडरी उगूणी दिसा छै। जोधपुर उतरादौ छै। ईडर उतराध री सीध में छै। सारा ही मुलकां रै बीच सिरोही छै। साढ़ा तीन हजारी गांवां रो राजा सिरोही रो धणी छै। इतरा परगनां रो अमल गोठवाड़, दांतीवाड़ो, सिवणची कूंभटगढ़ और ही छोटा-मोटा परगना घणा छै।

इसा-इसा अमराव चाकरी करै ज्यांनै परणायजे नै परणोजजे। सो सिरोही, चित्तौड़, जोधपुर, अणहलवाड़ा, पाटण, जाळोर री आसंग[9] में न आवै सो कागद वाई सुख राखै। रिसाला मेल मंगावै।

सो डाढ़ाळौ सिरोही आयौ। अेक रात गेहुआं रा खेत और सांठां री बाड़ में रहियौ। घणा दिनां री भूख काढ़ धाप नै अरबद सांम्हो हालियौ। तीसरै दिन अरबद जा पहुंचियौ। कबीले सूं जाय मिळियौ। भूंडण सारा समांचार

---

[1]भलेही [2]सरसब्जपना [3]साक्षात [4]मस्ती [5]किल्लोल [6]कैलास-पुरी [7]या [8]झुण्ड [9]हिम्मत।

पूछिया—जे डाढ़ाळा, सो जायगा[1] किसड़ी'क छै ? चारो किसड़ो'क छै ? तद डाढ़ाळै कही—जायगा कैसीक बताऊं जांणे दूमरो सरग हीज छै। मोकळौ[2] खावण नूं जौ, गेहूं, चणां, गुळवाड़ छै। पग-पग ऊपर जळ घणा, रूंखां री ठाडी छाया। सिरोही चालियां छोरा बेगा ताजा-मोटा होयसी। पगे सताब[3] होयसी। सो पहर तीन डाढ़ाळौ आबू ऊपर रहियौ। पाछली पहर रात री समै अरबद सूं उतरियौ। भूंडण चीलहरां नूं लियां नळां, खाडरां, रूंखां, झाड़ां री झंगी रै ओल्हे चालै। डाढ़ाळौ चौड़े[4] पाधरी धरती चालै। ताहरां क्यूं भूंडण कहणे लागी।

अेक विरांणा[5] जव चरै, चालिस ऊगै सूर।
डाढ़ाळा भूंडण भणै,[6] भागां भाखर दूर॥

तद डाढ़ाळौ कहणे नूं लाग्यौ—

फूटरिया हिरणी जणे, बोह कूदणौ घट्ट।
ज्यांरो मांही बांकड़ौ[7], थांभै राखै थट्ट॥

भूंडण इतरी सुण बांकी धरतो छोड पाधरी धरती मारग आई। आगे बाराह छै। पाछै पांच चीलहर छै। त्यांरै पाछै भूंडण सूं सलाह कर सिरोही आया।

बीसलदे रा वाग में आय थेह दीन्ही, सो घणा आंबा महुवा झुक रहिया छै। अंगूर जभी सूं लाग रहिया छै। केळां री घड़ां आय रही छै। जम्मेरी, नींबू, नारंगी आय रहिया छै। चमेली, मोगरो, केवड़ो, जूही, गुलाब सह महक रहिया छै। कारंजा रा नाळा खिळक[8] रहिया छै। चादरां छूट रही छै। बीं ठांव आय पहलां तौ लोटिया, थकांण मिटाई, पाछै तूंड सूं जमी नरम कर थेह बणाई। इतरै बागवांन आयौ। पग दीठा[9] जद पगां-पगां गयौ। देखै तौ बाराह लौटिया छै तिणरी डोकां छै। आगे देखै तौ चैड़ा पड़िया छै। अंगूर केळा तूटा पड़िया छै। और जम्मीरी अनार अधकचरिया पड़िया छै। तठै आम री छाया नै चमेली मोगरे नजीक नहर कारंज कन्है सूअर डार नूं लियां सूतौ छै। सो देख बागवांन हकालौ[10] देय गाळी काढ़ी। तद डाढ़ाळौ ऊठ सांम्हो आइयौ।

---

[1]जगह [2]बहुत [3]शीघ्र [4]खुले मैदान में [5]पराया [6]कहती है
[7]बांका, सूअर [8]कल-कल करते हुए ढल रहे हैं [9]पद-चिन्ह देखे
[10]जोर से आवाज देना।

जे बागवांन नूं बोलणे सम्भलणे नहीं दियौ। उठाय थूंडर सूं उलट नांखियौ। जांघां दोनूं फाड़ नांखी। ऊठतै रो पेट फाड़, मार गिरायौ। पहलो मुकाबलो डाढ़ाळै रो बागवांन सूं हुओ, सो भगवांन री दया सूं डाढ़ाळै री जीत हुई। बागवान मरियौ। मनचिंतिया[1] मनोरथ हुआ। चीलहरां नेन्हा नूं लड़णे रो दांव दिखाय सिखायौ।

बागवांन री पुकार दरबार पहुंची सो दिन तीन पहलां बड़ो राव बीसलदे जनाने-दाखल-हुवौ[2]। घोड़ां रो रातब-दांणो, महीनदारां रो महीनो, मोदीखांने री जिनस[3] और ही सारा लोगां रो सरंजाम सरतंत कर, घोड़ां नूं खुद रै खेत भोळाय, हाथियां नूं गुळवाड़ री बाड़ भोळाय आय गैरमहलां[4] रहियौ। देस रो कांम सारो मुत्सदियां नूं देय आप जनांने मांहीं ऐस[5] करै। अमलां में सदोरो रहै। ऊगै-आथां री खबर नहीं। चारण भाट मंगत लोग आवै था तिकां नूं आमा पूर विदा किया। घोड़ां रो लोहो कढ़ाय घोड़ा खुद बंद किया। घोड़ां रो जाबतौ घणो दियौ। राव री रीझ घोड़ां सूं घणी। जिण रो घोड़ो ताजौ हुवै मैच पकड़े तिणनूं इनाम दीजै।

सो घोड़ां रै जवां नूं जिका जावै तिका डोळी घलिया आवै। सो वाराह रो पुकार हुई, तद सिरकार रो लोग सह चढ़ियौ तिका पता बरकमदाज और घणा लोग तमासगीर आदमी तीन सौ चार सौ भेळा होय डाढ़ाळा ऊपर हालिया, सो उहां रै भाग डाढ़ाळौ थेह में न थौ। भूंडण-चीलहरां सूं मुकाबलो हुवौ। आदमी दस-पन्द्रह मारिया। आदमी साठ-सत्तर घायल हुआ। घोड़ा बीस-तीस घायल हुआ। होंसियो लोग थो सो नाठौ[6] आयौ। सहर मांहीं खबर हुई। ताहरां गाडी डोली सांम्ही मेल्ही जद पकड़ कर आया। लोग सारो बुरो दीठौ। डाढ़ाळे री फतह हुई। घोड़ा घास बिनां रहणे लागिया। ताहरां फौजदार नूं बिदा कियौ। सौ असवार, पांच सौ पैदल ले'र थेह ऊपर हालिया। नकारो बाजियौ तद भूंडण सुण डाढ़ाळै नूं कही—ओ कासूं[7] बोल छै? जद डाढ़ाळौ कही—ओ नकारै रो बोल छै। नकारो बाजै छै। भूंडण कही—ओ किसड़ौ बाजै छै? डाढ़ाळौ कही—जिकां ऊपर जायसी तिकां जीत पायसो, इसड़ौ बाजै

---

[1]मनचाहा [2]जनाने महलों में प्रविष्ट हुआ [3]जिन्स [4]जनाने महल [5]ऐश [6]भागा [7]काहेका।

छै। नकारै वाळा भाज[1] जायसी। इतरी कहि डाढ़ाळौ चेजो[2] करणे नूं गयौ। भूंडण चील्हरां नूं लियां बैठी छै। इतरै फौजदार आय थेह घेरी। हाथाजोड़ी करनै चौगिरद दोळां फिर गया। गोळी तीर बाहणै लागिया। जद भूंडण पांचूं चील्हर छाती आगे लेय इसा ताव सूं नीसरी सो का तौ थह मांहीं दीठी थी, का फौज मांहीं नूं रुळती[3] हीज दीठी सो पाळां नूं पाळ पाधरी। पछै फेर असवारां मांही आई सो अबसाण खता कर दिया। पाळा तौ ऊभा जोवणै लागिया, तिकां सूं तौ दोय चील्हरां कजियो कियौ। भूंडण और तीन चील्हर मिळ असवारां सूं कजियो कियौ। सौ मारिया, घायल किया, घणा घोड़ां रा पेट फाड़िया, घणा घायल किया। असवार घणा ही बरछी-भाला बाह्या पण भूंडण धकै चढ़ियौ जिको तौ जम रै घर गयौ और चील्हरां रै धकै पड़ियौ सो घायल हुवौ।

डेढ़ पहर रात हुई, खेत हाथ आइयौ सही। जीत हुई। सात ताखड़ी साह-जानी तोल रो खून भूंडण रा डील मांही रहियौ। तठा पाछै सारोही साथ औलस बैठ रहियौ।

दिनां नूं जावतां बेळां कींहीं नहीं लागै। महीना दोय डाढ़ाळौ भूंडण चील्हरां सूधां जद गूळवाड़ी[4] चरतां नूं हुवा सो मोटा-ताजा, बळपूर मस्त हुवा। तरह-तरह री जड़ीबूंटी खाधी थी तिणसूं जखम सावळ[5] हुआ। घोड़ा जवां विगर रहिया। हाथी बाड़ बिगर रहिया। इसी दहसत[6] पहुंची सो कोई भी दरियावां जावै नहीं। दूसरे महीनां मांही राव बीसलदे महलां सूं बाहर आयौ। अमरावां हजूरियां कामदारां सागिरद पेसे सगळां आंण मुजरो कियौ। घोड़ा, हाथी, हवालदारां आंण नजर गुदराया। राव बीसलदे बोलियौ—ठाकुरां घोड़ां-हाथियां जवां रो नै बाड़ रो मच दीसै नहीं, कीं बात सूं। तद मुत्सदियां-साहणियां अरज कीवी—महारावजी घोड़ा जौ कठै चरै, हाथी बाड़ कठै चरै? जवां मांहीं नै बाड़ मांही तौ जिकी बलाय[7] आय थह दीवी छै सो आदमी सौ-सवासौ राव रा काम आया। घोड़ा पचास सिरसद के हुइया। जवां रै वास्ते साहणी सागिरद पेसे रा लोग पहलां गया तिका सै बेहवाल हुइया।

[1]भाग [2]चुगा, चरना [3]तेजी से प्रविष्ठ होती हुई [4]गन्ना [5]अच्छे [6]धाक [7]बला।

पछै फौजदार साथ लेय गयौ सो उणसूं कजियो कियौ। सो धाप'र फोजदार रा ही जे पग छूटिया[1]। घणा आदमी-घोड़ा काम आया। आदमी डेढ़ सौ घायल डोळी घाल ल्याया था सो पाटा-चौपड़ खावण नूं सरकार रा कोठ्यार सूं पावै छै। हमला वांरै ऊपर तीन किया सो वीं तीनूं ही वार फौज मोड़ी। अेकल वाराह सही जीत रहियौ। इब महारावजी रो हुकम होय तिसी करां। इतरी सुण बडो राव बीसलदे घणूं ही अेतराज कियौ और कही—बडा राजपूतां, म्हारा घोड़ा बिगर जवां रहिया—रोही रा जानवर आगे। सो लांठा आसियां कनै धरती क्यूंकर राख स्यौ। तद अमरात-बरकमदाज बीजो ही सारो लोग आंण भेळो हुवौ। उण दिन तौ राव घणौ आतुर रहियौ। रात तौ नीठभी बीती कीवी। भाग-फाटती[2] हुकम हुवौ—नकारो करौ। नकीब सारै फिर जायतौ करौ। सारा सिरदार आय हाजर होवौ। सो सूरां-पूरां[3] सोह[4] चढ़ी। कायरां नूं कांपणी छूटी। नगारो सुण भूंडण कही—आजरा निसांण कैसा'क बाजै छै। तद डाढ़ाळौ कही—

भूंडण मन आणन्द कर, बाजण दे नीसांण।
जो मौजां गावां जियां, तौ बणियां परवांण॥

जद भूंडण कही—

अहरण[5] ठमको म्हे सुण्यौ, लोहो घड़े लुहार।
घड़जै घसजै वप्पड़ा, तौ काजै हथियार॥
दासी फिरै उतावळी, साटां[6] लेवण हार।
गोखां बैठी गोरड़ी, बांटै सिल बेसवार॥

तद डाढ़ाळौ कही—

अहरण भांजूं गज गिलूं, समूचौ[7] वो लुहार।
घोड़ो पाड़ूं पाखरचो[8], सूं बरछी असवार॥
मसाला रहसी धरचा, दासी रहसी रोय।
गोरी मसळै हाथड़ा, काम कंथ रा जोय॥

फेर भूंडण कही—

अेक विराणा[9] जव चरै, दूजै भय ज नांही।
कदे अेक देखावस्यूं, लड़ बाहर फळ मांही॥

---

[1]छूटे [2]पौ फटने [3]सूरवीर [4]जोश [5]एरन [6]सूअर का चरबीदार मांस [7]समूचा [8]जीन समेत [9]पराये।

जद डाढ़ाळौ कहै—

भूंडण लेजा चील्हरा, हूं जावूं रण थाट।
कै रोवाणूं पदमणी, (का) मांस बिकाऊं हाट॥
रावत राखूं खेत में, तिण राखूं तिरियांह।
तौ तूं जांणे कांमणी, डाढ़ाळौ बरियांह॥

इतरी अेक वतळावण डाढ़ाळौ और भूंडण दोनां रै वीच इण भांत हुई। अेकण नकारे घोड़ां रै खुररा हुआ छै। दूसरै नकारे खांणौ-दांणौ कर सारा तैयार हुआ। भूंडण कही—

कंथ परायै गोर में, भाजै सोहि गंवार।
लांछण लावे दुहु कुळां, मरणो अेकहि वार॥

जद डाढ़ाळौ कही—

गयदंतौ[1] पाडा खुरो[2], अेकण मल्ल अबीह।
जिण बन कवळौ संचरै, तिण बन फेरै सीह॥

तीजो नकारो हुवौ। सगळा असवार हुवा। तद बडेराव बीसलदे रो साळो भालो ठाकुरसिंह, सो हाथ जोड़ अरज कीवी—राज रो जोधपुर ऊपर नकारो कसीजै का चित्तौड़ ऊपर कसीजै, का अणहिलवाड़ा ऊपर, का भुजकछ ऊपर, का थटैभखर पर, का जाळोर ऊपर नकारो कसीजे। इण भांति जंगळ रा जिनावर ऊपर नकारो कसियां भाई-सगो हंसी जे करसे। गिलो[3] करसे। रावजी जिण उमराव नूं हुकम देसी तिकोही हरामखोर नूं जाय मार गिरासी। इतरा दिन तौ कोई राजपूत चढ़चौ न हुतौ, न कोई इसो खयाल ही कियौ। सरकार रो लोग खास खेली सो तमासगीर गयो हुतो सो खांत राख[4] कजियो न कियौ और फौजदार पण भोळप सूं चढ़ियौ। साथ सामान वयूं विसेस न ले गयौ तींसूं कजियो बिगड़ियौ। हमें जो रावजी रै ख्यांत लागी तौ इण पसू रो कासूं। ओ तौ आंपणो खाज[5] हीज छै। तद रावजी पांन रो बीड़ो भाला ठाकुर-सिंह नूं देय फुरमायौ—जे जावौ, हरामखोर नूं परवार समेत मार ले आवौ जे गोठ करां। ताहरां ठाकुरसिंह आपरो सारो साथ सजियौ और कीं रावजी

---

[1]सूअर [2]सूअर [3]मजाक [4]पूरा खयाल रख कर [5]खाने की वस्तु।

री फौज पण लेय डाढ़ाळै ऊपर हालियौ। तिण दिन इण रो भाग, डाढ़ाळौ तौ थेह में सूतौ पड़ियौ छै और भूंडण चीलहरां नूं लेय सिरोही सूं कोस डेढ़ ऊपर गुळवाड़ छै उठै चेजो करणे नूं गई छै। इतरै फौज रा आदमियां री नजर में भूंडण आई।

ताहरां सारा गोळ कर प्यादा मुंह आगे लेय असवार केहेक डावा, केहेक जीवणा लेय कही—जे भाला ठाकुरसिंह खबरदार रहिजो, जो नीसर जायसी तौ खोहरा खुडा[1] नजीक छै। जिणां में बड़ जासी तौ भूंडा पड़सै। तिणसूं सै ठोग पगां रहज्यौ। इतरे में बंदूकां रै पलीता[1] लगाइया। कांमठां सूं तीर छूटिया मुंह आगे आण–आण पड़णे लागिया। तद भूंडण चाचरो[3] ऊपर उठायनै सांम्हे दीठौ। जद फौज चौगिरद[4] निजर आई, सो भूंडण चीलहरा पांचूं छाती रै आगे लेय फौज रै सांम्हा चलाया। सो जठै ठाकुरसिंह भालो किरणिया[5] दियां ललकार करै छै। खड़ो छै। तिण फौज भेळा किया। जे भूंडण रे धक्कै चढ़ै सो जमपुरी जावै, नै चीलहरां रे धक्कै चढ़े जिका ऊपरमी अधमुवा[6] हुई जावै। पहर अढ़ाई कजियो रहियो सो सगळा धाप रहिया आपो आप पासो खाय ऊभा रहिया। खेत में आदमी काम आया तथा कई घायल मांणस व घोड़ा पड़िया। सो फौज री आसंग उठावणे री नहीं। परली तरफ भूंडण चीलहरा लेय जाय खड़ी हुई और सरीर नूं धड़धड़ी दीवी, सो तीर भाला बरछी बुहारी रा तिणकां ज्यूं बिखर गया। इसो पराक्रम देख सारा थक रहिया, तद कहै।

भूंडण खादी धड़धड़ी, गिरिया भाला तीर।
देख पराक्रम भोंपिया, चकित रह्या सै वीर॥

भालो पूछै ठाकुरां, पड़ियौ की कड़[7] न्याय।
कासुं दिखावां मुहडो, राव कन्है इव जाय॥
गांव लोग अर गढ़ धणी, हंससी सह सिरदार।
गोरी हंससी गेह में, कैसी की करतार॥

इण भांत भालो ठाकुर सिंह ऊभौ-ऊभौ विसूरणा करै छै। हाथ मसळे छे। घोड़लो आपरी सवारी रो सुन्हलो साखत सूं खेत मांही पड़ियो छै। सो साज

[1]खड्ढे [2]आग [3]मुंह [4]चारों ओर [5]छाता [6]अध मरे
[7]पक्ष।

तक सम्भाळणे री आसंग नहीं और लोह मण सवा दोय पक्के तोल रो भूंडण रै सरीर मांही रहियौ। तीन रौळा[1] भूंडण जीती ऊभी रही। पछै डाढ़ाळै सांम्ही मुळकती थकी जावै छै। होळै-होळै जाय छै। सगळा ठाकुर सिंह भ्हाले रा माथ रा मुवां अर घायल हुवां नूं सम्भाळै छै। मुवा त्यांनूं उठाय दाग[2] दीन्हो और घायलां नूं डोळी घाल घर लाया। घोड़ा मर गया था सो तौ काम आया और घायल था तिका अलग टाळिया छै। तिण में घणा घायल घोड़ां रै बचणे री आसंग नहीं दीठी तिणांरै गळै छुरी दिराई, सो इसा घोड़ा सात बीसी था। इण भांत कजियो हार भालो ठाकुर सिंह पाछो गयौ। राजपूत दिलासा[3] करता परचावता नीठ-नीठ जे जावै छै। ठाकुर सिंह भागे-मन[4] उदास थक्यो निसास गेरतौ जावै छै। रात घड़ी च्यार रै गयां, पाधरो आपरै डेरे आयौ—

चढ़िया धोळा दीहड़ां, आया पड़ियां रात।
पूछे वांमण बांणिया, कासूं इसड़ी बात॥

सो साथ रो मांणस कोई बोलै नहीं। अबोल-आबोल ही वहै। सहर रो लोग जठै-तठै मसकरो अधिक बोलो हुवै, तिण में ओतौ सिरोही रो लोग सदा सूं अधिक बोलो, सो घायलां री डोळी वहती देख पूछणे लागिया—

माचां ऊपर मुळकता, ले चलिया पायल्ल।
म्हे थांने पूछां ठाकरां, सूअर कै घायल्ल॥

सो सरकार रै रसाले रो लोग साथे थो जिको रावजी रै पास गयौ। जाय नै हकीकत थी सो सगळी मालूम कीवी—जे महाराज ओ तौ सूअर नहीं, कोई बड़ी आफत छै, म्हे सारा जाय दोळा फिरिया सो तिण मे सूअरां इसी उठावणी[5] कर आय भिळिया सो बंदूक तीर किंही रो वहणे नहीं दियौ। आप भिळही जे गया। सो सगळो साथ छींट-छींट कण-कण[6] कर दियौ। ओसांण[7] खता हुई गया। घोड़ो मांणस जे धके चढ़ियों सोही गुड़ भेळो हुवौ। इसी इसी बातां कही सो रावजी सुणकर वहुत नाराज हुआ। रात तौ फिकर करतां, भांज-घड़[8] करतां करतां व्यतीत कीवी। परभात पोह पीळी रो नकारो हुवौ। नकारे री गाज अवाज सुण कर भूंडण कहणे लागी, आज रा निसांण कैसा हेक बाजै छै?

---

[1] झगड़े, युद्ध [2] दाह क्रिया [3] ढाढ़स [4] टूटे दिलसे [5] जोश से तेजी के साथ लपकना [6] अलग-अलग [7] अवसर [8] विचार।

तद डाढ़ाळौ कही—फतै उलां री पैलां भांजे, कै उलां रो मोडी नहीं का पैलां री मोडी नहीं।

इतरै में बात हतां बार[1] लागै, बड़ो राव बीसलदे हयदल पैदल लेय असवार पांच हजार, पैदल सात हजार, धनुषधारी सह म्होंडा आगे दिया। भूखा हीज हालिया। ऊगतै सूरज दोळा आय फिरिया। डाढ़ाळौ थेह रै मांहि सूतौ छै। भूंडण नै चील्हरा बैठा छै। इतरै फौज दिखाळी[2] दी। तद भूंडण कहणे लागी—

सूअर सूतौ नींद भर, भूंडण पोहरा देह।
ऊठौ नाहिं निदांळुवां, घर रूंधौ घोड़ेह॥

तद डाढ़ाळौ भुंडण री कही सुण म्होंडो उठाय फौज सांम्हो देख, सूतौ ही कहै—

कांमण तूं निहचै रह, मन मतना हो भंग।
घोड़े का असवार नूं, करि हूं कसूंबल रंग॥

इतरी बात सुण भूंडण कहणे लागी—जे फौज देखौ, काल वाळी हीज छै कै दूसरी हीज आई छै। यूं जांणणै नूं ऊठी। राड़ तीन जीतियोड़ी थी, जींसूं चील्हरा पांचूं छाती आगे देय हाली—फौज रै सांम्ही।

फौज रो लोग आगेरो भागियोड़ौ थो, मारेल[3] थो, सो उठ बोलियौ—महारावजी साहिब अेकल आइयौ। रावजी कही—इहां रै मांही अेकल किसौ छै? तद लोग कहचौ—लागिया पांच तौ चील्हरा छै नै छठौ अेकल छै रावजी कही—गंवारां अेकल रै खग[4] होसी, इण रै तौ खग नहीं दीसै। काल्ह थे इणसूं ही कजियो कर भागिया? रावजी नाराज होय कही—फिट[5] रे रजपूती, रांड आगे भला भागिया। साथ नूं रावजी हकारो दियौ—कोई भागणौ पावै नहीं, अपणे घोड़ां री बाग उपाड़ी, भूंडण चील्हरां समेत फौज सूं जा भिळी। फौज दोळी चौगिरद फिरी। सवा दो पहर फौज सूं राड़ हुई। पछै भूंडण रा पग छूटिया, सो वा चील्हरां नूं लेय थेह मांही आई। डाढ़ालौ समाचार पूछिया, भूंडण! दळ[6] किसड़ा अेक छै? तौ भूंडण कही—आज फौज करारी, पण कजियो आछौ कियौ छै और कालरो डील जखमायल[7] छै तिणसूं विसेस लड़ सकी

---

[1]समय [2]दिखाई [3]घायल [4]लंबे दांत [5]धिक्कार [6]फौज
[7]जख्मी हुआ हुआ।

नहीं। फेराघरे री फुरती माफक रही। पण इतरो तौ कमाय आई छूं—

पद्य—पाखरियां दळ आया दीखै, सूरज चंद्र तियां सिर साखी।
अेक वार री थेह में राखां, दह दह वार धरा में दाखां॥
तीन वार रोळा म्है कीन्हा, चौथी बार पग पाछा दीन्हा।
तू घर बैठ रह्यौ अळसाय, भागां भाखर दूरो जाय॥
दोहा—देस बिगाड़्यो रावरो, फेर विनासी[1] फौज।
डर बैठां कासूं हुवै, राजा लाग्या खोज॥

तद डाढ़ाळौ ऊठ आळस मोड़ भूंडण नूं कहण लागियो—

रोळो करस्यू राव सूं, सूरज करसूं साख[2]।
फौज बिरोळूं[3] अेकलौ, अबळा बैण न भाख॥

ताहरां भूंडण कही—आज रो जे साथ करारो नजर आवै छै। भूंडण रा डील मांही लोहो सवातीन मण पक्के तोल रो हुवौ। रावजी फौज ऊपर हंस घणौ दियौ। चौथा बांटा[4] रा लोगां नूं मारिया, घायल किया। मोटा मोटा राजपूतां रा घोड़ा घायल किया। सिरदार घायल किया। सो आपरा घाव सम्भाळै छै। उठी भूंडण बेहूदी थकी मांस लटकियां थकां डाढ़ाळै कन्है कांन लटकायां ऊभी छै। सो भूंडण री इसी दसा देख डाढ़ळै कही—

भूंडण आमण दूमणी[5], की फरकावै कांन।
की करड़ा की कब्बरा, देख मजीठा जांण॥

यूं कहि डांढ़ाळौ थेह सूं बाहर आइयौ। भूंडण थेह मांही दाखिल हुई। चील्हरा पांचूं ही छाती मां लीकरै[6] छै। फूल रहिया छै। बेपरवाह थकिया खेल रह्या छै।

डाढ़ाळौ उठा सूं हाल दह[7] आयौ। संपाड़ो कियौ। पछै ऊंची बरड़ी[8] ऊपर नै आय ऊभौ रहियौ। ऊभौ रहि नै श्री सूरजनारायण नूं अरघ देण लागियौ। इतरै मांही रावजी री निजर उठी जाय पड़ी तद रावजी बोलिया—हे! ठाकुरां हे! अमरावां रे! राजपूतां जिण रो नांम सगळां डाढ़ाळौ अेकल वराह कहीजै जोवौ तिको हमें आवे छै। सावधान हुवौ। डाढ़ाळै नूं लोह-करौ[9] जिको

---

[1]विनष्ट की [2]साक्षी [3]तहस-नहस करूं [4]पांती [5]अनमनी, खिन्न चित्त [6]चूंघ रहे हैं [7]पानी का गड्ढा [8]टेकरी [9]प्रहार करो।

समझ कर, सावधान होय नै करजो। इण म्हारो घणो बिसाहणो बिखेरियो छै। म्हारो बड़ो दुसमण छै। जिण रै आगे हो डाढ़ाळो निसरसी तिण नूं म्हारी सिरोही मांही दो पग जमीन नह छै। सेर आटो पण नहीं छै। डाढ़ाळो रावरा इतरा बचन सुण नै मन में बिचार कियो—न करै परमेसर जे कोई सिपाही रो सेर आटो हूँ गमाऊं, किणरे माथै गूदड़ा दिराऊं, किण रो दुरसीस[1] लेऊं।

डाढ़ाळै चौगिरद देख नै फौज नजर मांही काढ़ी। सो बड़ो राव बीसलदे घोड़े ऊपर सवार छै। किरणियो आडो छै। चंवर ढुळै छै। आदमी बीसेंक रावजी रै घोड़ा रै आसपास ऊभा छै। बीजी फौज वाळा बरकमदाज सारा हरोळाई[2] में खड़ा छै। सो डाढाळो नजर राव ऊपर राखी। श्री परमेस्वरजी रो नांम लेय राव ऊपर उठावणो कीवी। सो का तो उठा सू हुलमतो दीठो का रावसूं भिळतो दीठो, बाह[3] करतो दीठो। रावरा घोड़ा रै तंग री ठौड़ खग[4] लगायो सो घोड़ो च्यारूं पगां उपड़ गयो। रावरी जांघ तो बच गई पण घोड़े रो काळजो बुकड़ा आंतड़ा ओझड़ा फाट काछ जावतो निसरियो। घोड़े रो डांडर[5] जाय धरती पटड़ियो, च्यारूं पग चहल हुवा। राव बीसलदे रै घोड़ो बीजो कोतल हाजर थो, सो आंण हाजर कियो। राव नूं चाढ़ियो। लोग साथ रा साराही भेळा हुआ। लोग सगळा घुमरो[6] कियां ऊभा रावरो डील सम्भाळै छै और डाढ़ाळो निलोह थकियो परलै पासै जाय ऊभो खेरूं करै छै। छटा धूणे छै संख सूं खम लगाय फौज सांम्हो जोवै छै। जे राव रै कन्है घणो लोग चढियो पाळे रो घुमरो दीठो। सो त्यूं उठायनै फौज में पाछा नांखिया ज्यूं बघूळिये[7] आयां सुगड़ा पांन घास रा तिणका उडजावै त्यूं सारो लोग बिखर गयो। मुँह सूं आयो कहितां ही चालिया, भागिया परा जाय छै, ज्यूं लुहार घण मारते मुंह सूं जिको जबाब निसरै सो ही जबाब घणी ताळ लग चलियो जावै। त्यूं रावरी फौज अेसी बिजळवाई गई सो बाजे-बाजे लोग आध कोसतांई गयो उठा तांई मुँह सूं उही जबाव आये-आये रो रहियो और अेक घुमरे में बीस पचीस घोड़ा घायल जखमायल[8] कर पाळा जे पचास हेक धकै चढ़िया त्यांनूं तूंड सूं उलाळतो धूड़ सूं भेळा करतो पाधरो ही राव रै घोड़ा कन्है गयो। सो तीनूं तूंड सूं उलाट दीन्हो सो उवो राव समेत परे पड़ियो। राव रै साथळ रै

---

[1]दुरानीश [2]अगाड़ी [3]प्रहार [4]दांत [5]पीठ [6]घेरा
[7]वात-चक्र [8]हक्की-बक्की (जैसे बिजली गिरने से हत्प्रभ) [9]जख्मी।

जबरी जबक आई और डाढ़ाळौ निसर गयौ। कहीका अजरायलां[1] रावतां हाथ री छूटी बरछी बाही। घोड़ो तौ कोई लंघाय सकियौ नहीं, ऊभां ही उलाळ विछूटी बरछी बाही, केही तीर बाह्या सो डाढ़ाळे रा डील में लागिया पण परलै पासै जाय सागी बरड़ी ऊपर आय खड़ो रहियौ। धुगधुगी देय भाला तीर उछाळ दिया। केही अेक मुंह सूं पकड़ काढ़ नांखिया। ऊभौ-ऊभौ संख सूं खेह लगावै छै। धरती खोद रहियौ छै और उठी नूं रावजी रै धोरे सारो लोग आय भेळो हुवौ छै। राव नूं सम्भाळे छै सो पग जखमाइल हुई गयौ तींसूं ऊभो नहीं हुवौ जावै। कटारी निसर परै जाय पड़ी सो सम्भाळ कर लीवी। तरवार मांणसां रै नीचै दबी, वींरो म्यांन किरची-किरची[2] हो गयौ सो वा तरवार सम्भाळ कर लीवी। सवारी रै पगां हाथी मंगायौ जिको आण हाजिर हुवौ। हाथी नूं बैठायौ छै। राव आदमी पांच-सात मिळ सम्भाळ हौदे[3] मांही बैठाणे और राव ईं वेळा मुंह सूं आहिज कहै छै—जे बड़ा सरदारां सूअरड़ै रो जाबतो राखजौ, मुहो झालियां रहो, लोग सभीड़ो देख फेर आंण पड़सी। सो सारां नूं इसो भय लागियौ जे सगळा ऊभा-ऊभा सूअर रै सांम्हा जोवै छै। अेक बीजे नूं आडा देय ऊभा छै। तद रावजी कही—भला भला तीरमदाज[4] हाथियां ऊपर चढ़ लेवौ। सो तीस पैंतीस हाथी फौज साथै था, खासा खासा हाथी साथ में लिया था, बीजा हाथी सारा पाछै राख आया था, सो इब सारा हाथी याद आणे लागिया।

मैजूद हाथियां ऊपर सब आदमो भला भला तीरमदाज धणी[5] जलन्धरो धांमण[6] रा कामठा, सुही रा तीर, तिण रै सवा-सवा पाव रा भाला तीन-तीन आंगळ चौड़ा, बिलांत-बिलांत भर लांबा लियां इसा इसा जवान हाथियां चढ़ सांम्हा हुवा। इतरै मांही डाढ़ाळौ नजर ऊंची नूं करी, फौज नजर मां कर काढ़ी सो इतरा हाथियां पूठै रावरो हाथी नजर में कियौ, ठावो कियौ। फेर उठा सूं उठावणी कीवी, सो सारा आयौ-आयौ करै छै। इतरै तौ आंण भेळिया सो लोग सारो छींट-छींट[7] हुई गयौ। हाथियां आय वागो[8] सो ऊपरा सूं तीरां रो मारको[9] होणे लागियौ, सो कितरा ही तीर डील में गरक हुआ छै। सो इतरो

---

[1]बाँके, बहादुर [2]टुकड़े-टुकड़े [3]अंबारी [4]तीरंदाज [5]प्रत्यंचा [6]लकड़ी विशेष [7]अलग-अलग [8]भिड़ा [9]मार।

मार खावतौ हाथी लोप[1] पाधरो राव रै हाथी कन्है आयौ सो रावरा हाथी रै पाछलै पग इसो खग लगायौ सो हाड जाय रड़कियौ। हाथी नूं जखमाइल कर परलै पासै निसरियौ। हाथी रै पूठै सवार खड़ा था तिकां नूं तूंड सूं नांखतौ थको घायल करतौ थको परलै पासै पार हुवौ। उठै जाय धड़धड़ी खाय तीर सारा नांखिया। केई मांही गरक था सो मोहड़ै सूं काढ़ परा किया। उठे डोळे कन्है खादरियो पगां सूं खैरूं कियौ। खग संख सूं लगावणो लागियौ। सारा ठाकुर सूअर ऊपर आ घिरिया। इतरै सुअर वळे फौज सूं भिळियौ सो सागी फौज फरोळतो[2] रूंदळतौ[3] फिरै छै। इमी तरठ घणौ कजियो कर पार हुवौ। सूअर घणा तीर बरछियां सू पूर हुवौ। बरछियां रा फळ[4] मांहे टूट रहिया। तीरां री सांठी[5] टूटी, भालां री गांस[6] मांही रही सो लोहा सू पूर हुवौ थको पार होय जा बरड़ी ऊपर खड़ो रहियौ। भला रावतां ठाकुरां मांहीं हा-हू हलचल हुई रही छै। डाढ़ाळौ सूअर राव सू विकराळ होय लड़ियौ, भला भरोसाबंध राजपूतां रा घोड़ा रुळ रहिया छै। तीन पहर राड़ हुई। साढ़े सात मण साहजानी पक्के तोल रो लोह डाढ़ाळै रै डील मांहीं रहियौ। महाभारत जीत सूअर खड़ो रहियौ।

राजपूतां-सिरदारां बड़े राव बिसलदे सूं अरज कीवी—बागां हाथ घातीजै, प्रवाड़े-वाड़-कीजै[7], लोग कितराअेक तौ घरां री बाट लीवी। रावजी सूं ठाकुर लोग अरज करी—महारावजी जंगळ रै पसू सूं राड़ किसी, परा जावौ। तमासो करणे आया था सो कजियो कियौ। हमें परा जावौ। सो राव आमणदुमण अमूझियो[8] ही ऊभौ छै। बोलै क्यूं ही नहीं छै। ठाकुर लोग कहै छै—किंही सिरीखे आगै मुड़िया रो मोंहडो होवै छै। रोही रा जानवरां सू वाद किसो। बो आपणो किसो सारीखो थो, इतरो बिसाहणो तौ चित्तौड़ कनां जोधपुर सूं लाग खाता तद थो। फतह कर ऊभा रहिता सो तौ कदेक किंही री आसंग कोई हुई नहीं। हमें खमा कीजै।

डाढ़ाळौ राव री फौज रो मुंह तोड़ घणे प्रवाड़े-पूरियौ[9], आपरी थेह आइयौ

---

[1]टाल कर [2]उथल-पुथल करता हुआ [3]रौंदता हुआ [4]बरछी के आगे का हिस्सा [5]तीर की डंडी में जहाँ तीर लगा रहता है [6]भाले की नोंक [7]युद्धार्थ तैयार हो [8]मन में घुटा हुआ [9]बहादुरी से लड़ा।

भूंडण नूं डाढ़ाळौ कहियौ—अरबद सूं मन हुवै तौ चालो पहुंचावां। पण भूंडण दारू रै मतवाळे ज्यूं इडकरी हुई। लोहियां सूं पूर हुग्रोड़ा डाढ़ाळौ ग्रर भूंडण दोनूं ग्ररबद नूं हालिया।

पाव कोसे'क गया जद डाढ़ाळौ बोलियौ—भूंडण, महा सूरवीर रो खेत-रिण[1] रो छोडियो ग्राछौ नहीं। घावां बड़ो धरम छै ग्रौर म्हारो सरीर सूं समार छै। काल्ह पगपसार थे-म्हे मरीस[2] तौ ग्रगत[3] जायसै, मौनूं ग्रगत होयसी, थांनूं बड़ो महणो होसी। राव बड़ो रजपूत छै, सूरवीर छै। पाछौ जाय काम ग्रायसूं[4] तौ गत होयसी। रावरो चित्त सान्त होवै। मोनूं फेर इसो सापुरुष[5] कोई मारणे हारो नहीं मिळसी तींसूं राजी होय मोनूं सीख देवौ जे काम ग्रावूं। तद भूंडण कही—ग्रापनूं काम ग्रायां पाछै जे म्हारो पाछौ[6] करै तौ कीसूं करां? तौ डाढ़ाळौ कही मैं राव नूं इसा हाथ दिखाया नहीं जो थांरो पाछौ करै। मैं घणी ज्यांन दीवी छै ग्रौर कदादिच पाछौ करै, बड़े चील्हर रै माथै तिणौ मेल्ह जायजे, फेर फौज पड़ै तौ बीजे रै माथै तिणौ मेल्ह ग्रागे जायजे। पाछै भी जाय पड़ै तौ तीजे रै माथै तिणौ मेल्ह जायजे, फेर भी जे ग्राय लागै तौ चौथे रै माथै तिणौ मेल्ह जायजे ग्रौर पाछै भी जे लालच पड़'र पाछौ ही करै तौ पांचवें रै माथै तिणौ मेल्ह तूं ग्ररबद री थेह जाय लीजे। इतरी कहि डाढ़ाळौ सीख कर पाछो घर ग्रायौ—लोहां[7] रो छकियौ[8]।

पणघट ऊपर ग्रायौ। इतरां मांही पणिहारी देख नै बोली—हे बाई! गांव रा ठाकर नूं कहां जे खोड़ौ सूग्रर जावै छै। वे इणनूं मारसी तौ माटां खायस्यां। इतरी सुण डाढ़ाळौ कही—

हे पणिहारी मत कहै, खोड़ो सूग्रर जाय।
धव[9] रै घर खुटसी कोई, नाहक मरसी ग्राय॥

इतरै डाढ़ाळा नूं चेत हुवौ। उठासूं हाल थेह ग्रायौ। सावधान होय भाखरी नूं हालियौ। भाखरी ऊपर ग्राय चढ़ियौ। देखै तौ काम ग्रायोड़ां नूं दाग दिरीजै छै। घायल सम्भाळ बहीर[10] किया था, जे कूकीजै छै। सो कोई तौ भागियोड़ा सहर गया था, तिकां जाय कजिये री कही। तींसूं कुंग्रर वीसलदे रा सवार

---

[1]रणक्षेत्र [2]मरेंगे [3]गति नहीं होगी [4]काम ग्राऊंगा [5]सत्पुरुष [6]पीछा [7]शस्त्रों [8]छिदा हुग्रा [9]पति [10]रवाना।

हजार दोय सूं चढ़िया। इतरै बीच में घायलां री डोळी मिळी तिकांनूं पूछतां पलक लागी। इतरै में सुअर फौज री नजर पड़ियौ। तद राव बोलियौ—डाढ़ाळौ आयौ, सावधान हुवौ। इतरी सुण कायर था तिकां रा होठ सूख गया, छाती बैस गई। तद राव धीरज दै छै—राजपूतां री खेती छै, सावधान हुवौ। राव कही—रण रहियां अमर होय, भागियां रजपूती जाय।

रण घर रजपूती करै, सोही अमर कहाय।
कायर रोवै जीव नूं, सो फिर आप नसाय॥

इतरा मांही सारां री नजर काळ-रूप दीठौ। देखतां समान कायरां रा प्राण घुटणे लागिया। बहत्तर नाड़ी सूं प्रांण नीसरिया। राव कही—साबास भला राजपूत हुआ। इतरी कहि आपरी सवारी रै हाथी नूं आगै चलायौ। बीजा हाथी राव रा हाथी री बरोबर क्यूं[1] पाछा दबाया सो धणी भाला हाथ सम्भाळिया छै। राव रै हाथ लाहोरी कवांण री छै। बड़ी खपरियां रा तीर च्यार तौ मूठ में छै और तरकस दोय होवां में छै। राव राजपूतां नूं विरदावै[2] छै, ललकारै छै, सो घोड़ां रा सवार हाथी सूं पांवडा[3] बीस तीस अगल बगल ऊभा छै। बरछियां हाथां मांही ले खड़ा छै। इतरै में सूअर बरड़ी सूं होळै-होळै उतरियौ सो पग सूं खुड़ावतौ उतरणे लागियौ छै। तद राव उतावळे सी राजपूतां नूं कहणे लागियौ छै—भलो हुवौ, सूअर जे खोड़ो हुवौ आवै छै। थाक रहियौ छै। अबार मार लेवां छां। तद इतरो वचन राव रो सुण सूअर कहणे लागियौ—

खोड़ो खोड़ो मत कहौ, खोड़ो बड़ो रुसाळ[4]।
रेस[5] खवाई रावनूं, रहियौ वागां माल॥
हाथी पाडूं हींडता, घोड़ा पाखरियांह[6]।
तौ जांणीजै रावतां, भूंडण रा जणियांह॥
फौज न फेरौ रावरी, हूं आयौ कर रोस।
भाग्यां भड़ न कहावस्यौ,[7] दूध लजास्यौ ओस॥
रावां रावत धीरपौं[8], नाहीं भाजै जाव।
करस्यूं साकौ[9] अेकलौ, राखूं कळि में नांव॥

---

[1]कुछ [2]जोश दिलाता है [3]कदम [4]गुस्से वाला [5]हार
[6]कवच लगे [7]कहलाओगे [8]धैर्य बँधवाओ [9]महत्त्वपूर्ण युद्ध।

इतरी बात सुणतां ही ठाकुर लोगां नूं चिणक लागी सो खिजिया। खड़ा था त्यूं गांठ कर ललकारता थका सूअर रै साम्हा हुआ। इतरा में रावजी रा हाथ सूं भालो छूटियौ सो जाय सूअर रै लिलाड़ लागियौ सो आधो तीर गरक हुवौ। तीर लागियां सूं इसो कालो[1] हुवौ सो राव रै हाथी रै आगलै पग रै मुरचै री सांध में खग री दीवी सो मुरचै रो खालड़ो मांस हाड जाय रड़कियौ। तींसूं हाथी लचको खाधौ। झुकियौ तद सूअर री खबर पड़ी। जे हाथी नूं घायल कर पगां में आय भिळियौ। सो हां-हां हुई रही छै। पण बरछी तीर रो दाव किहीं रो लागै नहीं और सूअर हाथियां रै पगां में बड़ियौ[2] सो सारा हाथी घायल किया। पग फाड़ अहंड किया। सारा हाथी आपोआपै मुंहै नै भागिया। महावत घणा ही थांभ रहिया, घेर रहिया, पण थंभै ही नहीं। राव रिसाय रहियौ, पण महावत रो बस नहीं। हाथी तौ आपो-आप ही खिड़[3] दूर जाय ऊभा रहिया।

हाथी सै घायल किया, फेर चल्या दे पीठ।
बीसलदे री फौज में, भलो बजायौ रीठ[4] ॥

डाढ़ाळौ अेकल रणखेत रै मांही खड़ौ छै। च्यारूं दिसां नै निहारै छै। तद सारा ठाकुर बोलिया—

घेरो घेरो सह कहै, मुंहडै चढ़ै न कोय।
डाढ़ाळै री झाट[5] में, सारा रहिया जोय ॥

तद डाढ़ाळौ फौज सांम्है देख कही—

छांडौ-छांडौ पागड़ा, सांम्है आवौ थट्ट[6]।
डाढ़ाळौ कह रावतां, जे माचै गहघट्ट ॥

इतरी डाढ़ाळै कही नै सारा ठाकुर पागड़ा छांड, परगह सारी आगै कर और बरछियां री कोड कर फळसा मां होकर चौगिरद सूं आया। इसा हीज आया सो दीठां ही बण आवै। कही नहीं जावै। डाढ़ाळौ जिण पासै मुंहडो कियां खड़ौ थो त्यूंही सांम्हौ धंसियौ सो जाय भिळियौ। सारा ठाकुर ऊपर आय झुकिया। इसो रीठ बाजियौ जिसो न भूतो न भविस्यत। घणी बरछियां रा बाढ़[7] हुवै। केई आगै नीसरै छै। तरवारियां री झटाझट लाग रही छै।

---

[1]पागल [2]घुसा [3]बिखर कर [4]शस्त्रों की आवाज, झड़ी
[5]झपट, प्रहार [6]समूह [7]टुकड़े।

घणी तरवारियां रा बाढ़[1] उछळ रहिया छै। घणी तरवारियां रा बाढ़ झड़ै छै। हा-हू होय रही छै। डाढ़ाळौ घणां नूं तूंड सूं उलाळ-उलाळ न्हांकिया छै। कइयां नूं घायल किया छै। कई रा पेट फाड़िया छै। आंतड़ा रुळ रहिया छै। घड़ी च्यार तांई सारै साथ सूं लड़ाई करी। आदमी साठ सत्तर फेर मारिया। घणा घायल किया। सो बाढ़ पुरजो-पुरजो कर न्हांखियौ छै—जांणजे रंगरेज री गांठ खुली। लोहो सूअर रो हुतौ सो तिलकां सूं उपड़ियौ। अेक-अेक बूंद सगळां रै माथै आई। राव प्रवाड़ौ[2] जीत खुसहाल हुवौ। खग दोनूं सेवा में राखणे रो हुकम हुवौ। संख दोनूं सोने सूं मंढ़ाय नै पाग मांही राखणै रो हुकम हुवौ। फतह कीवी ताहरां मन छाजै आयौ।

जिण जे अरिदळ हणै, धग बंची परगेह।
तिण दिन आपण पै समौ, हमिरा नगरी गेह॥

रावजी बोलिया—इण महा सूरवीर रै मुंह चढ़ काम आया सो बैकूंठ री बाट बुहा[3], जिणां रो सोक न करणौ। कांम आया जिका राजपूत अेक ही चिता मांही दिया, जिणां नै दाह पड़ै छै।

इतरा मांही कुंअर हजार दोय असवारां सूं आंण मुजरो कियौ। तद रावजी फुरमायी—आज अठै गोठ हुवै सो सगळां रो सोक भाजै। आदमी जिनस रै पगां[4] सहर मेलिया। आटौ, चावळ, बेसण, खांड, घिरत, दारू रा घट, बाकरा बीजी ही सारी वस्तु बासण देगचा चरवा सगळा ही मंगाया। तद कुंअर अरज करी—साख चरणै रेढ़ा[5] जावै छै, हुकम जै हुवै रेढ़ा मार ल्यावां। गोठ रो सवाद[6] तौ रेढ़ा ही छै। तद रावजी फुरमायौ—दुरस्त बात छै, पण जावतो घणौ कर जायज्यौ। आगे ही लोक घणौ काम आयौ छै। तद कुंअर मुजरो कर नै बाग उठाई सो हजार दोय घोड़ां री बाग ऊपड़ी। तिण में रूड़ा राजपूत तिके स्वर्ग रा उतावळा, बैकुंठां लोड़ाऊ, 'अवधां बिरदां रा बहणहार[7], तिणां री वाग ऊपड़ी। कोस दोय-तीन ऊपर जावतां वे भूंडण-रेढ़ां नूं पहूंचिया। इतरै भूंडण बड़ा रेढ़ा रै मांथै में तिणो मेल्हियौ और कही—

भूंडण भूंडौ नह जणै, ना पिह लोपै रेह।
तिण सूं पहला ठहर तूं, दंद[8] मचादै खेह॥

---

[1]तेज धार [2]युद्ध [3]गए [4]लिए [5]सूअर का बच्चा [6]स्वाद
[7]युद्ध और कीर्ति की राह पर चलने वाले [8]द्वन्द्व।

दुसमण सगळा रोळदे[1], खूब चला तूं तूंड।
तौ डाढ़ाळा बाछड़ा, गुड़ सूं भरस्यूं रुंड॥

भूंडण पूरा लोहां छिक रही छै। बड़ो रेढ़ो पाछो फिरियौ। अेक घड़ी तांई सारी फौज थांभ राखी। फौज रो मारकौ रेढ़ा ऊपर पड़ै छै। रेढ़ो उणरै तूंड री देवै छै सो घोड़ो नै सवार गुड़ भेळा हुवै छै। अेक घड़ी तक सारी फौज सूं लड़ियौ। अठै रावतां तरवारियां सूं बाढ़ कर खतम कियौ।

तद फेर आगै कढ़िया[2]। फेर ही पहुंच वळे बीजे रेढ़ै घेरियौ। उण फौज रोकी। तीन रेढ़ा चौथी भूंडण आगै चाली। अेक घड़ी बीजो रेढ़ो फौज सूं लड़ियौ। फौज वाळा इणनूं बाढ़ आगे हालिया। तद तीसरो रेढ़ो ऊभौ रहियौ। घड़ी अेक फौज सारी थांभी। इणनूं मार फौज आगे हाली। चौथो रेढ़ो फिरियौ सो इसो आकरौ आय फौज सूं भिळियौ सो मागी[3] कुंअर कन्हां गयौ। घोड़ो सवारी में छै तिण रै तूंड री दीवी सो उलट कर सवार घोड़े समेत गिरियौ। घोड़े री जांन गई तद भूंडण कही—

सूअर वाही दंतळी[4], जाय रड़क्की हड्ड।
भाई हुवै सो बाहुड़ै[5], गये विडारणै छड्ड॥

च्यार घड़ी तलक च्यारूं रेढ़ा घणा सखरा लड़िया। आदमी घणौ घायल हुवौ। सारा धाप रहिया अर आबू रा विवर पण भूंडण व रेढ़ा री नजर आया। तद सारो साथ उठै ऊभौ रहियौ। कुंअर नूं संभाळ घोड़ै सवार कियौ छै। इतरै भूंडण-रेढ़ो विवर जा बड़िया। तद साथ मारौ, घायलां नूं रेढ़ा नूं संभाळ पाछा आया। आय रावजी सूं मुजरो कियौ। रावजी रेढ़ा च्यारूं देख बड़ा राजी हुवा। कुंअर नूं घणी साबासी-दाद दीवी। निवाजस कीवी। कुंअर री साथ और लोग रजपूत थो तिणनूं अलग-अलग दिलासा दीवी। निवाजस-इनांम रो हुकम हुवौ। राव गे मन बहोत राजी हुवौ छै। बहोत खुसी हो कही—

रण जीतण तोरण बंधण, पुत्र बधाई चाव।
अे तीनूं दिन त्याग रा, कहां रंक कहां राव॥

गोठ री तयारी कीवी। अमलां री रह्-छह्[6] मंडी छै। भूरो, मेवती, काळो

---

[1]नष्ट करदे [2]निकले [3]उसी [4]दाँत [5]लौटे [6]महफिल।

किसनागर, आगराई, मरोडी, मुहरतोलो लाभै तिण भांत रो केसरियौ[1], पोतां घोळियौ. मनुहारां हुवै छै।

अमलां सताव उगावण रै पगां बावड़ी रो नीपनौ तिजारो लोटियां मांही नै खोपरा-दळ[2] रो इगतीस ताड़ीरो, तिण पियां पाछै महीनां रो लोही टाह रहै। आधूंआध कालपी[3] मिसरी मिळायोड़ो, कोरी गागरां मांहीं घालियां थकां राजेस्वरां रै मुंहडै आगै मनुहारां सूं पायजे छै। अमलां री चरसां री मनुहारां होय छै।

उठी आबूजी री तळहटी जाय नै भूंडण विचार कियौ—जाया पूत मरिया छै। डाढ़ाळा सरीखो खाविंद मर गयौ। इब कीसूं जीवणौ छै। तद पांचवें रेढ़ा नूं कहण लागी—तूं सापुरुष छै। सुअर वीर सूं उपजियौ छै, तींसूं थारा बाप सरीखो होय और राव सूं खेटो[4] करे। इणहीज भांति, इणहीज धरती मांहे जो-गेहूं बाढ़ चरे। बळ रा काम करे। विसरजे मतां। भूंडण कहै छै—

सो सपूत जे पीछो राखै, दुरजन हीण कदै ना भाखै।
वैरां तिणां विसारै वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा[5] ॥

रेढ़ो कहै छै—

तूं माता निस्चित रह, मन मंह मत कर सोच।
राव निचिंतौ ना करूं, कदे न खाऊं मोच ॥

जो थण थारा चूंघिया, रावां भजूं मांग।
तोनै भली कहाड़स्यूं, डाढ़ाळा री आंग ॥

इसा वचन सुण, तन री प्रफुल्लतता देख भूंडण कही—

अजर अमर चिर जीवणौ, रहज्यौ विसवेबीस।
अेम कहै अति हरख[6] सौं, देय चढ़ी आसीस ॥

इण तरह कहि भूंडण अरवद सूं उतरी और विचारी—जे मोनूं तौ डाढ़ाळै रो साथ बार-बार मिळै नहीं, तींसूं इब ही हाल वीरो साथ करणौ छै।

जाती वेळा तौ च्यार घड़ी लागी थी, पण इब सतचढ़ी अेक ही घड़ी मांही आय पहुंची। उठै सारा साथ रा रावजो रै पांतै[7] बैठा छै। तद रजपूतां

---

[1]अफीम [2]खोपरे के दल जैसा [3]एक प्रकार की बढ़िया मिश्री [4]युद्ध [5]जैसा [6]हर्ष [7]भोजन की पंक्ति में।

कही—रावजी भूंडण आई। रावजी कही—सावधान रहौ, देखां भूंडण कासूं करै। तुरत घाव मतां घालौ। इतरै में भूंडण चाली सो जठै डाढ़ाळा नूं दाग दियौ तीं ठांव आई। पारवती सूरजकुंड आई, स्नांन कियौ, सूरजनारायण नूं प्रणाम करि, आय उण चिता दोळी च्यार प्रदक्षिणा कर सूरजजी नूं मुख ऊंचौ कर अर्घ देय कही—बार-बार डाढ़ाळौ पति पाऊं। इतरी कहि चिता मांही गरक[1] हुई। रावजी देख नै घणी प्रसंसा करणे लागिया।

इतरी में अलकापुरी सूं विमांण बैठ यक्ष आइया। अै पण मागी देह धर जगरां सूं निसरिया सो विमांण मांही जाय बैठिया। सगळो साथ देखै छै। अचंभौ इचरज मानै छै। सब बड़ाई करै छै। इतरै यक्ष सरीर सू डाढ़ाळौ कहै—सगळा साथ सूं म्हारो रामराम छै। साबास मोटा राव, थारै बिना मोनूं सराप सूं मोख[2] कुण देवै। श्री परमेसर थांरी जै करै। थांरो घणौ प्रताप हुवौ। थांरा राज में विघन[3] उपद्रव कदे मत हुवौ। रजपूत जिको इण तरह कांम आसी, आपरै धरम में रहसी सो इण भांत विमांण बैठ सरब सुख पायसी। सूरजमंडळ भेदसी। देह में नेह कदे नह राखै, या अमर नहीं छै तिणसूं ईं देही सूं भलो होयजे-करजे। जस सदा अमिट रहै छै तिणसूं माया-मोह छोड़ जस प्राप्त करणौ व धरम रो संग्रह करणौ, परोपकार करणौ।

इतरी कहितां विमांण लोप हुवौ। पछै रावजी गोठ जीम, सारा ठाकुरां रो सोक भंजाय, खुस बखत होय बैठिया। जिका सरदार लोग काम आया था तिकां रा भाई-बेटां नूं घोड़ा, सिरोपाव, तरवार, मोतियां री माळा देय मांन कियौ। घोड़ा तीन सौ बकसिया, घायलां नूं तरवार-सिरोपाव दिया सो सातसौ तरवार बकसी। रिपिया पन्द्रह हजार पटाबंधाई[4] खरची रा दिया। उम्मीदवार कांम आया त्यांनूं पट्टो जागीर दीधी। खास चौकी मांही राखिया। बड़ी महरबानी, कायदो-कुरब, मुलाहिजो दियौ। पछै सादियाना बड़ा राव वीसलदे घरां पधारिया। कवीस्वरां गुणिजनां मंगतां नूं दान दिया। ब्राह्मण जिमाया। आसीस लीवी—

सुर नर नाग न घटियां, केळ केहरियांह।
जलपुरिया परवांण ज्यूं, गल्हां ऊबरियांह॥

अेकल वाराह डाढ़ाळ री बात समाप्त।

---

[1]समाविष्ठ [2]मोक्ष [3]विघ्न [4]जख्मों के इलाज के लिए।

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

अमरसिंह गजसिंहजी रै बड़ो कुंवर। सांचोर रा चहुवाणां रो दोहितौ। सो गजसिंहजी री रजा[1] नहीं। अमरसिंह निराठ सारी बात में अव्वल, बड़ो देसोत[2], मांटीपणे रो आंक[3]। तद गैरचाकर लोगां सूं बातां कर, लोग सारो साथ लेय आगरे बादसाह साहजहां कन्है गयौ। बादसाह आछी तरह सूं राखियौ।

आमेर रै घर परणियौ थो, जोधपुर रै धणी रो बड़ो बेटौ, फेर आप बातां सयाणो सो आछो तरह सूं रहै। नकदी खरची पावै। लोग सारो सबळौ रहै अर बादसाह री घणी मेहरबानगी।

महाराज गजसिंहजी समाया[4] सो मरती बार अमराव मुत्सद्दियां नूं जसवन्तसिंह री भोळावण दीन्ही। तीं पर जोधपुर में राजसिंह खींपावत कूंपावत परधांन थो सो सारा अमरावां नूं एकरंग राखिया[5]। अमरसिंह घणा ही जतन किया पण राजसिंह किंहीं नूं फूटणे नहीं दिया। बादसाह री हजूर जसवन्तसिंह नै ले गया। घणा ही मजकूर हुआ पण जोधपुर जसवन्तसिंहजी नूं लिखायौ। अमरसिंहजी उदास हुवा, तद बादसाह घणी दिलासा देय नागोर खालसे थो सो लिख दियौ। राव रो खिताब दियौ। तीन हजारी रो मनसब कियौ। बीजा ही

---

[1]मर्जी [2]देशपति [3]वीरता का प्रतीक [4]स्वर्गवासी हुए [5]एकता तथा बराबरी के सूत्र में बाँध कर रखा।

परगना आगरा रै गिरद रा दिया। वतन में नागोर।

तद मुत्सद्दियां अरज कीवी—अेक बार नागोर पधार, मुलक में लोगां नूं पटो देय फेर हजूर पधारज्यौ। तद कही—थे जावौ, गांवां रो उतारो कर सताब मेलज्यौ, तिण माफिक लोगां नूं पटो मेल देस्यां; सो सारो सरतंत[1] कर दियौ। आछी जमीरत कीवी। लोग सारा आप आपरी जायगां बांधी। लोग सबळ हुवौ। इतरै में चांपावत बलु गोपालदासोत अर भायसिंह जोधपुर छांडि सुराणे जावणे री सूरत कीवी। तिण पर अमरसिंहजी रा मुत्सद्दियां जाय बात कर अमरसिंहजी नूं लिखियौ। उठा सूं पटो हजार तीस रो बलु नूं, हजार पन्द्रह रो भायसिंह नूं आयौ। अे नागोर आया। कूंपावत, ऊदावत, करमस्योत, रतनोत जोधा सारा ही आया सो नागोर में अमरसिंहजी झाल लिया[2]। आछी तरह खातिर सूं रांखै सो लोग सारो राजी। तिण में अेक दिन अमरसिंहजी रै खेलण री बरबरी जायल खालसे मांही मेली थी सो कछवाहां रा केई मांग'र ले गया। दरबार नागोर में हुवौ छै। मुत्सद्दी सै बैठा छै। बलू पण दरबार में छै। उण बखत आय कूक घाती[3]। तिण वेळा मुत्सद्दियां कही—सारा चढ़ौ। हाकम चढ़ियौ, बलूजी आप असवार हुवौ, तद बलू कही—घणी ही बकरी-टाटां जासे जिण पूठे कासूं चढ़ां? छोटी आसामी वाळा चाढ़ देवौ, ले आसी, टाटां घणी ही छै। टाटां रो कासूं। तद मुत्सद्दी रंग फोड़[4] कही—ठाकुरां, पटायत चाकर[5] दरबार रा छौ, आ कासू कही। अठै तौ बकरो म्हांरै भावें हाथी छै। ठाकुरां किसै दिन हाथियां रा घेरा मांडस्यौ। इतरी सुणत सुवां बलू ऊठियौ अर कही—जिण दिन हाथियां रा घेरा आयसी उण दिन हीज आस्यां। ऊभो पटो छोड़ बाहिर हुवौ। पूठे[6] माणस गया, घणोही कहियौ पण रहियौ नहीं।

आगरे बादसाह कन्है गयौ। उठै नव सदी रो मुनसब हुवौ। चाकरी अव्वल तरह करै। आछी तरह रहै। कनै का लोग नूं अणीपांणी[7] सूं आछी तरह राखै। अमरसिंहजी बार दोय-चार कहायौ पण आयो कोई नहीं। इव करतां बरस दोय-तीन नूं बादसाह रो कूच लाहोर नूं हुवौ। सो लाहोर आयौ, काबल ऊपर मुहीम[8] करी। तिण पर नबाब मोहबतखान नूं विदा कियौ। बीजा

---

[1]इन्तजाम [2]रोक लिए [3]फरियाद की [4]गुस्से में आकर
[5]जागीर वाले नौकर [6]पीछे [7]इज्जत [8]सेना का पड़ाव।

मनसबदार साथ घणा दिया तिण में केसरीसिंह जोधो हजारी रो मनसबदार थो सो उहां नूं पण तैनात कियौ। सो नकीब[1] कहि गयौ—तुम नबाब रै काबुल कूं तइनाथ हो सो तैयारी करौ। तद केसरीसिंह नकीब नूं तौ क्यूंही कही नहीं अर परभात नूं बकसी सलावतखां कन्है गयौ अर कही—दूजी जायगां मेलौ, तैयार छां। काबल री माफ करौ। तौ सलावत खां कही—जो बादसाह रा हुकम ईं तरह का ही जे है तौ और कैसी जगां मेलें। तुम बादसाही नौकर हो, खाविंद फुरमावे जहां नौकरी करणी। फेर केसरीसिंह कही—नौकरी तौ नामुकर नहीं, जठै फरमाई जाय उठै जावां, काबुल माफ करौ। तौ बकसी कही—काबुल क्या है जो तुम कबूल न करौ। इण कही—आडी अटक[2] बहै छै सो हिन्दू नूं मना छै, तिण वास्ते अरज छै। तौ बकसी कही—हिन्दू तौ इण ताबे में बहुत हैं, उनने तो किसी नै नाहीं नहीं करी, तुम कुछ उनसे अलग हो क्या ? तौ फेर कही—वांरै मन में गिलानी नहीं, मेरे मन में है इणसूं माफी करौ। बकसी कही—तुम जैसे नौकर हजरत के बहोत हैं, मैं किस-किस कूं माफी करूंगा। तुम तौ तैयारी करौ। इण कही—अटक तौ उतरणी आवै नहीं, और जिस तरफ चाहो हाजर हैं। तौ बकसी कही—जे तुम नहीं उतरोगे तौ मुनसब उतरेगा। इण कही—मुनसब खाविंद के हाथ है, चाहे सो करौ। म्हांरो धरम म्हांरै हाथ में है सो राखसां, खोवां नहीं। यूं जबाब-सवाल बहोत हुवा। तीं पर केसरीसिंह मुनसब छोड़ डेरे ऊठ आयौ। तिण पर चारण कही—

कळाहरो[3] चढ़ती कळा, जीपण[4] जंग भाराथ।
केहरी[5] अटक न ऊतरै, साहजहां रै साथ॥

सो नबाब चढ़ गयौ। केसरीसिंह बैठ रहियौ। मुनसबत तागीर[6] हुवौ। जद अमरसिंह नूं खबर हुई जे केसरीसिंह नबाब रै ताबे[7] कियौ थो सो गयौ नहीं तिण सूं मुनसब तागीर हुवौ। तौ अमरसिंहजी केसरीसिंहजी रै डेरै गया। अठै च्यार गांव थांहरै म्होंडा आगै छै, थे उठै नागोर पधारौ। सो बड़ा ही गाढ़ सूं केसरीसिंहजी नै नागोर मेलिया[8]। हजार तीस रो पटो, सांवां ओडीट वगहरा

---

[1]जाति विशेष का व्यक्ति जिसका काम बादशाह की सवारी के आगे आवाज देते हुए चलना होता था [2]अटक नदी [3]कला रायमलोत का वंशज [4]जीतने वाला [5]केसरीसिंह [6]जब्त [7]ताबेदारी में [8]भेजे।

लिख दिया अर रिपिया दस थाळो रा कर दिया और लिख दियौ—चाहे जठै हवेली नागोर में सरकार सूं करा दीज्यौ। नागोर रो जापतौ आपरै हाथ छै। सो केसरीसिंह नागोर आयौ। गीनाणी ऊपर हवेली कराई, अठै रहै। गांवां लोग रहै। असवार पचास कन्है रहै सो रिपियो आधो घोड़े री सरे पावै।

उण दिनां में कछवाहा अर लाडखानी नागोर नूं उजाड़ करै। तद केसरीसिंह कागद लाडखानियां नूं रावजी कन्है मेलिया—जे थे मोटा सगा छौ, ठाकर छौ, उजाड़ माफ करौ। जे कोई भूखो छै तौ अठै आवौ। अठै पांच सेर जुवार छै सो बांट खास्यां, पण उजाड़ मत करौ। तिण पर मास अेक तौ कोई दौड़िया नहीं। पछै एक दिन बोची सिवदड़े रा मांगर भेळा होय दौड़िया[1] सो एक गांव रा अे सौ बळध लेय गया, तेंरी कूक आई। तद केसरीसिंह रसोवड़ो करायौ, जीमियौ। इतरै में सहर रो लोग सोवणी करणे लाग्यौ। लोग बजार में आयौ थो सो सुण गयौ, तिकां आण कही। आप सुण चुप रहियौ, पछै चढ़ियौ सो आपरै पटे रै गांवां मांही करतौ[2] निसरियौ। लोगां नूं कही—सताब भेळा होय आयज्यो, हूं आगै जाऊं छूं। थां गांव सूं आध कोस ऊपर आय डटज्यौ। आदमी अेक मेरै कन्है मेलज्यौ।

सो आप सारा सवारां सागै सिवदड़े गांव आया। कोटड़ो जाय राम-राम कियौ। कही—स्याबास[3] मोटा सगां, भली किरपा करता, हूं तौ थांहरे आसंगे आयौ थो तींसूं इतरी अरज लिखी थी सों भली पीठ[4] राखी। इब थांहरै धरणौ छै। म्हारी आयेरी राखौ[5] सो निराठ[6] नरमी[7] दीवी। तद कुम्हार रै डेरो दिरायौ।

पूठै कछवाहा मसकरी करणै लागिया—जे इण रै भरोसे इतरा दिन निकमा रह्या। तौ अेक बडेरो थो उण कही—मोटो सरदार छै, जे इतरी नरमी देवै छै तौ नारा[8] परा देवौ। गोठ करौ। तद केई कहणे लागिया—जे बांसला[9] दिन बैठा रहिया तिण रा धोका[10] आवै छै। इण बांमण रो मुलाहिजो कियौ। अठै तौ इब राजा ही गरीबां रो पाळू[11] छै। अेक कही—राजा में तौ भाग रो

---

[1]लूटने को रवाना हुए [2]होकर [3]शाबास [4]मदद रखी [5]इज्जत रखो [6]बहुत [7]विनम्रता [8]बैल [9]पिछले [10]पश्चात्ताप [11]पालने वाला

खायजे छै। इणनूं पटो दियौ जितो आपांनूं देवै तौ खबर पड़ै। कोई सींव मांही कर तौ नीसरै। सो कछोटियो लोग ओछा अधका बोल बोलै, ठठोळियां[1] करै।

इतरा में संझ्या पड़तां अेक आदमी आय कही—साथ सारो टीबा पूठै खड़ौ छै। तद केसरीसिंह मांणस नूं पाछौ मेल, आप कमर बांध, आदमी पचास सूं कोटड़ी आयौ। सारा सरदार आंण भेळा हुवा। तौ केसरीसिंह कहणे लागियौ—जे मोटा ठाकुर छौ, डांगरां[2] रो वाद क्यूंही नहीं छै, आपां भाट मंगत नूं ही उठाय देवां छां। थां मौनूं बकसावौ[3], आगी मतां खांचौ[4]। हूं तौ सगा जांण थांहरै आसंग ऊपर पहर तीन धरणो दियौ। इब जावां छां। तौ कछवाहा मजाक करणौ लागिया—जे ठाकुर, टींको खीचड़ो करावां छां, थां जावौ मतां। परभात बातां करस्यां। कांई करां, भूखा था जे ल्याया सो केई अेक तौ राज नूं दिरास्यां, बाकी तौ लोग भखो थो सो ले गयौ। इव करतां गांव में लोग बोलियौ—कुण थो, ओ साथ केरो? इसो रोळो कोटड़ी सुणियौ। लोग देखणे नूं ऊठियौ। इतरै में केसरीसिंह कढ़ पड़ियौ[5] सो सरदार बीस-पच्चीस बैठा था सो तौ कूट नाखिया। बहदो हुवौ ज्यो पहलां ही उठाय आया सो आदमी न्हासता-भाजता मारिया। गांव का लुगाई टाबर सारा भेळा कर कोटड़ी में पड़साला भूंपड़ा था तिकां में दिया। गांव सारो लूट लियौ। सारो धन सूं पूर हुवौ। आदमी हजार तीन, दिन ऊगतां आंण भेळो हुवौ, केहर पाड़ियौ। परभात चढ़िया सो गांव दूजौ वळे जाय मारियौ। पछै वीजा गांवां नूं पासरणा छूटा सो वित्त[6] सारो घर ले आया। गांव दोय री तो जमा ऊठण दीवी। इसी तरह केसरीसिंह कछवाहां लाडखानियां ऊपर वांह बाही। नागोर आया, सारा सुपारस कीवी, टका दिया, जवान दिया—उजाड़-बिगाड़ रा।

अमरसिंहजी कन्है कासिद[7] गया सो सारा समांचार मालूम हुवा। उठा सूं हाथी, घोड़ा, सिरोपाव मेलिया, बड़ी निवाजस आई। राजा राजी हुवौ। अमरसिंह रो आपस मांहे रस नहीं। बकसी रै जसवन्तसिंहजी सूं इकळास, सो अमरसिंहजी सूं बात-बात में गिलो करै। बात अमरसिंहजी ही सुण पावै तिण सूं आपस में विप लाग रही।

---

[1]हल्की मजाक [2]गाय-भैंस आदि का [3]बक्सिस करो [4]मुहावरा—बात को आगे मत बढ़ावो [5]निकल पड़ा [6]गाय-भैंस आदि पशु-धन [7]पत्र-वाहक।

इतरै में नागोर और बीकानेर आपस में कजियो हुवौ—गांव जखाणियां बाबत, सो नागोर री फौज भागी। बीकानेर री फतह हुई। केसरीसिंह जोधो काम आयौ। करण भोपतो चांपावत काम आयौ। गोयंददास, जगरूपसिंह, मेड़तिया बिहारीदास, गोकुलदास, उदावत हरीसिंह, साहिबसिंह, भोपतसिंह, करणोत खेतसी, रायसिंह, अखेराज करमस्योत, सेखो पातावत, जमो बारहट इतरा तौ नांमी; बीजो ही घणौ लोग काम आयौ। साथ बुरी तरह भागियौ। तद चारण दोहा कहै—

सिंहमल सिलकिया[1] करमट कूदिया,
कटकां हुई ज हालोहाल।
सेखा दुरजनसाल समोभरम[2],
रोपौ पग विडारण[3] माल।

सो आ खबर अमरसिंहजी नूं गई, सो सुणत मु वां काळौ मरट[4] हुय गयौ। हाथ पटकै, दांतां सूं हथेळी नूं बटका भरै, कटारी सूं तकियौ फाड़ नांखियौ। जे म्हांरी घणा दिनां री संची[5] जाजम बीकानेर रा खाली कर दीवी। मैं तौ इहां नूं जोधपुर रै पगां[6] संचिया था सो हमें जोधपुर री आस[7] तौ चूकी दीसै छै। मुत्सद्दी अमराव हजूर री धीरज बंधावै, परचावै, पण अमरसिंह तौ बावळै री सी बात करै। आठ पहर तौ नामारूम[8] थाळी न बैठौ। पछै सारा हठ कर नीठ थाळी पर बैठायौ। अन्न छूट गयौ। सारा नूं कहै—नवाब कन्है जावौ, बिदा करावौ, कै हूं विना बिदा चढ़ जायस्यूं। वकील सू ताकीदी करै—जे मोनूं हर भांत कर बिदा करावौ। लोग कूड़ करै—आज तौ नवाब मिळिया नहीं, आज मोसर[9] लाभौ नहीं।

सो दस रात इण तरह नीसरी। मुजरे नूं जावै नहीं। लोग अरज करी—मुजरै नूं पधारौ। दिन घणा हुवा सो माडे सूं मुजरै नूं लेय गया। उण दिन सलावतखांन बकसी नहीं आयौ, दीवाण आयौ थो, उण सूं कही—रावजी बिदा री अरज करै छै। जणां दीवाण कही—बकसी कूं आणे देवौ। उनसे कहके अरज करावेंगे। अमरसिंह कही—उवौ तो वकील छै, काहेरो बकसी छै। उणनूं सोंक[10] चाहिजै सो म्हारै पास नहीं। तद दीवाण कही—बादसाह का जे बकसी

[1]खिसक गये [2]लड़का [3]नाश करने को [4]गुस्से से काला
[5]जमाई हुई [6]लिए [7]आशा [8]महरूम [9]अवसर [10]रिश्वत।

है, तुम मोटे सिरदार हो, तुमकूं यह न कहणी चाहिज । या बात सलावतखांन सुण पाई ।

अेक दिन बकसी बादसाह सूं अरज करी—जे अमरसिंह बार-बार बिदा की अरज करवाता है सो हजरत की कैसो मरजी है ? जद बादसाह सलामत फरमाई—हम तो इनकूं आगे एक-दोय बार कही—जे तुम देस जावौ, सो जब तो कबूल ही नहीं करी, इब क्यूं अरज कराता है । तद सलावतखांन अरज करी—जे फिसादी है । बीकानेर रा गांव था सो दाबता था । उण दाबणे नहीं दिया तीं पर फौज कर उन पर गया । इनकी फौज किस्त खा गई । हजरत की किरपा से बीकानेर वाळे की सही जीत रही । तींसूं बिदा मांगता है, जे उहां पर जाय फिसाद करसी । इनकूं बिदा होगी उस वक्त बीकानेर का राव बिना ही सीख चढ़ जावेगा । उनका वकील हमेसा मेरे पास में आता है सो इस तरह अरज करता है जे अमरसिंह कूं सीख देवौ तौ हमारे तांई[1] ही सीख देवौ । पीछे निबड़ेगी सो आप मालूम होवेगी । सो इस तरह फिसाद है । अब फिसाद की मरजी हो तौ सीख दीजिये, नहीं तो मना करिये । तौ बादसाह फरमाई—मना कर देवौ । अभी काहे को सीख देणी है ।

बादसाह री रुख देख सलावतखांन आपरै डेरै आ गयौ । दूजे दिन वकील नूं साथ ले'र अमरसिंह रा मुत्सद्दी सलावतखांन रै डेरै गया । कही—अरज कर बिदा करावौ । तद नबाब कही—इस तरह कैसे बिदा होगी । बादसाह-सलामत के नौकर हो सो मुनसब जागीर पाते हो । मुख निकली और सीख कीवी सो तौ खाविंद-चाकर का इरादा नहीं । रावजी की क्या तरह है । तुम सब उनके घर के मुत्सद्दी हो, बुजुर्ग हो, क्या इसी तरह सीख होती है ? तद इहां आय अमरसिंहजी सूं कही, नबाब कहै छै—मुस्ताय जावौ, मैं बादसाह सलामत री मरजी देख अरज करसूं, तुम काहिल[2] मतां करौ । तद अमरसिंहजी नाराज हो इहां नूं कावळ-सावळ बचन कहिया । बकसी नूं पण कावळ-सावळ बोलिया । कही—का तौ थां परभात सीख करावौ छौ, नातर[3] हूं बादसाह सूं रूबरू अरज करस्यूं । बिदा तौ होयसी । तद फेर मुत्सद्दियां अरज कीवी—जे आप अरज न करौ, परभात में नबाब नूं दबाय फेर अरज करस्यां । राव नूं ठंडो घात अै

---

[1]लिए [2]तंग [3]नहीं तो ।

सगळा व्यास गिरधरदास रै डेरै आइया, कही—व्यासजी महाराज, रावजी तौ बिदा व्हेई और वकसी सीख देवै नहीं। अरज करां जद क्यारी-क्या[1] कहै छै सो आप महाराज सूं अरज करौ जे धीरज धरै। आपरै अरज करणे सूं ही धीरज होयसी। तद व्यासजी कही—थे तौ परभात नबाब री तरफ जायज्यौ, हूं अवसर पाय अरज करस्यूं। सो परभात व्यासजी रावजी नूं सेवा करावणे पधारिया। मुत्सद्दी, वकील सारा नबाव रै डेरै नूं हालिया। व्यासजी सेवा में बैठा रावजी नूं कही—सारा मुत्सद्दी नबाब रै जावै छै सो आप इतरी काहिल न करैं। वकसी री रुख तौ आपनूं मालूम छै, अवसर सूं सीख होयसी। अबार तौ वकसी सीख रो उत्तर ही दियौ छै। आप बार-बार मांणस मेलो छौ सो आछो नहीं लागै छै। अमरसिंहजी इतरी सुण'र कही—व्यासजी, बात आडा दिन जावै छै। व्यासजी कही—दिन कोई नहीं जावै। साम्हों आपां पांच मांणस आपरा करस्यां, क्यूं बादसाह कन्है मदत लेस्यां। तद व्यासजी री अरज सुण मुत्सद्दियां नूं पाछा बुलाया, अधवीच सूं।

पण अमरसिंह रै पेट में बात मावै नहीं सो महिना ग्यारह तौ निसरिया[2]। सलावतखांन अरज करी—जे राव फीळ[3] चरावणी न देवै और पण लाजमे रा जबाब-सवाल न करै। तौ बादसाह फरमाई—फीळचराई लेवौ। तद गुरजबरदार मेलियौ सो आण कही सो अमरसिंह रा मुत्सद्दियां सुण गुरजबरदार नूं सीख दीवी। पाछले पहर अमरसिंहजी जागिया जद अरज कीवी—जे टका फीळचराई रा मांगण नूं गुरजबरदार आयौ थो सो सुणतां ही आग लग गई। कही—सिंधु रै सिर चढ़ी बहै छै। टाळो तौ घणी ही कीजै छै पण नेट सिर मेलियां रहसी। इतरी कह सवारी री तैयारी कर बादसाह री हजूर पधारिया। रात रो बखत थो, गोळखाने में जाय मुजरो कियौ। आदमी तेरह साथ छूट था सो पहली ड्योढ़ी छोड दूसरी ड्योढ़ी बैठा छै। अमरसिंहजी भीतर जाय खड़ा छै। सलावतखांन साम्हे खड़ो छै और पण लोग खड़ो छै। इतरै में अमरसिंहजी नूं देख खांन कही—रावजी, फीळचराई रा मरतंत करौ। अमरसिंहजी कहो—फीळचराई री तौ दीससै[4] पण थांनूं इतरा दिन कहतां हुआ जे अरज कर सीख दिरावौ, सो थांसूं इतरो ही काम निसरियौ नहीं सो

---

[1]कुछ की कुछ [2]निकले [3]हाथी [4]जाएगी।

म्हे तोनूं जांण रहिया। हमें तोनूं नहीं करस्यां। आफें[1] अरज करस्यां। इतरी सुण सलावतखां नाक चाढ़ बोलियौ—रे गंवार, किस तरह बोलता है? इतरी कहतां पांण तौ अमरसिंहजी ऊभा था तिकी जगां सूं तमक जाय खान सूं भेळा हुई गया। कटारी दीन्ही सो मोटे पेट में हाथ तक गरक हो गयौ। और कहो—पाजी मुंह सूं सांभळ बोल! यूं कहि फेर दूजी दो सो मियो तौ हक होय[2] गयौ। बाद साहजादो दारा सूकर दोनूं ऊठ ऊंचा चढ़िया। लोक खड़ा था सो राव री खुसामदी कर ड्योढ़ी नूं चलायौ। साहजादे ऊपर सूं कहियौ—हरामखोर जाणे नहीं पावै। तद गौड़ अरजनदास विठलदास रो खड़ौ थो सो अरज कीवी—खाली हाथ छै। तद साहजादे ऊपर सूं तरवार झलाई[3] सो लेय गौड़ आय पहुंचौ, कहियौ—रंग छै[4], राठौड़ थां बिना हिन्दुवां री मरजाद[5] सरम कुण राखै। यूं कहि जाय पोंहच्यौ सो ड्योढ़ी मांहे निसरतै नै बाही सो खंवे आय बाजी। पड़तां कटारी बाही सो अरजन रा कान रै लागी।

अमरसिंह गजसिंह के, करी अचळ राठौड़।
कान बाढ़ बूचो कियौ, गुन्हैगार छै गौड़॥

इतरै बीजी तरवार बाही सो बाढ़ नाखियौ। उठै सूं झोळी में घाल, बाहर मांणस था उहांरे म्होंडा आगै आण नांखियौ। खिड़की जड़ लीवी। साथ रा मांणसां देख कही—ओहो, आज तो म्हारो खांवद[6] बारह हजारी हो आयौ सो बाहर लोह लागिया। तद कहणै लागिया—मसाल उरी ल्यावौ, देखां संभाळां। तद सारो लोग ऊपर भेळो होय गयौ—दरबार में बैठो थो सो। फेर इहां गांठ में आछी तरह सूं बांध बाहर ला मांणसां नूं झलायौ और तेरह जणां था सो घिर पड़िया सो इसो रीठ ड्योढ़ी मांही बजायौ सो दीठां ही बण आवै। मियां सखरा-सखरा[7] मुनसददार तीस जणां था तिकां नूं मार तेरह ये ही काम आया। तिण तेरह रा नाम—गोकळदास, इन्दरसिंह चांपावत, मोकळसी, मनोहरदास ऊदावत, स्यामसिंह, रामसिंह, कन्हीरामोत मेड़तिया, केसरीसिंह, गवरधनोत, देईदास, भगवानदासोत कूंपावत, जोधो जगन्नाथ, सादूळसिंह, महेसदास, नेतस्यौत जेतावत। पांच भाटी—हरनाथ जगन्नाथोत, बलू केसोदासोत, अमरसिंह भंवरसिंहोत,

[1]अपनेआप [2]मर गया [3]पकड़ाई [4]शाबाश है [5]मर्यादा
[6]मालिक [7]अच्छे-अच्छे।

नथराज, सुन्दरदासोत, रामचन्दर, जसवंतोत, चोहान गोयंददास, जोगीदास, रामसिंहोत, अे तेरह जणां खासां मांहे काम आया। बादसाह सलामत सुण फरमाई—जे हिन्दू बड़ी बलाय थे, जिनने इतना जुल्म किया। तद भाट कहै—

साह कूं सलाम करि मरियौ है सलावत खां।
नेक न सांभरयो बोल कीनो ठौर ठागरो॥
केतो उमराव मारे गिनती न आवै जाकी।
खेलत सिकार जैसे मृगन में वागरो॥
कहै मनीराम गर्जासिंह जू के अमरसिंह।
राखी रजपूती मजबूती नव नागरो॥
पाव सेर लोह ते हलाई सारी पतसाही।
होती समसेर[1] तो छिनायलेत आगरो॥

फेर चारण कही—

(गीत साणोर)

बड़ी ठौड़ राठौड़ अखियात[2] राखण बड़ी।
जोरवर जोधमा डाढ़ जमरा[3]॥
दिलीपत सलावत मारियौ देखतां—
आयौ तिण वार रो रूप अमरा[4]॥
गंजण[5]रा केहरी नमो भुंभार गुर।
मांण तज जगत सोह हुकम मानै॥
पाड़ियौ तिको पतसाह री पारवती[6]।
खास सुरतांण दीवांणखाने॥
हाकवे दिली दरियाव हीलोळतौ।
ढूकवे साह अमराव ढाहै॥
आगरे सहर हड़ताल पड़िया अमर।
मारवा राव दरियाव मांहै॥
हाथ पाठ पहिरे तठे हाथ हुय ही रिया।
लोह बहै छोह असमांन[7] लागै॥

---

[1]तलवार [2]अमर [3]यमकी [4]अमरसिंह [5]नष्ट करने वाला [6]पास [7]आकाश।

तेज सोळमो जूंझियौ हिन्दू तुरक।
अमर अकबर तणे तखत आगे॥

इण तरह सूं कीवी। फेर बजार सूं आवतौ चारण सलावतखां री हवेली आगै निसरियौ सो बीबी रोवती सुणी तद गीत कहै—

अमर आगरे अखियात उबारी,
भल विरद जीता भारी।
पंच हजारी खान पाड़ियौ,
कमधज[1] राव कटारी॥—१

भूरे मृग-नयणी भूरै,
मेह[2]तणी रुत मोरां[3]।
जोगण पूठ दियां रायजादी,
घूमर ऊपर घोरां॥—२

दस-दस पास खवासी[4] दासी,
चंपवक बदन पहरियां चीर।
सिस[5]बदनी नांखे सिसकार,
मीयां कहां हमारा मीर॥—३

इन्दु बदन गोखड़ां ऊभी,
ठायां काजळ टीबी।
गळती रात पुकारे गोरी,
बाबहियां[6] ज्यूं बीबी॥—४

अमरसिंहजी री लोथ डेरां आई। जे लोग काचो थो, बजार रो थो, सो तौ काढ़ दियौ अर व्यासजी गिरधरदासजी, बलू गोपालदासोत, भायसिंह चांपावत रे डेरै जाय कही—जे इण तरह कजियो हुवौ। राज रो लोग छै, तिणरी सरम थांसूं रहै, थांहरी बारी छै। तद अे दोनूं उठे आया, कहियौ—मोहल काढ़ौ, रावजी नूं झांझरके दाग देवौ। सो कुंवर रा सोमासूधो मान पूरे पहुंचाया। अर बलू कही—गौड़ री खबर करौ; जे डेरै हुवै तौ हाल उण पर जावां। सो गौड़ तौ डेरै नहीं उठे ही जे रह्यौ। अर जिसे दिन ऊगतां रावजी साथ केई

---

[1]राठौड़ [2]वर्षा [3]मोरों की तरह [4]चाकरी में [5]शशि [6]पपीहा।

सती हुई तिणनूं दाग दियौ। इतरै बादसाह सूं मालूम हुई—जे गौड़ अरजन री हवेली ऊपर राठौड़ चढ़िया था सो अरजन हाथ न आयौ। राठौड़ बिगड़िया[1] बैठा छै। बलू भायसिंह उहां सूं पण जाय सांमल हुवा छै। कजिये ऊपर बैठा छै। इतरै में सत्रुसाळ हाडे कनै सोनगरो भोजराज, जगनाथो और राठौड़ था सो आय भेळा हुवा। मेड़तियो एक गौड़ कने थौ भोजराज सो पण इहां सामळ हुवौ। पातसाह सूं मालूम हुई। तद बलू गोपालदासोत भायसिंह कन्होत नूं कहायौ—जे थे बादसाही चाकर छौ सो थे हरामखोर सूं क्यूं सामळ हुवा? तद इहां कहाई—जे हरामखोर हजरत का भी न है, पाजी मुंह से हजूर में गैरजबान बोलै सो कैसे सहै? यह भी राठौड़ था और हमारा तो खाविन्द था सो हम कैसे पासा खावें। अव्वल में पहलां इण बधारे[2] तद पीछे हजरत ही बधारे।

तद बादसाह मय्यदखांन नूं बिदा कियौ सो सारी फौज ले तोपखाने लेय हालियौ। इहां नू खबर आई जे फौज बिदा हुई। तदै व्यास गिरधरदास, मुहता खंगारमल, प्रयागदास आपस में बात कर सारा सरदारां नू कही—जे बादसाह सूं जंग छै तिण में जीवण री, जीपण[3] री आस नहीं। सो आपां तो खाविंद रै पूठे[4] साको करणो ऊपर हुवा। अर नेट पूठला इणरी ही जे चाकरी करसी, रिजक लेयसी तौ बिना मांणसां कुण चाकरी करसी? किसी तरह रिजक मिळसी? आगै ही वळै फेर जतन बांधजे, सो लेखो आंण बणियौ छै तिणसूं बांसलो[5] ही जतन बिचारजे अर साको पण करजे। तद सगळा मिळ कही—थां नै प्रयागदास नीसरौ सो सारो सरतंत कर लेयस्यौ। तद व्यासजी कही—मौनूं तौ खाविंद इण तरह नहीं राख्यौ जे नीसरूं। ओ तौ थे चार सरदार कजियो हाथ संभाळ खड़ा रहो छौ तिणसूं थां सांमळ ऊभौ रहस्यूं नहीं तौ पण मोसूं इण खाविन्द रो सागो[6] छूटै। तद गारा ही कही—जे व्यासजी ओ खाविन्द सारां ही नूं जे इभो प्यारो छै। पैलां रा चाकर था सो ऊभौ रजक[7] छोड़-छोड़ हीज आया। जे खाविन्द निराट आपरू सूं राखिया, पेट काठा धपाया, मारवाड़ री रूहाड़ मिट गई, तिणसूं इण माहेलां कोई रहै नहीं। व्यास

[1]पूरे गुस्से में [2]बढ़ाए [3]जीत [4]पीछे [5]पिछला [6]साथ [7]रिजक।

फेर कही—यूं अरज नहीं करूं छूं जे थां सागी न रहौ पण कुंवर छै, सखरा परचासुध रजपूत छै, तिकां नूं कुंवरजी भोळावण दे काढ़जे, आपां पांच मांणस रहिस्यां सो साको करस्यां।

तद सारां बात मानी। सो आदमी तीन हजार था त्यांमें जींरो किहीं रो बेटो थौ सो काढ़ियौ। मांणस पांच सौ रहिया सो केसरिया करिया। तिण वखत व्यास नूं फेर सिरदारां दबायौ—जे थां रहौ जे सारां रो खातरजमा[1] रहसी। तद व्यासजी कही—म्हारी खातरजमा छै। मोटियार मोसूं चढ़ता छै। थांहरी चाकरी अव्वल तरह सूं करसे। फेर क्यूं कहणै-दबाणै लाग्या। यूं कहि व्यासजी मोड़ बांध ऊभा रहिया, तद सारा चुप रहिया। इतरै में फौज आई हीज।

सैयद हाथी ऊपर चढ़ियौ ललकारा करै छै। इतरै में व्यासजी कहो—हवेली नूं तोपखाने सूं खिड़ाय[2] देयसे, पछै लोग जखमी होयसे तौ बेतरह काम आस्यां, तिणसूं किंवाड़[3] नांख[4] नीसरौ। तरवार भेळौ। न तौ आंपणै जीव राखणौ, न कोई उपराळौ तिणसूं आपां हवेली मांही लड़ां। तद बलू कही—व्यासजी सांची कहै छै। आपां इसा नीसरौ सो सागी हाथी जावां। ताहरां सवार मोहेर[5] हुवा, पाळा पूठे किया, त्यांनूं कही—थे पाधरा तोपखाने ऊपर पड़ज्यौ। सो किंवाड़ इसाही जं निसरिया जे मियां री फौज चमक खड़ी रही। चकाचौंधी सी लाग गई। सो सागी हाथी जाय बागिया, होदे री पेटी रा रस्सा बाढ़ नाखिया अर इसा ही जे फौज में फिरिया, फौज सारी गह[6] लीवी। पाळा तोपखाना साम्हां गया जे पलीतौ[7] लागै जणां तौ नीचा बैठ जावै, छूटियां पछै आगै बढ़ै सो जाय कर भिळ गया। लोग घणौ मार तोपखानो छुड़ाय लीन्हौ। सैय्यदखांन जहां रो हौदो पड़ियौ, खान जहां ऊठते रै बरछी दीवी सो खंवो[8] फोड़ नीसरी। तद खानजहां होदे नीचै बड़ गयौ। सारी फौज रो लोग जखमी हुवौ। फौज रो लोग बखतरिये थो अर रावजी रो साथ तौ साके ऊपर थो तिणसूं सारां रै केसरिया बागा था सो घड़ी च्यार लग भलो सो रीठ बागियौ। घणौ लोह उड़ियौ, राठौड़ नीठ पड़िया[9]। तिण समय

---

[1]विश्वास [2]बिखेर [3]कपाट [4]डाल कर [5]अगाड़ी [6]रौंद
[7]तोप छोड़ने की आग [8]कंधा [9]मुश्किल से मारे गये।

रो गीत—

बिजड़[1] ऊठियो धूण गिर मेर रो बहादर,
इसो अवसाण[2] म्हें कदी पावां।
अभ[3] मेलां नहीं जावतो थेकलो,
आमरा ताउग म्हें कदी आवां॥
अभे राठौड़ राजां तणा उमरा
जुड़ेवा पारकी लड़ी आगां।
बलू पतसाह सूं बोलियो बराबर,
मारवा राव रो वैर मांगां॥
केसरां[4] मांहे गरकाब बागा[5] करे,
रोहरा बांध हलकार सारां।
अमर रो वैर चौथे पर उछळियो,
बलू नै आगरो हथ्थ बाथे[6]॥
पटो नखे परो सह सूं चटां पड़ी,
कोमरे कंद सगे कुमाणो।
बाळियो वैर-वैरां तणे वाहसां[7],
अमर मुहरे हुवे सर रंग आयो॥

सो आदमी च्यार सौ तुरकड़े री फौज रा काम आया। घायल मांणस सात सौ उपड़िया। मियां आप जखमी हुवौ। रावजी रै साथ रा आदमी अेक सौ बीस काम आया। मांणस सौ घायल हुवा। सो पगां-पगां हालता बीजा डेरै गया। मियां पर तौ इसी डाट बुती सो पाछो फिर दीठौ ही नहीं। मारवाड़ा ठावा नांमी[8] मांणस अे काम आया—बलू गोपालदासोत, भायसिंह, कान्होत चांपावत, व्यास गिरधरदास, हरनाथसिंह, भवानीदास, गोपीनाथ चांपावत, मुकुन्दसिंह चन्दरसेनोत, अमरसिंह, नरहरिदास, रणछोड़दास, रामदास, मेड़तिया भास्करसी, भोजराज, नथराज भानसिंहोत सोनगरो, भाटी मुकुन्ददास, हरदास, उदयसिंह, जसवन्त, तिलोकसिंह, चौहाण हरदास, बीजो ही हरदास, उदयसिंह, बिजयसिंह, सूजियो, बीरम, जसराज, मुहतो खंगरमल, प्रयागदास, अजीजखां, नायक इब्राहीम

[1]बहादुर [2]अवसर [3]अगरसिंह [4]केसरिया रंग [5]पोशाक के कपड़े
[6]लत्थो-बत्थ [7]वैर का पीछा करने वाला [8]प्रसिद्ध।

पंजाबी अगरवाळो, रामदास इतरा तौ नांमी था। बलू रै साथ रा अर रावजी रै और ही घणा लोग काम आया। बीजा लोग सो मारवाड़ नै घणी ही ऊजळी कीवी। सारा हीं हिन्दुवां राजा घणी स्वाबास दाद दीवी। और ही सिपाही नवावां रा सारा सुपारख-सिपत कीवी। सारो हथियारबंध सिपाही हथियार-बंधतौ अमरसिंह रो नांम लेय बांधण लागौ। बादसाह हिन्दुवां री तारीफ कीवी। तथा पाछौ बादसाह हिन्दुवां नूं चाकर राखण री चुप कीवी। बलू भायसिंह•बड़ी अखियात कीवी। पछै चारण बलू नै कहै—

सिर बांधे मौड़ करे केसरिया[1],
चांपा इम चल रीत चलु।
अेकण लगन रोद घड़ अपछर,
बिहु ठौड़ां परणीज बलु॥—१

गोळी नाळ गुणीजन गावै,
लस्कर अमर जांणिया लार।
मांडण हरो दियंतौ मिळियौ,
साम्हें ले बीड़ा घण सार[2]॥—२

पल तगौ तोरण आखीजे,
बड़ बेहड़ा[3] घट टोप विचाळ[4]।
आवा तीर आरती असमर,
वामे अंग घाले वरमाळ[5]॥—३

ब्रह्मा नारद करै वेदोगत[6],
चंवरी होम कटक चढ़ियौ।
फिरियौ नहीं उवर खत फाटे,
फेरा कमध इसा फिरियौ॥—४

भाळां माळ पोढ़ियौ भांजे,
काळौ[7] राती सेज करूर।
माथे त्याग करे राव मारूं,
सूर[8] तणै रथ बैठौ सूर॥—५

---

[1]केसरिया बाना पहन कर [2]लोह, तलवार [3]फौज [4]बीच में
[5]वरमाला [6]वेदोच्चारण [7]वीर [8]सूर्य।

ठंपो खुर मनपै रही, चंपो नावे चीत।
मत कद ही चंपो करे, राठौड़ां री रीत॥

साहजहां पतसाह रै, चंपो महल न जाय।
मति बलुवो गोपाळ रो, ऊठे छाबां मांय॥

सो वलु इसा-इसा काम किया सो सारे मसहूर हुवौ। पछै राव रासे नूं बादसाह री हजूर ले गया। नागोर चाकरी करी जे मोटियारां रिझाय लियौ। बड़ो खबरदार हुवौ। राव रासे भलो राज कियौ।

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात समाप्त।

महाराजा श्री पदमसिंह री बात

महाराजा श्री करणसिंहजी बीकानेर रो बड़ो राज कियौ। बड़ा अड़पायत, आंटीला[1] राजा हुवा। श्री लक्ष्मीनारायणजी रा बड़ा ही भक्त हुवा। परभात रा तुरक रो मुंहडो नहीं देखता। दरबार री सईयत[2] तुरक था तिणरी डाढ़ी सुंवरावता, कानां में मोती घालना। बादसाह चाकरी बदळे अहदी[3] मेलिया सो भली तरह जापतो करावता, खावण नै मोकळो देना, पांणी खारो पावता। कहिता—म्हारे मुलक में इसो हीज पांणी छै। घोड़ां नूं घास भुरट रो नखावता[4]। सो सारा डेरां में भुरट रा कांटा खिडता[5] तिणसूं गुरजबरदार[6] दोरा होवता। सळी लागती सो पाकती तिणसूं दुखी होय तुरक विदा होवता। देस रा लोगां नूं फरमाय राखियौ थो जे अहदी आवे तिणनूं खारा पाणी और भुरट वाळे मारग ल्यावणो। पाछा लौटती बखतां दरबार सूं ओठी देता जिकां नूं आही जे फुरमावता—जे इण मारग काढ़ज्यौ तिणसूं बादसाही मांही करणसिंह भुरटियौ ही जे कहीजियौ।

महाराजा श्री करणसिंहजो रै च्यार कुंवर हुवा। बड़ा कुंवर महाराजा अनूपसिंहजी रामपुरा रै चन्द्रावत रुखमादजी रा दोहिता। दूजा कुंवर केसरीसिंहजी

---

[1]बांका [2]मुसलमानों में पूज्य वंश का [3]तलब का हुक्म लेकर जाने वाले व्यक्ति जो खाने-पीने के लिए तंग करते थे [4]डलवाते [5]बिखरते [6]गदाधारी व्यक्ति जो सूचना देने का काम करते थे।

खण्डेला रै राजा द्वारकादासजी रा दोहिता। तीजा कुंवर पदमसिंहजी बूंदी रा हाडां रा दोहिता। चौथा कुंवर मोहनसिंहजी, श्रीनगर रा पंवार वखतसिंहजी रा भांणेज सलसलोत रा दोहिता। पांचवां खवासवाळ बनमाली-दास हुवौ सो पण बड़ी बलाय[1] हुवा। बादसाह औरंगजेब सनाखत हुवौ। महाराजा अनूपसिंहजी बीकानेर रा राजा हुवा, वड़ा परतापी बुद्धिमान था। वांरी बांधी मरजाद, सरतंन देख-देख दूसरा राजावां राज बांधियौ। इसा बुद्धिमान हुवा सो औरंगजेब सरीखा बादसाह कन्है आपरी साबत राजस लियां रहिया। साढ़ा तीन हजार री मुनसब तौ सासतीक[2], पांच सौ कच्छी[3] सो इतरा परगना सासतीक रहिता—सरसो, भटनेर, वांहणीवाल पुनिय सिवराण, तोसाम, फतियाबाद, अहिखो, रतियो अे सारा गांव ठाकुर लोगां नूं पट्टे में दिया था। करणपुरो, नीरंगाबाद कनला[4] परगना तीन दूजा दिखण[5] में था। सो बड़ा परतापीक राजा हुवा। बुद्धि रै प्रमाण सूं बड़ा राह्-बेधी[6] राजा हुवा तींरो गीत यूं कहियौ छै—

करे परताण सुरताण असुरांण सोह करेवा,
तेग साम्हें न कोउ और तोलै।

मांण तजि रांण खुमांण गयौ पहाड़े,
आज हिन्दुवाण बीकाण[7] आले[8] ॥—१

पेख[9] उतराध दिखणाध पूरब पछम,
धुज मन सरम सारी धरा की।

सबळ दोय राह री साह री माने संक,
ताहरी करन उत ओट ताकी ॥—२

कूरमां यादवां अहड़ा कमधजां,
चलावे चिहु जुग विचै चांवी।

मान हिन्दू धरम तिण सारी मिळै,
अगे राच कन्हे चाल आवी ॥—३

---

[1]खूंखार [2]हमेशा [3]कच्छदेशीय [4]पास के [5]दक्षिण [6]बड़ा वीर [7]राव बीकाजी [8]वाले [9]देख कर।

हुवो घटने कलू अघट बीकाहरो[1],
भलो सो भाग संसार भाखै ।
राज हिन्दुवाण ची[2] सरम जिम रहावी,
राज री लाज रघुनाथ राखै ॥—४

ो महाराजा अनूपसिंहजो इसा हुवा—

सूबे दखिण सोहियो, अनो[3] कमध अणभंग[4] ।
सूरहरो[5] आखाड़ सिध,[6] जीपण रण घण जंग ॥

जुड़ै बीजूजळां, मछर परवाड़ां मल,
लीयां भड़े सबळा, झबकेसा बळ ।
तिण पर सबकी रीझ, झूल किरण सुरज ताणी,
बळ के बादळ बीज, इसो पाणी आणी ॥

दूहा

अलड़ अलंगे ओदकै, भारथ खग भिड़वाव ।
नौ ऊभां करनेस तण[7], पग न लागे दाव ॥
दाव लगा ले खग खड़ा, भागा बार[8] हजार ।
सेन सोह सिवराज रो, जेते जेम निभार ॥

बड़ो अड़बंक, महा युद्ध जीपियौ[9] ।
दूजो रायांसिंह, परवाड़ां दीपियौ ॥

दूहा

हम कहिया जे तुम करो, खीजे खान दलेल ।
त्यां में कमधज[10] बोलिया, देख राव जड़ खेल ॥

दिस रणखेत भजेय, रहै सत पायकां,
रिस[11] कर सीस करेय, कहै मन दायकां ।
मूठ कर खग्ग मेल, मूंछां बळ घालियां,
दारुण रूप दुझेल, हवेली हालियां ॥

---

[1]राव बीकाजी का वंशज [2]की [3]अनूपसिंह [4]अजयी [5]सूरसिंहजी का वंशज [6]युद्धप्रवीण [7]करनसिंह का पुत्र [8]बारह [9]जीता [10]राठौड़ [11]गुस्सा ।

दूहा

डेरां आया दळ सबळ, रच पाखर गज रूप।
मुरड़े खान दलेल सूं, उरड़े चढ़ै अनूप॥

दळबळां जुड़तां[1], नगारा वाजिया,
जाग कई परभात, गहरी सुर गाजिया।
देखत रहै नबाब, जबाब न दीखिया,
राजा आरंभ राम, रहै क्यूं राखिया॥

दूहा

वान वधारे बीकपुर, मारे खान गुमान।
राजा भले पधारियौ, राठौड़ां री जान॥

बड़े बड़े नरनाह, से न घरण संभळी,
आनंद हुवौ उछाह, कगुड़ी झळळी।
वीरत कीरत[2] बात, पिरथि सिर वापरी,
आयौ औरंगबाद, फतह कर आपरी॥

सो नवाब बादसाह सूं कूक लिखी। इहांरा वकील पण गया सो मालूम करी। तद जबाब-सवाल सुण बादसाह नवाब सूं रीस फरमाई और महाराज नूं दीवाण जुल्फकार खां रै तैनात किया। सो जुल्फकारखां बड़े मुरतब सूं मुलाहिजे रै साथ महाराज नूं कन्है राखिया। सलाह पूछतौ जिण माफक काम करतौ। सो महाराज तौ इसा हुवा।

बाकी तीनूं ही भाई मुनसबदार हुवा। कोई किहीं भाई रो चाकर आसकारियौ[3] नहीं हुवौ। आप नांमी हुवा, दातार, जूंझार[4], नमकहलाल हुवा। सोळहो गायो थो सो सांचो कियौ।

कुंवर बखाण (राजा) करण रा, दातारे दातार।
धीर वीर बळ बांकुरा, जूझारे जूझार॥

जोया कुंवर जोधाण रा, दीया पूर अंवेर।
सारी बादसाही विषे, बड़ हथ बीकानेर॥

---

[1]भिड़ते समय [2]कीर्ति [3]आशा रखने वाला [4]जूझने वाला।

दिन ऊगे गाजा दिय, करहा जे कैकांण।
अनो बिजाई रायसिंह, बांचै कवि बाखांण॥

रतन कुंवर सिर राणियां, अनो कान औतार[1]।
जोड़ी अविचल करोड़ जुग, कर कायम करतार॥

फेर केसरीसिंहजी बादसाह रै साहजादा ही बाजिया। अढ़ाई हजार रो पक्को मुनसब। सो बादसाह साहजां नूं दारा मूकर कैद कर आप तखत बैठौ। तद जयसिंहजी नूं कागदां सूं औरंगजेब दखिण दौलताबाद रै सूबे सूं उठाव कियौ। मुरादसाह गुजरात रै सूबे थौ तिण नूं औरंगजेब बुलायौ। थे सताव आवौ, बादसाही थांरी दारे सूं दूर करस्यां। इण हजरत सूं बेअदबी कीवी। तेरे पगां आया दिल्ली जायस्यां। हूं तौ फकीर छूं सो तोनूं तखत पर बैठाण मक्के जायस्यूं। तद मुरादसाह सूंस कोल कर दिल्ली आया, कुरान उठायौ, आण सांमळ हुवा। तिण बखत में केसरीसिंहजी औरंगजेब रै नाबीन रह्या। डयोढ़ी ढोलियो थितियौ[2] रह्यौ। रातरा सरदारी चौकी फिरता। हमेस मुजरो कर डेरै जावता। निमां स्याम आवता जद मुजरो करता खड़ा रहता। बादसाह मेहरबानी कर बतळावता। केसरिया कुंवर कहिता।

उजोण में जसवन्तसिंहजी बाईसी[3] ले देहली सूं साम्हा आया। औरंगजेब सूं लड़िया सो मजकूर रतनसिंह महेसदासोत री बचनिका[4] में छै। तिण बखत केसरीसिंहजी घणा आछा हुवा। घोड़ा फेर दोय तीन भेळिया, बादसाह नजरां दीठा। पछै बादसाह जसोत नूं मेल्ह पगे पकड़ाई। आपरै मुख सूं स्याबासी आफरीवाद[5] फरमाय असवारी रा हाथी रै आगे खड़ा किया। जद सूं सदा हाथी रै आगे बहिता। फेर धोलपुर में हाडे सत्रुसाल रै आगे बाईसी दे दिल्ली सूं मेलिया। कजियो धौलपुर हुवौ, तिण में केसरीसिंहजी रै हाथ सूं दोय उमराव काम आया सो औरंगजेब दीठौ। घणी दाद फरमाई। आप हाथ सूं कमर री तरवार उण बखत दीवी। फतह कर डेरां पधारिया जिण बखत में लाय डोल दीठौ। डील रै जामा[6] री कसां आपरै हाथूंहाथ संभाळी। फेर दिल्ली दाखिल

---

[1]अवतार [2]निरंतर [3]फौज [4]'जगो खिड़ियो' द्वारा रचित ग्रंथ; डॉ० एल० पी० टैसीटरी द्वारा सम्पादित (Asiatic Society of Bengal) [5]धन्यवाद [6]पोशाक विशेष।

होय, मुरादसाह नूं पकड़, तख्त बैठाण, पछै जबेह कराया। कुरान रो सूंग उतारियौ। इतरै में जसवन्तसिंहजी रो उठाणियौ साह सूजो पूरब में ऊठियौ। बादसाह रो कूच सूजे साम्हो हुवौ। बड़ी फौज। सगळा राजा लार। सो पूरब में। राजवे गांव राड़ मांडी। सूजे रो वजीर हजार बारह घोड़ां सूं बाग उठाई सो जसवन्तसिंहजी कहायौ—थे बाग उठाय आवौ। फौज में भगी हूं वाल देयस्यूं, सो उवो आइयौ। ज्यूं जसवन्तसिंहजी भागिया सो जसवन्तसिंहजी कन्है आपरी चाळीस हजार फौज थी सो सारी भागी। हुरमां[1] हाथियां चढ़ी पछाड़ी नूं खड़ी थी सो लूट लीवी अर चलता रहिया। चाळीस हजार भाजै जणां दूजा कुण पग मांडै सो सगळा ही भाग गया। सिरफ हजार तीने'क खड़ा रहिया। खोजो बादसाह रै हाथी ऊपर पूठै बैठौ थो सो अरज मालूम कीवी—हजरत फौज कैसी क्रिस्त लाई? बादसाह री नजर कुरान में थी सो उवौ देयै तो फौज सारी चलती रही। तद बादसाह मुठांगारा[2] तीर काढ़ हौदे में ढिगली किया। हाथी रै पग बेड़ी घलाई। आप गोडी मार कमाण पकड़ी। इतरा में नवाब औरंगजेब-औरंगजेब कहितौ आयौ। सो केसरीसिंहजी नवाब रै साम्हा बाग उठाई। बादसाह देखै छै। इतरा में नवाब वाह्यो, सो केसरीसिंहजी रै सागे राजपूत थौ सो टाळ दीवी। फेर केसरीसिंहजी दीधी सो दो वटका हुवा। घोड़ो खांच लियौ। इतरै सूजे री फौज भागी। बादसाह रै सादियाना बाज्या। सूजो तौ उण दिन रो भागियौ फेर जाहिर नहीं हुवौ। तद चारण कह्यो—

केहरिया करनेसका[3], सूजो भागो सार।
देहली सपने देखसी, गयौ समुंद्रां पार॥

पिंड सूजो पाधोरियौ, औरंग कियौ उबार।
पतसाहां राखी पगे[4], केहर राजकुमार॥

सो इण दोहे री किहीं बादसाह नूं चुगली कीवी—जे केसरीसिंह कुंवर चारण पास किस तरह कहावता है? तद बादसाह चारण नूं बुलाय फुरमायौ—तैनें केसरिये कुंवर कूं किस तरह कह्या? तद चार बारे'क तौ नटियौ पण बादसाह फेर गाढ़ कर पूछी जद चारण बांण चाढ़ दूहो कहियौ सो बादसाह सुण घणां मांणसां रै सुणतां फरमाई—जे उस रोज तौ केसरिया अेसा हीज हुवा।

---

[1] बेगमें [2] विशेष तरह के तीर [3] करनसिंह का पुत्र [4] रखी।

तौ सगळा देखता ही जे रहि गया। चुगलखोरां रो मुंह फीको पड़ गयौ। फेर अेक दिन बकसी रै नायब बादसाह सूं मालूम कीवी[1]—जे केसरिया कुंवर गैर-हाजर। तौ बादसाह सुण फरमाई—केसरिया हाजर था। उस रोज तुम न थे। तद नायब फीकौ मुंह कर खड़ो रहियौ। अेक दिन ग्यारस रै दिन केसरीसिंहजी बादसाह री हजूर मुजरै आवता था। बीच में ढेड-कसाई था सो किसब करै था। केसरीसिंहजी मना किया। वां मानी नहीं। तद कही—आज थांहरै खरच हौवै सो मेरै कन्है सूं लेवौ। ओ काम थे मत करौ। तौ ही नहीं मानो। तद कही—म्हांनूं आगै जावण देवौ, पछै थांहरी दाय पड़ै[2] ज्यूं करज्यौ। और गाय थां पकड़ी छै सो उरी देवौ, रिपिया बीस थांनूं देस्यां। पण कसाई री नीच जात, फेर औरंगजेबी बादसाही सो आंधा हुवा वहै। सो मुंह सूं गैर लवज[3] बोलिया और गायनूं पछाड़ी। तद केसरीसिंहजी लोगां नूं ललकारिया सो आदमी बत्तीस तौ जीव सूं मारिया, बाकी घायल हुवा, इहां नूं मार केसरीसिंहजी हजूर गया। उण दिन कमर बाहर खोल फेर भींतर गया। बादसाह आम खास बैठा छै। लोग सारो खड़ौ छै। इतरा में कसाई मुरदा मांचां में घाल चिरावां कर आय कूकिया सो बादसाह देख सुण घणौ ही जे काळौ-पीळौ हुवौ। आगै जद पूछी—कुण जुलम कियौ? तौ मालूम हुई, केसरियो कुंवर। सो नांम सुणतां ही बादसाह रो चेहरो सफेद होय गयौ। सांम्हे देख पूछो—क्यों, केसरिया कुंवर किस तरह? तद केसरीसिंहजी सारी वारदात जाहिर करी। तौ बादसाह सलामत रीस कर कोटवाळ नूं हुकम फुरमायौ—जे इन सब कसाइयों को यहां से हटा कर पुरानी दिल्ली में जाय बसावौ। मुरदां नूं दफनाओ। सीधो हुकम होतां सांतर कसायां नूं हटाय पुराणी दिल्ली में बसाया। केसरीसिंह बादसाह रै इतरा लाडला था सो खून माफ कियौ। सूजा रो काम पेस चढ़ियौ[4] जद सूं तीन गुन्हा हमेस रा माफी में था।

फेर महाराजा जसवन्तसिंहजी रै साधू कुंभो मालावत चारण आयौ सो घणा दिन रहियौ। महाराज घोड़ो, कड़ा, मोती-सिरोपाव देय रहिया तद विरावते सू गयौ। महाराज जांणियौ[5]—हाथी रो देवाळ करणसिंहजी रा कुंवरां बिनां कोई नहीं। तौ आदमी मेल्ह बरजाया[6]। कुंभो म्हांसूं विरावते

[1]की [2]मन में आए [3]लब्ज [4]पार उतरा [5]जाना [6]मना किया।

आयौ छै, सो हमार तौ थे ही क्यूं मतां दीज्यौ—पदमसिंहजी मोहनसिंहजी जो डेरै था सो उहां सूं तौ मांणस मिळ कही। तद इहां कही—महाराज मोटा छै। चारण भाट सूं कैसी रीस वाद आपां रै ही लारै जे सिरजिया[1]। भली बात, महराज फुरमाई त्यूंही जे करस्यां। और केसरीसिंहजी बादसाह री हजूर था सो मांणस डेरै कहि गयौ सो मांणस उठै डेरां पाछले पहर गयौ तद कही—जसवन्तसिंहजी इण तरह कहायौ छै, सो सुण आप हंसिया। बादसाह ऊंहीं दिन रूपहरी होदे सूं हाथी केसरीसिंहजी नूं दियौ थो तिण पर सवार हुवा डेरै नूं आवता था। इतरै कुंभो घोड़े चढ़ियौ बजार में साम्हो मिळियौ, सुभराज कर कही—

केहर राजा करण के, निरधन किया निहाल।
सै सोवन्ता साथरा[2], थे पोढ़ौ सुखपाळ॥
केहरिया करनेसका, तौ हथां बळ जाव।
जिन्हां खेत न संपजै[3], तिन्हां दीन्हां गांव॥
केहर भोळे चक्कवे, का बावळ खुदाय।
जो लंका हाजर हुवै, (तौ) पल में देय लुटाय॥

सो केसरीसिंहजी हाथी सूं उतर, कुंभे सूं बात कर, हाथ झाल, हाथी ऊपर चढ़ाय, आप डरै पधारिया। दूजै दिन जसवन्तसिंहजी सुणी तद कहायौ—थांनूं म्हां मने कराया था सो हमार भलो दियौ। तौ केसरीसिंहजी कही—जे म्हांनूं तो गम नहीं, कहौ तौ इब मंगाय लेऊं। तद कहियौ—मंगायौ सो जांणियौ। तिण पर कुंभो कहै—

उरां करां कस सरां छत धरां ईतरां,
मनगरां इठरां मांण मुकां।
गंज बकस केहरी दिया है,
देखी गोमरां सिंधरां संधर, रैण मुकां॥

पेखि मदझर[4] गुमर भयंकर पहर हर,
धर रज लगण असमांण धर रैं।
ठग ठगी लगी उरि धग-धगी ठीठरां,
ठहक ठठ ठोकरां नगां ठररै॥

---

[1]रचे गये [2]बिछौना [3]मिले [4]हाथी।

करां हद दुरद[1] दीधा जु तें करन रा,
सौख मद रद दुवा फरद सारा।
तिलक कमधां तणा, अड़ समर ताहरा,
लंगरा घीसिया वहे[2] लारां[3] ॥

अपम कमाल तजै इंद चढ़ आंजसे,
ललच ओढ़ै संकर तुचा[4] लाधी।
पृथ्वी का नरां की सुरां कहिवो परां,
बगते सिन्धुरां धजा बांधी ॥

ो केसरीसिंहजी पण इसा दातार मानगरा हुवा। बड़ा-बड़ा पखाड़ा[5] दखिण में केया। बादसाह सूं अेकरग[6] रहिया। अेक बार बादसाह बीकानेर री फरमाई, ाद केसरीसिंहजी अरज कीवी—बीकानेर म्हांरै ही जे घर में छै। ठौड़ लायक नूपसिंहजी ही छै। हूं तौ हजरत रै ही जे कदमां रहस्यूं। मो रोकड़ पण जाफे ुनसब सूं पावता। इसी महरवानी बादसाह सलामत री थी। जे जागीर थी ो तौ थी ही पण रीझ-मौज अलग पावता।

मोहनसिंहजी डेढ़हजारी मुनसबदार था। हजार अेक री और अरज होय रही ो। चाकरी में चुस्त रहता। बादसाह सलामत री बड़ी मेहरवानगी थी और ाहजादे रै ताबे[7] था। और पदमसिंहजी अढ़ाई हजार पक्की रा मुनसबदार ा सो साहजादे रै ताबे में ही रहै छै। अेक दिन मोहनसिंहजी रै हिरण थो ो छूटो, तीनूं कोटवाळ पकड़ लियौ। तद मोहनसिंहजी मांणस[8] मेल कहायौ—ो हिरण म्हांगो थांरै आयौ छै सो दिरावौ। कोटवाळ नट गयौ। तद इण ोकस कर फेर कहायौ। कोटवाळ क्यूंक वाद कर फेर नट गयौ सो समांचार ुण मोहनसिंहजी गुस्से में होय गया। दूजे दिन साहजादे रै मुजरै पधारिया। रबारी कचैरी मांहे जाय खड़ा। इतरै में पदमसिंहजी पण पधारिया, सोही जाय चैरी खड़ा रहिया। साहजादो भींतर थो, दरबार रो लोग सारो कचैरी में ड़ौ छौ। तखत बिछ रहियौ छौ। तद पदमसिंहजी बाहर डचोढ़ी आय बैठिया। वालदार कन्है हुक्को मंगायौ सो बेठिया आरोगै छै। हाथ में मोटे-मोटे मणियां री सुमिरणी[9] थी सो काढ़ पाग में घाली। इतरै में कोटवाळ आय

---

[1]हाथी [2]चलते हैं [3]पीछे [4]त्वचा [5]महत्त्वपूर्ण युद्ध [6]मिलकर [7]ताबेदारी में [8]आदमी [9]माला।

भींतर नूं बड़ियौ। तद पदमसिहजी होळै सी साहजादे रै दरबारी नूं कही—जे मोहनसिंहजी रो हिरण इण पकड़ियौ। तीं बदळै दोय-तीन बार मांणस मेल हिरण मांग्यौ सो दियौ नहीं और खोटा-मोटा जुवाब पण कहिया। मोहनसिंह पण बाळक छै। उवै भींतर नूं छै और कोटवाळ पण भींतर नूं गयौ, सो थां भींतर जाय मोहनसिंह नूं या कोटवाळ नूं लेय आवौ। दोनू भेळा[1] रहिया आछा नहीं। तद दरबारी भींतर नूं ऊठियौ। तींनूं किहीं दूजै अरज रै पगां खड़ो राखियौ सो उणसूं बात करणै लागियौ। पदमसिहजी फेर कही—जे थां भींतर नूं जावौ। उणनू घड़ी अेक बतळावतां लागी और मोहनसिंहजी अमलां-चाक[2] था सो कोटवाळ नू देखतां ही बोलिया ही—सेखजी, म्हांरो हिरण थांरै आयौ छै सो दिरावौ। कोटवाळ कही—हमारे तौ नहीं आया। तौ मोहनसिंहजी कही—नटो मतां, म्हांरो आदमी देख आयौ छै। हिरण-खाने रै पूठले[2] छपरे में अेकलो बंधियौ खड़ो छै। तौ कोटवाळ कही—झूंठा है, झख मारता है। मोहनसिंहजी इसो जवाब सुण लालै होय कही—झूंठ बोलै सो झक मारै। हिरण तौ मैं छोडणो का नहीं। तद कोटवाळ फेर रंगफोड़[3] नै कही—किसका मुंह है सो मुझसे लेगा, तुझसे छोकरे बहोत देखे हैं। इतरै में मोहनसिंहजी मूंछ पर हाथ देय आगै नू साम्हां होय तरवार बाहण नूं ऊंची कीवी। इतरै में कोटवाळ बाही सो साम्हैं मुंह ऊपर झलकी लागी। मोहनसिंहजी बाही सो कोटवाळ तरवार आडी दीवी सो तरवार बाढ़ी टाळ दी। इतरै कोटवाळ रै माळे बांसिया वाही सो मगर सारा खुल गया तींसूं ढह पड़िया। मांहीं नूं बहदो हुवौ त्यूंहीं दरबारी दौड़ पड़ियौ और पदमसिंहजी पूठे लागिया। भींतर बड़िया सो कोटवाळ रो भतीजो साम्हों ही जे आयौ। पदमसिंहजी कचहरी रै पावड़सालां चढ़ त्यांनूं इण जाजम ऊपर मख्यो थो वाहौ सो गोडे री ढकणी रै हाड ऊपर लागौ तींसूं गोडो टिक गयौ, दांत लीला हो गया, ऊठिया, चढ़ण लागिया। इतरै वागो थो नीचो सो पगां आडो आय गयौ। इतरा में उण तरवार वाही सो माथै ऊपर पड़ी। पाघ रा पेच वढ़ सुमरणी जे वाढ़ी। इतरै में आप ओझाड़ वाही सो उणारा दोय बटका हुवा और आप बागे री दावण खींच फाड़ नाखी। कोटवाळ खिसगौ लागौ तद कही—सींधु पग मारां, हमें

---

[1]शामिल [2]अमल के नशे में [3]पिछले [4]गुस्से में आकर।

जायसे। कोटवाळ तखत रै बरोबर जावतै रै दीवी सो दो बटका हुवा। आप पाछो आवतौ मोहनसिंहजी कही—भाभाजी, हथ मारो जावै, सो पहोंच साळे रै दीवी सो दोय बटका[1] हुवा अर तरवार मांही नीसर थांभै में लागी सो पत्थर रो टुकड़ौ दूर जाय पड़ियौ, तद चारण कही—

मोहन संभळ मारियौ, दौड़ न ग्यो दरियांह।
पोंहचे इम कहियौ पदम, सींधू खग सबांह॥

सो पदमसिंहजी मोहनसिंह ऊपर आय खड़ा रड़िया, देख'र कहणे लागिया—इतरो मांटीपण[2] बळ राखतौ सो कासूं हुवौ। इसै चोदू लोह सूं ढ़ह पड़ियौ, आपौ नांख दियौ, ऊठ खड़ौ रहि। मोहनसिंहजी कही—म्हारौ काम तौ निमड़[3] गयौ। आप वैर सब सेखो लियौ, हमें पधारौ, वैरियां पूळो मतां देवौ। पदमसिंहजी कही—तोनूं छोड कठे जावां? यूं कहि हाथ झाल उठायौ सो ऊठै नहीं। तद नीचा होय बाथ घाली, एक हाथ सूं, सो हाथ घाव मांहे उतर गयौ। तद जांणी जे घाव जबरौ, नहीं तौ मोहनसिंह इसा लोहा नूं कासूं खातिर में आंणै। तद मोहनसिंह नूं छोड़ कई'क तखत री पूठ कान्हीं खड़ा था त्यां साम्ही रोड़क कीन्हीं[4]। सो उवे भाग केई भींतरली खिड़की में बड़ आम ताक दिया। केई पूठे दीवाळ थी सो चढ़ कूद गया। तद चारण कही—

नाहर पदम निडार नर, गय औरंग चे भीच।
लज सांकळ तोड़े रवद, पड़े हवंदां बीच॥

पछै आप आय मोहनसिंहजी नूं संभाळ कड़ियां चाढ़ लिया, डचोढ़ी रै बाहिर लेय आया। सो लोग सारे इसी नजर दीठा सो सारा पासो खाय गया। आपरा मांणस था त्यांनूं सांपिया[5]। सो गोयद मुलाणी जाट साहरण मोहनसिंहजी रो हजूरी थो, उण दौड़ झट संभाळ लिया। पालखी साथे थी तिण में जाय पोढ़ाया। आदमी बीसे'क तरवारां काढ़ ली अर पालखी रै चौगिरद लाग गया। पदमसिंहजी सगळां रै पूठे लाग गया। सो डेरां नूं ले बाहिर हुवा। इतरै में गौड़ अरजन रो बेटो असवारी कियां साम्हो आयौ। आय पदमसिंहजी सूं मुजरो कियौ अर कही—हूं तौ रावरो रजपूत छूं, हुकम हुवै तौ साथै बंदगी मांहे होऊं। तौ पदमसिंहजी फरमायौ—थां सदा से हांडी-चटा छौ,

---

[1]टुकड़े [2]मर्दानगी, हिम्मत [3]निपट [4]लपके [5]सुपुर्द किया।

पाछली कांनी हांडी चाटी छै। तद गौड़ कही—हांडी घर रै धणी किहीं चटाई छै, हमें किहीं रा होय हांडी चाटां। आप खातिर खुसाळी सूं पधारौ, काम-कजिये याद करस्यौ तौ चाकरी में हाजिर छां। सो गौड़ इसो रंग दीठौ तींसूं पासो खा पूठौ परो गयौ। तिण वेळां री नीसाणी[1] चारण गोरधन लक्ष्मीदासोत यूं कही—

इळ साका अवरंग, तखत इम हुवा उचारे,
दिसा चहुं रह थह दिली, सुणिया पहसारे।
हिरण हिरण होत, बहु वां पर नैक विचारे,
मेल्ह वकील मंगाविया, कोटवाळ नकारे।
पाजी सम सर दाखवे[2], अंत पुगा तारे,
मोहन गुस्से दीखिया, मनें परचाया प्यारे।
भावी टळै न टाळियां, सदा यही आचारे,
मुदे दरग हरखिया[3], लिखिया सचियारे।
तद न हुवे करनेस का, मुजरे नूं पधारे,
वंस छतीसे खानजी, मीर रहत अहंकारे।
आव दुनी साहिब इसा, मजलसां थांरे,
बेठां चजरां जागिया, हुय निजरां च्यारे।
तामें खटके मामले, सूं सला संभारे,
कुबदी क्या जांणे किया, मियां मन हारे।
वे बुनियाद कुबोल, कहि बकवाद बधारे[4],
तामें करणेठी कड़किया, बळ जेठी वारे।
कहि कुण जांणे वार वार, बहि बारोबारे,
मुख सांम्हे वामे मोहन, छर लोह छकारे।
पेख इसो अवसर, पदमसिंह वर साधारे,
इसा सवेगा[5] ऊठिया, मनु असमान उभारे।
मेर[6] सतो अडोल, मन कहि वचन अकारे,
सां वहि बाहि संबाही, साह अवसांण विचारे

---

[1]छन्द विशेष [2]कहते [3]हर्षित हुए [4]बढ़ाते हैं [5]शीघ्रता से [6]सुमेर पर्वत।

अेक हथा ओभरण हरणे, खग बीज बिहारे,
कीधा तन तरवर, विसुध धर सुत उतारे।

मुख वाणां पड़िया मुगल, गल्ह इसी उबारे,
वपनीज पूठै पूठवी, अर पड़ लोह अपारे।

वागा कट तन बंचिया, अन[1] देख दिखारे।
राजा पग माजा रहै, हरि हैं राखण हारे।

अरि पाडे वळिया, इसा चहुं दिसा विहारे,
तब सब भागे आप, आप नह ताप सधारे।

गोमल खाने के गया, दुडता के दीवारे,
दड़वड़ दरवाजां कितां, हड़वड़ हांकारे।

किता कटहड़ां[2] कूदिया, चढ़ चढ़ चमकारे,
खड़ा थड़ां पड़िया किता, खं आखे अपगारे।

हुवो धम गोधम[3] इसो, गया जम भी हारे,
पांवां तळ दिया पिसण[4], कुण सके वकारे।

छर छांणां सब बाळिया, आम खास मंझारे,
मूरत रसा पदम, साह राह उणियारे।

रूप किया नरसिंह का, हिरणाकुस मारे॥

सो इण तरह सूं कजियो कर डेरां नूं पधारिया। मोहनसिंहजी तौ डेरां आवतां-आवतां परलोक सिधारिया सो दाग दिराय, लोग नूं दिलासा कर, आप पुरे नूं चढ़िया। बादसाह नूं सारा समांचार मालम हुवा। बादसाह सुण उणरै बेटा सूं तागीर कीवी। साहजादे नूं बादसाह आप लिखी—अहड़ी गफलत रखते हो, किस तरह बादसाही कुमावोगे? यह राठौड़ हैं, जबरदस्त नौकर हैं, इनका मुलाहिजा हमेसा रखणा। पदमसिंहजी रै वकील नूं बुलाय'र दिलासा फरमाई। कही—कोटवाळ भी मारा गया, मोहनसिंह भी मारा गया। मोहनसिंह के कोई लड़का होय तो हजूर लावौ, उनका मुनसब बाल रखें। वकील अरज कीवी—लड़का कोई है नहीं, लुगाई कूं आसा[5] है। तद पंचसदी मुनसब राखियौ, जागीर बताय दीवी। पछै मोहनसिंहजी रै बेटी अेक हुई सो

---

[1]दूसरे, अन्य [2]कटघरा [3]झगड़ा, युद्ध [4]दुश्मन [5]गर्भ।

हाडा किसोरसिंहजी कोटे रै धणी नूं श्री महाराजा अनूपसिंहजी परणाई। पछै पदमसिंहजी वकील नूं लिखी—जे साहजादे री तावीन सूं पासे करौ अर नवाब रै तावे कराओ। तींसूं वकील अरजी कीवी जद सूं नवाव रै तावे हुवा।

अेक दिन सवारी बहतां गनीम आय पड़ियौ। महाराजा अनोपसिंहजी जंगाल था सो गनीम हजार पन्द्रह घोड़ां सूं आय पड़ियौ। राड़[1] निराठ[2] भारी पड़ी। लोग सारो भेळो होय गयौ। गनीम ताव घणौ दियौ। तद भीम बलभद्रोत तवणीरोत महाराज रै मुंह आगै खड़ौ छै। लोगां नूं उवौ ललकारै छै। प्रतावसिंह भीमोत आय कही—उवां गागरी में घेर लीवी। हमें मरण बिगड़ै छै। ठाकुर, घोड़ा भेळौ[3] ज्यूं काम आवां। साथ आपरो नवाब दूर रहियौ। उपराळौ कोई दीसै नहीं छै। पदमसिंहजी हरोळ था, नवाव रै, सो उहांनूं खबर हुई—जे महाराजा पास गनीम जाय लागियौ, दबाय लिया। तद पदमसिंहजी जाय पाछा घेरिया सो पूठ आण दाबी, निराठ दबाय लियौ, जद गनीम रो लोग भागियौ। गनीम पूछी—कुण छै? तद लोगां कहो—पदमसिंहजी आय पड़िया। जणां नाम सुण गनीम पासो खाय निसरियौ और कहणे लागियौ—आ बुरी बलाय पड़ी, इणां सूं मालिक बचावै। सो सगळा पदमसिंहजी री मरदमी-सिपाहीगिरी जांणै था तींसूं गनीम तौ नीसर परो हालियौ। तद पदमसिंहजी गनीम नूं भांज पाछा ही जे घिर गया। महाराज नूं उरळाई हुई। तद हलकारां नूं पूछी—गनीम लड़तौ थकौ पासो खाय क्यूं गयौ, कींरा[4] ताव सूं। तौ हलकारा तुरत खबर लेय आय मालम कीवी। गनीम रै पूठै सूं पदमसिंहजी आण पड़िया सो मार विचळाय[5] दियौ। तींसूं ही गनीम भाज गयौ। तद महाराज बहोत राजी हुवा। जाय डेरां दाखल हुवा। दूजे चार ठावा मांणस मेल्ह कहायौ—भाई, अेकरसी मिळौ। म्हांनूं थांसू मिलणै रो कोड[6] छै। जणां पदमसिंहजी कहाई—घणा ही मिळस्यां, हमार तो माफ करौ। तद आदमियां दवाय अरज कीवी तौ पदमसिंहजी कही—थांनूं गम नहीं छै। भाभोजी जांणै छै। तौ इहां पाछा आय अरज कीवी—जे ओ जवाब दीन्हौ छै। तीं पर महाराज फरमाई—सांच

---

[1]युद्ध [2]बहुत [3]युद्ध में पिल पड़ो [4]किसके [5]वचलित कर दिया
[6]तीव्र इच्छा।

कहै छै। आ कहि आप निसांसो[1] नांखियौ। लोगां घणी ही पूछी पण कही कांई ही नहीं, उणरो चेहरो उतर गयौ[2]।

पाछै पदमसिंहजी दूसरे नवाब रै तांबे हुवा सो अेक दिन गनीम सूं राड़ हुई सो इसी ही जे हुई सो दीठां हो बण आवै। सो पदमसिंहजी हरवळ[3] था सो इहां सूं ही जे रोठ बाजियौ। सो फेरा पांच तौ आपरै डील घोड़ो फेरियौ। तरवारियां खड़ाखड़ बाज रही छै। नवाब पण खड़ौ-खड़ौ देख रह्यौ छै। पदमसिंहजी रै सिर दक्षिणी आय जूंझिया छै। पाघ ऊपर चौकड़ी तरवारियां री पड़ रही छै। पण अेक अतीत रो दियोड़ौ यंत्र पाघ में रहतौ और महाराजा करणसिंहजी री दीन्ही स्याळियासींगी[4] सदा पाघ रै मांही रहती तिणसूं सरीर री रक्षा रहती। पण पाघ वढ़ गई। इतरै में आपरो लोग पण आण हीज पहोंचियौ। सत्रुसाळ, रत्न महेसदासोत अै सामळ रहिता। बड़ो इकळास[5] थौ सो पण आ पहोंचिया। इतरै में राघोजी घोंसलो फौज रो मुद्दी थौ तींनूं पदमसिंहजी मार लीन्हौ। तद लोग सारो भाग गयौ सो फतह कर डेरां पधारिया। नवाब डेरै आयौ। बाथ घाल मिळियौ। हाथी अेक, घोड़ा दोय दिया, रिपिया सौ निछरावळ किया, डील सारो संभाळियौ अर पाघ दीठी सो बटको-बटको बढ़ी हुई छै सो देख चारण कही—

पग लागा आभ आम सिर लागौ,
सुणियौ नह भागौ संसार।
मोटी पाघ ऊपरै पदमसिंह,
टूटी घण बहणी तरवार।
थांरो सुयस अमर करणावत,
वाधुर बहु दिन हुवै व्यतीत।
बाढ़ां[6] ढयौ पाघड़ौ विढ़ंतै,
चहराड़ियो नहीं बड चीत।
सामें आणि उरड़ियौ[7] सामों,
फौजां निरख न कियौ फेर।

---

[1]निश्वास [2]मुँह उतर गया [3]फौज के आगे [4]कल्पित पदार्थ जिससे सिद्धि प्राप्त होती है [5]मेल [6]तलवारों से [7]जोश के साथ लपका।

तें अन्त कियौ रै करणावत,
नरां बियां सिर बीकानेर।
भलौ भलौ सारो जग भाखै,
कही न लागी बात कही।
मगज धरबधर न मोटा,
मोटी पाघ संसार मही।

तद नवाव डेरै जाय बादसाह नूं सारी हकीकत लिखी। पदमसिंहजी री घणी तारीफ लिखी। बादसाह राजी हुवौ। अेक तरवार और रिपिया बीस हजार हाथखरच नूं मेल्हिया। फरमान दिलासा रो आयौ। आप रिपिया लिया तिण में पांच हजार सत्रुसाल रतनोत रै डेरै मेलिया। उवां हां-नां कीवी तद आप डेरै जाय दे आया। सो पदमसिंहजी रो सत्रुसाळजी सूं बड़ौ इकळास। दोनूं जणां एक जीव दो देह। सो आगे सूं दस्तूर इसो ही जे छै के जसौ माणस हुवै जसी ही सोभत[1] राखै, तिसां सूं ही इकळास प्यार राखै। कजिये रो सरदार होसी सो कजिये रो माणस कन्है राखसे। रिजाळा लक्षण होसी सो रिजाळा भड़वां नूं कन्है राखसी, वधारसी[2]। चुगली री चुप होसी सो नामरद, बेहिम्मत होसी सो चाडीचुगल राखसी। ग्यानी सरदार होसी सो पिण्डत-ग्यानी माणस धरमात्मा कन्है राखसी। सो संगत-सोभत देख सरदार रा लक्षण सुभाव जाणजे तिणसूं सत्रुसालजी मांटीपणे रो आंक तींसूं पदमसिंहजी वड़ौ इकळास राखै। चढ़ियां-उतरियां डेरां सामल रहै।

बादसाह सलामत पदमसिंहजी रै मांटीपणे रो आंक देख, पराक्रम सूं राजी होय सतेमा ठहराया। दलेल खां पठाण पांच हजार सवारां सूं सतेसो। उणनूं अेक दिन पुरे सूं सिकार पधारिया था सो थोहरां री झळ[3] थी तींमें सूअर जोवण नै लोग सारो खिड गयौ। जोवतो फिरै छै। इतरै में आपरै मुंह आगै अेक सिंह नजर आयौ। सो आप लोक नूं तौ किहीं नूं न बुलायौ और घोड़े सूं उतर, ढाल हाथ लेय सिंह नूं बुलायौ। सिंह आय हाथळ री ढाल ऊपर दीवी। ढाल रा फूल च्यारूं सोने रा था सो उड़ गया। ढाल परे जाय पड़ी। फेर आप सिंह रै तरवार री दीन्ही सो दोय बटका होय पड़ियौ। इतरै में लोक आण

[1]सोहबत [2]बढ़ायेगा [3]झंगी।

भेळो हुइयौ छै। सारो लोक कहणौ लागियौ—जे आ तौ श्री लक्षमीनाराणजी सहाय करी छै, पण महाराज नूं आ नहीं चाहिजे। जे यूं अेकला कजियो कियौ तौ पछै म्हें लोग किसे कारण था। सो महाराज पदमसिंहजी छाती रा इसा जबर था।

अेकर सूं कुंवर पदम महाराजा करणसिंहजी कन्है था। बादसाह करणसिंह जी सूं दगो कराइयौ। सो पठाण दलेल खां नूं कहायौ—जे तूं किहीं ब्रह करण नै पकड़। दलेलखां भलो मनगरो[1] सिपाही थौ, महा बळवान थौ। सो महाराज नूं अेक दिन सिकार री कही, लेय चढ़ियौ। मन रै मांही दगो थौ, जे होदे सूं होदो भेळ'र पकड़ म्हारै होदे भेळ लेयस्यूं। यूं विचार हाथी नेड़ै ल्यावतो जावै। इतरै में हाडे भावसिंह नूं खबर ठावी आई[2]। तद पदमसिंहजी डेरै में था त्यांनूं कहाई—जे सिये रै मन महाराज सूं दगो छै। थां सताब चढ़ जावौ। महाराज नूं लेय आवौ अर कजियो हुवै तौ खबर करज्यौ। जीण सारा कर राखां छां। सो पदमसिंहजी बिना पलाणे घोड़े चढ़िया, सवार च्यार सौ रै संग सूं हालिया। नवाब अर महाराज रै हाथी में थोड़ी सी बीच आय रही छै। इतरै में पदमसिंहजी जाय पहुंच्या। महाराज सूं मुजरो कर कही—सिंधु[3] रै मन दगो छै, हुकम हुवै तो मार लीजे। इसी बात सुणतां ही नवाब तौ पासो खाय[4] टळ गयौ। दलेल खां घणौ बड़ो मरद थौ पण पदमसिंहजी री इसी नजर देख पासो खाय परो गयौ। अर कही—जे इसी वलाय सूं खुदा ही बचाया। वड़ी आफत रै धक्के चढ़िया था। राजा का सांई भला करे जो मन्है कर लेय गया। पछै महाराज नूं पण चौकस खबर पड़ गई—जे नवाब रै मन इणी दगो छौ।

कहा करै बैरी प्रबळ, जे सुदृष्टि रघुनाथ।
करणसिंह नूं पदमसिंह, राख लियौ हो साथ॥

पदमसिंहजी सूं बादसाह घणौ ही मेहरवान रहतौ। चाकरी रै पगां करड़ौ सो काम सोंपतौ सो आप भली तरह सिर चाढ़ता। अेक दिन खजानो गाजदीखां नूं पहुंचावणो थौ सो मारग में गनीम रो डर थौ। नित ऊभा रहै सो नीसरणे री[5] आसंग किहीं री नहीं। तद खास चौकी रा सवार सागै[6] देय

---

[1]आनबान वाला [2]खबर लगी [3]सिंधिया [4]झेंप कर, मान कर
[5]निकलने की [6]साथ।

नवाब कोस बीस थौ उणनूं पहुंचायौ सो रात री रात थैली घोड़ां ऊपर मेल पहुंचाई। पदमसिंहजी उण नबाब कन्है था। तद नबाब पदमसिंहजी नूं बुलाय कही—रावजी, खजाना आया सो पहुंचावणा। इहां कही—हाजिर हूं। तौ नबाब कही—तुम विना तौ अेकला मैं भी नहीं रहूं। सारी ही फौज ले चलौ। महाराज कही—दुरस्त छै, पधारजे। तद कूच कियौ। सो पदमसिंहजी सत्रुसाल रतनोत हरवळ किया। चंदोल, जंगाल, बंगाल वणाय नै कूच कियौ सो गनीम आय हरवळ सूं राड़ जे खाधी। तद गनीम नूं चलायौ। वीं पूछी—कुण लड़ै छै? तौ हलकारां आय खबर दीन्हीं—पदमसिंहजी करणोत है। तद पासो खाय गयौ। आदमी गनीम रा मुवा सो दूजे दिन चंदोल ऊपर पड़िया सो फौज मार गया। फेर तीजे दिन ही चंदोल सूं लड़िया, सो साथ भांज नबाब सूं मिळ गया। तद नबाब महाराज नूं बुलाय कही—चंदोली तुम संभाळौ। तद अेक-चंदोल हुवा। सो नबाब रो तौ कूच हुवौ। महाराज सेवा करै था इतरै मांही जादवराय दस हजार असवार सूं आय पड़ियौ सो राड़ मांडी[1]। आप सेवा सूं ऊठ पोसाक कीवी। सो आगै तो सदामद सेवा सूं ऊठ, पाघ[2] रा पेच चौकड़ी च्यार खोल, चोटी-पटा दोनूं आधोआध कर, पाघ रै अड़-पेचा मांही काढ़, ऊपर गांठ देय, पछै च्यार अड़पेच देय पेच लेता। तींसूं कजिये मांही पाघ मजबूत रहती, डिगती नहीं। पण उण दिन उतावळ हुई। गनीम सूं राड़ लाग गई सो पाघ तुरत देय, कमर ही जे बांधी, जतन न कर सकिया, तुरत असवार हुवा। दमामी आणंद रै घाव था सो आला[3] था, फूहा दीजता, वहल वैठो वहतौ सो उण दिन कमर बांध, नगारे चढ़ियौ। इतरै आप देख फुरमाई—आणंद, थे क्यूं चढ़िया, घाव आला छै। तद आणंद अरज कीवी—जे आज हूं नगारे पर महाराज सूं आघो कोई रहूं नहीं। तद आप कही—आज कासूं छै? आणन्द कही—आज बैरीसाल हाथां नै झालै छै।

इतरै में पाछै सूं फौज रो खुर आयौ हीज। गोळी-तीर बहि रहिया[4] छै। जादवराय पटेल रो छोटो भाई सांवतराय, तीन सौ पाळा, मुंह आगै दियां आप घोड़े सवार ललकारतौ थको आवै छै। तद पदमसिंहजी वोलिया—भाई सत्रुसाळजी, दिखणी अेकलो पाळा नूं छाती चढ़ियां लड़ावै छै, सो इणनूं बरछी लगाऊं छूं। तद सत्रुसाळ कही—महाराज माफ करो, मोनूं हुकम दीजे।

---

[1]युद्ध प्रारंभ किया [2]पगड़ी [3]गीले, ताजे [4]चल रहे।

इतरी सुणत सुवां आप वाग उठाई सो वेराणी समसेर नाम घोड़ो सवारी में थौ, काछी थौ, निपट चालाक थौ, वड़ी रेख रो वड़ो घोड़ो थौ। सो आदमियां मांहांकर सांवतराय रै बरछी री दीवी सु पेट फाड़, पलांणी[1] भांज घोड़े रा मौर भांज, काछ में जावती मुड़, हाथ नीसरी सो उपरे रो ऊपर सीझ गयौ। भाई जादवराय री हथणी कन्है जाय खिर पड़ियौ। सो घोड़ो सो असवार, घोड़े नै जांणौ मेख मारी। जादवराय नै भाई पड़ियौ दीसियौ, सो छाती में आग सी•लाग गई। इतरै में असवारी रै घोड़ा रै लिलाड़ में तीर री लागी सो घोड़ो ऊभ कर गयौ[2]। नेट ताजी तींसूं आप जमी ऊपर आय गयौ सो फटकारै में पाघ उतर पड़ गई सो घणी जोई पण लाभी नहीं। तद कमरबन्ध रो सेलो थौ सो खोल[3] मांथे बांधियौ। इतरै में अेक पुरबिये नूं आप घोड़ो बगसियौ थो सो आंण हाजर कियौ अर असवारी वाळो घोड़ो फौज सांमे हालियौ। आप कुंवर गोयन्द कन्है खड़ौ सो गोयन्द झुस गयौ। तद आप गोयन्द मूळांणी नूं कही—गोयन्द, आज रो लोह विगड़ियौ तिणसूं तूं इण नदी रै ढाहे चढ़ देखबो कर, गिणती कर, म्हारी कितरी हाथ वाह हुवै। तद गोयन्द कही—वाह-वाह मोनूं इण वेळा भली चाकरी फरमाई। तद आप कही—म्हांनै थारो इतबार[4] छै। थारै बिन दूजे किण री छाती जे लोहो गिणै, तींसूं तूं जाय गिण। सोंस दिराय, गोयन्द नूं काढ़ियौ सो गोयन्द ढाहे पर जा खड़ो रहियौ। इतरै सत्रुसाळ जी कही—महाराज, आ डूंगरी पूठ थकी बलाय छै। जे आ लेवां तद पूठ पाछै भाखरी रहै। मुंह आगै निसंक सूं राड़ करां, नहीं तौ दिखणी आय दोळां[5] फिर जासी। तद आप कही—भाई सत्रुसालजी, जे कोठो में कुण का छै? तौ कही—डूंगरी सारे नहीं जो कुण का खूंटा छूटै। तौ कही—डूंगरी सूं रहै नहीं, तिणसूं हमें पाछा पग देवां नहीं। तद आप अठारै वार घोड़ो भेळ नै तरवार बाहों सो जिणरै देवै तिण रा दो बटका[6] हुवै। अेकण पूरे पहरिये रै दीवी, टोप ऊपर पड़ी सो टोप वाढ़, जाडा आवती तरवार रही सो तरवार तूट गई। इतरै उणहीज पूरबिये, तरवार अेक आप बकसी थी सो आण दीवी। इतरै घोड़ो वढ़ गयौ। तद चारण गोरधन रै भाई नूं घोड़ो वकसियो थौ, वीं

---

[1]जीन का भाग-विशेष [2]पिछले पैरों पर खड़ा हो गया [3]कमरबंद का कपड़ा [4]ऐतबार [5]चारों ओर [6]टुकड़े।

रो नाम पतासो कहता, सो आंण हाजर कियौ। उण रै ऊपर आप असवार हुवा सो लोहां पूर हुवा[1]। लोगां नूं दकालै[2] छै सो पाघ पड़ियां पाछै लोह लागिया। सत्रुसाल घोड़ा फेर च्यार भेळिया, लोहां पड़िया खेत[3] में। तद गोरधन गाडण गीत कहै—

दिली चाढ़ खग झाड़ रिण।
गोड दिखणाध दल,
लोह छक पोढ़ियौ परब[4] लाधै।
अछर सत्रुसाले बिनां वाणां ऊपड़ी,
आपरे वे बिच सगर आधै॥
अचंभियौ भांण मधकर हरा ऊपरै,
धोम दुहवा इसो वाद धिखियौ।
वरे तु केम[5] रंभ उरे विधाता,
लेख में जीवता संभु लिखियौ॥
किरण पत आवियौ कहै सुण सुर कुंवर,
थिये मत गरम जा घरे थारे।
पणे सू जवेह सूं हुकम सु पावते,
सूर वर इसा करतार सारे॥
अपछरा थां हूर तन रो आणियौ,
दीहपत अेह कर न्याव[6] दीधौ।
विहड़ खण्ड हुतौ जोड़ियौ विधाता तन,
कमध[7] जग जीवतां संभु कीधौ॥

सो सत्रुसालजी लोहां पूर पड़िया। कुंवर रघुनाथसिंह पण लोहां पूर पड़ियौ[8]। तद दोहो कहै—

बरसां तेरा बाज, लजधारी[9] सारी रुघा।
तूं आइयौ अगाज, पोरस दाखे पदमउत॥

पछै कछवाहो कुसळसिंह थौ सो घोड़ो भेळियौ। दोय तीन फेरा किया सो काम भली तरह आयौ। तीरो गीत—

---

[1]बहुत घाव लगे [2]हिम्मत बंधाते हैं [3]रण-क्षेत्र [4]पर्व [5]किस तरह
[6]न्याय [7]योद्धा [8]घायल होकर गिरा [9]लज्जा रखने वाला।

कहितौ इम आद लगे कछवाहो,
सुरां[1] मरणो सही संसार।
दुमंगळ[2] हुवां अमंगळ देखै,
नाम कुसळ मत देखै नार॥
सब दिलगरा जांणे भरम,
सुवर दंतो प्रता सुध।
नवानि जोखि गिणे न विनता,
जोखां जाणें हुवै जुध॥
धारण कंधार कळोधर,
परणी सूं दाखतौ[3] प्रकार।
आयौ काम सुणी सुपरव आये,
विप्र दियौ मम करै विचार॥
पदम सुछैल अवसांण सांप नै,
हीचियौ[4] खागां खड़ग हथ।
कलत सरस कथ जिका अहंतौ,
कीध जिका ही जस ची कथ॥
नित कहितो सुज बोल निवाहे[5],
लोह चढ़े[6] जस घणौ लियौ।
साका बंध कामण सांभळियौ,
कंत सुरां विच वास कियौ॥

पछै भगवन्तराय पूरबियौ हजारी थौ। भलो सांचो सिपाही थौ, अर सौ वरकमदाज रो जमादार थौ सो लोग तौ सारो कजिये में कट गयो थौ। आप असवार दस सूं महाराज रै आगै खड़ो थौ। इतरा में सागे सवार सौअेक पाळा पचासे'क डांवे पासे दिखणी आ लागिया। तद महाराज सूं मुजरो कर उहां साम्हा नांखिया[7] सो खिडाय दिया। पांवडा सौअेक ऊपर जाय काम आयौ। बीजो लोग घणौ काम आयौ। इतरै में नागोर ऊपर दिखणी आ पड़िया। महाराज घोड़ो उठाय भेळियौ सो गर हुवौ। लोहां तौ आगे ही पूर था पण साहस

---

[1]वीरों [2]युद्ध [3]कहता [4]युद्ध में जूंझा [5]वचन निर्वाह करने वाला
[6] लगने से [7]डाले।

सूं खड़ा था सो नागोर दबियौ देख चलाय गया सो घोड़ो ही कट गयौ। आप पण खेत में नगारे आगै पड़िया, लोहां तौ समार पण सावचेत। पूठै आणन्द नगारची नगारो फाड़ काम आयौ सो घोड़े री उठावणी देख कवित्त कहै—

श्री करणेस नरेस को नन्द चढ़्यौ,
पदमेस सनाह न काछै।
सिंह कूं सिंह लियौ चहूं ओरन घेर,
अरी कर राजन आछै॥
वारन कुंभ विदारन कुंभ नु दारन,
केहर मार कळा छै।
टूट पड़्यौ अरि के सिर ऊपर,
छांह रही पग बीस के पाछै॥

इतरा में खेत में महाराज नूं पड़िया देख, गोयन्द मुळाणी आय लोहां भिड़ियौ सो महाराज रै च्यारे'क पांवडां[1] आगै पड़ियौ।

मिळै घाट विषमां कळह लाट लोहां मिळै।
बाज गुरण चाट बेठाट बागां ऊकटे।
उकटे काट निराट अध्रियामणां[2]।
बाट खड़ जाट सिर झाट खागां[3]।
पदम मुख आगली दिखणियां पहारण।
वह राण खड़ग धड़ करण वा वार।
बळो बळ बाजतै महारण बाजियौ।
साहा रिण तणै सिर सांधणौ सार।
विजड़ अवझाड़ खळ पाड़ जम डाढ।
बख विढ़ अवसाण कीधौ बड़ाळौ।
फाचरां चाचरे हुवै रिण फाबियौ।
चोघरी जाजरां लोह चाळौ[4]।
मूळउत जीवतां संभु दळ मोहरी।
दिन खड़ग रावतां तणै दावै।
गहण रण बाज घुरण घटा गोदड़ौ।
पटा मोटा भला जाट पावै।

---

[1]कदम [2]वीर [3]तलवारों की [4]युद्ध।

सो गोयंद लोहां पड़ियौ, आणन्द नगारची काम आयौ ।

कहर काट ऊकट कटक अव चढ़िया,
कळह चाळिया करमा खाय काचा ।

अमांमी वार जुध नगारे ऊपरे,
दमामी बजाया सार डाका ॥

बांग सर सोक सहनाइयां बरघुवां[1],
सार खट तीस नौबत सजाई ।

बाळां[2] खळां सिर जोर लाखग तणे,
घुराई झाट झट बीजड़ घाई ॥

आणन्द जुध बहिस राजा पदम आगली,
लड़ंते रोस रस अरस लागै ।

निसाणां दरवाणियां तणै माथे निहस,
खेध चढ़ रूड़ाई बम्ब खागे ॥

दमामी राड़[3] अत झाड़ झाका दिया,
घोड़ ऊझाड़ खग चाढ़ धारां ।

खेल चोटां विछूट घाव बाज्या खग,
दाव सिखा डग्यौ बाज दारां ॥

सो लोग कितरो'क तौ काम आयौ । कई घाव खाय रण में पड़िया । कई' हालता रहिया । रणक्षेत्र में बहदो मिटियौ । सो जादराव रो भाई पदमसिंहजं बरछी सूं मारियौ । आप देखता, सो दिखणी रा पेट में झाळ लाग रही । जण उण वखत निम छळाई में हथणी सूं उतर पदमसिंहजी ऊपर चलाय गयौ पदमसिंहजी रणखेत में बैठा छै । इतरै में जादूराय आय माथे रै मांही तरवा री दीवी, सो माथो फाड़ त्रिकुटी आण बैठी । इतरै में महाराज बैठा ही लप झड़प मारी सो बागे रा दोर हाथ में आया, सो खांच लियौ । तींसूं मुंहडे आ आण पड़ियौ । जद आप अेक-दोय कटार मारी सो काम सारो सीझ गयौ आप पण उणरै ऊपर ढह पड़िया । दिखणी दौड़िया सो जादूराय नूं खींच काढ़ हाथी रै होदे मांहीं नूं घाल परा लेय गया ।

---

[1]एक फूंक वाद्य [2]नगारों [3]युद्ध ।

अंबुधि सात कहावत हे क्षिति[1],
श्रोण को सिंधु नयौ कद सूझ्यौ।
जोग नृत की सो अत भई,
अब मुण्ड की मारन अंब अमूझ्यौ॥
लागै है भयभीत सबही जग,
यों मघवा निज लोक है बूझ्यौ।
त्यूं कर जोरि कहि इन रण में,
पदमे संग महीपति जूंझ्यौ॥

फेर जादूराय नूं इण तरह लियौ, तिण पर गोरधन गाडण रो कहियौ गीत यूं छै—

पड़ियां पाछै लियौ अरि पाड़,
पिंड गोगादे तिणी पर।
....

सो इण तरह काम आया। दुघड़िये लोग आय दाग दियौ। घायलां नूं संभाळ लेय गया। उठा सूं पुरे नूं कासिद मेलियौ, सो आय खबर दीवो। महल सत कर खड़ा बादसाह रो डर, तींसूं वकील कन्है मांणस[2] मेलियौ। वकील मालूम कीवी। बादसाह सुण धोखो[3] कर कही—हिन्दू अेमा सिपाही होणा नहीं। भला सांचा निमकहलाली था। जावौ इन हिन्दुओं के होता हो सो करौ। तद जांझरके[4] खबर आई सो खबर आतां ही महा सतियां जे तयार हुई। ढोल नगारो बाजणे लागियौ।

अेक नबाब तीन हजारी। उणरै महाराज सूं बड़ो इकळास[5]। महाराज डेरै जावता जणां आप साम्हे आय हाथ झाल ढोलिये बैठावतौ। आप जमी ऊपर बैठतौ। तवाइफां[6] गावै थी। हवालदार दोनां नूं दारू पावै थौ। आप हंसीखुसी करता। और नबाब जद महाराज रै डेरै में आवै थौ तौ महाराज भी यूंही जे करै था। रागरंग हुवै था। अेक बार दोनूं सरदार बैठा था जणां नबाब

---

[1]पृथ्वी [2]आदमी [3]अफसोस [4]प्रभात के समय [5]मेल [6]गाने-नाचने का पेशा करने वाली औरतें।

कही—भाईजी, जो तुम्हारे में कुछ से कुछ होवै तौ मैं क्या करूं और जे मेरा कुछ का कुछ होवै तौ आप क्या करोगे ? जद महाराज फरमाई—जे इण बखत इसी बात कुछ नहीं। दोनूं ही जे खुसहाल छां। इसी बातां क्यूं करां। खुसबखती री बातां करौ। अनी[1] बातां नूं जावणे देवौ। तौ नबाब कही—आ बात तौ बणी बणाई खड़ी छै। जद महाराज कही—बणसी जिण दिन दीसी जासी। अबार तौ कोई खुसहाली री बातां होवण देवौ। नबाब साहिब महाराज नूं कही—भाई, मैं तौ कुछ बद खबर[2] सुणूंगा तब फकीर बण चलता रहूंगा। तौ महाराज कही—भाई, म्हारे सूं फकीरी नहीं बण आवै। मैं तौ जे कुछ बद खबर सुणूंगा, उण दिन कोई गनीम होसी तौ उणसूं कजियो कर काम आऊंला। जे गनीम नहीं होसी तौ लस्कर में ही हर किसी सूं कजियो कर'र काम आऊंला। पण या जिन्दगी नहीं राखूंला।

नबाब मुहीम भर कर पदमपुरे सूं पाव कोसे'क गांव थौ उणमें आ उतरियौ थौ। इतरै उण बखत रा ढोल नगौरा बाजिया जिका सुण'र पूछी—आज भाई के पुरे में ढोल नगारे जो बाजै हैं सो किसी की सादी है या कोई कुंवर पैदा हुवा है या किंही ऊपर फतह हासिल की है ? सो जाय सताव खबर लेय आवौ। जणां आदमी खबर नूं गयौ। आदमी तुरत आय सारी खबर सुणाई। सो सुणतां ही नबाब अपणे डेरा आगै बड़ी आमली थी उणरै नीचे आय बैठियौ। आपरा मुत्सद्दियां नूं बुलाय कही—जे अभी सब सिपाहियों का हिसाब लगावौ। जणां सगळा अरज करी—सरकार, हम तौ कदीमी[3] नौकर हैं, अेसा आज क्या हुवा ? घर पधारिये। बहुत दिन से कबीला आया है। सादी करिये, हिसाब फिर हुवा करेगा। नबाब कही—इसी से कहता हूं जे मैं अन्दर जाऊंगा, बहुत दिन लगेंगे, सो सबको परेसानी होवेगी। इससे सबका हिसाब आज करना। पछै सबरो लेखो करातो गयौ, टका देतो गयौ, फारगती[4] लिखायतो गयौ। सिपाहियां रो हिसाब कर, सागिरद पेसा रो हिसाब करा, टका देय, फारगती लिखाई। पछै दीवांण बकसियां रो हिसाब कर, टका देय उणसूं फारगती लिखाई। दिन दोय पहर आय गयौ। जद कही—सबका हिसाब हुआ, और कौण रहा ? तरै सारां अरज करी—सबका हुवा। कोई बाकी नहीं रहा। तद नवाब हुकम

---

[1]ऐसी [2]बुरी खबर [3]पुराने [4]चुकते हिसाब की रसीद

दियौ—जावौ, तोसाखाने[1] से अेक वाफता लावौ। सो मंगाय चादर उठै हो ज बैठा सिंवाई। सारा देखणै लागिया, गम किहीं री नहीं सो पूछै। चादर तैयार हुई सो बीच सूं फाड़ गळे मांही घाली। सारो लोग हाहाकार डूब गयौ, और रोणे-पीटणे लागियौ। आप तौ सारां सूं मोह खैंच लियौ। माणसां नूं कही—हमारा तुम्हारा इतना ही सीर था। अब चीजवस्त हैं सो मां कूं व लड़का कूं देणी। दोय चाकर खिदमतगार था सो साथ में फकीर हुवा। पस्चिम कान्हीं वहिर हुवा।

आदमी वस्तु-भार सारो घरां जाय सांपियौ, परठ कह दीवी। तद मां पालखी चढ़ जाय पहुंची। घणी नीठ[2] घरां लेय आई। आप बाग में ठहरियौ। लगाइयां दोय थी सो आय रोई अर ख्वाहिस करणे लागी। पण आपरै कुछ खातिर में नहीं। पछै कही—मां के डेरै जावौ, काहे कूं ख्वाहिस करौ। फेर बादसाह नूं खबर हुई जद अेक मांणस मेल कहायौ—जे फकीरी लेणी आछी नहीं। उनसे तुम्हारा घणा इकळास था तौ जो बात तुमने भेळे[3] बैठ कर करी उसका तरक करौ। राग सुणी हो तौ राग छोड़ौ। सराब पी हो तौ सराब छोड़ौ। जो काम सारो कियौ सो छोड़ौ, पण रिजक संभाळौ। घणौ ही परचाइयौ[4] पण नबाब तौ मन निपट ही काठो कियौ। महिने दोय तौ बाग में बैठियौ सो मां घर सूं खाणो आछो करनै मेल्है। दूजे तीजे दिन लुगाइयां आय बैठै। सखरी सी बिछायत, ढोल्या आवै। अेक दिन रात रा सब छोड़ बहिर हुवौ सो पदमपुरा रै परले पासे अेक जायगां थी उठै जाय बैठियौ। परभात समै घर वाळा जोवै तौ नहीं दीसियौ[5]। दिन बीसे'क पछै ठावो पड़ियौ[6]। जणां मां फेर गई, जाय मनुहार की, तौ कही—नहीं आऊं। जे अेक टंक फकत सूखो टुकड़ो मेल्हौ, अर लुगाई छोकरी नहीं आवै तौ फेर आऊं। जणां मां कवल कर फेर लेय आई। जुमेरात री जुमेरात पुरे में आवतौ, ड्यौढ़ी आय सलाम कहावतौ। अेक दो बार भींतर सूं कुछ कपड़ो-लतो मेलियौ[7] सो नहीं लियौ। आप कहाई—मुझको आणे देवौ तौ कोई वस्तु मत देवौ। मेरा जीव पास आये बिना नहीं रहै।

---

[1]कीमती वस्तुएं रखने का कोठार [2]बड़ी मुश्किल से [3]शामिल
[4]समझाया-बुझाया [5]दिखाई दिया [6]समाचार लगा [7]भेजा।

अेकण हलवाई री दुकान मांही पदमसिंहजी री छबी जड़ी थी सो निराठ दुरस्त थी। उण री दुकान आय छबी नूं देख, फूलांरी मूठी च्यार-पांच चढ़ाय, सिर हलाय, आंसू नांख[1] पछै जावतौ। सो बरस तीन जीवियौ जितरै आ दसा रही। इसी सांची आसनाही[2] थी सो सांची निवाही।

पदमसिंहजो रो बात समाप्त

---

[1]डाल कर [2]प्रेम, मुलाकात।

सांई री पलक में खलक

उज्जीण नगरी रै मांही देवसरमा नामे बिरामण निवास करै। उवौ च्यार वेद रो वक्ता, षट सास्त्र रो जांणहार, बडौ पिण्डत थौ। घर में स्त्री सुसीळ व गुणवती थी। पण घर में घणौ कसालो[1] थौ तींसूं आजीवका बिनां काम हालै नहीं। सो देवसरमा हालियौ, चन्देरी में जाय पहोंचियौ[2]। उण समै चन्देरी में जे राजा राज करै थौ सो भलो सुग्यानो थौ। ऊणरै चवदह महल था सो अेक सूं अेक आला था। अब देवसरमा नगरी में निवास करै, भिक्सा-व्रति कर निरवाह करै।

अेक दिन चन्देरी रा महाराज उठै श्री सदाशिवजी रै सहस्त्र घट पूजा कराई। नगरी रा सगळा बिरामण भेळा हुवा। उणमें देवसरमा भी आइयौ। सगळा विरामण राजा नूं आसिरवाद जे दीन्हौ। तद देवसरमा ही पण आगो आय नै राजा सूं आसिरवाद करी।

राजा धरम प्रसंग से, सत्र नास हजार।
देवसरमा यूं कहै, आसिस बारम्बार॥

राजा देवसरमा रा मुख सूं स्लोक सुण पूछी—हे ब्राह्मण देवता, थां कुण छौ, अर कठा सू आइया छौ सो कहौ। तौ देवसरमा आपरी सारी बात कही। राजा सुण'र बहोत प्रसन्न हुवौ छै। देवसरमा सारां पाछै सिवजी रो विसेस पूजन और

---

[1]कमी [2]पहुँचा।

कराइयौ। राजा खुस होय देवसरमा रा रोजगार अर पेटिया राज कर दीन्हा। राजा उण पंडित देवसरमा री रणवास[3] में घणी खरी तारीफ कीवी। जे पंडित अेक ब्राह्मण घणौ भलो छै, थां उण सूं कथा सुणौ। जणां महळां खवासां सगळां अरज कराई—जे घणा दिनां सूं सबरी इच्छा थी पण संकतां अरज न कीवी थी। जद राजा फरमाई—म्हें थांनूं आप ही आग्या देवां छां।

परभात सखरो[2] महूरत देख महलां में देवसरमा नूं बुलाइयौ अर उणसूं श्री हरिवंसपुराण कथा आरम्भ कराई। पहले ही दिन वीस हजार री प्राप्ति हुई। कथा घणी आछी बांची। देवसरमा च्यार बरस तलक कथा सुणाई। उणनूं अेक लाख-सवा लाख रिपियां री प्राप्ति हुई। जद उण राजा सू अरज कीवी छै—जे म्हांरी आसा पूरण हुई, मोनूं प्राप्ति घणी आछी हुई। देवसरमा कही—जे मोनूं आज्ञा होवै तौ जनम भूमि मां जाय अवसर करूं अर अपणां कुटम[3] परवार सूं मिळूं। राजा कही—हे देवता, कुटम परवार नैं उरो बुलाय ले। घरां जाय के करसे। देवसरमा अरज कीवी—

जगदीस्वर अर जान्हवी, जन्म भूमि अर माय।
जाति बीच भोजन करै, दुरलभ पांच बताय॥

हे महाराज, जन्म की भूमि देखस्यूं, कबीले सूं मिळस्यूं[4] अर आपरो यम बधाय, लिछमी[5] रो लाभ उठायस्यूं। ताहरां राजा बिदा की आज्ञा देय घणौ द्रव्य दीन्हौ अर खुसी सूं कही—सताव आवजे। यूं कह महनां छै री सीख दीवी।

देवसरमा हुण्डी कराय, पल्ले बांध अर उठासूं बहिर[6] हुवौ छै, सो देवसरमा हालतौ-हालतौ[7] उज्जीण सूं कोस च्यार आय लागियौ। उण ठांव देवसरमा देखी जे वन मे अग्नि लाग रही छै। उण रै बीच में नागदेव अेक देखियौ। उणनै देख, दया कर देवसरमा बांस री डांग[8] सूं उणनै उठासूं काढ़ परो अेक पीपळ रो छाया में लाय, बैठाय आप ऊभौ रह गयौ। सरप सीतळ छांयां मांय सरजीवत[9] जो हुवौ। जीव ठिकाणे आइयौ। इब फण उठाय देवसरमा सूं कही—हूं तौनूं खायस्यूं। देवसरमा कही—हूं थारी चाकरी करी पण तूं मोनूं खायसे, आ भलाई रै बदळे बुराई करसे सो क्यां? सरप कहणौ लागियौ—रे देवता! हूं घिसटतौ-घिसटतौ ही दुखी थौ, तूं मोनूं क्यूं

---

[1]रनिवास [2]अच्छा [3]कुटुम्ब [4]मिलूंगा [5]लक्ष्मी [6]रवाना [7]चलता-चलता [8]लकड़ी [9]सजीव।

काढ़ियौ ? हूं तौ उण ठांव[1] राजी सूं जळ अपणौ सरीर छोड़ देतौ । अब तूं ही मोनूं काढ़ियौ, हूं थारौ ही अहार करस्यूं । इतरी सुण देवसरमा कही—

बरस च्यार परदेस में, रहौ कबीलो छोड़ ।
उण से मिळ मैं आयस्यूं, सात दिनां की होड ॥

आ बात सुण सरप कही—

मरणे खातिर फेर द्विज, आवै यंह पै कौन ।
सपथ करो जो हेत सों, तौ चाहे कर गौन[2] ॥

देवसरमा कही—

सूरज साक्षी कर कही, मानहु सांचो कौल ।
दिवस सातवें आय मैं, करस्यूं पूरो बोल ॥

इतरी बात सुण सरप देवता बिदा दी । देवसरमा बिदा पाय उठा सूं हालनै आपरै घरनूं आवियौ । आगे घणौ हरख हुवौ, वड़ो उत्साह कर भाई सगा परिवार कुटुम्ब का लोग सगळा मिलणे आइया । पण देवसरमा किहीं सूं कुछ बात ही बोलै तक नहीं छै । औ तौ खरो उदास हुवौ बैठियौ छै । आपरी स्त्री तक सूं नहीं बोलियौ । तौ ब्राह्मणी कही—इसी कांई बात छै, भली तरह कमाई कर लाया छौ, फेर भाई बन्धु कुटम कबीला सूं बोल्या क्यूं नहीं ? जद ब्राह्मण सारी बात ब्राह्मणी नूं कह समझाई । इतरी बात जद ब्राह्मणी सुणी तौ कही—इण बात रो कांई डर करो छौ, 'सांई री पलक में खलक[3] बदळै' छै । अब हाल थांहरा कौल में सात दिन आडा छै । ब्राह्मण कही—सांई री पलक में खलक क्यूंकर बदळै सो कह । ब्राह्मणी यूं कहणे लागी—अेक बार अेक विलायत रो बादसाह कंधार रै बादसाह ऊपर चढ़ाई करी । तद उणमें विलायत रो बादसाह तौ फतह पाई अर कंधार रो बादसाह हार पाई । सो कन्धार रै बादसाह नूं पकड़, कैद कर कंधार रै थाणे में बैसाणियौ[4] । कैदी कियौ । पाछ विलायत रो बादसाह सहर में दाखिल हुवौ । फेर उण कंधार रै बादसाह नूं अेक सत पीढ़िया चाकर भिस्ती रै हवाले कियौ अर खाणे खुराक रै वास्ते उणरो १२ रिपिया नित री खरची कर दीन्ही । सो उवौ उणमें सूं रिपिया ३५ या ३७ खाणे-पहरणे में खरच करै नै बाकी कनै[5] राखै ।

---

[1]जगह [2]गमन [3]संसार [4]बैठाया [5]पास ।

यूं करतां बारह बरस व्यतीत हुवा। अेक फकीर आय रोजीना अवाज करै छै। जे सांई रो पलक में खलक बसै छै। सो अेक दिन कंधार रो बादसाह थौ सो इण फकीर री बात सुण मन में विचारी अर भिस्ती नूं कही—जे थारै बादसाह नूं जाय अरज कर—हमको बरस बारह व्यतीत हुवे, अब क्या हुकम है ? इण भांति भिस्ती नूं कई वार कही पण भिस्ती कहै—मोसर[1] नहीं। और अरज करणौ आप चाहै नहीं।

अेक दिन भिस्ती रै तौ कोई काम थौ, अर भिस्ती री लुगाई बादसाह वास्ते खाणो लेय आई। सो बादसाह खाणो नहीं खावै। ताहरां भिस्तिन कही—आज खाणो खावौ क्यों नहीं ? तौ बादसाह सारी बात नहीं खागे री थी सो समझाई। फेर भिस्तिन कौल सोंस[2] कर खाणो तौ खिलायौ। बादसाह कन्है सूं भिस्तिन घर गई और घर जाय भिस्ती सूं कही—आज बादसाह खाणा नहीं खावे था। पण हूं कौल सोंस घणी तरह सूं कर खिला आई हूं। बार-बार बादसाह तुम से अरज करणे कहता है सो तुम्हारा अरज करणे में क्या बिगड़ता है ? तौ भिस्ती कही—बात तो दुरस्त कही, पण बादसाह बादसाह की जांणै सो जांणे क्या फुरमावै। यांरो कांई बिगड़ै, बैठा खावै छै। खैर अब तुम्हारे कहणे से फजर[3] में अरज करूंगा।

सो भिस्ती हजूर में गयौ तद अरज कीवी—हजरत, कंधार के बादसाह ने अरज कराई है—मुझको बरस बारह हो गए, अब क्या हुकम है ? तद बादसाह ने कोटवाळ कूं पास बुलाया सो आया। उसकूं बादसाह नै फरमाई—आज रात कूं घड़ी च्यार के झांझरके तुम कंधार के बादसाह कूं चोरंगा[4] कर देणा। इतरी बात सुण कर भिस्ती पछतातौ घर आयौ। भिस्तिन सूं कही—ले तूं अर कंधार रो बादसाह बार-बार कहता था। हूं आज जाय हजरत सूं अरज की तौ कोटवाळ कूं चोरंगा करणे रो हुकम दियौ। यूं कह भिस्ती कंधार के बादसाह नूं खाणो खुवाणे गयौ अर कही—लो, थे बैठा ठंडो पांणी पीता था, पण सबर नहीं की बार-बार म्हाने बादसाह सलामत से अरज करणे की ताकीदी करता था। कंधार रै बादसाह कही—क्या हुवा ? भिस्ती कही—कल चार घड़ी झांझरके रात में थांनूं चोरंगा करणे रो कोटवाळ कूं हुकम कियौ है। इतरी सुण कंधार

---

[1]अवसर [2]सौगन्ध [3]प्रभात [4]हाथ-पैर काट देना।

रै बादसाह भिस्ती सूं हंस'र कही—कुछ चिन्ता नहीं, अभी तौ च्यार पहर आडी है। म्हे तौ सुणी है—

सांई केरा पलक में, बसता खलक जहान।
फिकर करे जो काल का, वो है मुरख अजान॥

इण भांत और ही जे सुणी छै—

क्या करंता क्या करै, हस्ती मार गरद[1] में धरै।
सुख जाके सपने नहीं, ता अधना[2] सिर छत्र धरै॥

यूं कह कंधार रो बादसाह कही—तुम तौ खाणा ले आवौ। भिस्ती तुरंत खाणौ ले आयौ। बादसाह आराम से खा-पीकर सो रह्यौ। उठी विलायत रो बादसाह ही सो गयौ।

आकास सूं एक जानवर आयौ सो उण विलायत रै बादसाह नूं लेय उड़ गयौ। हुरम[3] यह बात देख रही थी। उसने विचारी—परभात बादसाह रै बिनां, बादसाही में खलल पड़सी। ताहरां नादर कूं बुलाय कर कही—सताब जाय दीवाण अर बकसी कूं लावौ। सो दीवाण अर बकसी आ हाजर हुवा। तौ उण सूं बेगम कही—अभी तुम्हारे बादसाह कूं आकासी पक्षी लेय उड़ गया। इसका कांई जतन[4] करणा चाहिये। बादसाह बिना सरसी नहीं[5]। प्रभात हुवां लोगां में खलल पड़सी। तौ दीवाण बकसी अरज कीवी—म्हां सूं तौ कारज सरे नहीं[6], वजीर नूं बुलावौ। वजीर आया जद समांचार सुण कही—म्हां सूं अेकलां सूं कारज नहीं वणै, उमराव लोगां नूं बुलावौ। उमराव लोगां नूं बुलवाइया। वजीर, दीवाण, बकसी अर सारा उमराव भेळा आय हुवा। जणां बेगम पूछी—तुम सगळा बतावौ, क्या जतन करणा चाहिये। सगळा ही जणां कुछ जतन कह नहीं किया। ताहरां बेगम कही—हूं यत्न बताऊं। सगळा अरज कीवी—आप हुकम फरमावौ, हम उसी की तामील करस्यां। बेगम कही—और तौ कोई दीखता ही नहीं, अेक कंधार का बादसाह कैद मांही है सो कुछ खोटा नहीं। सगळां अरज कीवी—जी हजूर कुछ खोटा नहीं, नेक है। समझदार अर बड़ा से बड़ा होसियार है। तौ बेगम साहिबा कही—उसकूं लावौ।

---

[1]धूल [2]गरीब [3]बेगम [4]यत्न [5]काम नहीं चलेगा [6]कार्य नहीं होगा।

तुरत आदमी पांच-सात गया। उस दिन भिस्ती अर भिस्तन में कुछ खट-पट हो गई सो दरवाजे रा किंवाड़ था सो जुड़िया नहीं, खुला ही था। अै आदमी आइया जिका भींतर गया। सो देखै तौ कंधार रा बादसाह आराम सूं सोवै छै। आदमी जांणी, जे जगायस्यां तौ सोर करसे तींसूं मांचा-सुदा[1] ही उठाय लीन्हा अर लेय कर हालिया। बादसाह नूं चेत हुवौ, ताहरां विचार कियौ—जे अेक पहर झांझरके आवता सो आधी का ही क्यूं आय लागिया। यूं मन ही मन विचार कियौ पण बोलै कुछ नहीं। इतरा में महल में जाय, तखत रै पास मांचो उतारियौ। लोगां उठाय तखत ऊपर बैसाणिया। बेगम कही—इणरै पाघ[2] बांधौ। लोगां अरज कीवी—आप ही बांधौ। जद बेगम आपरै हाथ उणरै पाघ बांधी अर सगळा लोगां नजर निछरावळ[3] करी। फेर अरज करी—यह बादसाही आपकूं ईस्वर दीन्ही छै, सो सब पर दया करज्यौ। यूं कहि सगळा आपरै घर गया। बादसाह महल में ही रहिया।

दिन ऊगियौ। भिस्ती आय देखै तौ उठै बादसाह नहीं। कोटवाळ पूछी—बादसाह बतावौ। भिस्ती—हमकूं खबर नहीं। दोनूं झगड़ा करता बादसाह रै पास गया। कोटवाळ अरज करी—हजूर भिस्ती कंधार रै बादसाह नूं छिपा दियौ। भिस्ती अरज करी—हजूर मुझकूं तौ खबर ही नहीं। बादसाह हंस कर कोटवाळ नूं तौ घर भेजियौ अर भिस्ती नूं आपरै नेड़ै[4] बुलाइयौ सो देख घणी निवाजस कर घर आइयौ।

इतरी बात कह ब्राह्मणी कही—इण भांत सांई री पलक में खलक बसै छै तौ थांहरै कोल में हाल पांच दिन बीच में छै, चिन्ता क्यूं करौ।

देवसरमा प्रसन्न होय चिन्ता छोड़ी। आराम सूं रहणै लागियौ। सगा-सम्बन्धी, बाळक-बूढ़ा अर भाई-बन्धु सगळां[5] सूं राजी होय मिळियौ। ब्राह्मणी नूं सगळी बातां कही। धन लायौ सो दीन्हौ। खूब दान-पुण्य-धरम जो करणो थौ सो कियौ। यूं करतां दिन च्यार व्यतीत हुवा। पांचवें दिन देवसरमा हलणे[6] री तैयारी कीवी। तद ब्राह्मणी कही—थां तौ घर ही रहौ, मोनूं जावणे देवौ। देवसरमा कही—जे सरीर तौ म्हारो ही अेक दिन नास होयसी। पण

---

[1]खाट सहित [2]राजा का सेहरा [3]वार-फेर [4]पास [5]सभी [6]चलने

कोल क्यूंकर गमाऊं। तूं तौ थारे वैठी रहै, हूँ ही जायस्यूं। यूं कह देवसरमा बहिर हुवौ। ब्राह्मणी ही घर पर नहीं रह सकी, देवसरमा रै सागै[1] ही हाली। मारग में हालतां अेक श्री नरसिंहजी रो देहरो[2] दीठौ। इणां रै पण श्री नरसिंहजी रो इस्ट ही थौ सो हाथ जोड़ नमस्कार कर कही—

रक्षा कर प्रहलाद की, हिरणाकुस मारेह।
भक्त राख दुष्टन हणै[3], नाना रूप धरेह॥
इब म्हारी बेळा पड़ी, रक्षा कीजे आय।
जाहिर चारूं जहान में, थांहरो सुयस बताय॥

इण भांति घणी खरी करुणा सेती हाथ जोड़ नमस्कार कर आगा हालिया। आगे रोही मांहीं संगीन पेड़ था सो ऊभा रहिया। इतरै इणां नूं देख सरप ही पण बाहर आवियौ। जद ब्राह्मणी कही—

सेसनाग अवतार तुम, धरणी धारण हार।
भली करी पण फळ बुरो, इणरो करूं विचार॥
दस परिवारी जीव री, इब कासूं[4] गत होय।
रक्षक या विन और ना, जांणौ निस्चय सोय॥

सरप कहणे लागियौ—

भलां ब्राह्मणी बात तूं, काहे करत बणाय।
याकूं मैं भक्षण करूं, छोड़ किहि विध नांय॥

ब्राह्मणी कही—

भक्षण मोकूं कीजिये, विनय यही सिरनाय।
बिदा कीजिये याहि ते, जो अपने घर जाय॥

सेसनाग कही— तोनूं नहीं खाऊं। हूं तौ ब्राह्मण नूं खायस्यूं। तौ ब्राह्मणी कही—ओ खूब धन कमाय लायौ छै। इब थे इणनूं खाय जायस्यौ, ताहरां परिवारी लोग धन चोरी रो बखांण[5] मोसूं छीन लेसी, जद म्हारी कांई गति होयसे। सरप कही—इण बातरो प्रबन्ध तोनूं हूं बताय देस्यूं। ब्राह्मणी कही—भली बात, सोही बतावौ। सरप कही—म्हारै छाती हेठली[6] मूठी दोय धूळ लेय जा। तोनूं जिको विरोध भाव जोवै तिकां ऊपर अेक चुटकी धूळ

---

[1]साथ [2]मन्दिर [3]हनन करता है [4]क्या [5]चोरी का कह कर [6]नीचे की।

गेरजे[1] सो भसम होय जासे। इतरी सुण ब्राह्मणी मूंडी दोय धूळ ली। फेर सरप सूं कही—मोनूं थांही बुरी नजर जोवो छौ सो भसम हो जावौ। यूं कह अेक चुटकी धूळ सरप ऊपर नांखी[2] सो ऊ उण ठांव ही भसम होय गयौ।

श्री नरसिंह सहाय सूं, दोनूं आया गेह।
सांई केरा पलक में, खलक बसै कर नेह॥

पलक में खलक री बात समाप्त

---

[1]गिराना [2]डाली।

पलक दरियाव री बात

पाटण सहर, तठै अजैपाळ साह व्यापारी रहै। बड़ो धनेस्वरी[1]। तिणरै देवीदास नामौ अेका-अेक बेटो। सो बरसां पनरह मांहे हुवौ, तिकौ बड़ो सपूत। नामे-लेखे बिणज-व्यापार मांहे वहोत खबरदार। साह रै धन घणौ। बिणज रो सुमार नहीं। जहाज हालै। सरब काम नामे-लेखे रो मुदार बेटे ऊपर और देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिज्ञा सो सहर सूं बाहिर अधकोस देहरो तठै श्री लिखमीनाथजी बिराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै। पइसो अेक भेंट रो चढ़ावै। यूं करतां घणा बरस वितीत[2] हुवा। सांची प्रीत सूं दरसण करै। कदेई नागा[3] न घालै। पहल दरसण करि, भेंट करि, पछै भोजन करै।

अेक दिन साह रै जहाज रो भार परदेस सूं आयौ सो दरसण करण जाय सकियौ नहीं। भूल गयौ। जितरै घरां सूं बोलावो[4] आयौ। तांहरै अजैपाळ साह काम गुमास्ता नै सौंपि बेटा देवीदास नै साथ लेय घरै जीमण नै गयौ। जीमण नै बैठ, थाळी में अन्न पुरसियौ तदै देवीदास नै ठाकुरां-दरसण री याद आई। ताहरां अजैपाळ कह्यौ—बेटा वैगा हुवौ, आज आंपणौ काम छै। ताहरां देवीदास कह्यौ—म्हारै तौ श्री ठाकुरजी रो दरसण करण रो नेम[5] थौ पण आज दरसण कीधा नहीं तींसूं दरसण करि जीमसूं। तद अजैपाळ साह कह्यौ—बेटा सवारै टको चढ़ावजे और दोय वेळा दरसण करज्यौ, आज आपणौ काम छै। ताहरां

---

[1]बहुत धनी [2]व्यतीत [3]गैर हाजरी [4]बुलावा [5]नियम।

देवीदास कह्यौ—अन्न तौ दरसण कर नै जीमसूं। साह कह्यौ—सवारै गुन्हगारी भेळी चाढ़ज्यौ, पण आज तौ जरूरी काम छै। तद देवीदास ऊठ ऊभौ हुवौ। तद साह कह्यौ—थांहरो मन है तौ जा, पण दरसण करि सताब आइज्यौ। इतरै दिन पोहर डोढ़ चढ़ गयौ। आगै श्री ठाकुरजी रै भोग री आरती करि देवत नामै ब्राह्मण पण्डो आपरै घरे गयौ। कपाट जड़िया छै। ताहरां किंवाड़ री सेरी मां हाथ घात कैवण लागौ—महाराज, पइसो लीजौ, म्हांमें तकसीर[1] पड़ी, मोड़ो आयौ। गुन्हौ माफ कीजै। हूं रावळो चाकर, यूं चूक पड़ि, तकसीर माफ करणी। यूं करतां घड़ी अेक हुई। रुदन करण लागौ। देही परसीज[2] गई। विवहल होय गयौ, ज्यों प्राण छूटै। ताहरां लक्ष्मीजी श्री भगवान सूं अरज करी—जे साहूकार बहोत दीन छै, विवहल हुयौ छै, इणरा प्राण छूटै छै इणरो पइसो लीजे। ताहरां श्री भगवान फुरमायौ—अै हाथ अयाची[3] छै। म्है किहीं कन्है हाथ मांड्यौ नहीं, सारां ही नै देऊं छूं, लेणनै हाथ आगो न करूं। इतरी सुण लक्ष्मीजी अरज करी—हाथ न मांडौ तौ मुंहड़े सूं फुरमावौ। तद देहरे में आवाज हुई—उरहौ[4] ला। ताहरां इये पइसो चींपटी मांसूं चलाय दियौ सो देहरै मांही जाय पड़ियौ। देवीदास नमस्कार करि प्रदक्षिणा देण लागौ। ताहरां श्री लक्ष्मीजो भगवान सूं अरज कीवी—देवीदास थांहरो निज भगत है, इणनूं कुहींक[5] दीजे। ताहरां श्री पूरणब्रह्म फुरमायौ—म्हैं तौ इये नै घणौ ही दियौ छै। ताहरां श्री लक्ष्मीजी फेर अरज कीवी—इये रै मन में कांई'क कांमना छै, तिका फेर देवौ। ताहरां देवीदास प्रदिक्षणा दे सन्मुख आयौ। नमस्कार कियौ। इतरै में फेर देहरै मांही आवाज हुई—देवीदास मांग। मांगसी सोई पाईस[6]। ताहरां देवीदास जांणियौ श्री भगवान प्रसन्न हुवा आवाज देवै छै, सो देवीदास हाथ जोड़ि अरज कीवी—ओ आप महरवान हुवा सो मांगूं सो पाऊं। फेर हुकम हुवौ—जो तूं मांगीस[7] सोई हूं देईस। ताहरां देवीदास अरज कीवी—जो आप पलक दरियाव कहावौ छौ तौ मन्है पलक दरियाव रो तमासो दिखावौ। श्री भगवान फरमायौ—इये बात रो कासूं देखसी? क्यूं दूजो मांग। राज मांगसी, पातसाही मांगसी और कोई सखरी वसत देखै सो मांग। तद देवीदास

---

[1]चूक [2]करुणा और सन्ताप से आकुल [3]जो माँगते नहीं [4]इधर [5]कुछ न कुछ [6]पायेगा [7]माँगेगा।

प्रणाम-दण्डोत कर अरज करो—जे इतरा थोक तौ आप रै प्रताप सूं घणा ही है। जे आप कृपा कीवी छै तौ आप पलक दरियाव रो तमासो दिखावौ। तद फेर आवाज हुई—तौ देख। इतरो हुकम हुवौ, तिसे देवीदास डण्डोत करि नीचे नमियौ[1] अर जीव नीसर[2] गयौ। अेसी माया ईस्वर री हुई। जीव नीसर नै बन्धुगढ़ रै राजा कनकरथ री पटरांणी रै गरभ रह्यौ। आगै राजा रै सन्तान न हुती, अपुत्र थौ सो आधान रह्यौ। बधाई हुई। सात में महिने में आधरणी हुई। नव महिना पूरा हुवा, कुंवर जायौ[3], बधाई बंटी, गुळ बांटियौ, नारेळ बांटिया, बड़ा उत्सव हुवा, दसोटण हुवौ, ब्राह्मण वेद-पाठ करि कंवर रो नांम विचित्र राखियौ।

कुंवर मोटो हुवौ ताहरां सेरपुर रै राजा वीरभद्र री बेटी रो नारेळ आयौ[4]। घोड़ा सौ, हाथी च्यार, कपड़ो लाख अेक रो, जवाहर, गहणौ अेक लाख रो, नाळेर सोने-रूपे रो लाया। पुरोहित आदमी च्यार सौ सूं डेरो कियौ। राजा कनकरथ खबर मंगाई—ओ डेरो कैंरो छै, क्यों आया छै? कठै जासी, कुण छै? ताहरां पुरोहित रै डेरै छड़ीदार नै मेलियौ। उण जाय नै पूछियौ—कैंरो डेरौ छै, कठै जासौ, कुण छौ? ताहरां पुरोहित छड़ीदार नै मांहे बुलायौ। कह्यौ—महाराज नै आसीरवाद मालुम करजौ अर अरज करजौ—सेरपुर रो राजा वीरभद्र तिकै री बेटी इन्द्रकंवरी री सगाई, महाराज रो कुंवर विचित्र नामै छै तिणसूं कीवी चावै छै। साम्हां नै नाळेर देय थां पासे मेलिया छै। इतरो कहि रिपिया पांच छड़ीदार नै इनाम रा देय विदा कियौ। छड़ीदार जाय महाराज सूं सरब मालुम की—सेरपुरा रो राजा वीरभद्र रो पुरोहित विक्रमादित्य छै। पंडित-ब्राह्मण तरक-चरचा करै छै। इतरै पुरोहित विक्रमादित्य आयौ। राजा ऊठ आदर दियौ। बांह पकड़ कर कन्है ले बैठा। राजा रै मुलक री बात पूछी। इतरै कुंवर विचित्र नूं बुलायौ सो कुंवर पोसाख भलो भांति सूं करि,

---

[1]झुका [2]निकल [3]जन्मा [4]सगाई करने की एक प्रथा जिसमें लड़की के घर वाले ब्राह्मण के हाथ उचित वर के पास सम्बन्ध की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए नारियल आदि भेजते हैं। नारियल को स्वीकार करने का अर्थ सम्बन्ध को स्वीकार करना माना जाता है।

आपरा हजूरियां[1] नै साथै ले आयौ। दरबार सारो ही ऊठ ऊभौ हुवौ। पुरोहित सूं कुंवर मिळियौ। कुंवर राजा रै मुंहडे आगै बैठो छै। मुहरत ठीक छै। तद राजा कनकरथ रो जोसी विस्वेसर वोलियौ—पुरोहित ऊठौ, महाराज कुंवर रै तिलक करौ, नाळेर वंदावौ। तद हाथी, घोड़ा, कपड़ा सब नजर किया। पुरोहित डेरै गयौ। दूसरे दिन पुरोहित नूं बुलाय घोड़ो-सिरोपाव, कड़ा-मोती बगसिया। सारो साथ जिसै लाजमा लायक हुता तिकां नूं तिसी हीज वस्तु दे बगसीस करी। सरब नै राजी करि विदा किया। साहे[2] री ताकीदी कीवी। ताहरां पुरोहित अरज कीवी—मास अेक पछै सिंहसत लागसो सो महिना तेरह रहसी तौ पछै साहो करस्यां। यूं कहि पुरोहित बहिर हुवौ। कुंवर रै ताबै राजा सरब मुसद्दी दिया। कुंवर पण राजा रो सरब काम संभाळियौ। सारो सवाल-जबाब पूछै। बहोत सपूत दातार पिता री आज्ञा में रहै। बड़ो सुख देवै। यूं करतां सिंहसत उतरियौ, तद जांन[3] री तयारी करी। परणीजणि चढ़ियौ। घणौ आडम्बर सूं जाय परणीज्यौ। वड़ा रंगरळी हुवा। घणौ धन खरचियौ। कुंवरजी रै झरोखै नीचै ओळंगु रात रा घणा सवार उलंगिया, बड़ी निवाजस व्ही, लाखपसाव कियौ। ओळंगु हजूर राखिया। ताहरां ओळंगुवां अरज कीवी—म्हांनै बरस अेक हुसी महाराज वीरभद्र री चाकरी करतां नै। जो हुकम हुवै तौ मुजरो करनै फेर राति आय आपरो मुजरो करां। ताहरां कुंवर पूछियौ—कठै रा छौ? तद ओळंगुवा बोलिया—भुजनगर रो राजा रावळ जालम, वड़ी पातसाह, तिण राणी रा चाकर छां। घरां तौ कांई कमांण न छै, पण दातारां नै देखण नै मुलकगिरी[4] करता फिरां छां। सो बरस अेक हुवौ, महाराज विलमाय राखिया। ताहरां कुंवर विचित्र कह्यौ—थे बरस अेक म्हारै कन्है रहौ। ताहरां ओळंगुवां कह्यौ—राजा भीम सारू छै। राजाजो विदा देसी तांहरै महाराज कुंवर कन्है आवसां। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यौ—भली बात छै। थे मुजरै जावौ। आछा गावजौ। जितरै भगती जीमण[5] म्हे पण आवां छां। आ बात कहि सीख दीवी। कुंवर डेरै आयौ, घोड़ा दौड़ाया, हदफरी चौठ कीवी। पाछलो पहर हुवौ ताहरां राजा वीरभद्र रो कुंवर सवार हजार अेक सूं

---

[1]नौकर-चाकर [2]शादी का मूहरत [3]बरात [4]भ्रमण [5]सम्मानार्थ दिया गया भोजन।

भगती जीमण रै पगां बोलावो आयौ। साथ सारो तैयार हुवौ। सखरो ऊमदा पोसाक करी। विचित्रकुमार नै साथी राजा रै दरबार आया। मजलस हुई। साथ में अमल-पाणी री मनवार हुवै छै। विचित्रकुमार री नजर ओळंगुवां मांहीं छै। ओळंगुवा पण हुल नै गावै छै। रवाब-सारंगी, ढोल-मंजरी बाजै छै। इसो ही कंठ रो गावणौ छै। इसो ही कन्है पुराणो गुण छै। सारी ही बात रो मेळ मिळियौ छै। इसे में पांतिया नांखिया। भुजाई आय सारो साथ बैठो छै। विचित्र-कुंवर फुरमायौ—ओळंगू पण ऊपरि आय भुजाई बेसै[1]। ताहरां वीरभद्र छड़ी-दारां नै फुरमायौ—सतावी गोगदान, हरदान, सिवदान, हमदान इयां च्यार ही नै ऊपरि बुलावौ। महाराज याद किया तद ओळंगू ऊपर जाय महाराज सूं, कुंवर विचित्र सूं मुजरो कियौ। विचित्र कुंवर रो नगारची, वाजदार बैठा ठावका उवांरा गुण सुण लजाय बैठा। भली भांति भुजाई जीमिया। ऊपर पांन रा बीड़ा दिया, अंतर सुंघेरी मनवार हुई। डेरै नूं सीख दीवी। ताहरां राजा वीरभांण जंवाई नै खमा-खमा कह्यौ, हाथ झालिया[2], छाती सूं लगाय कह्यौ—वावा, कासूं कारज छै। जे वदळे अेतराज हुवा अने हाथ जोड़िया, सो कह्यौ—ओ राज, हाथी, घोड़ा, सरब भंडार थांहरा छै, चाहै सो करौ। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यौ—हरदान अळंगूम नै बगसजे। राजा वीरभद्र कह्यौ—भली बात छै। आपरै दीवाण नै बुलाय नै कह्यौ—लाख एक रो पसाव, घोड़ा च्यार, सिर-पाव मंगावौ। आण हाजर किया। ताहरां हरदान ओळंगू नै बुलाय बगसिया। आपरै पहरण री पोसाक और सरब गहणां था सो हरदान नै बगसिया। तींमें कंठी अेक मोतियां री हती—लाल और पनो निपट वेस थौ। सवा लाख कंठी री कीमत हती, तिकी पण पोसाक साथे बगसी और फुरमायौ—कुंवरजी री चाकरी आछी तरह करजौ। ओळंगू मुजरो करनै विदा हुवौ नै छोटो सो डेरो मेड़ी[3] कन्है खड़ो कराय दियौ। बड़ी रीझ-मौज देनै भींतर पधारिया।

ताहरां झरोखे नीचै चार पहर गावै। नित निवाजस हुवै। दोपहरै रा कंवरजी पौढ़ै ताहरां रामदान जाजम रै छेड़े बैठो कमायचो[4] बजावै। बड़ी रीझ-मौजां सिरपाव पावै। कुंवर री बड़ो मेहरवानी, बडो कारण राखै। दिन २९ वीरभद्र जांन राखी। बड़ा हीड़ा[5] किया। नवी-नवी भक्ती कीवी। सारी बात

---

[1]बैठें [2]पकड़े [3]महल [4]एक तार वाद्य [5]भाग-दौड़, खातिर।

जांन रै साथ बडो सबोलो राखियौ। कुंवरजी विदा होवण री अरज कीवी। ताहरां राजा वीरभद्र कामदार परधांन नै बुलायनै फुरमायौ—दायजो तैयार कियौ छै सो सब ले आव। बीस हाथी, पचीस घोड़ा, लाख दोय रो गहणो, जुहार लाख अेक रो, इतरो ही कपड़ो दियौ। बांदी छोकरी बडारण अेकसौ दीवी। और भी अनेक वसतां दीवी। सो राजा रै घर रा किसा बखांण, घणी-घणी मनुहारां कीवी, विदा किया। राजा वीरभद्र रो कुंवर हरिभद्र बहिन नै पहुंचावा सारूं साथ हुवौ। मजल दोय आयां पूठै विचित्र कुंवर हरिभद्र नै पूठा[1] विदा कियौ। साथ कटारी अेक, घोड़ा पचास, माळा अेक मोतियांरी, कलंगी अेक जड़ावरी इतरा थोक दिया। साथ सगळे नै सिरपाव दै, छोटां-मोटां सहनै याद करि विदा किया। बडो रस रह्यौ।

कुंवर विचित्र परणीज घरां आइयौ। गाजे-बाजे, सायदान बजावतां बधाय[2] भींतर लियौ। घणौ हरख राजा रै पचास बरस सूं हुवौ। सो अेका-अेक बेटो, फेर कुंवर सरब राजा रो भार संभाळ लियौ। तेथी[3] राजा नै घणौ वलम। लोक पण सगळा ही सराह करै। राजा रै मुलक रो काम सगळोई[4] राजा रै कुंवर रै हाथ।

यूं करतां बरस च्यार व्यतीत हुवा। कुंवर रै कुंवर हुवौ। बडो हरख हुवौ। नानांणे सहर बधाई गई। तद राजा हरखवन्त[5] होय घोड़ो अेक, सिरपाव, कड़ा-मोती, रिपिया हजार दोय देनै विदा किया। दसोठण[6] रो कपड़ो-गहणो देय नै मुत्सद्दी नूं मेलियौ। संबध गढ़ आइयौ, डेरो कियौ। जाबतो घणौ हुवौ। सहर में घर-घर बधाई बाजै छै। हरख होय रह्यौ छै। दसोठण हुवौ। मुलक सरब जीमियौ। वीरभद्र रो मुहतौ कपड़ो-गहणो लायो थौ सो राजा कनक रथ रै नजर गुदराइयौ। राजा मुहतै नै घोड़ो, सिरपाव, दुगदुगी बगसी। विदा कियौ। कुंवर विचित्र रै मुजरो आइयौ, ताहरां कुंवर सिरपाव बगसियौ। बड़ी-वड़ी मनुहारां करि विदा कियौ।

राती महल पोढ़ण गयौ। ओळंगुवां नै हुकम हुवौ। चारि पहर रात झरोखे उलंगिया। परभात लाख अेक रो इनाम हुवौ। बड़े लाजमे कारण अेक दिन

---

[1]वापिस [2]स्वागत की रस्म पूरी कर [3]जिससे [4]सम्पूर्ण [5]हर्षित
[6]पुत्र जन्म की खुशी में किया जाने वाला उत्सव।

हरदान बोलियौ—भाई गोगदान, दूजी वसतां छै तिकै तौ भावै जु राखसां पण आ मोतियां री कंठी छै तिकी आपां सूं नहीं रहै। तैंसूं आ कंठी आपां कुंवरजी नै सौंपां। अेक दिन हरदान कुंवरजी सूं अरज कीवी—आ वसत राखौ। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यौ—आ वसत म्हां लायक नहीं। हूं लेवाळ नहीं, देवाळ छूं। अर थे कंठी बेच सो तौ दाता रै नाम री किसी खबर पड़सी। ताहरां हरदान फेर अरज कीवी—तौ म्हांरी थकी कोठार में राखजौ। म्हे डूंब छां, कहांरेके[1] म्हे भांगु पी नै सोय रहसां, गमाय देवां। तूठै तौ पण छाती रहै अर बुरी[2] राखां तौ गळी जावै। तैंसूं आप हस्तै कोठार में रखावौ। ताहरां कुंवर कह्यौ—किहीं साहूकार रै राखौ। ताहरां फेर हरदान कह्यौ—साहूकार नै सूंपां, कोई मोती वढ़ाय ले तौ झगड़ो करता भूंडा लागां। फेर म्हांरी डूंबी[3] बात वाजै, तैंसूं कोठार में रखावौ। ताहरां कुंवर कंठी लीवी। लेनै भींतर महल पधारिया नै वसत रूपै री डबी घाल ढोलिये रै पगांतिये आळो थौ तैं मांही कळ थी तिकै कळ मांही राखी। सो कुंवर विचित्र जांण्यौ कै दूजा नै खबर नहीं है।

हिव सुख सूं राज करै। रैत[4] सगळो राजी रहै। राजा रो काम सगळो विचित्र कुंवर करै। राजा कनकरथ महल में बैठो जौखां[5] करै। पोतरै सूं बहोत प्यार सो पोतरै नै रातदिन हजूर में राखै, खेलावै। नाम कुंवर रो दैपाळ दे दियौ छै। सो दैपाळ बरस दोय रो हुवौ। राजा कनकरथ री हजूर में रहै।

यूं करतां विणजारो सवालखी आयौ। तैंरै सवालख बाळद, हजार दोय वरकमदाज, बड़ो डेरो, असवार पांच सौ। नगारो बाजतौ, पांच रथ, दोय सुखपाळ, हाथी दोयसै लाजमें[6] सूं नायक सवालखी आयौ। विणजारे रै अेक बेटो, तिणरो नाम सुजांण सो घणौ सपूत। सरब डेरै रो नायक सुजांणे रै हाथ। नायक रै साथे हाथी अेक दरियायी चौमुखो, तैंरी कुंवर नै खबर हुई—जे बड़ो हाथी छै। अेरावत री औलाद रो छै। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यौ—जे विणजारो महाराज रै आवसी ताहरां पूछसां। दूजे दिन सवालखी नायक, साथे सुजांण, पालखी बैठ नै राजा कनकरथ रै मुजरै आइयौ। किस्तूरी रा पुड़ा अेक,

---

[1]कभी न कभी [2]धूल में छिपा कर [3]मुहावरा—बिना सिर पैर की बात [4]प्रजा [5]आनन्द [6]लवाजमा।

अेक केसर रो गांठो, अेक वावने चन्दण रो झाड़, अेक मूंगियांरो, तरवार, अेक अमल, इतरी वसतां अनोखी अर दूजो मेवो, कपड़ो भांत-भांत रो नजर करनै बैठौ। बतळावण करी, पांन रो बीड़ो देनै विदा कियौ। कुंवर विचित्र सूं मुजरो करण गिया। कुंवर बड़ो आदर दियौ। कुंवर री नजर मेवो-कपड़ो कियौ। ताहरां कुंवर रै मन में हाथी री बात थी सो कुंवरजी फुरमायौ—अे मेवा, कपड़ा-वसत म्हांरै पण घणा ही है। थे तौ परदे रा परखण्ड[1] फिरणवार[2] छौ। कोई अपूरब[3] वसत लावणी थी। तांहरै नायक सवालखी बेटो साम्है आयौ। सुजांण ऊठ डेरै जाय, हरड़े अेक सवासेर री, सामरणी १ अेकमुखी रुद्राछ री आंण भेंट कीवी। कुंवर बहोत राजो हुवौ। पांनां रा बीड़ा बगसिया, विदा दीवी। नायक सवालखी सुजांण डेरै आइयौ। कुंवरजी वसतां महल रै आळै कळदार में राखी। परभात सुवारै ही पूजा करनै थाळ आरोग्यौ। खास कर महाराज रै मुजरै गयौ। काम-काज री सारी अरज-विनती कीवी। फेर राजा फुरमायौ सु जीव में धारियौ। कुंवरजी ऊठ हाथ जोड़ि नै अरज कीवी—महाराज, नायक रै हाथी अेक चौमुखो दरियाई छै। बहोत आछौ छै। जा हुकम हुवै तौ मोल लीजौ। ताहरां राजा हुकम कियौ—कै भलो बात छै। जे थांहरै खुसी छै तौ सताबी लीजौ। इतरो कहिनै कुंवर मुजरो करनै डेरै आइयौ। छड़ीदार अेक चन्दण नामै मेहरवानगी छै, सो बहोत समझणो छै तैंनूं फुरमायौ—जाय नै सुजांण नायक नूं बुलाय लाव। चन्दण छड़ीदार दौड़तो ही गयौ। जाय सुजांण नायक नै कह्यौ—कुंवर बुलावै छै। सुजांण सनाब कुंवर री हजूर आयौ। बातां करी। कुंवर फुरमायौ—हाथी अेक दरियाई छै सो म्हांनै मोल देवौ। तद सुजांण नायक अरज कीवी—हाथी सवालखी नायक नै पातसाह फुरमायौ है तौ ल्यायौ छै, तैंसूं कुंवरजी रै चूप[4] छै तौ आप रखावौ। आप उठै पधारजौ। नायक नै देखाय नै लेवां। बात कुंवरजी मानी। मिठाई मंगाई, अत्तर मंगायौ, सुजांण री मनवार करी। पांन बगसिया। खंजर अेक बहोत वेस विचित्र कुंवर सुजांण नायक नै बगसिया। डेरै नै सीख दीवी। दूसरे दिन सेवा-पूजा कर, थाळ आरोग, राजा रो मुजरो करि, असवारी करि नायक सवालखी रै डेरै पधारिया। नायक नै बेटो दोनूं साम्हा आया, पांवां लागा। डेरै भींतर

---

[1]अन्य पृथ्वी खण्ड [2]फिरने वाले [3]अपूर्व [4]चाह, पसन्द।

बिराजिया[1] । मिजमानी रो नायक जाबतो करायौ। कुंवर विचित्र देस मुलकां री वातां कीवी। इतरै में नायक सुजांण कह्यौ—बापजी, महाराज कुंवार हाथी दीसा फुरमावै छै। ताहरां हाथी मंगाय नजर कियौ। ताहरां कंवरजी कह्यौ—हाथी रो मोल फुरमावौ। नायक कह्यौ—कोई लेवां नहीं। यूं घणौ माढ़[2] हुवौ। पछै रिपिया थेट ४० हजार लागा था जिकै लिया। कंवरजी री कलिंग अेक नजर कीवी। हमाऊजी नाव रै परां री आवखान गरमयोसरो संख दक्षण वरतन परो भारंक पासी रो नळो रो जैसी अध-अध हाथ चौगिरद रावभाई पड़ै। इण भांत रो चारी वसत नजर करी। भाईपो हुवौ। मास चार रह्या। जगत री पोठ चूकी। नायक रै चालण री तयारी हुई। ताहरां सुजांण कुंवरजी रै मजरै आइयौ। बात करी। डबी अेक जुहार लाख चवदा री सांपी। कुंवरजी वसत अेक राखौ, सरोजीनो भार संवहणौ, तैंसूं आप कन्है राखौ। ताहरां कुंवर फुरमायौ—मांही रो कहीं खरच पड़ जावै, तेथी कहीं साहूकार रै राखौ। जद सुजांण नायक अरज कीवी—जे खरच पड़सी तौ घर छै। पण साहूकार सूं मन परचै[3] नहीं। ताहरां कुंवर कह्यौ—डबी कीमत कराय सूंपौ। ताहरां डबी खोली। जुहार बुलाय कीमत कराई। रिपिया लाख चार री डबी हुई। तिका डबी कळदार उवे आळे मांही राखी।

दूजे दिन नायक विदा हुवण नै दरबार आयौ। राजा कनकरथ रो मुजरो करायौ। कुंवर महाराज सूं अरज कीवी—नायक आछी जागात भरी, भलो भांति वसतां नजर कीवी, हुकम हुवै तौ सिरपाव दीजै। राजा फुरमायौ—आछी बात छै। ताहरां दोनां ही नायकां नै सिरपाव, मोती, कड़ा बगसिया। बड़ी दिलासा कीवी। भार ले सताब आव जाजो जी। बड़ी वातां कीवी। राजा रो मुजरो कराय कुंवर आपरै डेरै ले गयौ। सिरपाव दिया, सिरपेच सुजांण नायक नै दियौ। बड़ी प्रीत बंधाई। ताहरां नायक हाथ जोड़ अरज कीवी—कोई वसत फुरमावौ, परदेस सूं ले आवां। ताहरां कुंवर फुरमायौ—घोड़ो अेक अेराकी[4] लेता आजौ। नायक सवालखी डेरै नूं गयौ। सुजांण नायक कुंवर विचित्र कुमार रै जनानी डोढ़ी गयौ। बडारण[5] सूं मुजरो मालम करायौ। अरज

---

[1]बैठे [2]जिद्द [3]विश्वास नहीं होता [4]विशेष नश्ल का घोड़ा [5]दासी।

कराई—वसत दिसां थांहरै चूप हुवै सो फुरमावौ। ताहरां भींतर सूं जबाब मेळियौ सु ले सुजांण डेरै आइयौ। कूच करि बहिर हुवा।

उठा सूं कुंवर मुलकगिरी नै असवार हुवा। मुलक घूमिया, सारा रस किया। मुलक दोय-तीन दूजा नया बसाया। बरस दोय सूं कुंवर फतह कर पाछा घरै पधारिया। दीवाण सुन्दरदास ऊपरि काम रो मुद्दो छै। साह सुन्दरदास रो बेटो साह वेणीदास, तिकौ कुंवर रै हजूर रहै। बड़ो सांमधरमी, बड़ो बुद्ध[1] राखण-हार[2] छै। बड़ा मुत्सद्दी छोटा-मोटा कामदारां सूं सुख राखै छै। आपो-आपरै हवाल में सब खबरदार रहै। राजा रो राज विचित्र कुंवर भारी घातियौ, बड़ी दौलत वधारी। लोक वहोत सुख कियौ। नवा परगनां मुलक दाबिया।

अेक दिन तळाव पधारिया, गोठ कराई। सारो साथ लारै छै। हजूरी सारा ही साथै छै। आप आपरा ही लालिया खड़ा छै। अमल-पांणी कीजै छै। मिठाई रो जाबतो सरब वेणीदास करावै छै। मिठाई वांटीजै छै। कुंवर हजूरियां साथै तळाव में झीलै[3] छै। बड़ो तळाव रो पांणी छै। कुंवर तळाव मांहे चुंभो मारै[4] छै सो पूठो[5] नीसरियौ नहीं ताहरां हजूरी कहण लागा—

झाझै झूलर[6] झीलतां, पैठो कुंवर विचित्र।
अजहु न आयौ आपणौ, मन मानीतौ मित्र॥

ध्याय ध्याय ऊंडा धसौ, वार मांहि वडवीर।
कहिसां कासूं राज नै, सोझो कुंवर सरीर॥

ताहरां सरब हजूरी, पासवान, खवास तेरू[7] हता तिके सरब तळाव ढूंढ़ियौ। घणौ ही जोयौ पण हाथ न आयौ। इतरै में कुंवर री अतक देही ऊपर तिर आई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तौ देही निरजीव देखी। तद हाहाकार सवद हुवौ। साथ सारो ही रोवण-कूकण लागौ। राजा नै जाय खवर हुई सो सुण नै मुरछागति हो गई, विवहल होय गयौ। कुंवर सुन्दरदास दीठौ कै कुंवर री आ गति हुई अर राजा री देह छूटै तौ राजा जाय छै। ताहरां कुंवर दैपाळदे नै उठाय छाती सूं लगायौ। नांक भींच सावचेत कियौ। राजा

---

[1]बुद्धि [2]रखने वाला [3]स्नान करता [4]पानी के अन्दर बैठना
[5]वापिस [6]झुण्ड [7]तैराक।

सावचेत हुवौ । फेर कूकण-पुकारण लागा । तद महतै अरज कीवी—जे कुंवरजी री आ दसा हुई । दैपाळ निराठ दिलगीर हुवौ । कूकारोळ[1] सूं कुळराइज गयौ, कह्यौ—महाराजा दिलासा करौ । इण ऊपर जीव टेकौ अर परमेस्वरजी आईज की तौ किण रो ही दोष नहीं । यूं कहि दूहो कह्यौ—

सुख में दुख संचारबो, दुखियां सुख दयाल ।
देवज रूठौ दाग़वे, हरि रूठां बेहाल ॥

यूं कहि राजा नूं समझायौ । सावचेत[2] कियौ अर कह्यौ—महाराज, थांहरै सारी दौलत छै, कुटम्ब छै। इण तरह राजा नूं धीरज बंधाय, जनानी डोढ़ी गयौ। जनाने सारे ही में धीरज दीवो । कुंवर री मां अर महळ[3] दोनूं ही हठ झालियौ—कुंवर रो मुंहडौ देखां । ताहरां कुंवर री मां नै तौ कह्यौ—थे तौ सुग्यांनी छौ । इतरा सास्तर[4] सुणिया छै। कथा सुणी तैमें इतरौ ही हठ सुणियौ छै ? यूं कहि राणी रो हठ छुड़ायौ। फेर कुंवर री रांणी नै फुरमायौ—जे राज रो काम कुण चलावसी, राजा तौ बिरध[5] हुवा । कुंवरजी री यूं हुई । दैपाळदे बाळक छै। राज राखणो छै तौ आपने बिराजणौ छै । परमेस्वरजी निमित धरम-पुन करौ । घणौ सोच करणो नौ असमझ रो काम छै । हठ छोड़ अर लारै रहि कर राज करौ । कुंवर दैपाळदे नै पाळ मोटो करौ । राजा रो काम सुधारौ । इतरी बात कहि कुंवर री रांणी रो हठ छुड़ायौ। सारा लोक-अमराव भेळा होय जाय उण देह रो कारज किया। दाग दे, स्नान करि पाछा ठिकाणे आइया । तीजै दिन तइयो[6] करि, फूल चुगाई गंगाजी में बहिर किया । किरिया कराई । द्वादस रै दिन ब्राह्मण-भोजन करायौ । कुंवर दैपाळदे ने राजा गोद में बैठाय राजा री पाघ बंधाई । तिलक कर सगळा लोकां रो जुहार करायौ । सारा भाई, मुहता, अमराव मुत्सद्दियां कन्है निजराणो[7] करायौ । कुंवर दैपाळदे री हजूरी पासे मुहतौ वेणीदास, चन्दन छड़ीदार सारां ही नै राजा कनकरथ ज्यूं था त्यूंही राख्या । खिजमत सारां ही नै दीवी । सिरपाव दे, कुंवर री सारां ही नै भळांवण दीवी । ओळंगू दिन बारह तांई मसांण में उलंगिया । तेरवें दिन राजा तखत बैठौ । ताहरां हरदान, गोगदान, सिवदान सिर में राख घाती । अतीत होय चालता रह्या । हरदान,

---

[1]रोना-पीटना [2]सचेत [3]स्त्री [4]शास्त्र [5]वृद्ध [6]मृत्यु के तीसरे दिन पर की जाने वाली कर्म-विधि [7]रुपया या मूल्यवान वस्तु भेंट करना ।

गोगदान नै कूकता रोवतां नै घींस नै नोठ हजूर लाया। फेर सारा लोकराज में नवो राज हुवौ। सुन्दरदास मुहतै सारां ही नै धीरज बंधाई। नोबतखानो सरू करायौ।

कुंवर रो जीव नीसरियौ सो देईदास री खोळ[1] श्री ठाकुरां रै खोळ में पड़ी थी तांम्हें जाय पड़ियौ। तद ऊठ ऊभौ रहियौ। देवीदास श्री ठाकुरां नै परणाम कियौ। तद भींतर सूं अवाज हुई—पलक दरियाव तमासो दीठौ? कुंवर कहै—आपरी किरपा सूं। फेर अवाज हुई—जे आ भगवांन री बात किणी नै कही तौ विण-सांयत[2] थांहरी देह छूटसी, तैंसूं खबरदार रहै। इतरो सुण देवीदास दोपहरां रा घरै आइयौ। आगै देवीदास री मां जीमण लियां बैठी थी, कह्यौ—जीमण ठंडौ होय गयौ। ताहरां देवीदास कह्यौ—ताळ[3] तौ कांहीं लागी नहीं। जावण-आवण हीज कियौ। तिड़को[4] टाळि, पांणी पी, गंगाजळी चाकर रै हाथ देनै हाट गयौ। आगै साह अजैपाळ कह्यौ—साबास बेटा, भलो बेगो आइयौ। आज हाटे काम थौ। ताहरां देवीदास कह्यौ—बाबजी, ताळ तौ कोई लागी कोयनी। जावण-आवण हीज कियौ। इतरौ कहि देवीदास कांम लाग गयौ। नामो-ठामो मांड छै। बजार रो नामो-लेखो, लेण-देण देवीदास रै हाथ छै।

ओळंगू हरदान रामदान दोनूं अतीत होय गया था। तीरथां नै रवाना होय गया था सो आगै केदारनाथजी परस, बदरीनाथ परस, बिस्वधार परस, भूठंति मांहीं कर नैपाळ परस, मुक्त क्षेत्र परस, अयोध्या कासी परस पराग[5] जी आय, मकर रो नाहण करि, फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भरायां पछै बैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकण्डेय कुण्ड तरपण किया। फेर कुंवर रा कुरापिंड भराया। रोहणी कुण्ड तरपण किया। महोदधि स्नान करि, दखिण रा तीरथ गया। विष्णु कान्ची, सिव कान्ची परस, सेतुबन्ध रामेस्वर परस, श्री लक्ष्मणजी रा दरसण करि, पंच तीरथ परस, श्री द्वारकाजी परसी। तठै अतीतां दसां रो सांगो हुवौ। ताहरां कह्यौ—आपां गिरनारजी रो तमासो देख पछै थट्टै जासां। आगै श्री हिंगळाजजी परससां।

ताहरां गिरनार आय, गिरनार सूं जावतां विचै पाटण सहर आय डेरो कियौ। परभात री बजार रो भीख नै आया। फिरतां-फिरतां अजैपाळ री हाट

---

[1]शरीर [2]निर्विलम्ब [3]देर [4]धूप [5]प्रयाग।

सांम्हौ दीठौ। ताहरां हरदान बोलियौ—रामदान, तमासो देखाऊं। देव सागै कुंवर जीतां हरां। रामदान देखि कह्यौ, सागी छै। ताहरां हरदान बोलियौ—ऊभारो[1] सरीर तौ आपां हाथां फूंकियौ पण अण हारो[2] तौ सागी[3] छै। घड़ी दोय रह्या, खूब जोयौ। आधा-पाछा होय रह्या। इतरै देवीदास बोलियौ—अतीतां क्यों खड़ा छौ? कासूं देखां भीखी नै मारग लागौ। ताहरां हरदान कह्यौ—रामदान, अे तौ सागै कुंवरजी छै। सागै बोली छै। फेर कन्है खिसक नजदीक आया। ताहरां देवीदास कह्यौ—अतीतां कासूं देखौ, क्यां चाहिजे सो लहौ। ताहरां फेर रामदान कह्यौ—भाई, सागी कुंवर छै। मुजरो करौ। ताहरां निराठ कन्है आय ऊभा रह्या। देखै तौ सागी छै। गुमास्ता आदमी सारा दूर हुवा। ताहरां रामदान कह्यौ—हूं तौ वतळाइस[4]। विना बोलियौ कोई रहूं कोयनी। तिनरै देवीदास वही नीचै मेली नै आडो खोलण नै ऊठियौ। ताहरां कह्यौ—भाई दूहो कहसूं। सांम्हौ जाय पूछियौ तौ हरदान दूहो कह्यौ—

विचित्र कुंवर वखाणिये, च्यारि वरन[5] दिसि च्यार।
सूरज दूजो कनक सुत[6], दीपै जग दातार॥

ओ दूहो हरदान कह्यौ। ताहरां देवीदास सांभळ नै पूछियौ—स्वामीजी, ओ दूहो कहड़ो[7] कह्यौ। थां कठा सूं सीखिया। ताहरां हरदान कह्यौ—कुंवरजी महाराज, म्हारो कह्यौ छै। इतरो कहतां तुरत दोनूं भाई गदगद कंठ होय सिलाम करण लागा, फिस पड़िया[8]। देवीदास पण ऊभौ-ऊभौ देखी अर ऊळखिया[9]। देहरो विदेह होय गयौ पण नांक री टीमी सूं ओळख लियौ। तांहरै देवीदास कह्यौ—आंख्यां आगळ[10] देह री विदेह होय गयौ। ओळखणी आये नहीं, ताहरां आंख्यां सूं ही सलाम कीवी। अरज कीवी— महाराज कुंवार, जिकांरा धणी छोड़ि जावै तिकांरा अे ही हवाल छै। ताहरां दूहो कह्यौ—

धणियां विन दया वणी, दीसै अेसी देह।
चाकर मंगण मात पित, चित बिलखै सारो गेह॥

आपरा बिछोह सूं ओ हीज हवाल सगळां रो छै। इतरो सुण रिपियो अेक खूंजे[11] मांहि सूं काढ़ि हरदान रै हाथ दियौ। जीमण री पाछा आवजौ[12]। बातां

---

[1]ठहरो [2]शक्ल [3]वही [4]बात करूँगा [5]वर्ण [6]कनकरथ का पुत्र
[7]कैसा [8]द्रवित हो गये [9]पहिचाना [10]आगे [11]जेब [12]आना।

करसां। छाना रहिजौ, सुभराज मतां करजौ। राम-राम करजौ ज्यूं लखे कोई नहीं। इतरी कहि सीख दीवी। आप फेर हाट रो काज करण लागा। सांम होई ताहरां वहियां नै संभाई। कोथळो गुमास्ता रै हाथ दियौ। हाट रै ताळा सचवाय नै घर रै वास्तै रवाना हुवा। इतरै वखत हरदान आय जै श्री राम कह्यौ। आप राम-राम कह साथ ले बहिर हुवा। अतीत घर रै वारणे बैठा। आप ही भींतर जाय जीमनै बाहिर आयौ। साह अजैपाळ नै कह्यौ—म्हारे डील में आळस छै। नोहरै जाय तेल मसळाऊं। इतरो कह नोहरै गयौ। गाय, भैंस, बैलियां रो जावतो करि, चाकरां नै कह्यौ—ढोलियो पटसाळ ऊपर ढाळौ। ताहरां ढोलियो पटसाळ ऊपर बिछाय दियौ। ऊपर देवीदास बैठौ, नीचे हरदान, रामदान मुजरो करि बैठा। सारी बातां पूछ ली, सारी बातां कही, सै हकीकत कही। देवीदास सुण कर राजी हुवौ। कह्यौ— रै म्हां बिन सारा ही दिलगीर हुय गया छै? हां कुंवरजी सारा ही घणा दिलगीर हुय गया छै। फेर कुंवरजी कह्यौ— थांहरी कंठी लेवो जाय। डबी जुहार री सुजांण नायक री छै सो थे उठै ले जाय लेवौ। नायक री डबी नायक नै देवौ। हरड़े १। सेर, समरणां अेकमुखी रुद्राक्ष री छै सो हरड़े तो कारखाने रखायजो, समरणां दैपाळ नै देजो। म्हारै महल में ढोलिये रै पगांथिये[1] आळो छै, तिण मांहे छै सो जाय लेवौ। म्हारो नांव मत लेवजौ। ताहरां वै कही महाराज कुंवर रै नाम बिगर वसत कांकर[2] मांगीजे? ताहरां देवीदास कह्यौ—थे यूं कहजौ—अहदारिये गया हुता उठै मिळिया था। ताहरां अ बसतां बताई सो जागां सोभौ ज्यां वसतां लाभै। ताहरां हरदान रामदान कहण लागा—इसी वात म्हांसूं कही न जावै। म्हां तौ परतख्य[3] दरगण किया सो इसी बातां कांकर कहां। भली तौ आ छै आप उठै पधारौ। राज सारो दुखी छै। अठै वांणिये रै घरे कांसूं करसौ। अठै तौ अेक घर में उजाळ छै, उठै सारै देस मुलक में उजाळौ हुवै। हजार कोस में सारो लोक दुखी छै। म्हांनै तौ छोड़ियां नै वरस छः हुवा छै पण चाळीस दिन आपणी सीम[4] में हुवा, सारो लोक रोवे था। माथो टेकियां विसुरण करै था। अर वारह दिन सहर में रहा था सो सगळे सहर में लोगां रै वेळा वखत हांडी चढ़ी नहीं[5] सो उठै आपरो आधार थौ। आप पधारो तौ सूरज ऊगै। भोमियां आप दबा लिया था सो आप

---

[1]पैरों की तरफ [2]कैसे [3]प्रत्यक्ष [4]सीमा [5]खाना नहीं बना।

जांणौ हीज छौ। सो तौ राजा नै धरती नै दुख होसी। इसी घणी ही बातां कही, घणौ ही परचायौ पण देवीदास तौ आ हीज कही—थे जावौ पण म्हारो नांम मत लेवजौ अर आ बात यूं हीज होणहार थी, सो हुई। तद हरदान कह्यौ—बात तौ म्हैं दीठी छै तिकी कहसां, दूजी म्हांसूं कही न जावै। यूं कहि ऊठ मुजरो कियौ। बीस रिपिया खरची रा दिया। फेर देवीदास कह्यौ—आळे री कूंची जवरदार मोहण कन्है छै सो मांग लीजौ। मोहण इतवारी[1] छै। इण भांति कही।

देवीदास जाय सोय रह्यो। इणां तौ उहीज वेळा वन्धुगढ़ रो मारग लियौ सो रात-दिन कासीद खेप हालै ज्यूं चालिया सो दिन ३९ मांहे बन्धुगढ़ जाय पूगा। परभात पोहर छै। राजा कनकरथ दरबार में बैठा छै। कुंवर दैपाळदे खोळै में बैठो छै। उवै समै सवा लखी विणजारो सुजांण नायक पण उवै पांण[2] उठै आय बैठो छै। खबर तौ सहर में बड़ते हीज हुई थी। डेरा कर तुरत सुजांण दरबार गयौ। सुजांण वहोत अदोह कियौ। डोढ़ी जाय सुजांण मुजरो गुदराइयौ। भींतर कुंवर री रांणी सुजांण रो नांम सांभळ नै फिस पड़ी। अचेत होय पड़ी। नीठ-नीठ सचेत कीवी। इसी ही दसा सुजांण नायक री हुई सो सुजांण नायक नै पण चाकरां सावचेत कियौ। ऊठि डेरै गयौ। दूजे दिन पाघ १ घोड़ो १ कुंवरजी मंगायो थौ—जाति रो अेराकी, साथ ले दरबार गयौ। जाय पाघ दैपाळ नै बंधाई। घोड़ो टीकै रो दियौ। मोती नरमादि लायौ थौ सो राजा रै नजर किया। कपड़ो रांणी मंगायौ थौ सो रांणी री नजर मेलियौ। ताहरां राणी कहै—

सूळ फूल सूळी सयन, खान पान सब खार।
पति बिन नायक नारि को, यह सिंगार अंगार॥

नायक सुजांण औ कपड़ो म्हांरै कांही काम नाहीं। ताहरां नायक सुजांण अरज कीवी—कुंवर दैपाळदे परणास्यौ, ताहरां काम आवसी। चूड़ो अेक छलेरो वहोत वेस[3] असील ल्यायो थौ सो नजर गुदराइयौ। सारी वसतां रो लेखो करि सुजांण नायक नै नांणो[4] दिरायौ। मोती-नरमादि जिवां रा रिपिया हजार ४० थेट लागा था तिकै लिया, वधता नायक पाछा दिया। यूं चटपटी करि नायक

---

[1]विश्वास-पात्र [2]समय [3]स्त्री के पूरे कपड़े [4]रुपया।

विदा मांगी। नायक तद बहिर हुवौ।

पछै दूसरे दिन हरदान दरबार आय मुजरो कियौ अर कह्यौ—महाराज बधाई दीजै, कुंवरजी लाधा छै। तांहरै राजाजी कह्यौ—अै कुण छै, पूछौ। तद दरबारी पूछियौ—अतीतां थे कुण छौ? ताहरां इणां कह्यौ—हरदान, रामदान कह्यौ ओळंगू छां, कुंवरजी सूं मिळिया छां। ताहरां राजा गदगद कंठ होय कहै—

गयौ न जोबन बावड़ै[1], मुवा न जीवै कोय।
अणहूणी[2] हूणी नहीं, हुणी होय सो होय॥

राजा कह्यौ—सुन्दरदास, अै बिचारा गहला[3] होय गया छै। उवे री मेहरवानगी रा चाकर था। पेटियौ दिरावौ, दिलासा करौ। ताहरां हरदान कह्यौ—महाराज, म्हे गहला कोय नहीं, बात चौकस[4] कहां छां। म्हे कुंवरजी सूं मिळ, बातां करि, ठावा समांचार लाया छां, सहनांण लाया छां। ताहरां सुन्दरदास अरज कीवी—महाराज अै बोलै तौ सावचेत छै। ऊंचा बोलाय[5] पूछीजे। दिलासा कीजे। ताहरां कह्यौ—थें जांणौ। तद ऊंचा बुलाय पूछियौ। ताहरां हरदान कह्यौ—पाटण सहर मांही अजैपाळ रै घरै छै। हाठ में बैठा नांवो मांडे था, तठै दीठा। पछै आप ही म्हांनै बतळाया। रिपियो अेक म्हांनै जीमण नै दीनौ अर कह्यौ—रात रा छांनेसे[6] आवजौ। ताहरां जीमण करि तुरत गया। घरै जाय अेकान्त बैठि, सारी बातां पूछी। फुरमायौ छै—डबी अेक सुजांण नायक री, हरड़ै अेक सवासेर री, समरणां अेकमुखी रुद्राक्ष री, कंठी अेक थांहरी, इतरी वसतां म्हांरै महल में ढोलिये रै पगांतिये आळे में कळ छै, उण में सरव वसतां छै। अर आळे री कूंची मोहण सेजवारदार कन्है छै। ताहरां मोहण पण हजूर खड़ो थौ तिण कह्यौ—महाराज, चौगस कूंची तौ म्हारै कन्है छै। ताहरां राजा कह्यौ—ओ तौ महल उवै दिन जड़ियौ थौ सो खोलियौ कोई नहीं सो साथे जावौ, महल खोलौ, आळो संभाळौ। ताहरां मोहण सेजवरदार कुंवर दैपाळदे नै साथ ले महल में गयौ। आळो खोलियौ[7], कळि किया। वसतां च्यार नीसरी सो राजा रै हजूर ले आया। राजा वसतां देखी, खूब खुस्याळ हुवौ। राजा हरदान नै वसतां रो पूछियौ—विणजारे री डबी तौ विणजारे नै दीजौ। थांहरी कंठी थें लीजौ,

---

[1]लौटे [2]होनी [3]पागल [4]होशियारी से [5]बुला कर [6]चुपके से [7]खोला।

हरड़ै कारखाने राखज्यौ। सुमरणां दैपाळदे नै दीज्यौ। ताहरां कंठी हरदान नै दीवी। विणजारे नै डबी देणी। असवार दोय चढ़िया। कोस बीस सुजांण नायक नै जाय पहोंच्या[1]। कह्यौ—सुजांण नायक, थांनै राजाजी साहिब सताब पूठा बोलावै छै। जरूरी काम छै। ताहरां सुजांण चढ़ि साथे हुवौ। तद राजा हरदान री खिदमत कराई। सिरपाव दियौ। डेरै नै सीख दीवी। तद डोढ़ी बुलाय पूछियौ। हरदान सारी बात मालम कीवी। ताहरां राजलोक अरज कीवी—गुड़ बंटायजे, नौबतखांनो सरू कीजै। इणनै सिरपाव वधाई दिराजै। ताहरां सुन्दरदास हाथ जोड़ अरज कीवी—जे आ बात कासूं छै? कारज[2] तौ आपां आपणे हाथ सूं कियौ छै। फेर अै सागी देखि आया, तिका पण बात चौकस। सहिनांण[3] सब मिळिया पण डूंबी बात छै। चार ही ठावा मांणस मेल्ह सांची खबर मंगावौ, चौकस करि आवै। राजा कह्यौ—अवल छै। ताहरां हरदान डेरै गयौ। दूसरे दिन फेर राजा दरबार में आय बैठौ। साह सुन्दरदास, गारा अमराव मुत्सद्दी आय बैठा। हरदान, रामदान नै दरबार में बुलाया। भींतर राजलोक अर कुंवर विचित्र री माता ताकीदी करै छै। मसलत करि रह्या छै। आदमी मेलण वाळां री गिणती करि रह्या छै। इतरै नायक सुजांण पण आयौ। पागड़ा छांड़ि राजा नै मुजरो कियौ। राजा हरदान रो कही बात सुजांण नायक आगै कही। डबी मंगाय हाथ दीवी। ताहरां डबी देखि सुजांण कह्यौ—बात सांची। डबी री गुम कुंवरजी बिना दूजै नै पण कोयनी। फेर सुजांण डोढ़ी गयौ। ताहरां भींतर सूं कहायौ—कुंवर नै ले आवणो छै तौ आप पधारौ नहीं तौ कोई आवै नहीं। जै साहूकार नै आदमी आयां री खबर हुई तौ कहीं परदेस मेल देसी। पछै क्योंही वटसी नहीं[4]। ताहरां बात सुणि नायक दरबार आयौ। ताहरां राजा साहब साह सुन्दरदास नै फुरमायौ—आदमी तैयार करौ। खरची दे विदा करौ। तद राजा सुजांण नायक नै कह्यौ—इसी तजवीज करां छां, पछै थांहरै कासूं सलाह आवै? ताहरां सुजांण कहै—बात तो मैं ही हरदान नै भांत-भांत[5] करि नै पूछी सो बात तौ सगळी ही सांची छै। झूंठ तौ मतां जाणौ और डोढ़ी मन्है बुलायौ थौ सो आ फुरमायौ छै—झूंठ तौ मतां जाणौ, पण दूजा रो कांम नहीं, यूं अरज करै छै। ताहरां सुन्दरदास कह्यौ—ल्यावण नै तौ महाराज

---

[1]पहुँचे [2]क्रिया-कर्म [3]चिन्ह [4]कुछ भी हाथ नहीं लगेगा
[5]तरह-तरह से।

पधारसी, पण मांणस च्यार ठावा जाय सांची खबर ले आवै। बात चौकस है, महाराज पधारसी। डूंबी बात छै, कदाचित झूंठी होय जावै तौ पाखतो रा सोरी तथा गोई डूंबी बात जांण कोई हंससी। और कंवरजी री देह तौ आंपणै हाथ सूं फूंकी छै। सारीखे अगुहारे सारो मुलक भरियौ छै। ताहरां नायक कहै छै——

कहि मुहता पायौ किणे, परमेसर रो पार।
जीवां मार जिवाड़ही, जिवंत हंदा मार॥

साह सुन्दरदास, परमेस्वर री गति अपार छै। पण आपसूं म्हारी अेक अरज छै—महाराज तैयारी करौ। श्री द्वारकाजी री यात्रा रो मजकूर करि, पाटण जाय उतरस्यां। जे मन परचसी[1] तौ कुंवरजी नै ले आवसां, नहीं तौ आपां जाय तीरथ परस आसां। बात कठांई[2] जाहिर मतां करौ। ताहरां सुन्दरदास कह्यौ—आ बहोत आछी कही। तद महाराज सूं पण अरज कर, तेयारी कराय, राजलोक पण अरज कराई। ताहरां महाराज पण कही—कुंवर री मां अर कुंवर रा महळ दोनां नै ही तैयार किया। सुन्दरदास नै मुलक रो सरब कांम सौंपियौ। ताहरां साह अरज कीवी—कुंवर दैपाळदे नै अठै राखौ ज्यूं मुलक रो जापतौ[3] हुवै। ताहरां राजा कह्यौ—दैपाळदे बिनां म्हारै घड़ी अेक सरै नहीं। बासली सरम सारी बात री थांहरै हाथ-हवालै छै।

राजा तैयार हुइयौ। असवार ५०० सूं बहिर हुवौ। साथे कांमदार काम रे वास्ते वेणीदास नै लियौ। चन्दन चौपदार, मोहण सेजबदार और भी कुंवर रा सारा हजूरियां नै साथै लिया। ओळंगू हरदान, गोगदान, रामदास, सिवदान च्यारां नै साथै लिया। राजा सुजांण नायक नै कह्यौ—थे पण साथै हालौ[4]। सुजांण कही—बहोत भली बात छै। सुजांण रै साथै आदमी था तिकां नै कह्यौ—थे सारा ही जाय वाळद भेळा हुवौ। सवालाख नायक सूं मुजरो कहिजौ—म्हनै महाराज अेक काम मेलियौ छै सो मास अेक लागसी। थे चिन्ता मतां करजौ। वसत दांणो सावधानी सूं बेचज्यौ। इतरो कहि आदमियां नै सीख दीवी।

आदमी दस कन्है राखिया। खरच खजानों साथ ले, राजा कनकरथ कूच कियौ सो महिने डेढ़ सूं पाटण पूगौ। सहर रै नैकाळ[5] बड़ो तळाव हतौ।

---

[1]मानेगा [2]कहीं पर भी [3]प्रबंध [4]चलो [5]निकलने के रास्ते पर

ऊपरि बड़ो बाग थौ, तैं बाग में डेरो करि हरदान रामदान नै बोलायौ। जावौ खबर ले आवौ। तद हरदान राजा सूं अरज कीवी और बोल्यौ—आदमो दोय कोई मानवर[1] दूजा साथे देवौ। ताहरां राजा चन्दण चौपदार और वेणीदान नै बुलाय साथे दियौ और फुरमायौ—कमरां खोल नै साथे जावौ। कुंवर नै देख, चौकस बात कर आओ। ताहरां वेणीदास, चन्दण चौपदार, हरदान, रामदान ओळखवानै साथे ले बजार गयौ। जाय हाट रै बारणे आया थका खड़ा रहि देखा किया। देखत-पांण[2] वेणीदास कह्यौ—अरे, छै तौ सागे ही। जितरै अै हाट नजीक जाय उभा रह्या। तद देवीदास इणांरे साम्हौ दीठौ। देखतां ही सारा ही मुजरो कियौ। ताहरां साह अजैपाळ बोलियौ—थे कुण छौ? देवीदास कह्यौ—कांसूं लेस्यौ? वेणीदास कह्यौ—क्यां कपड़ो, क्यां दांत लेस्यां। ताहरां वेणीदास कह्यौ—बापजी, पेहली हाट में दांत कपड़ो छ तिकौ देखाळूं[3]। ताहरां अजैपाळ साह कह्यौ—जावौ, वसत देखाळौ। साह रै हरदत्त रै हुण्डी रा रिपिया रहै छै, तिकै पण लेता आजौ। यूं कहि देवीदास ऊठियौ। अै पण चारों साथि हुवा। दूसरी हाट में जाय ऊभा। देवीदास सामने जोय मुळकियौ[4], कह्यौ—वेणीदास नूं क्यों आयौ? ताहरां वेणीदास जमी में हाथ लगाय, सलाम करतौ पगां में सिर दियौ। आप ऊंचो उठाय छाती सूं भीड़े मिळियौ। चन्दण चौपदार तसलीम करतै-करतै जाय पगां में माथो दियौ। आप पूठली थाप ऊंचो लियौ। ओळंगुवां मुजरो कियौ। ताहरां कुंवर कह्यौ—हरदान थनै इतरो वरजियौ थौ, पण कह्यौ न लागौ। तद अरज कीवी—महाराज, इसी बात दीठां पछै क्यों कर रह्यौ जावै। अर फेर हो म्हे तौ थांरा ही चाकर छां। थां बिनां म्हारी आ दसा हुई सो आप दीठी हीज हुती। सु म्हांरी कासूं, राज सारै ही इसी दसा थी। जद म्हां जाय कह्यौ तद कांई'क दसा सुधरी छै। हमें सारा दरसण करसी ताहरां सगळां रो रंग फिरसी[5]। इतरी बतळावण करी। पछै वेणीदास नै बतळायौ—थे वेणीदास आया, रह्यौ न गयौ। वेणीदास हाथ जोड़ अरज कीवी—जे महाराज, इसी खुस्याळी सुणियां पछै क्यों कर रह्यौ जावै। आप मोटा छौ, विचार करि देखौ। इतरी सुण फेर पूछियौ छै—तौ सारा साथ

---

[1]मान और गंभीरता वाले [2]देखते ही [3]दिखाऊँ [4]मुस्कराया
[5]सब में परिवर्तन आयेगा।

नै कुसळखेम[1] छै, ताजा छै ? ताहरां अरज कीवी—आपरा आज दरसण हुवां सारा कुसळखेम, ताजा। फेर फुरमायौ—महाराज, राजलोक, साह सुन्दरदास और ही सारा चाकर खुस्याळ होसी। ताहरां वेणीदास कह्यौ—आज आपनै मिळण सूं सारा ही चाकर खुस्याळ होसी। कुंवर फुरमायौ—आज क्योंकर मिळीजसी[2]। महाराज तौ बन्धुगढ़ बिराजिया, अर हूं अठै बैठौ। ताहरां चन्दण चौपदार अरज कीवी—इसी बात सुण महाराज कियां बैसि[3] रहै। महाराज, माजी साहिब, दैपाळदे, बहूजी साहिब, हजूरी, खवास, नायक सुजांण सब ही आया छै। और आपरा नौकर अेसा कुण कमनसीब छै जो अेसी बात सुणनै पाछा रहै। ताहरां कुंवर कह्यौ—महाराज भी पधारिया ? वेणीदास कह्यौ—आया छै। आप कह्यौ—आछी नहीं विचारी, बेविचार कियौ। कठै उतरिया छै ? ताहरां अरज कीवी—सहर रै कन्है तळाव छै, तें पर बाग छै, तेथी आय खड़ा था। डेरा री तजवीज करै था। म्हांनै तौ फुरमायौ—जे हरदान मांग जाय देखि चौकस करि आवौ। ताहरां कुंवर हंसियौ—थांने हरदान रो अपरचो पड़ियौ। वो डूम छै, जिण जाय कूड़ी बात कही हुसी, सो हरदान कूड़ बोलै। नहीं हरदान रै सरीखो सांच रो बोलण वाळौ मैं दूजो कठेई[4] नहीं देखूं छूं। पण थे हमें सताब आवजौ, महाराज सूं मुजरो अरज करिजौ, अर डेरै बैठा विराजज्यौ। हमें कोई नै उले पासे[5] मतां आवण देज्यौ। घड़ी दोय रात गयां हूं हाते ही आऊं छूं। थै काहलाई मतां करज्यौ। इतरी कहि सीख दीवी। आप पाछो हाटे[6] आयौ। अजैपाळ साह पूछियौ—कपड़ा दांत रो सोदो वणियौ ? इण कह्यौ—क्यूंहेक तौ कांम वण गयौ छै। इतरौ कहि घरां नै ऊठियौ।

वेणीदास, चनण चौपदार, हरदान, रामदान, च्यारों ही महाराज कन्है गया। मुजरो करि वधाई दीवी। राजा बहोत हरखवन्त हुवौ। रांणी अर कुंवर री रांणी दोनूं कनांत[7] रै कन्है आय बैठी। सुजांण नायक आयौ। राजा कनकरथ सारो हकीकत पूछी। वेणीदास, चन्दण, हरदान सारो मचकूर हुवौ सो मालम कियौ अर अरज कीवी—हमांर कोई आदमी कन्है आवण मतां दीजौ। घड़ी दोय गयां

---

[1]कुशल-क्षेम [2]मिला जायगा [3]बैठे [4]कहीं पर [5]इधर-उधर
[6]हाट पर [7]पर्दा।

हूं अेकलो आऊं छूं। बात सुण राज अर राजलोक सारा ही राजी हुवा। हमें घड़ी च्यार दिन वासलो[1] थौ सो च्यार वरस बराबर हुवौ। खाणे-दाणे रो सगळौ जाबतो साथे वेणीदास कियौ। लोक सारो खुस्याळ हुवौ फिरै छै। साह अजैपाळ देवीदास पण घरै जाय जीमण जीमिया। देवीदास सूने नौहरे जाय मन में चिन्ता करै छै। श्री परमेस्वर रो ध्यान सुमरण करण लागौ। बहोत दीनता करि नै श्री भगवान नै अरज करण लागौ।

कहि अब हूं कैसे करूं, दीनानाथ दयाळ[2]।
लाज हमारी राखि प्रभु, बहुत दुखी है बाळ॥

श्री नारायणजी प्रतिज्ञा राखौ। हमें कासूं होसी? आपकी राखी प्रतिज्ञा रहसी। बहोत अजीज करुणा कीवी। इण तरह सांम हुई।

ताहरां नोहरै में सूं ऊठि घरै आयौ। महल में जाय स्त्री नै कह्यौ—परभात तौ हाट रो कांम रह्यौ अर लोकां सूं लेखो छै। वेळा नहीं सो दिन पांच अथवा सात रात री किसत करणी, लेखो पूरो करणौ छै। ताहरां बहू कही—भली बात। देवीदास कह्यौ—ऊपरले आळे में लाल गत्ते री बही पड़ी छै सो उतार देवौ। बहू उतार दीवी। वही ले बहू जे कह्यौ—जाबतौ राखजौ। इतरो कहि आप खिड़की रै मारग हुयौ बजार मांही करि नै नैकाळ सहर सूं होई, तळाव रो मारग लियौ। आगै राजा रो साथ पण मारग साम्हौ जोय रह्यौ थौ, जितरै आवतौ[3] नजर पड़ियौ। महाराज सूं चन्दण मालम कीवी—पधारै छै। सारो लोक दरवाजे कन्है आय ऊभौ रह्यौ। वेणीदास, चन्दण दोनूं साम्हा आय मुजरो कियौ। खमा-खमा होय रही छै। जितरै सुजांण नायक दैपाळदे नै ल्याय पगां लगायौ। सुजांण सूं बाथां घालि मिळियौ। बड़ी बतळावण[4] कीवी। भींतर पधारिया जठै सूं महाराज नजर पड़िया। तठै सूं कुंवर तसलीम करतौ-करतौ जाजम रै छेहड़े गयौ। ताहरां राजा साम्है आयौ। कुंवर जाय पांवां में सिर दियौ। राजा हाथ सूं उठाय छाती सूं लगाय लियौ, पण कुंवर गदगद कंठ होय गयौ। बोल तौ दोनां में किहीं नै आयौ नहीं, पण छाती भरीज गई[5]। राजा हाथ खेंच गादी कन्है बैसाणियौ। मुंहडै ऊपर रूमाल फेरियौ। रूमाल सूं

---

[1]पिछला [2]दयालु [3]आता हुआ [4]बातचीत [5]छाती में करुणा उमड़ पड़ी।

आंख्यां पूंछी, साथ हेठै बैसाणियौ। पछै वेणीदास नै कह्यौ—मुहरां ल्यावौ। तद वेणीदास सताब सूं मुहरां हाजर कीवी। राजा रूमाल ले कुंवर ऊपर निछरावळ कीवी। सुजांण नायक सिरपेच कुंवरजी रै सिर पर बांधियौ। मुहरां अेक सौ निछरावळ[1] कीवी। पछै सारो लोक निछरावळ कीवी। निछरावळ रो बड़ो ढिग मुहरां रिपियां रो हुवौ। ताहरां कुंवरजी कह्यौ—वेणीदास अै ऊंची रखावौ। ताहरां फेर फुरमायौ—निछरावळ छै सो हरदान रामदान नै दिरावौ। ताहरां हरदान मुजरो करि कहै—

दातां पत दातार सूं, वाखाणो[2] कवियात।
कीरत तांहरी कनक सुत, इळ[3] मांहे अखियात[4]॥

इसो कहि झोळो मांडि, सरब भेळी करि गांठ बांधी। यूं बात करतां नाजर हरिराम आयौ। कुंवरजी सूं मुजरो कियौ। कदीमी नाजर बूढ़ो थौ सो कुंवरजी ऊठि मिळिया, बड़ो अदब कियौ तद हरिराम कह्यौ—लोक सरब उवा ऊठौ। तद लोक सरब ऊठि ऊभा हुवा। मसालची पीळ चौसा नै गया। इतरै कुंवर री मां आई। कुंवर ऊठि सलाम करतौ-करतौ मां रै पगां लागौ। मां ऊंचो उठायौ, कुंवर रो माथो छाती सूं भीड़ियौ, मुंहडे ऊपर हाथ फेरियौ। मां-बेटो गदगद कंठ हुवा। इसा नजर आवै जांणै काठ री पुतळी पड़ी छै खड़ा हीज रह्या। ताहरां राजा ऊठि, हाथ झालि, उरो खैंचि गादी कन्है आंण बैसाणियौ[5]। कुंवर री आंखी रांणी लुही मुंहडे ऊपरि हाथ फेरै छै। बडारण सांम्हौ जोयौ। ताहरां बडारण मोहरां री थैली हाथ में दीवी। कुंवर रै ऊपरि निछरावळ करि नाजर हरिराम रै हाथ में दीवो। बात करि रांणी जी धाय सांम्हौ दीठौ। सगळां रा सरीर हरख री बिरखा सूं भींज गया।

घणै जतन सूं कुंवर नै घर लाय, भांत-भांत रा भोजन कराया। चळू कियौ, पांन अरोगियौ, अतर लगायौ। जितरै नाजर हरिराम आयौ। मुजरो कियौ, कह्यौ—कुंवरजी, भींतर माजी बुलावै छै। कुंवर ऊठि मां कन्है गयौ। मां उवारणा[6] लिया। धाय, वडारण, सहेली उवारणा लिया। मां कह्यौ—बेटा महाराज उतावळ करै छै। सताबी करि घरै हालौ। ताहरां कुंवर कह्यौ—माजी वैगा ही हालस्यां। आडी ऊभी बातां करि ऊठियौ। आपरै जनाने गयौ।

---

[1]वार-फेर [2]बखानो [3]दुनियाँ [4]प्रसिद्ध [5]बैठाया [6]बलैय्या ली।

ओळंगुवां आणि मुजरो कियौ। राग-रंग हुवा, हंसिया, खेलिया, पौढ़िया। हरमाळा सरब तमासो देखियौ। झांझरकै कुंवर ऊठियौ। तिसै हरमाळा पण वड़ सूं उतर घरै आई। कुंवर पण दरवाजे सूं निकळ घरै आयौ। घरै आय दिसा नै गयौ।

हरमाळा सरब हकीकत बहू नै कही। बहू कह्यौ—बातां मानूं नहीं। लुगाई तौ बीजी हुवै पण मां-बाप बीजा कठासूं हुवै। कदेई आगै पण सुणिया था? 'आ बात मानूं नहीं। फेर हरमाळां नै खराय[1] ठीक पूछियौ। ताहरां हरमाळा कह्यौ—न मानो तौ थे जावौ, चौकस देखौ। उतरादे पासे अेक मोटो वड़ छै सो थे वड़ ऊपर चढ़ज्यौ। डाळो अेक बाग में झुकियोड़ौ, सो उवै[2] डाळै माथे चढ़ज्यौ, सरब दीस सी। ताहरां बहू कह्यौ—हे हरमाळा, अबार तूं जाय देख, ओ डेरो छै कै कोई छळ-छिद्र छै। ताहरां हरमाळा कळस[3] ले तळाव गई। जाय नै सरब तजवीज दीठी। देख नै पाछी आई, कह्यौ—बाईजी छै तौ मानवी बड़ो डेरो। घोड़ा छै, रथ, पालकी छै। कठाही[4] रो राजा छै। सोने-रूपे[5] रा छड़ीदार छै। इसी बातां सुण देवीदास री बहू मन मां राखी। विचारियौ, आंख्यां देखी पछै कहीस[6]। नेट[7] गोली री बात छै। मानणी[8] न आवै।

देवीदास पण सांझ रो घरै आय, जीमण जीम महल गयौ। घड़ी-पलक बतळावण करी। बही ले बहिर[9] हुवौ। वासे बहू परण गहणो-कपड़ो उतार, सादो पहराव पहर बहिर हुई। कुंवर नै तौ सदामद[10] लोग साम्हा आय, मुजरो कर ले जावता त्यों ले गया। बहू पण वड़ ऊपर चढ़ि, डाळे ऊपर जा बैठी। सारी बातां सुणी, तमासो दीठौ। ताहरां कुंवर आपरी डोढ़ी भींतर गयौ। रांणी साम्ही आय मुजरो कियौ। सु जकै[11] दिन रांणी सवाई कीवी थी। अेसो ही पाल चौसरो चन्दण रो छौ सो अेक ज्योति होय गई। कुंवर रांणी रै हाथ ऊपरि हाथ दै भींतर पधारियौ। सो आ वड़ रै डाळै ऊपर बैठी थी, ज्यो सरब देखी त्यों ही विवहल होय गई। कुंवर तौ पौढ़ि रह्यौ, आ वड़ सूं उतरि घरै गई। खिड़की खोल महल में जाय सूती सो नींद तौ कोई पड़ै नहीं।

---

[1]खरा कर [2]उस [3]कलश [4]कहीं का [5]चाँदी (के) [6]कहूँगी
[7]आखिर [8]मानने में [9]रवाना [10]हमेशा की तरह [11]उस।

झांझरको हुवां साह रै बेटे रो बहू काम-काज करण लागी। जितरै देवीदास पण घर में काम-काज करै छै। वही-पाना जोवै छै। ताहरां देवीदास री बहू सासू कन्है जाय सरब हकीकत कही। इसो सो अेक उपदरौ[1] तूफान छै। दीठी थी तिकी सरब वात कही। तद साह री बहू साह नै कही—दिन नव[2] हुवा जावतां। साह अचम्भै में हुवौ, मुण करिनै। फेर खराय नै पूछियौ। ताहरां देवीदास री बहू कही—बात चौकस[3] छै। थांसूं जतन हुवै सो सताव करौ। थांहरो बेटो थांहरै कन्है नहीं रहै। तद साह साहणी नै कह्यौ—कै बेटे री बहू नै कहौ कै आ बात कठै ही जाहिर मतां करै। आज हूं जाय, देखि ठीक करि आऊं, जितरै लखाव[4] मतां करौ। यूं कहि साह अजैपाळ दिसा नै गयौ। देवीदास पण दांतण-संपाड़ौ करि ठाकुरद्वारै गयौ। दरसण करि भेंट कीवी अर अरज करण लागौ—खांनेजाद री प्रतज्ञा आप राखी रहसी। इसी भांति सूं बहोत अजीज कीवी—

हो तुम दीनानाथ, हो अनाथ कब को रटूं।
ग्रहियौ मेरो हाथ, हाथी वाळे हाथ सूं॥

इसी करुणा करि गद-गद कंठ हुवौ अर घरां आयौ। रोटी जीम बजार गयौ। वजार रो कांम-काज करण लागौ। बाप पण निगेदारी[5] राखण लागौ। देखां कोई हमार ही आवै। फिरियौ पण वजार में तौ नजर आयौ नहीं। सिंझ्या[6] पड़ी जीमिया घर जायनै। रात घड़ी दोय गई। महल में गया और घड़ी-पलक बातां कर, बही लेनै बहिर हुवौ सो बाग गयौ। साह पण पूठे लाग गयौ। कुंवर नै तौ सदामद आय भींतर ले जावता त्यूं ले गया। साह वड़ ऊपर चढ़ि, उण डाळे बैठ तमासो देखै छै। कुंवर राजा रै मुजरै गयौ, आगै जाय बैठौ। इतरै सारा ही हवाळी-मुवाळी मुजरो कर बैसे छै। सारा नै ही आप-आप रै हवाळे रो जबाब पूछै छै। खरच रो मारग पूछै छै। जितरै सुजांण नायक आयौ। मुजरो कियौ। कुंवर हाथां झाल आपरै कन्है बैसाणियौ[7]। जितरै सुजांण नायक अरज कीवी—कुंवरजी, महाराज अबै ताकीद करै छै। घरै पधारौ, लारै कांम बिगड़ै छै। इतरै राजा फुरमायौ—बेटा, अठै कासूं कांम छै? और

---

[1]उपद्रव [2]नौ [3]पक्की [4]मालूम होने का संकेत [5]निगाह [6]संध्या [7]बैठाया।

उठै थांरै अेक पिंड ऊपर हूं तौ रिसाणौ होय अठै आय बैठौ। लारै कूड़ सांच करी। हमें तयारी करौ। लोक सरब उतावळ[1] करै छै। नायक री बाळद पण पड़ी छै। खरच लागै छै, नेट तौ व्यापारी छै। माल खराब होवै छै। बाळद रो कांम तो बेटा थेहो जाणौ छौ। अेक सुजांण रै पिंड ऊपर छते सूं नायक रो जीव छै सो तौ म्हे साथ ले आया छां, तयारी करावौ। परभात जीमण जीमनै चढ़ां। ताहरां कुंवर कह्यौ—हां महाराज हालसूं[2]। इतरै थाळ आयौ, अरोगियौ, चळू कियौ[3], खसबू लगाई। कुंवर नै मां रो बुलावौ आयौ, उठै गयौ। ताहरां मां पण आ हीज कही—हालण रै वासते सारो लोक आतुर छै। महाराज निपट काहल करै छै। थांरो मुलाहिजो करि दबाय नै कहै न छै। तैंसूं संवारै[4] तौ हालियां सरसी। उठै कुंवर आ हीज कही कै हालमां। इतरी कहि ऊठियौ, आपरी डोढ़ी गयौ। सदामद आवतां साम्हा सहल-सहेली त्यूं हीज मुजरो कियौ। भींतर ले गया। उठै पण इणहीज भांति मचकूर हुवौ सो साह अजैपाळ आपरै कन्है सुणियौ। सो साह आ मन में विचारै छै—जे आज परभात बेटो कुसळे आवै तौ फेर निकळण कोयनी देऊं। फेर मन में आ विचारै छै—कै हमारू[5] वड़ सूं नीचै उतर नै हाथ पकड़ घरै ले जाऊं। फेर साह विचारी—जै कदाचित हूं हाथ पकड़ियौ तौ हूं तौ अेकलो छूं अर अै घणां छै। मनै मारि इयेनै परहौ ले जासी। तौ बाणिया बुद्धि करनै हिणा[6] तौ चुप रह जावणौ। परभात कुसळे घर आवै। यूं विचार आपरा देव-दुरग सरब मनाया। इच्छा कीवी—परमेस्वरजी बेटे नै कुसळ ले आवौ। यूं कहि वड़ सूं उतर घरां नै बहिर हुवौ। पण साह रा पग घरां नै बहै नहीं। साह रा सत खोळा[7] होय गया। घरै आय सूतौ पण नींद नहीं आवै। चटपटी लागी।

ओछै जळ में माछळौ, तड़फड़ जेम हुवंत।
निसा गमाई नींठ सों, करणा दुख करन्त॥

यूं करतां दुख सूं दिन ऊगौ। ताहरां देवीदास ही लोटी झलाई[8]। तद साह पण कह्यौ—हूं पण साथै चालूं छूं। बात करणी छै। दोनूं दिसा गया। पाछा घरै आया। दांतण कर, सांपाड़ो कर, साह ठाकुरद्वारे जाय साथे दरसण किया,

[1]जल्दी [2]चलूंगा [3]मुंह धोया [4]कल [5]अभी [6]इस समय [7]हताश और भयभीत होना [8]पकड़ाई।

भेंट कीवी, परदक्षणा दीवी। देवीदास सहस्रनाम रो पाठ कियौ। बहोत करुणा कीधी। गरीब प्रमांण दंडवत करि, घर नै बहिर हुवा। घरां रोटी जीम बजार आयौ। देवीदास नै भींतर बैसाणियौ। साह हाट रै बारणै[1] बैठो नामौ मांडै छै।

उठै बाग में बैठे राजा कह्यौ—नेट कुंवर आपां कन्है आवै छै। आपां कहां, सु इण बात सूं हालै नहीं। आपां हालो[2] ज्यां जाय नै ले आवां। ताहरां राजा कनकरथ घोडै असवार हवौ। आदमी बीस साथे ले, वेणीदास, चन्दण चौपदार

[illegible]

साहजी, पारका बेटा थांरै कन्है रह सके ज नहीं। च्यार दिन रिसाय[4] नै म्हांसूं थांहरै आय बैठौ तौ कोई गुनहो करियौ नहीं। थे भला मांणस छौ तौ च्यारि दिन थांहरै घरे आय रहियौ। थे राखियौ तौ सखरी[5] कीवी। हमें सागेई माईत पहोंता क्योंकर छोड़सी। थे घणी करसो तौ थांहरी खाध[6] लेसौ, पण बेटो तौ आवै नहीं। ताहरां साह कह्यौ—घरै जायोड़ौ[7] छै। इण री दाई मौजूद छै। धाय छै। म्हारै कबीले रा सारा जांणै छै। सगाई कर परणाया छै सो सभार जांणै छै। छोटे सूं मोटो कियौ छै, सो सारो लोक जांणै छै। ताहरां राजा पण कह्यौ—इतरा थोक म्हारै पण हुवा छै, तिका सरब लोक पण जाणै छै। म्हारै पण इणरी धाय, वडारण, रमावणवाळी छोकरी, चाकर सरब मौजूद छै। साहजी थे जोर मत करौ। पारको[8] बेटो बेटो क्यूंकर रहसी। ताहरां साह ऊठ कूकियौ, उतावळो बोलियौ—रै लोकां देखौ, लांठौ थकौ खोसै[9] छै। देखो रै राज राज छै, म्हारै बेटे रो धणी हुवौ छै। ताहरां बजार रा लोक सरब भेळा हुवा। कोतवाळ आय ऊभो रह्यौ। और पण राज रा मांणस बजार में फिरै था सो सरब आय भेळा हुवा। बातां सांभळी[10]। सु साह रो बेटो तौ सारा ही दीठौ। नानै[11] सूं मोटो हुवौ। राजा नै कह्यौ—ठाकुरां, इये नै तौ म्हे भली

[1]दरवाजे पर [2]चलो [3]किसका [4]नाराज होकर [5]अच्छी [6]खाने-पीने का खर्चा [7]जन्मा हुआ [8]पराया [9]छीनता है [10]सुनी [11]छोटे।

भांत जांणां छां। म्हारै हाथां में मोटो हुवौ छै। ताहरां राजा कह्यौ—थे क्यां न जाणौ, थांहरो सहर छै पण म्हारै सहर हालौ, छतीसों ओळखे[1] कै नहीं। म्हांरै पण हाथां में नानै सूं मोटो हुवौ छै। फेर इण कुंवर नै हीज पूछौ, आपै ठीक पड़सी[2]। ताहरां कोटवाळ पूछियौ—क्योंकर मोटियार, कासूं कहै छै? ताहरां कुंवर कह्यौ—बेटो तौ इयां रो ही छूं। तितरै साह कह्यौ—रै कपूत, कासूं कहै छै, कैंरो बेटो छै? ताहरां फेर कह्यौ—थांहरो बेटो छूं। ताहरां कोटवाळ कह्यौ—रै मोटियार, यूं विचळियौ क्यूं बोलै छै। भांग पीवी छै, किना बावळौ[3] हुवौ छै? ताहरां देवीदास कह्यौ—न तौ मैं बावळौ हुवौ छूं अर न भांग पीवी छै। ताहरां कह्यौ—तूं सांची कह। तद देवीदास कह्यौ—बात त्यौं छै त्यौं छे। थांहनै इण बात री माहित नहीं। म्हारा दोनूं ही बाप छै। तद कोटवाळ, पंच हंसिया—औ बड़ो तमासो। कह्यौ—जी औ तपावस म्हांसूं नहीं होवै, राजाजी करसी। ताहरां कह्यौ—थे सगळा जांणौ छौ फेर झगड़ो नाथो छौ[4]। ताहरां कह्यौ—बेटो थांहरो छै। ताहरां राजा कह्यौ—बेटो साह रो छै, थे इयांन कहौ छौ। हे पंचों, थे पंच कहावौ छौ, लोकायक में पण पंच परमेस्वर कहिजै छै। तैंसूं थे इसी बात क्यूं कहौ छौ। बेटो म्हांरो छै। वाणियो असखेल करै छै। ताहरां साह अजैपाळ कह्यौ—तौ चाल राजाजी पास। ताहरां राजा कह्यौ—हालौ, प्रथ्वी रो राजा छै, परमेस्वर रो अंस छै। देख-तपावस[5] करसी। ताहरां दोनूं ही कुंवर नै ले राजा जी रै हालिया। सहर रो लोग घणौ साथे हुवौ छ। तमासगिरी कोटवाळ तौ इतरी कही—राजा रै पहिलां ही हजूर जाय राजा सूं मालम कियौ। इये तरह रो बजार में कजियो छै। ताहरां राजा कह्यौ—कुण कूड़ौ, कुण सांचो छै। तद कोटवाळ कह्यौ—बेटो साह रो छै। म्हां सारो ही बेट नै पूछियौ, तांहरै उवौ कह्यौ—दोनूं ही म्हारा बाप छै। तिकै सूं गम नहीं कैंरो बेटो छै। हूं तौ इतरी छोड़ि हजूर आयौ। नेट हजूर ही आवसी। जितरै आवतां नजरे पड़िया। राजा नै चिन्ता ऊपजी। तितरै राजा कोटवाळ नै पूछियौ—रजपूत कुण छै, कठै रो छै, कुण जात रो छै, कासू नांम छै? ताहरां कोटवाळ कह्यौ—यूं तौ मैं पूछियौ कोयनी पण छै तौ असराफ।

---

[1]पहिचाने [2]अपनेआप सच्चाई का पता लग जायगा [3]बावला
[4]झगड़ा मोल लेते हो [5]पक्का निश्चय।

तरै तौ राजा रासी दीखै छै। पछै फेर महाराज देखिस्यौ हीज। तितरै डोढ़ी आया हीज। दरबारी भींतर मालम कीवी—साह अजैपाळ अर रजपूत अेक झगड़ता डोढ़ी ऊपर आया छै। राजा कह्यौ—भींतर आवण द्यौ। पण रजपूत नै पूछौ—कुण छै, कठै रहै छै, कासूं जात छै? तद राजा कनकरथ नै दरबारी कह्यौ—ठाकुर, थे कठै रहौ छौ, कासूं नाम छै? ताहरां कनकरथ कह्यौ—कासूं पूछ करी? रजपूत छूं, परदेसो छूं। ताहरां दरबारी कह्यौ—थे झागड़ू छौ तौ तपावस[1] तौ होसी हीज पण हूं हवालदार छूं, थांहरै गांम, नांम, जाती रो कहि मालम करूं? ताहरां राजा कह्यौ—जाती रो रजपूत छूं, नांम म्हारो कनकरथ छै, बन्धुगढ़ रहूं छूं। ताहरां, बन्धुगढ़ रहै छै, चौपदार कह्यौ, किनां कहीं दूजै गांम रहौ छौ। तद दरबारी कह्यौ—कनकरथ तौ बन्धुगढ़ रो राजा छ। थांहरै मुलक में राजा रो नांम उमराव रो ही नांम हुवै छै। ताहरां राजा कहै—रै दरबारी, राजा तौ राजा री जायगां छै। हूं तौ झागड़ू छूं। इतरै चन्दण चौपदार कह्यौ—दरबारजी, तुम तौ दरबार रै चाकर छौ, बड़ा राजसेवक हो इतरी ही गम नहीं राखौ? औ राजा कनकरथ बन्धुगढ़ रो धणी छै। दरबारी तसलीम करि डोढ़ी गयौ। महाराज, बन्धुगढ़ रो राजा कनकरथ छै। इतरी सुणि पाटण रो राजा ब्रहदभांण सोलंकी ऊठि सांम्हौ आयौ। राजा कनकरथ पण घोड़े सूं उतर मिळियौ। भींतर पधारिया। गादी ऊपर बांह झाल बैसांणवा[2] लागा। ताहरां राजा कनकरथ कह्यौ—आप तखत विराजौ, हूं तौ झागड़ू छूं। म्हारो झगड़ो चूकसी[3] तठा पछै बैसस्यां[4]। राजा ब्रहदभांण बड़ी मनवार कीवी पण राजा कनकरथ तौ साह रै कन्है ऊभो रहियौ। राजा दोनां री हकीकत पूछी सो आगै झगड़िया तिकौ हीज झगड़ो। ठीक कांई पड़ै नहीं। तद राजा ब्रहदभांण कनकरथ नै कह्यौ—राजकुंवर बांणियो न हुवै, इतरी तौ म्हे ही जाणां छां। पण आ बात क्योंकर हुवै? कनकरथ कह्यौ—कुंवर नै पूछौ। ताहरां ब्रहदभांण कवर नै पूछियौ—तूं किण रो बेटो छै। ताहरां कुंवर कहै—

अै दोनूं छै मांहरै[5], विढ़ता दीसै बाप।
कहौ राज क्यों करि हुवै, इणरो थाप उथाप॥

देवीदास कहै—अै दोनूं ही म्हारा बाप छै। इण में झूंठ नहीं। ताहरां राजा

---

[1]पूछताछ [2]बैठाने को [3]झगड़ा निपटेगा [4]बैठेंगे [5]मेरे।

ब्रहदभांण सुण कर विचार में लागौ। जे कासूं कीजै। साह रो तौ बेटो चौकस पण राजा भी झूंठो नहीं। बाणिये रै बेटे नै बेटो कहै नहीं। चोचो करै तौ चाकर कहै, का कोई बीजो ठहरावै। पण कोई'क तौ कारण छै। इसो विचार राजा कनकरथ नै अेकान्त में ले पूछियौ—महाराज सांच कहौ, नेठ तौ सांच कह्यां तपावस होसी। लारली सरब बात कहौ। राजा कनकरथ कहै—महाराज, म्हारै घरै जायौ[1], मोटो कियौ, राज-काज सरब संभाळियौ। राजा वीरभद्र सहरपुर रो तठै परणायौ, सो उण मुलक रा सरब जांणै छै। कुंवर रै बेटो जायौ, तांह पाछै म्हारै अभाग लार करणे गोठ तळाव गयौ थौ। तळाव मांहे डूब गयौ थौ। बाहर निसरियौ कोई नहीं। पछै म्हारा ओळंगुवां सूं छतो हुयौ[2]। लारला सरब सहिलांण[3] राजा आगे कह्या। तैंसूं महाराज छै तौ सागे ही। इसो सुणि राजा इचरजवन्त[4] हुवौ। कांई परमेस्वर री गति छै। राजा फेर साह नै कह्यौ—थांरै किसी तरहां सांच कही। ताहरां साह कह्यौ—महाराज, हूं कासूं कहूं। इये नै तौ सारो सहर जांणै छै। दाई, धाय, भणावण वाळा[5] गुरु बीजा सारांई अठै हीज छै। पूछ देखौ, कदेई कोस बाहर पण निकाळियौ कोयनी। कदै इणे पण म्हारो कथन न लोपियौ। अेक पलक म्हांसूं आघौ न रह्यौ। अेक दिन घड़ी दोय म्हारो कथन लोप ठाकुरद्वारै गयौ। घड़ी दोय उठै लागी, इतरै आघौ रह्यौ थौ। दूजो कदेई पण आघौ रह्यौ कोयनी। न कदेई अकहो[6] कियौ। तद राजा कह्यौ—रै मोटियार, अै कासूं छै? ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज, अै दोनूं पण सांचा छै। बात त्यों छै त्यों छै। राजा ब्रहदभांण ऊंचा-नीचा सारां ही नै ले रह्यौ पण बात अेक हीज कहै—

ताहरां राजा ब्रहदभांण कह्यौ—देवीदास, आ तपावस म्हासूं ना होवै। आ तौसूं हीज होसी। तौनै इण वात री माहिन छै। ज्यो तूं जांणै छै, त्यों सरब कह। तौनै थारे कुळ री आंण[7] छै। श्री लक्ष्मीनारायणजी री आंण छै। ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज, मनै ठाकुरां री दुहाई मतां देवौ। हूं कांई कहूं नहीं। राजा कह्यौ—तूं क्यों नहीं कहै। ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज, आ बात मैं कही तौ इण घड़ी म्हारी देह छूट जासी। राजा अर साह दोनूं दुखी होसी।

---

[1]जन्मा [2]प्रकट हुआ [3]चिन्ह [4]आश्चर्यचकित [5]पढ़ाने वाले
[6]बिना कहा [7]सौगन्ध।

ताहरां राजा कह्यौ—थांहरी देह छूटसी तौ थांहरै वांसे हूं देह छोड़ीस । इतरो कहि ब्रहदभांण झारो लेनै संकळप घालियौ[1] । यूं करतां राजा दिसला[2], साहूकार दिसला आदमियां पांच सौ रो मरण रो संकळप हुवौ । नेम घातियौ । ताहरां देवीदास कह्यौ—तौ महाराज, गंगासौरभ माता नै ऊठ वहिर हुवौ ।

राजा लारली जाबता करि नै बहिर हुयौ । जाव पहुंता । सगळा सिनान-संपाड़ो करै छै । इतरै श्री भगवन्तजी श्री लिछमीजी नै फुरमायौ—लिछमीजी, देखौ पलक दरियाव रो तमासौ नीवड़ै[3] छै । ताहरां श्री लिछमीजी अरज कीवी—ओ सरब तमासो थांहरो हीज छै । पण अेक बड़ो इचरज छै—थे तौ अेक कीड़ो रा हव दांन लेवौ छौ । अै तौ पांच सौ आदमी थां निमित्त तय्यार हुवा छै । संकळप भरता यूं कहै छै—आ देही श्री ठाकुरजी निमित्त छै । और इणां लारै आदमी सौ च्यार बीजा ही मरसी । ब्राह्मण गऊवां रो संकळप भरियौ सो पण कोई देवै नहीं । तैंरो पण प्रायचित[4] थांनै ही लागसी । आगै तौ इसो परिग्रह कदेई लगायौ न थौ । अबकै तौ टळती दीसै न छै । अर तैंरी साह नहीं करसां तौ भगतविछळ[5] विरुद्ध छै सो लजावसी । अर थे यूं फुरमावौ छौ—जे म्हांनै सांच प्यारो छै तौ अै दोनूं ही सांचा झगड़ै छै । सांच ऊपर दोनूं ही मरसी । ताहरां सांच प्यारो कठासूं रहसी । इसी तरह लिछमीजी भांति-भांति करि अरज श्री भगवांन नै कीवी—अठै राजा ब्रहदभांण हजार बीस ब्राह्मण नै भोजन, गायां हजार दोय, हाथी, घोड़ां रो संकळप भरियौ । राजा कनकरथ पण ब्राह्मण हजार बीस, गाय हजार च्यार, धरती, खेड़ा, हाथी अर आपरो देह रो संकळप भरियौ ।

इतरै में देवीदास आपरै देह रो सकळप भरण लागौ । ताहरां राजा ब्रहद-भांण कह्यौ—तूं ही कांई'क[6] पुण्य कर । तद देवीदास कह्यौ—के घर रौ पुण्य करूं ? राजा रै घर रो पुण्य करूं तौ साह बेराजी[7] हुवै । भूठो हुवौ तैंसूं कैरे पुण्य कुण करावै । भगवांन निमित्त पुण्य भगवांन ही करावै । उणांरी हमार तौ आईज इच्छा छै । इतरो विग्रह करावसी । इसा करुणा रा वचन कहि घणी दीनता करी । श्री ठाकुरजी रै उतारू चन्दण लगायौ । तुळछीदळ माथै मेलियौ । चरणाम्रत लियौ अर हमें बात पलक दरियाव री कही । ज्यूं वांसे हुई तिका

---

[1]संकल्प लिया [2]पक्ष वाले [3]निपटता [4]प्रायश्चित्त [5]भक्तवत्सल
[6]कुछ न कुछ [7]नाराज

सरब कही। अर कह्यौ—हमें श्री भगवांन करै सो होई। इतरो कह अबोलो[1] रह्यौ। जितरै ऊपरां सूं श्री ठाकुरजी री अवाज हुई अर देवोदास ऊपर सुदरसण चक्र पड़ियौ सो दोय पिंड होय गया। दोनू अेक सरीखा दीसै छै। ताहरां ब्रहदभांण इसो तमासो देखि नै श्री भगवांन निमित्त नमस्कार करि नै कहै—

दोहा

तूं भगवन्त अनन्त गति, निसतारण[2] नित भेव।
सम्पति गति सुभ सुख सुमति, दायक लायक देव॥

सोरठा

भगवंत तारी भीड़, करुणा करि कीधी कृपा।
तक आया जो तीर, तिरिया तिकै संसार तट॥

राजा इसी असतूती करी छै। अेक रा दोय सरीर हुवा था तिकां में अेक राजा कनकरथ रै हाथ सौंपियौ, अेक साह अजैपाळ रै हाथ सौंपियौ। बड़ो हरख, बड़ी खुस्याळी हुई।

राजा कनकरथ नै राजा ब्रहदभांण कह्यौ—कुंवर नै म्हांरी कुंवरी म्हां दीवी। विवाह करनै पछै थांनै सीख देवां। मुत्सद्दियां नै कहि डेरै रो जाबतो करायौ। साह अजैपाळ घरै आय घणी खैरियत कीवी। बधाई बांटी। दांन, पुण्य, भोजन ब्राह्मणां नै कराया। राजा कनकरथ पण सारा सहर रा ब्राह्मण जीमाया। गौ-दान री दक्षणां दीवी। राजा ब्रहदभांण पण सुभ लगन जोवाय, बड़े हरख सूं आपरी कुंवरी परणाई। भगतां पांच तथा सात भली तरह सूं करी। घणा चारण, भाट, मगत जणां नै राजी किया। घणो रंग-रळियायत[3] हुई। राजा ब्रहदभांण घणें आडंबर सूं सीख दीवी। राजा कनकरथ कूच करि, पहले डेरै सूं बधाईदार बन्धुगढ़ नै मेलिया। फेर ही डेरां-डेरां सूं कासीद मेलाया। यूं करतां पण राजा कनकरथ जाय पहुंता[4]। बंधुगढ़ बधाई वागी। नगर सारो हरखवन्त[5] हुवौ। राजा बन्धुगढ़ सौ कोस च्यार वाग मांहे उतारिया। तैं वाग सारा साहूकार अमराव सांम्हा आया। निछरावळ हुई। बड़ो हरख हुवौ। सैदानी[6] बाजतां राजा सहर भींतर आया। आगे सहर रा घर-

[1]चुप [2]निस्तार करने वाला [3]हंसी-खुशी [4]पहुँचे [5]हर्षित [6]वाद्य।

वाट, बजार-हाट भली प्रकार सिणगारिया[1]। गुवाड़-गुवाड़, घर-घर ऊपर लुगायां बधाई रा बधावा मांगळीक गावै छै। हाथियां ऊपर रिपिया-मुहरां री थैली सूं मूठी भरि-भरि उछाळै छै। घणै हरख सूं महलां दाखिल हुवा। परभात सूं साह सुन्दरदास नै फुरमायौ—जितरा ब्राह्मण सहर देस में तिकां नै भोजन-दिखणा[2] देवौ। ताहरां सुन्दरदास सरब ब्राह्मण लाय जिमावै। ब्राह्मण जीमै छै। गऊवां दे सरब ब्राह्मण संतोखिया। हिवै राजा कनकरथ, विचित्र कुंवर सुख सूं रहै। बन्धुगढ़ रो राज करै। इसी तरह सूं राजा कनकरथ रै, साह अजैपाळ रै, कुंवर विचित्र अनै देवीदास रै श्री भगवांन सहाय हुवा, सुख-कल्याण हुवा, तौ सरब भक्तजन रे, सरब लोक-संसार में कल्याण करै।

श्री भगवांन आसा पलक दरियाव छै।

पलक दरियाव री बात समाप्त।

---

[1]सजाये [2]दक्षिणा।

सूरे खींबे कान्धलोत री बात

राठोड़ सूरो खींबो, कांधळजी रा बेटा, मोहिलां रा दोहिता। सो बड़ा सूर, धीर-वीर राजपूत, चोसठ-आखड़ी-निबाहणहार[1], खाग त्याग पूरा काछ-बाच निस्कळंक[2], सरणाई-साधार[3], पर-भोम-पंचायण[4], पार की छटी जागै[5], इण भांत रा दातार जूंझार। सो इतरै गांवां री ओपत—परसनेड़, कोटड़ी, छतासर, लाछड़सर, कीताभर, भूमासर, लालासर, आलसर, वीनासर—इतरा गांवां रो हासल खायजे। बाकी पैली धरती रो कीप धाड़ो आवै। खंडेलो, मनोहरपुर, कासली, रेवासो, दांतो, झाड़ोद री पट्टी री दाळ आवै। पूनिये रै परगने में हळ-गणत-आवै[6]। डीडवाणे रा साहूकारां री बरसोत आवै। परबतसर चौरासी मारोठ री दाळ आवै और च्यारूं पासां रो माल खायजे। बड़ा झोकाई[7]। दिल्ली सूं उरै-उरै मुलक रो धाड़ो हमेसां करै। मुलतांन रै मारग रो धाड़ो आवै सो रात-दिन असवार ओठी[8] दौड़बो करै। रैबारियां रा दो सौ ऊंठ इणहीज कांम ऊपर लागिया रहै छै। मीणां रा सौ ऊंठ, पचास घोड़ा तिका इणहीज काम ऊपर रहै।

---

[1]चौसठ प्रतिज्ञाएँ निबाहने वाले (विस्तार के लिए देखिये—राजस्थानी साहित्य संग्रह, पृष्ठ १६) [2]चरित्र (जितेन्द्रिय) और वचन से शुद्ध [3]शरणागत की रक्षा करने वाला [4]शत्रुओं की भूमि में सिंह सदृश्य [5]दूसरों की विपत्ति में सहायक [6]मुफ्त में हल आते हैं [7]आतंकवान [8]सुतर-सवार।

च्यारूं तरफां रो माल आवै सो खावै, धूपटा कीजे, ओधूळा[1] वहै। साढ़ा तीन सौ राजपूत तिका खांप-खांप रा सास्ता कन्है रहै। दोय सौ घोड़ा पायगां मांहीं रहै अर आडो ही बारगीर दोय सौ से कम नहीं। सौ ऊंठ बड़ा जमायत का तबेले में रहै। सो इण बार तौ ठाकुराई बधारी, गहराई पकड़ी। सखरो राजपूत, सखरो घोड़ो, सो हर भांति कर लीजे। सखरो हथियार लीजे, बकसीसां राजपूतां नूं कीजे, पोसाखां दीजे। बरस दिन में दोय सावा सारे ही लोग नूं दरबार सूं कीजे। अेक तौ दसरांहे ऊपर आसोज में अर दूजो होळी री परभात फागण में। सो पोसाक इसी हुवै जिकी में सरदार रजपूत री आजांण नै गम नहीं पड़ै। सो इण भांत सूं साहिबी करै—

सूरो खींबो वीर अति, सोभाळो[2] दातार।
हीमत धारी मनगरां, हुवा न होणेहार॥

पूठौ भारी रावजी श्री बीकोजी रो। ननिहाळ मोहिलां रै सो भारी, तिण सूं आसंग पण किहीं री नहीं पड़ै। पाधर रा बादसाह बड़ा झोकाई सो अेक बरस इहां गांवां में खड़ दो खड़ सो हुवौ।

अर राजूखां खोखर ढींगसर रहै, सोही पण मोहिलां रो दोहितौ। सगो ही मौसीहाई[3] भाई लागै। उण री पण बड़ी ही साहिबी[4]। ऊपण बड़ो राजपूत, घणां भाइयां रो भाई, बड़ो सिरदार सो उण सूं मिळणे री इच्छा करी। उठै घाण पण घणौ, तिण सूं उठै री सूरत कर हालिया सो उठै जाय पहुंचिया। कोटड़ी आगै जाय पायड़ा छोड़िया। भींतर नूं खबर हुई। राजूखां दरबार मांहीं बैठो थौ सो सुणतां ही बहोत राजी हुवौ। इतरा में अै सरदार भींतर नूं गया। राजूखां ऊठ साम्हो आय नै मिल्यौ। हाथ झाल बिछायत ऊपर जाय बैठौ। सूरे नूं हाथ झाल गादी ऊपर बैठायौ। खींबे सूं घणी मनुहार कीवी पण उवौ गादी ऊपर नहीं बैठियौ। गादी सूं ही लगतौ म्होंडा आगे बैठियौ। राजूखां मनुहारां घणी करणे लागियौ। भायां बड़ी बात कीवी, मिळिया, मन में मिळणे री घणी चाह थी। दिन पांच सात रहौ, बातां करस्यां। आदमियां नूं कहणे लागियौ—घोड़ा बाहरली कोटड़ी लेय जावौ। घास-पांणी, मांचा-मेखां रो जापतो करौ। सो आदमी घोड़ां नूं लेय कर दरवाजा सूं बाहर नीसरिया।

---

[1]मस्त [2]कीर्तिवान [3]मौसी का बेटा [4]हुकूमत।

राजूखां इहां सरदारां सूं बातां करै छै। खींवे री कमर मांहीं सखरा चवदै तीर सो केसरिया कमरबंध सूं बंधा छै। तिकांरी भालोड़[1] आगले पासे सूं बाहर दीसै छै. भळभळाट करती। इयां नूं खींबो सातवें दिन रै सातवें दिन ओपणी सूं ओपणावै छै तींसूं भळका मारै छै। राजूखां रै एक भतीजो आठ या दस बरसां रो छै। मुंहडे लाड[2] लगायोड़ौ, बड़ो लाड कुमायौ। उणरो बाप कजिये में काम आयौ थौ। तींसूं उवौ टाबर रात-दिन राजूखां कन्है रहै, भेळै जीम्हें, दरबार में खोळे मांही सूतौ रहै। किहीं रै कांधे चढ़ै, किही रा हाथ खैंचे, चपळता आसंगगिरी करबो करै। सो लोग राजूखां री खुसामद रा पगां सहबो करै। टाबर नै किहीं कहै-सुणै नहीं। सगळा हाथां ऊपर विनोद कराबो करै। टाबर लाडसूं बड़ो अनीतौ[3]। उवौ राजूखां रै खोळे में सूतो थौ। ज्यूं ही खींवे रा भालकां री चमक दीठी त्यूं ही तुरत ऊठ उठै आय अजांणजखरो[4] होळे सी अेक तीर पकड़ खैंच्यौ। सो तीर खैंचतां भाले सूं कमरबन्धो बढ़ गयौ सो सारा तीर खळक नै पाखती पड़िया। इतरै में खींवे रै हाथ में कामड़ी[5] थी सो अपूठे हाथ सूं वाही सो टाबर कूकियौ। सो लोग दरबारी सारा हां-हां करि ऊठिया। टाबर नूं संभाळ लियौ। खींबो तीर संभाळ ऊभौ हुवौ। ताहरां सारा ऊठ ऊभा हुइया। राजूखां सूरे रो हाथ झाल कहणे लागियौ—टाबर भोळो थौ, भलां ही और पांच-सात लगावौ पण रीस मतां करौ। पण खींबो तौ ऊठते ही जे बहिर हुवौ सो जांणे काळे सैनक पूंछ दबियां फुंफकारा मारै त्यूं ऊभौ-ऊभौ सूंसाड़ा मारै छै, होठ झसै[6] छै। सूरो घणौ सयाणो[7] ठाकुर थौ सो राजूखां नै कहणे लागियौ छै—

खींबो रिसगारो[8] घणौ, हूं समझाऊं जाय।
फिकर करो ना ठाकुरां, मन मंह धीरज लाय॥

सो सूरो खींबे कन्है आय कहणे लागियौ—

ना रिख करणौ है भलो, धीर धारिये चित्त।
भोळो टाबर बेसमझ, ग्यांन न वीरे चित्त॥

तींसूं हमें डेरै हालौ। खींबो कही—

---

[1]तीर के आगे का हिस्सा [2]प्यार [3]बदमाश [4]अचानक ही [5]बेत [6]काटता है [7]सयाना [8]गुस्से वाला।

भोळां रे दरबार में, रहणो वाजिब नांहि।
पांणी तक ईं ठांव पर, मैं पीऊं इब नांहि॥

अठै रह कासूं बफादारी लेयस्यां। हालौ घरां हालां। सो सूरो इसड़ो रंग खींवे रो दीसौ, जे सगा सूं विकार पैदा हो बिगाड़ हुवै। जद सूरो हाथ झाल लेय बहिर हुवौ सो दरवाजे जातां राजूखां रा आदमी, मुत्सद्दी-परधांन आय पहूंचिया। रावळ श्री कांधळजी रो आंण[1] दियां खड़ा रहिया। पूठै सूं राजूखां आइयौ, हाथ झाल कही—अेक दोय दिन रह पछै चढ़ि जाज्यौ, नहीं तौ आज रात रह परभात रा चढ़ जाज्यौ। मिजमानी जीम जायजे। इण तरह मतां जावौ। तद सूरो तौ घणौ ही जांणी जे राजूखां सरीखो सरदार इतरी आजोजी-नोहरा करै छै तौ टिकणौ वाजिब छै पण खींबो अड़ायत[2] पूरौ सो रहै नहीं। तद राजूखां कही—इब नाराज होय म्हारी किसी घोड़ियां काढ़स्यौ[3]। सूरो आडी बातां घात आफत टाळी। पण दरवाजे मांहीं खंच करतां अेक घड़ी लागी। सो दरवाजे रै अेक गह में राजूखां री सवारी री घोड़ी खड़ी, सो चंवर ढाल ऊभी छै। पगां मांहीं सवा मण लोह री गटी[4] छै। चाकर रा मांचा दोनूं पासे छै। सो घोड़ी नूं खींबो ख्यांत कर दीठी—इसी दूसरी घोड़ी मुलक में नहीं। जैसो ही डील, जैसो ही रूप, जैसो ही पोत, मही जैसो ही बळ, जैसो ही कुम्मैत रंग, काळी गांठां सो पिरथवो रूप कच्छ री नीपनी, दीणोद रै मठरा जोगी रै घर री। सो ककड़ियाळा रै जाम जोगी नूं घोड़ी दीवी थी। तेंरै पेट री उठै घोड़ी सूबर[5] आई थी सो जोगियां कन्है राजूखां रा आदमी मोल लाया था। रिपिया हजार ठेट देय लाया था। घोड़ी इसो नोवड़ी सो मांणस कासूं तारीफ करै, घोड़ी री तारीफ सूरज करै। इसी घोड़ी सो तींनूं खींवो ख्यांत कर दीठी। खींवे री नजर घोड़ी मांहीं गड़ गई।

अै सरदार राम-राम कर घरै आया। राजूखां दरबार जाय कर बैठियौ। भतीजे रै तावे लोग था तिकां ऊपर रीस करणे लागियौ, जे इसा बेवकूफ टाबर नूं दरबार मांही ल्यायौ जे तौ नीमड़ी[6] पण इब फेर दरवार में मतां लायज्यौ।

सूरो खींबो घर आय पहुंचिया जद खींवो कही—भाभाजी, एक घोड़ी मिये रे

---

[1]सौगन्ध [2]अड़ने वाला [3]निकालोगे, चुराओगे [4]स्याही लिये लाल रंग [5]गर्भ सहित [6]निबटी।

दरवाजे मांही खड़ी थी सो आप दीठी कै नहीं ? सूरे कही—दीठी तौ सही पण विसेस ख्यांत नहीं कीवी। खींवो कही—घोड़ो मैं नीकां दीठी। थे तौ बातां रै घमझोळे मांहीं था, पण हूं दीठी थी। घोड़ी पिरथी रो रूप छै। इसी घोड़ी माझ मांहीं नहीं। सो आ घोड़ी तो हर भांत कर ही मंगवाणी। इसो ही कोई आंपणी परघे रै मांहीं छै जे इण घोड़ी नै लेय आवै। तद भूधर नांम अेक मीणो थौ सो उण कही—ठाकुरां, जे घोड़ी लेय आऊं तौ कासूं इनाम पाऊं ? तौ सूरो कही—तूं कहसी सो देस्यां। भूधर कही—खरची दिरावौ। ताहरां साठ रिपिया दिराया सो पल्ले बांध, अतीत रो भेस[1] धर बहिर हुवौ सो ढींगसर जाय पहुंचियौ। तळाव ऊपर जाय बैठियौ, पगां रै पट्टा बांधिया, मोकळी[2] हळद लगाय नीम रा पत्ता लेय बैठौ। दोनूं पग बांधियां दिन अेक तौ बैठो रहियौ। बीजे दिन राजूखां री पायगां रा घोड़ा पांणी पीवणे नूं आया। चाकर चढ़िया छै सो घोड़ां नूं पांणो पाय संपड़ाय[3] इण कन्है आय'र बैठिया, हुक्को पीयौ। कहणे लागिया—स्यामी, थारे पगां रे कासूं हुवौ ? तद उण कही—बाबाजी बाळिया छै, महिना दोय मरतां नूं हुवा। जद इहां चाकरां कही—तूं गांव मांहीं हाल, तौनूं उठै राखस्यां, खाणे नूं देस्यां, पाटा बांधस्यां, थारो जापतो जे करस्यां। सुण कर भूधर कही—गांव मांहीं तौ हूं कोई आऊं नहीं। म्हारे झाड़े री मुसकिल, बीजो तळाव पर पांणी रो निवास छै, कोई नीम उतार दे, कोई हळद तेल आण देवै, पाळ रै नीचै हूं झाड़े फिर आऊं। सो अठे ही अेक झोंपड़ी बांध देवौ तौ पड़ियौ रहूं, थांनूं असीस देऊं। तद बीजे दिन चाकरां घोड़ां रा चारा रा पूळा केही खूंटा लगाय दिया। झूंपड़ो बांध दियौ। रोटी टुकड़ो आण के देवै सो ऊंचो राखे, मेलहै। रात रा आप्रो नाणो भांज, आटो, घो, सकर आंण चूरमो कर खावै अर बाकी रो परभात रै पगां ऊंचो मेल्ह कर राखै। तम्बाखू मोकळी डाबी भरो रहै। चाकर घोड़ां नूं पांणो पाय, न्हवाय आय बैठा-बैठा तम्बाखूड़ा पीवै, गल्हां करबो करै, अमल-तम्बाखू खाणे नूं मोकळो आंण देवै सो महिना अढ़ाई उठै इण तरै रहियौ। अेक दिन पाछला पहर रा चाकर चंवर ढाल रो गट्टो खोल, कायजे कर, च्यार जामा कर, असवार होय, तळाव संपड़ावण नूं ल्यायौ। सो घोड़ी उछळती, लाहां भरती आवै छै सो जांणै आकास नूं ही ठोकरां मारती आवै छै। सो चाकर आय इणरी झोंपड़ी कन्है होकारौ[4] कियौ। च्यांरूं पग

---

[1]भेष [2]काफी [3]स्नान करा कर [4]आवाज।

घोड़ी इसा रोपिया जांणजे मेखां[1] गाड़ी। चाकर उतर घोड़ी नूं ठंडी घाली, घड़ी एक बैठो बातां करी। तद इण स्यामी पूछियौ—जे बाबाजी आज तौ दूजो घोड़ो लाया छौ। ओ घोड़ो तौ आगे कदे लाया नहीं था। तद चाकर कही—घोड़ो नहीं आ घोड़ी चंवर ढाल छै। खान रै सवारी करणे री खास घोड़ी छै। तौ स्यामी कहो—बाबा हम क्या जाणें, हमारे तौ घोड़ा घोड़ी सगळा[2] इकसार[3] छै। दीसे तौ आछी छै। चाकर घोड़ी नूं ठंडी घाल तळाव मांही लेय बड़ियौ, पांणी पायौ, पाछै हाथ लगाय अब्बल तरह सूं संपड़ाई। संपड़ाय बाहर आंण खड़ी कीवी। बाग[4] स्यामी नूं झळावणे[5] लागियौ—जे थे बाग झाले रहौ तौ हूं सांपड़ूं। स्यामी कही—ना बाबा, हूं लूलो-लंगड़ो मोनूं मार नांखै। तूं थारी नूं जाय बांध आ, पछै सांपड़ जे, चाहे सुवारे सांपड़जे, म्हारी तौ आसंग नहीं। चाकर कही—देख तौ सही, घोड़ी निपट सूधी छै। तोनूं धक्को ही जे नहीं देवै। तद स्यामी कही—बाबा आ घोड़ो मोनूं घोंस ले जाय। आगै तौ मरियौ सो पड़ियौ ही छूं, इब और क्यूं मारै छै? तद चाकर घोड़ी च्यार जामें कर स्यामी नूं बाथ भर उठाय घोड़ी पर बैठायौ सो स्यामी हाय-हाय कूकणे लाग्यौ। कहणे लाग्यौ—जे मोनूं मारै ही तौ हाथ सूं मार, तरवार सूं मार, पण कुमोत क्यूंकर मारै छै। पण चाकर अेक नहीं सुणी। चट बाग झलाय जाय तळाव मे पड़ियौ और सनान करणे लागियौ। इतरे दिन पाछलो घड़ी अेक आ रहियौ।

उण पांणी में डुबकी मारी। इण घोड़ी नूं लात लगाई॥

ऊ नीसर जावै तौ घोड़ी नहीं दीसी। जद नीसर दौड़ पाळ चढ़ियौ सो देखै तौ घोड़ी अजमेर सांम्ही जावै छै सो खेह रो कुळियौ[6] दीसणे लागियौ। तद चाकर घबराय दौड़ कर दरबार मांहीं आयौ, खान नूं अरज करी—हजूर, घोड़ी नूं स्यामी लेय गयौ। सगळो दरबार रो लोग हां-हां करणे लागियौ। घोड़ां नूं जीण कराणे लाग्या। खान कहो—क्यूं घोड़ा मारो छौ, उणनूं कोई पहुंचे हो नहीं। हमें खबर मंगावौ सो जिणरी जायगां गई हुवै, उणसूं ही कजियो करस्यां। चाकर नूं पूछी—किसी तरफ वो घोड़ी लेय गयौ छै। तद चाकर कही—अजमेर साम्हो गयौ।

उठी भूधर कोस दोय जाय दिखणाधू पाछी वाळी सो रात-रात कढ़, घड़ी

---

[1]कीलें [2]सर्भा [3]अेकसी [4]लगाम [5]पकड़ाने [6]धूल का गोटा।

च्यार दिन चढ़तां परसनेउ आयौ। खींवे सूं आय मुजरो कियौ। बहोत राजी होय खींबो ऊठ बाथां भर कर मिळियौ। सूरे कन्है लेय गया सो सूरो पण घणौ राजी हुवौ। इनाम मांही गांव दियौ, भाई कहणे लागिया। खींबा आपरा पोसाक, कड़ा, मोती उतार कर राजी होय इनाम में दिया। खींबो आप घोड़ी ऊपर चढ़ कर फेरी सो जांणै इब[1] हाल ठांण पर खोलो छै। लाहां च्यार पांच भर हाथ पचास रै परै जाय ऊभी रही। सूरेजी अेक सौ रिपिया घोड़ी ऊपर निछरावळ कर गरीब फकीरां नूं बांटिया। घोड़ी नूं पायगां में बंधाई। सवा सेर घिरत, दोय सेर चीणी खांड, च्यार सेर गेहूं रो आटो परभात रा, आंथण री दस सेर चांवळां री खीचड़ी, अेक सेर घिरत इतरी मोताद नित की करदी। मसालो वत्तीसो कराय थैलो भर राखियौ सो परभात दिन ऊगियां पहलां ही दीजै। इण भांत घोड़ी रो जाबतौ कर दियौ। राजूखां रातों-रात दोय-दोय मांणस दिसां दिसी मेलिया। अजमेर कान्ही गया तिका तौ चौरासी सूं लेय मेवाड़, खारी रो ढाहो, बून्दी, माळवो सारो जोयौ। अेक जोड़ी ढूंढ़ाड़, मथराजी, आगरो पूरब दिसली गंगा पार तांई जोइयौ। अेकण जोड़ी मारवाड़ सूं लगाय गुजरात कच्छ तक आखा मंडळ तांई फिरिया। जोड़ी अेक पस्चिम दिसा जयसलमेर थटो मुलतांन सूं लाहोर मांहीं कर आया पण घोड़ी री कठै ही सुध नहीं हुई। महिना सात आठ में सारै फिर आया। रिपिया सात आठ सौ खरच रा खाय, पाछा आय खान नूं कह्यौ—जे घोड़ी कठै पाई नहीं। सोध पण नहीं हुई। खान इसी खबर सुण बहोत बेदिलगीर हुवौ। आज तक तौ पिंड[2] में जोस थौ। जठै कठै खरी होसी उठै लड़णे वाळी जायगां तौ लड़स्यां-भिड़स्यां। बीजी ही जायगां छै तौ चोर लगायस्यां सो आज सारो गरब गळियौ[3]। आकास में तौ कोई चढ़ ही नहीं गई। छै तौ जमीं रै ही ऊपर पण अंजळ-दाणोंपांणी। सांई री इसी ही रजा छै। इव कहि बेटो बरस बीस रो कन्है बैठो थौ तिणरा सिर ऊपर आपरा सिर ऊपर सूं पाघ उतार मेल्ह दीवी। कन्है दुपट्टो थौ तींनूं फाड़ गळे में घाल फकीरी लोवी। सगळा नौकर, कांमदार अरज करी—फेर परगने ठावा मांणस मेल कर पतो लगास्यां। हर भांत खबर लेय आवसी। खान साहिब खमा करौ, इसी क्यूंकर विचारौ। और जे घोड़ो मर गई छै तौ ठावी

[1]अभी [2]शरीर [3]गर्व समाप्त हुआ।

ठौड़ कर उणसूं खेटो[1] करस्यां और घोड़ी फेर मोल मंगायस्यां। तद खान कही—जे थां बात तौ दुरस्त कही, पण इसी घोड़ो फेर होणी न मिळणी। इणरी मां दरियाव कन्है चरै थी सो दरियायी घोड़ा री औळाद थी। आ घोड़ी बीजा घोड़ां री औळाद नहीं थी। इयेरौ[2] बळ पराक्रम मांटीपणौ जमीं रै घोड़ां रो नहीं थौ। फेर लोगां में नांमोसी दिखाई। आज पहलां मेरी कठै हा नामोसी न हुई। इब भाई पड़ोसी हंस सी, कहसी—जे सवारी री घोड़ी ही नहीं रह सकी। घोड़ी री तौ समझां पण म्हारी या तपस्या क्यूं क्षीण हुई। तींसूं के तौ किहीं सूं कजियो हो तौ राड़ कर कांम आऊं, नहीं तौ फकीरी लेय ऊठ जायस्यूं। रंग इसो नजर आयौ जे मैं रहूं छूं तौ बैठियां म्हारो बिगाड़ हुवै छै। तपस्या कम पड़ी तींसूं मोनूं मत बरजौ। हूं देस रो, लोक रो बुरो म्हारी ही आंख सूं कासूं देखूं, कान सूं कासूं सुणूं मोनूं आ दरस आई छै। तींसूं थे सगळा भला मांणस छौ, पखां[3] पूरा छौ, कुरसीबंध छौ, सामधरमी छौ, लड़के रै मुंह आगै चाकरी अव्वल तरह करज्यौ। धरतीधर रो जापतो राखज्यौ। पाखती रा भोमियां, ग्रासियां सूं देखौ जिसो ही रंग बरतज्यौ। अर बेटा नूं कही—यां माणसां रो जसो हूं मान करतौ तींसूं सवायौ काण-कुरब राखज्यौ। जीं कन्है आछा मांणस, आछौ सो घोड़ो छै सो ही ठाकुर छै—

कर घोड़ा रजपूत कर, देय अदोसां दोस।
भावै जे नूं रेत कर, भावै जं नूं खोस॥

इण भांत सारा नूं सीख सलाह दे बहिर हुवौ सो पहलां तौ अजमेर गयौ सो पहलां तौ खाजेजी री जारत[4] कीवी, देग कबूल कीवी। फेर वीटली चढ़ मीरांजी री जारत कीवी। उठै कबूल सीरणी कर तळहटी गयौ। दिन पांच सात उठै रह बूंदी गयौ। उठै छैलमन छैलतन पीरां री जारत कीवी। उहां छैलां री कबूलायत कर पाछौ हांसी रा पीरां रो जारत करणे नूं आयौ। उठै जारत कीवी, कबूलायत कीवी। सो बरस तीन तांई इण भांति फिर पछै नरढ़हा जब दीवांण रो जारत कीवी। फेर मुलतांन रा पीरां री जारत ऊपर मनसा[5] कीवी सो मारग चलियौ आवै सो परसनेउ आयौ। पाछलो पहर छै, पाधरो कोटड़ी आयौ। आगै सरदार दरबार बैठा छै, सारा ठाकुर दरबार बैठा छै, ढालां रा

---

[1]झगड़ा [2]इसका [3]मदद में [4]यात्रा [5]मन्शा।

कड़ा जुड़िया छै, गल्हां बातां होय रही छै। इतरा में फकीर आण दुवा करी। सारा ऊठ राम-राम करो। ओळखियौ[1] तौ केही नहीं पण फकीर जाजळमांन[2] सो तपस्या वाळो मांणस छानो न रहै। तींसूं सारां बड़ो अदब कियौ सो फकीर बैठ गयौ। सरदार आपरी परगह[3] सूं बातां करै छै। इतरै फकीर पाखती घोड़ा बधिया छै जिकांरै साम्हो जोवणै लागियौ। सो पायगां मांहीं बन्धी चंवरढाल नजर चढ़ी। अेक सूरेजी री सवारी रो घोड़ो भंवर आरबी बड़ी सी कीमत रो। चंवरढालती घोड़े सूं व्याही छै सो अेक तौ बछेरो बरस अढ़ाई रो हुवौ। अेक वछेरी महिनां नौ री हुई सो दोनूं पाखती बंधिया खड़ा छै। बीच में घोड़ी खड़ी छै। सो खान घोड़ी नूं देख कहणै लागियौ—जे हूं तौ सारी जमीन गहतो[4] फिरियौ अर घोड़ी म्हारी तळहटी में रही।

इतरा में खवास आण अरज कीवी—जे कसूंभो[5] तैयार छै। तद सरदार लोगां कही—ले आवौ। सो कळस च्यार भरिया जाजम रै पाखती धरिया। लोटा भला भर कचोळा हाथां में लाया। तद सूरेजी कह्यौ—पहलां फकीर साहिब नूं देवणौ। तौ खवास पाछौ घिर आ कही—जे फकीर साहिब लेवौ। दूधाळो कसूंभो छै, आरोगौ। सो फकीर कही—ल्यावौ बाबा। उवै कसूंबो पीतां सुगन गांठ बांधियौ—जे घोड़ी तौ हूं लेय जायस्यूं। इतरै में सारां कसूंबो पीयौ। कुरळा कर बैठिया गल्हां करै छै। फकीर री नजर तौ घोड़ी मांहीं और ले जावणे रा तरह-तरह रा मनसूबा करै छै। तरह-तरह री बात मन में उठावै छै, भांजै छै। इतरै दिन घड़ी दोय पाछलो आय ठहर रह्यौ। इतरा में खवास आण अरज कीवी—भुजाई तयार छै, पाटोता बिछाया छै। तद सरदार सारा ऊठिया। ऊठतां कही—फकीर साहिब पधारौ। तौ फकीर कही—बाबा हमारे तौ इहां ही भेज देवौ। हम तौ अन्दर नहीं आवैं। तद कही—भली बात, विराजिये। आप भींतर गया, जाय पांतियां बैठिया। तद सूरेजी कही—अेक बार तौ दुकड़ियौ जाय फकीर साहिब नूं देय आवौ। खवास जाय फकीर नूं दियौ। फकीर रै मन में तौ बात तींसूं जीमण नै बैठ गयौ सो सताबो[6] सूं जीम लियौ। और भींतर तौ परूसगारी हुवै। होळै-होळै चोख सूं जीमै। चाकर लोगां रा

---

[1]पहिचाना [2]ज्वाजल्यमान [3]राज-मंडल [4]खूंदता [5]अफीम [6]शीघ्र।

कटोरा भरणे नूं हुकम हुवौ। सो चाकर लोग सारा ही कटोरा लेय भींतर नूं गया। उठै जायगां सारी खाली रही।

ताहरां खान जाय घोड़ी संभाळी। घोड़ी रा पगां मांहीं सवा मण लोह री गट्टी सो दीठी। ताहरां खान मन में कहणे लागियौ—जे अेम दोय बार व्याही छै पण गट्टी नूं तौ तोड़ नांखसी। यूं जांण घोड़ो नूं कायजो देय, गट्टी सुद्दां बाहर काढ़ी। खांच अर धूळ कोट रो बुरज थौ, हाथ दसे'क ऊंचौ, उण ऊपर चाढ़ी। फराकी[1] मार ऊपर चढ़ियौ। चढ़नै हांकळ कीवी—जे सरदारां, हूं राजूखां खोखर छूं, घोड़ी म्हारी लियां जाऊं छूं। भली करो तौ बछेरा-बछेरी मेल दीज्यौ, नहीं तौ थे ही भाई छौ, राखिया[2]। पण घोड़ी रो पाछो मतां करज्यौ। इतरो सुणी और मांहींलो लोग हां-हां करि दौड़ियौ। कहणे लागिया—जांणै न पावै। इतरा में राजूखां घोड़ी ऊपरां सूं दाबी सो जमी आय खड़ी हुई। गट्टी रा टुकड़ा होय गया अर घोड़ी नूं आघी काढ़ी सो चालती हुई। पूठै सूं अै दोनूं भाई चढ़ छूटिया सो रात च्यार पहर पूठै कढ़िया[3]। और राजूखां दिन ऊगतै आपरै गांव आ बड़ियौ।

अै दिन पहर अेक चढ़तां ढींगसर रै गोखै में सांढ़ियां रा गला साम्हा आया सो घेर ले घेरिया। सो रैबारियां कूक जाय गांव में घाली, जो सिरकार रा वरग लिया। सुणतां ही सारो साथ चढ़ियौ। जां दिनां रा खोखर सो कहणी में नहीं आवै। इण भांति नीसरिया[4] जिणां नूं सूरज रथ झाल देखण लागौ। सो बहितां-बहितां दिन घड़ी च्यार रहिते पाछला, सूरो, खींबो गांव लाडणूं री बराबर आया। ताहरां खींबो कही—भाभाजी, थे बरगले हालौ, हूं पाघ बांध आऊं छूं। आज मैं पाघ बांधी नहीं। तद सूरेजी कही—आज न बांधी तौ सुवार दोय फेरां[5] बांधजे। आज रहणे रो समय नहीं छै। खोखर इसा नहीं छै सो बैठ रहसी। तींसूं रहणौ आछौ नहीं। तद खींबो कही—आप पधारौ, हूं तुरत आय पहोंचस्यूं। तद सूरेजी कही—वरग तौ लेय हालौ, असवार पचासे'क खड़ा रहौ। म्हे चलाय आय पहोंचस्यां। पण सूरोजी खड़ा रहिया, कहियौ—सताबी करौ, पाघ वेगी बांधौ। थारी आज री पाघ घणा दिन याद करसी। अेक वाही जसी'क पायस्यौ सो वाद रो सवाद पड़से तद खबर पड़सी। तद खींबो

---

[1]छलांग [2]रखना [3]निकले [4]निकले [5]वार।

पाघ हाथ लेय पेच दिया। इतरै खोखर आय पहुंचिया। सूरोजी बोलियौ—खींवा खोखर आया छै, कहियो नहीं मानियौ। खोखर आय पहुंचिया। तद खींबो ऊठ घोड़े सवार हुवौ। सूरेजी नूं कहियौ—थे काढ़ो, साथ माफक छै, हूं इहां नूं विलमायस्यूं। तद सूरेजी कही—हमें काढ़ियां किसी गत[1] छै। हालणे री वेळा तौ तूं हालियौ नहीं। हमें श्री परमेस्वरजी रो नांम लेवौ।

तरै उठाय घोड़ा साम्हा नांखिया सो परले पार हुवा। सीधा मुंहड़ां आय बागिया।* सो इसा ही जे बागिया सो देखी ही चाहिजे। तरवारियां रो रीठ बागियौ। माथे चौकड़ी पड़ रही छै। हाक ऊपर हाक हुय रही छै। बीर नाच रहिया छै। जोगण ढाक बजावै छै, खप्पर भरै छै। अप्सरा वरण काज मंगळ गाय रही छै। इसो समयो वण रहियौ छै। इणगी[2] अै पचास, उणगी[3] पांच सौ सो इसा हीज बागिया सो दीठां ही बण आवै। रात घड़ी च्यार गयां दोनूं भाई सूरो, खींबो काम आइया[4]। आदमी पचास था तिकां मांहीं अेक ही नहीं नीसरियौ। पुरजो-पुरजो होय गया। घोड़ा सारां रा बढ़ गया। साबतो अेक नहीं रहियौ। सरदारां री सवारी रा घोड़ा वटको-बटको होय गया। सरदार दोनूं ही पुरजो-पुरजो होय पड़िया। आदमी पचासां काम आय गया। आदमी डेढ़ सौ खोखर काम आया। बाकी सगळा ही थोड़ा-घणां घायल हुवा। निलोही[5] तौ कोई'क नहीं रहियौ। इहां नूं मार, लोथां संभाळ, घायल लेय खोखर बिदा हुवा, पाछा घर आया। आय राजूखां नूं मालम कोवी। कही—म्हां आज पहलां इसो कजियो कियौ न सुणियौ। सारा अेक तरह मनगरा था। सो जितरो साथ हुतौ तितरो जे हुवै और उणसूं कजियो करां जणां तौ खबर पड़ जाय। इसी बलाय था। पण भाग[6] सावळ[7] था तींसूं पचास सवार रहिया। बाकी रा अगल-बगल आगे गया। खींबो पाघ बांधणे रुकियौ थौ तींसूं खान री फतह हुई छै। प्रवाड़ो[8] हाथ आयौ। खान सुण राजी हुवौ, घायलां नूं पाटा बंधवाया। माथा सारूं नै लोहियां सारूं[9] इनाम दिराई। कांम आया तिणां रै खरच सारूं चाळीसा[10] सारूं दिराया। उणां रै बेटा नूं सिरोपाव,

---

[1]गति [2]इस ओर [3]उस ओर [4]मारे गये [5]घाव रहित [6]भाग्य [7]ठीक [8]युद्ध [9]लिए [10]मुसलमानों की प्रथा के अनुसार चालीस दिनों के पश्चात मृतक के पीछे की जाने वाली रस्म।

घोड़ा-तरवारियां खान दीवी। खान रै माणसां रो बड़ो ज्यान आयौ। कामूं माणस था त्यांरो तळौ टूटौ। खान नूं इसा हाथ लगाया सो फेर कई दिन सभळणौ मुसकिल हुवौ अर इहां रो साथ लेय घर आयौ।

सो रात आधी तांईं तौ हरख खुसहाळी रही। पछै ज्यूं सरदार आया नहीं त्यूं ही फिकर करणै लागिया। ताहरां ओठी दोय साम्हां चाढ़िया सो उणपुर कनै झांझरके आइया। अेकण प्रसंगी थौ उणरै घर गया, उठै उतर पांणी पीयौ। इतरै भागफाटते री गांव में खबर आई—जे इण तरह कज़ियो हुवौ, सूरोजी खींबोजी दोनूं कांम आया, पोहकर पोंहचौ। तद लोग गांव रा पड़-काळा मांचा लेय सिरदार मांणस पांच सौ हालिया। जाय खेत में खड़ा रहिया। सो सारां रा जुदा-जुदा बटका, तंडुल पड़िया छै। तद सारा ठौड़ भेळा जे करिया। कपड़ो काढ़णे लागिया। तद अेक बड़ेरो गढ़ रो ठाकुर थौ तिण कहो—इसा सूरवीर होय कांम आवै तिणनूं सागी कपड़े सूं दाग दीजै, नवो वस्त्र नहीं देणौ। ताहरां सारां कही—दुरस्त छै। तद पाथां दोनूं सरदारां री लीन्ही। सो बटका-बटका न्यारा सा चुग, भेळा कर, ओठियां लिया, बीजा सारां नै दाग कर पाछा आया। खानपुरै तळाव स्नान कर गांव आया। ओठी बहता ही पाछले पहर परसनेऊ आया, खबर दीवी। सारा सुण उदास हुवा। पांणी दियौ। बारवें दिन सारो मेळ भेळो हुवौ। खरच कर पाघ बंधाई।

सो सूरेजी रो बेटो वेरसी बरस आठ रो, खींवै रो बेटो जागर बरस दस रो सो सयाणौ अर वेरसी रो सुभाव वादी, रीसट सो सारा जांणै। मेळ में भाई-प्रसंगी सारा आया तिकै कहणे लागिया—आपां सारा भेळा छां, परभात साथ संघात मंगावां, कजियो खोखरां सूं करस्यां। खोखर आपां रो धक्कौ झालै सो कुण। तद इहां रा मुत्सद्दी परधांन सारा आदमी कही—थांनूं आ हीज चाहिजै। पण म्हांरै सरदार बाळक छै तींसूं थांहरै मोंहडै आगै हुवै तद सारा ही सरदार पीठ-राखस्यौ[1]। थांहरो दिरायौ म्हांरै हाथ वदळौ आवसी। खोखर आदमी भारी छै, राड़गारा[2] छै तींसूं अबार हाल माफ करौ। यूं कहि सारा लोगां नूं सीख दीवी।

मांणस अेक खोखर रै गांव मेल्ह खबर मंगाई—जे उहांरै कितरो'क लोक,

---

[1]मदद करना [2]युद्धप्रिय।

कुण-कुण कांम आयौ। कासूं रंग-विचार छै सो सारी खबर लेय आवौ। सो मांणस उठै जाय खबर रंग देख पाछो आयौ। तिण कही—राजूखां रा बेटा दोय कांम आया। अेक तौ बड़ो तिणनूं पाघ आप बन्धाई थी अर बीजो छोटो उणांरी पूठ रो। सगा भाई दोय आपसूं छोटा अर नजोक रा। कबीले रा आदमी चाळीस कांम आया। बीजा भला-भला रजपूत धड़ां[1] रा धणी। केई खोखर जागीरदार आदमी डेढ़ सौ सूं ऊपर कांम आया अर आदमी च्यार सौ घायल छै, सो खान खरो उदास छै, जाजम खाली हुइ गई। लोग प्रसंगी सारा हाथ खोळावण नूं आवै छै। चाळीसा ऊपर मारा नूं चिट्ठो फाटी छै सो आयमी। और केई हिन्दू रजपूत कांम आया था त्यांरा प्रसंगी भाई आदमी हजारे'क बाहरला आया था त्यानूं तौ पण खान उठै ही जे टिकाया था। दरबार सूं खाणे नूं पावै। चाळीसे री सरबरा होय रही छै। इसा समांचार सुण अैही पित्त सान्त हुवा। खान रा भाई बेटा कांम आया सुण अैही ठंडा पड़िया।

बरस दोय-तीन बितीत[2] हुवा और जांग, वेरसो लोंठा हुवा। आपरै मते घोड़ा चढ़णे लागिया। सागण वार में सिकार खेलै। रीझ बकसीस करै। राजपूत ठाकुर लोगां नूं आप आपरी जायगां राजी राखै। सारां ही रो अेक जीव राखै। यूं करतां मेड़ते ऊदैजी रै कही, सो खेड़ मंडो सूं समांचार पण इहां नूं थौ। तींसूं असवार दोय सौ ऊंठ सवा सो, पाळा आदमी दोय सौ सूं मेड़ते गया। उठै ऊदैजी सूं मिळिया। बड़ी दिलासा दीवी। रिपिया दोय सौ, मिठाई मण च्यार डेरै मेल्ही। पछै रिपिया डेढ़ सौ रोज खरच रो रुक्को मेलियौ, सो नाकारो मेल्हियौ, कही—म्हे तौ रोजीनदार[3] नहीं, म्हे तौ कजिये रा धणी छां, बाबेजी रा दरसण करणे नूं ही आया छां। तद ऊदैजी घणां राजी हुवा, कही—छै तौ बाळक सहूरदार। रहणहारी ज्यांरो कासूं मुवौ, पाछै पण इसा बेटा घणी दाद दीवी।

अेक दिन ऊदोजी तळाव ऊदासर ऊपर पधारिया छै। भंवर बछेरो, चंवर ढाल बछेरी और वेरसी जंग चढ़णे नूं। सो जिसा ही अै दोनूं सरदार वैसा ही सवारी रा घोड़ा-घोड़ी। सो सारो लोक देखे, तारीफ घणी करै। इतरै में इहां घोड़ा-घोड़ी दौड़ाया सो सारा लोग देखणे नूं पाळ ऊपर ऊभा हुवा, तारीफ

---

[1]कुटम्बों [2]व्यतीत [3]मजदूर, नौकर।

करणे लागिया। तद ऊदैजी पूछणे लागिया—कुण छै? जद कही—वेरसी जंग घोड़ा दौड़ावै छै। सो जैसा दोनूं सवार छै, वैसा ही घोड़ा-घोड़ी छै। इतरै ऊदैजी कही—राजपूत व घोड़ा घणां ही आछा छै पण बाप रो बैर खोखर में रहियौ, तींरी सुध नहीं कीवी तद किसा बखांण। इतरै इहां आण मुजरो कियौ। घड़ी दोय बैठ ऊदैजी घरां पधारिया। अै डेरै आया सो बात छांनी नहीं रही। कई मांणसां आय कही सो सुण वेरसी जंग पाघां उतार माथे सेल्हा बांधिया छै। तीन दिन टिक पाछी विदा मांगी। जद ऊदैजी खासा घोड़ा च्यार और पांच हजार रिपिया डेरै मेल्ह[1] दीन्हा। सो कांमदार परधानां संभाळ लिया। चढ़ बहिर हुवा सो गांव आया। आय सारां सूं बात कीवी—जे ओ कांम करणौ। ढोलिया कोटड़ी मंगाय घालिया। तद परधांन अरज कीवी—जे उतावळ न करौ। राजूखां सूं कजियो[2] छै। उली-पैली बात न छै। म्हांरो कियौ देखौ श्री ठाकुरजी आछी करसी।

उण दिन सूं आदमी दोय छिपाय ढींगसर मेल्हिया सो बखत-बखत री खबर आंण देवै। इव करतां राजूखां रो बेटो परणीजणे नूं चढ़ियौ सो काळेडेरै गयौ। आदमी ठावा-ठावा अेकठा[3] कर बड़ी जांन[4] बणाय गयौ। तद इणरा आदमी आय खबर कीवी। सो सुण आदमी अेक हजार समचे सूं अेकठा किया। राजै कांधळोत कन्है आदमी मेल्हियौ सो आदमी तीन सौ उणरा आय सामिल हुवा। बाघा कान्धळोत कन्है आदमी गयौ थौ सो उणरो बेटो दोय सौ मांणस साथे लेय आंण मिळियौ। हमलो कर आदमी हजार डेढ़ सूं अचांणचक[5] गया सो गांव सूं अेक कोस उरै जाय नौबत बजाई। तींनूं सुण राजूखां घबराय कही—रै जाय खबर करौ, नगारो किणरो हुवौ। तद असवार दोय हलकारा चढ़ साम्हां आय बात कीवी—कींरो[6] साथ छै हो ठाकुरां? तद इहां कही—जिणरी थे उड़ीक[7] राखै था, उणरो ही जे साथ छै, वेरसी और जंग छै। असवार पाछा आंण खबर करी—जे फलाणे रो साथ आयो छै, सो इब सावधान हुवौ, ढील मत राखौ। सो इणांरै नगारो बाजियौ सो गांव रो आदमी सगळो थौ सो बाहर हुवौ। कैरां[8] री भीटां गांव दोळी घणी थी तिकांरो

---

[1]भेजे [2]युद्ध [3]शामिल [4]बरात [5]अचानक [6]किसका [7]इन्तजार [8]एक कंटीली झाड़ी।

मोरचो लियौ। राजूखां कमर बांध कमाण लियौ। कोटड़ी में चोक ऊपर बैठौ साथ सारो जापतो करै छै। पीठ राखै छै। इतरै में दिन ऊगणे नूं आयौ सो मुकाबलो हुवौ, तीर गोळी चाली। इतरै इहां री बाग ऊठी सो आण तरवार भेळी सो इसो ही जे रीठ बाजियौ सो देखियौ चाहिजे। घणी तरवारियां रा वाढ़ ऊछळै छै। घणी बरछी आधोसले नीसरी छै। सिलै अंग साथे कटै छै। बड़ाका, फींफरा बोल रहिया छै। मार-मार जे होय रही छै। वीर नाचै छै। सो इण तरह पोहर दिन चढ़नां कजियो फारिग कियौ।

साढ़े तीन सौ खोखरां री साथ में सूं आदमी कांम आयौ। सौ आदमी इहां रा कांम आया छै। पण पड़ियोड़ा साम्हां जोयौ[1] नहीं। लोग हालियो तिणरो पीठ लागिया ही जे आइया। सो लोग गढ़ी मांहीं बड़तां आडा दिया जद देखियौ। दरवाजे ऊपर महल थौ सो बारी मांक'र[2] ऊपर चढ़ तीर लगाया। जिण आदमी रै लागै सो ही कबूतर ज्यूं लौट जावै। आदमी दसे'क दरवाजे रै मांहीं रो कांम आयौ। दरवाजे लग सकै नहीं। इतरा में वेरसी आय लोगां नूं लड़खड़ाया सो मांणस कांप रहिया छै। और खान करम सूं हाथ आइयौ। सो खान नूं कमर सूं झालियां पाछो खांच लियौ अर खान फेर मचको कर बारी रै मोंहडे तीर मारै सो आगे घुस आवै, फेर पाछै खींच ले जावै। इव करतां वेरसी अेक ठौर ओले में खड़ो थौ सो खान बारी रै मोंहडे नजर आयौ सो तीर लगाइयौ। तीर भंवारा बीच भ्रकुटी मांहां कर पार नीसरियौ सो सांस री साथ ही प्राण निकस गया। खान ढळक पड़ियौ। इतरै में सारे कूको पड़ियौ[3]। सारां रा हाणा कूक ऊभा रहिया। तद लोग कई तौ भाग नीसर गया। आदमी तीसे'क पोळ खोल दरवाजे बाहर कांम आया।

घोड़ी चढ़ियां इहां रो साथ भींतर जाय बड़ियौ[4]। उठै घोड़ा ऊंठ था सो सारा खोल लिया। बीजी वस्तु खजाना सिल्हैखाना संभाळ लीन्हा। अै दोनूं सरदार जनानां रै बाहर जाय ऊभा रहिया। इहां नूं मांहीं बड़णे नहीं दिया। राजूखां री बीबी बाहर आय कही—बाबा थांरो बैर थां लेय ही लियौ। साबास छै, बड़ी रजपूती राखी। जसा पुरसां रा थे लड़का था विसी[5] ही कीवी। जनानी मरजाद मतां भांजौ। तद वेरसी सलाम कर कही—जे इसी ही होणहार

---

[1]देखा [2]में होकर [3]रोने-पीटने लगे [4]घुसा [5]वैसी।

थी सो हुई। थे म्हांरै मायत छौ। म्हांनूं तौ थांहरी बड़ी सहायता थी। हेकण कांम कजिये थांहरो बळ राखै थौ सो सांई रो खेल इसो हुवौ सो थांसूं ही जे बण गई। तद बीबी कही—होणहार होय सो मिटै नहीं, होकर ही रहै छै। मिटै भी क्यूंकर। तद साथ रा सगळां लोगां कही—थां दूर ऊभा रहौ। इण घर लाखां रो माल छै सो दुस्मण रै घर रो पतो लेस्यां। तद वेरमी लोगां नूं ललकारिया अर मना किया। आपरो सगळो साथ लेय बाहर नीसरियौ। बाहर आय घायलां नूं संभाळिया। कांम आयोड़ां नूं दाग दियौ।

पाछै सारो साथ अेकठो कर खुसी होय हालिया तद चारणां कही—

मोटा बाकर खावता, नितका[1] करता बैर।
खोखर घणो चितारसे[2], ढींगसरी रा कैर॥

सो अै घरां कुसळ सूं आया। भाईपा रा लोग आया त्यांनूं घोड़ा दिया। मनुहारां सूं घणी घणी मिजमानी कर सीख दीन्ही। घायल था त्यांनूं पट्टा बन्धाया। खरचो दीन्ही। घणौ रस राख विदा किया। घणी गोठां करणे लागिया। जांगड़िया गाणे लागिया। बड़ा धीर वीर हुवा। तिणरो नांम मुलकां चावौ[3] हुवौ।

सूरे खींबे कान्धलोत री बात समाप्त।

---

[1]हर रोज [2]याद करेंगे [3]प्रसिद्ध।

परिशिष्ट

—क विवरण संकेत-सूची

—ख टिप्पणियाँ

—ग बात-सूची

—घ विवेचन

विवरण संकेत-सूची

ढोला - मारू

ऊमर सूमरे से ढोला-मारू की भेंट ८६, ८७
ऊमा-देवड़ी—रूप वर्णन २८
करहा वर्णन ७५, ७६
ढोला का पत्र पढ़ना ५६
ढोला-मारू मिलन ८२
ढोला-माळवणि प्रेम वर्णन ४२
ढोला-माळवणि संवाद ६७, ६८, ६६, ७०, ७१
नळ-दमैंती वर्णन ३४
पुंगळ २६
पोहकर वर्णन ३४, ७५
मारवणि का ढाढ़ियों के हाथ संदेश ५३
मारवणि का संदेश ५०, ५१
मारवणि का स्वप्न ४७
मारवणि रूप वर्णन ४४, ७७, ७८
मारवणि विरह वर्णन ४६
मारवाड़ अकाल वर्णन ३४
मारू देश वर्णन ८६
मारू वचन, पुरोहित को ६३
माळवणि रूप वर्णन ४१
माळवणि विरह वर्णन ७२
माळव देश वर्णन ६०
रूप वर्णन २७

जलाल - बूबना

गिरवरगढ़ पर जलाल की विजय	११५
जलमहल में बूबना से जलाल का मिलन	११७, ११८, ११९
जलाल का गिरवरगढ़ प्रस्थान	११०
जलाल की प्रेमातुरता	१०१
जलाल की बरात वर्णन	९६
जलाल को मारने का षड़यंत्र	१२२
जलाल बूबना पुनर्जीवन	१२५
जलाल बूबना मिलन	९८
जलाल मूमना वार्तालाप	१०८
जलाल वर्णन	९३, ९५
बादसाह भँवर	९५
बूबना का जलाल से अलगाव	१२२
बूबना प्रेम निवेदन	११२
बूबना-मूमना वार्तालाप	१०३
बूबना रूप वर्णन	९८
बूबना विरह वर्णन	११३

⁂

डाढ़ालौ सूर

अरबद वर्णन	१२७, १२८
चील्हरों का फौज से युद्ध	१४७
डाढ़ाळा का सेना से युद्ध	१३२, १३३
डाढ़ाळा-भूंडण मिलन	१२८, १२९
डाढ़ाळे की मुक्ति	१४९
बीसळदे का डाढ़ाळे से युद्ध	१०४, १४१, १४२, १४४
बीसळदे का भूंडण से युद्ध	१३६
बीसळदे की ढाढ़ाळा से युद्ध की तैयारी	१३४, १३५
सिरोही वर्णन	१३०

⁂

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

अमरसिंह का युद्ध और अर्जुन गौड़ के हाथ से मृत्यु १६०
अमरसिंह की छुट्टी के लिए सलावत खां की अर्ज १५७
अमरसिंह के हाथ से सलावत खां का मारा जाना १५६
अमरसिंह बीकानेर के युद्ध से क्रोधित १५६
केसरीसिंह १५३, १५४, १५५
जसवंतसिंह १५५
बलू १५२
बलू की प्रशंसा का गीत १६५
भार्यासिंह १५२
महाराजा गजसिंहजी १५१
युद्ध में काम आने वालों की नामावलि १६४
सलावत खां की बीबी का विलाप १६१
सैयद के साथ व्यासजी तथा अन्य सरदारों का युद्ध १६३
स्वयं अमरसिंह का छुट्टी के लिए बादशाह से कहना १५६

::

महाराजा पदमसिंहजी री बात

आणन्द नगारची पर कहा गया गीत १८६
करणसिंहजी के चार पुत्र १६७, १६८
कुंभे चारण पर की गई दातारगी का वर्णन १७४, १७५
कुसलसिंह पर कहा गया गीत १८७
केसरीसिंह का औरंगजेब की सहायता करना १७२
गोयन्द मुळाणी पर गीत १८८
गोरधन गाडण का गीत १८६
चारण गोरधनदास का गीत १७८, १७६
दलेल खां से पदमसिंहजी का झगड़ा १८३
नबाब से पदमसिंहजी की मुलाकात १६०, १६१
नबाब का फकीरी लेना १६१
पदमसिंहजी का गनीम से युद्ध १८०, १८१
पदमसिंहजी की मृत्यु और नबाब का फकीरी लेना १८६, १६०

पदमसिंहजी द्वारा नबाब का खजाना गाजदी खां पहुँचाना १८३, १८४
महाराज पदमसिंहजी की प्रशंसा १६६, १७०
महाराजा करणसिंहजी १६७
मोहनसिंहजी और हरिण का प्रसंग १७५
सांवतराय से पदमसिंह का युद्ध १८४, १८५

⁂

सांई रो पलक में खलक

चन्देरी के महाराजा के यहाँ पहुँचना १६५
देवसरमा और ब्राह्मणी का सर्प के पास पहुँचना २०१
देवसरमा का अपने घर पहुँचना १६७
देवसरमा द्वारा जलते हुए सर्प को बचाना १६६
देवसरमा का घर को प्रस्थान १६६
देवसरमा द्वारा हरिवंश पुराण का पाठ और धन-प्राप्ति १६६
देवसरमा निवास-स्थान आदि १६५
ब्राह्मणी द्वारा देवसरमा को कन्धार के बादशाह का किस्सा सुनाना १६७, १६८, १६६, २००
सर्प का भस्म होना २०२
सर्प द्वारा देवसरमा को डसने की इच्छा प्रकट करना ६६, ६७

⁂

पलक दरियाव री बात

अजैपाळ साह और कनकरथ में विचित्रकुँवर के लिए झगड़ा २२८
कनकरथ और रानी का विचित्रकुँवर को ढुँढने के लिए प्रस्थान २२०
कनकरथ को विचित्रकुँवर के जीवित होने का पता लगना २१८
कनकरथ से विचित्रकुँवर का मिलना २२४
कुँवर विचित्र के पुत्र-जन्म २०८
देवीदास का दर्शनार्थ ठाकुरजी के मन्दिर जाना २०५
देवीदास की देह में दो व्यक्तियों का सृजन २३३

देवीदास द्वारा ठाकुरजी से पलक दरियाव का तमाशा दिखाने की प्रार्थना २०४
देवीदास द्वारा देह का संकल्प लेना २३३
पाटण सहर तथा अजैपाळ साह वर्णन २०३
बन्धुगढ़ के राजा कनकरथ की पटराणी के यहाँ देवीदास का जन्म २०५
बन्धुगढ़ में उत्सव २३४
ब्रहदभाण की कुँवरि का विचित्रकुँवर से विवाह २३३
ब्रहदभाण के दरबार में अजैपाळ और कनकरथ का न्याय के लिए जाना २३१
विचित्रकुँवर का तालाब में डूबना २१२
विचित्रकुँवर का देवीदास के रूप में मन्दिर में प्रकट होना २१४
विचित्रकुँवर की माता और पत्नि का विलाप २१३
सवालखी बनजारे का आगमन २०६
सेरपुर के राजा वीरभद्र की पुत्री से विचित्र का विवाह २०५
हरदान, रामदान का तीर्थाटन के लिए निकलना २१४
हरदान रामदान का विचित्रकुँवर को पहिचानना २१५

⁂

सूरे खींबे कान्धलोत री बात

ऊदेजी द्वारा वेरसी तथा जागर को बैर लेने पर ताना २४८
खींबे का राजूखाँ के दरबार में नाराज होना और घोड़ी निकालने का निश्चय २३७
घोड़ी के चुराये जाने का राजूखाँ को पता लगना—विक्षोभ प्रकट करना २४१
भूधर को घोड़ी चुराने के लिए तालाब पर भेजना २३६
भूधर द्वारा घोड़ी का चुराया जाना २४०
राजूखाँ का भेष बदल कर घोड़ी की खोज में निकलना २४२
राजूखाँ का सूरे खींबे के घर पहुँचना और घोड़ी चुराना २४३, २४४
राजूखाँ के दरबार में सूरे खींबे का जाना २३७
वेरसी का खोखों से बदले के लिए युद्ध २४६
सूरे खींबे का चरित्र वर्णन २३५, २३७
सूरे खींबे से खोखरों का युद्ध २४५

⁂

टिप्पणियां

ढोला–मारू

हस्तलिखित प्रति—लिपिकाल सं. १८७२

पन्नों का आकार १०½" × ७¼" जिसमें १ इन्च का हासिया छोड़ा गया है। पृष्ठ संख्या—७३

विशेष—ढोला - मारू की बात का प्रारम्भ जिस पद्यांश से हुआ है उसका साम्य ढोला - मारू रा दूहा के परिशिष्ट में दिये गये पद्यांश से भी है। आगे कथा का निर्वाह भी कुछ दूर तक उसी के अनुरूप चला है। ढोला - मारू के प्रचलित दोहों के अतिरिक्त भी कितने ही दोहे स्थान-स्थान पर बात के बीच - बीच में आए हैं। ढोला - मारू के प्राचीन दोहों से इन दोहों में भाषागत सरलता भी दृष्टिगोचर होती है। श्री उदयराज उज्जवल का कहना है कि इस बात का रचयिता चारण कवि महादान महड़ू है। कई बातों की प्रतियों में महादान महड़ू स्वयं पात्र के रूप में भी उपस्थित होता है (ढोला जब पुंगळ पहुँचता है तब महादान से रास्ते में भेंट होती है)। उनके मतानुसार जैनियों द्वारा लिखी गई ढोला - मारू की प्रतियों में तथा अन्य प्रतियों में घटनाओं आदि के सम्बन्ध में कुछ भिन्नता भी है।

ढोला - मारू का समय अनिश्चित होने से इस सम्बन्ध में प्रामाणिक रूप से कुछ कहना कठिन है।

**

जलाल - बूबना

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नों का आकार—१३" × ८½" जिसमें १ इन्च । दोनों ओर हासिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— ६०

विशेष—यह बात काफी प्रसिद्ध है और कई हस्तलिखित प्रतियाँ इसकी उपलब्ध होती हैं। अधिकांश प्रतियों में 'जलाल गांहणी री बात' शीर्षक है।

डाढ़ाळौ सूर

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नों का आकार—१३″×८½″ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हासिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— ५०

⁂

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नों का आकार—१३″×८½″ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हासिया छोड़ा गया है। अक्षर बड़े और साफ लिखे हुए हैं।

पृष्ठ संख्या— ३४

विशेष—अमरसिंह प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्र हैं। इनके पिता गजसिंह (जोधपुर के राजा) की मृत्यु के पश्चात् इनके छोटे भाई जसवन्तसिंह से जोधपुर की गद्दी के लिए झगड़ा हुआ पर जोधपुर प्राप्त न कर सके और नागौर को अपनी राजधानी बनाया। शाहजहाँ ने इन्हें मनसब दिया और सामन्तों में रखा। इनके बारे में यह किंवदंती है कि शाहजहाँ के दरबार में सलावत खाँ द्वारा अपशब्द कहने पर इन्होंने उसे मार डाला और आगरे के किले की दीवार घोड़े सहित फाँद कर निकल भागे। तत्पश्चात् अर्जुन गौड़ ने इन्हें धोखे से पकड़ कर मरवा डाला। पर इस बात में राज्य - दरबार में ही युद्ध करते - करते काम आना बतलाया गया है।

⁂

महाराजा श्री पदमसिंह री बात

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नों का आकार—१३″×८½″ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हासिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— ५४

विशेष—पदमसिंहजी (बीकानेर) और इनके भाइयों के कई वीरतापूर्ण किस्से प्रचलित हैं। पदमसिंहजी की बात काफी प्रचलित है। इस बात में सम्पूर्ण किस्से नहीं हैं। केवल कुछ चुने हुए किस्सों का ही संकलन है। यही बात 'करणसिंहजी रै बेटा री बात' के नाम से भी प्रचलित है।

सांई री पलक में खलक

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नों का आकार—१३″×८½″ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हासिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— ८

⁂

पलक दरियाव री बात

हस्तलिखित प्रति—इसकी नकल श्री सीतारामजी लाळस के सौजन्य से प्राप्त हुई है। नकल प्राचीन प्रति से की गई है। नकल किए हुए पन्नों की संख्या २३ है। अन्य बातों की तरह इसकी भी भाषा पुरानी है पर अधिक प्राचीन नहीं।

⁂

सूरे खींबे कांधळोत री बात

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नों का आकार—१३″×८½″ जिसमें १ इन्च का हासिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— ४०

विशेष—प्रस्तुत बात में लोकमान्य पात्र हैं पर इनका विवरण इतिहास में उपलब्ध नहीं होता।

⁂

वात सूची

वात अगस्त्य री
, अचलदास खींची री
, अडाऊ बेटी री
, अणंतराय सांखळे री
, अणहिलवाड़ा पाटण री
, अमरसिंघजी री
, अरड़कमल री
, अरजन हमीर री
, अलावदी री उतपत री
, अल्हणसी भाटी री
, आय ठहकी भाहिमै तैंरी
, आसा डाभी री
, उजीण रा राजा अर जती री
, ऊदै उगणावती री
, ऊमादे भटियांणी री
, ऊहड़ हरदास मोकळौत री
, एकांतरे री
, अेकादसी व्रत री
, ओखाणां री
, कछवाहां री
, कपोलकुंवर राठौड़ री
, करण लाखाउत देसल राठौड़ चारण जालूणसिंघ री
, कंवर फूलवन्त री
, काजळी तीज री
, कान्हड़दे री
, कांधळजी काम आया तें समै री
, कांधळजी री
, कांधळोत खेतसी री
, कांपलिया चहुवाणां री
, किसनगढ़ री
, कुतुबदी साहिजादै री
, कुतुबसतक री
, कुंवर रिणमल अखै सांखळे रो वैर लियो तैंरी
, कुंवर री अर साहूकार री
, कुंवरसी सांखळै री
, कुंवरियै जैपाळ री
, कूंगरै बलोच री
, कूंभै सूरावत राठौड़ ईडरियै री
, केसै उपाधियै री
, कैवाट री
, कोड़ीधज री
, खड़गल पंवार री
, कामखान्यां री
, खीचियां री
, खींवै बींझै धाड़वी री
, खुदाय बावळी री
, खेतसी रतनसिंहोत री
, खेतसी सिसोदियै री
, गढ़ बांधव रै धणियां री
, गढ़ मंडिया तैंरी
, गणेस चतुरथी व्रत री
, गणेसजी री
, गन्धरब सैण
गुलाबभंवर री

बात गोगादेजी री
, गोगादे वीरमदेग्रोत री
, गोगैजी री
, गोरावादळ री
, गोहिल ग्ररजन हमीर री
, गोहिलां खेड़ रा धणियां री
, गौड़ गोपाळदास री
, चहवांण सातलसोम री
, चहवाणां सोनगरां री
, चन्दकुंवर री
, चन्दन मलियागिर री
, चन्द्रावतां री
, चरपट राजा री
, च्यार परधानां री
, च्यार भायलां री
, च्यार मूरखां री
, चतुराई री
, चांपै वाळै री
, चौबोली री
, छत्तीस राजकुळी इतरै गढ़ राज करै तैं री
, छाहड़ पंवार री
, जगदे पंवार री
, जगमाल मालावत री
, जन्माष्टमी री
, जळन्धरनाथ री
, जसमा ग्रोडणी री
, जसवन्त राठोड़ ताल्हणोत री
, जसहड़दे तिलोकसी री
, जाड़ेचां री
, जेसलमेर री
, जेहै सरवहियै री
, जेहै जाम री
, जेहै जेठावत री
, जैतमाल सळखावत कोळियां री
बात जैते हमीरोत राणगदे लखणसियोत री
, जैमल वीरमदेग्रोत री
, जोगराज चारण री
, जोधै री
, तमाइची पातिसाह री
, तुवरां री
, दत्तात्रेय चौबीस गुरु किया तैंरी
, दरजी मायाराम री
, दहियां री
, दिनमान रै फळ री
, दीवाळी श्री महालिछमी री
, दूदै जोधावत री
, दूदै भोज री
, दूलची जोइये री
, देपाळ री
, देवजी वगड़ावतां री
, देव रै ग्रहीर री
, देव रै नायकेद री
, दौलताबाद रा उमरावां री
, न क्यूं हरै न क्यूं सेखै तैंरी
, नरबदजी राणै कूंमै नूं ग्रांख दीवी तैंरी
, नरबद सतावत री
, नरै सूजावत ग्रर खींमै पोकरणै री
, नागजी नागमती री
, नागार रै मामले री
, नानिग छाबड़ा री
, नापै सांखळै री
, नाराइणदास मीढ़ाखां री
, नाराइणदास हाडै री
, नासिकेत री
, नृसिंह चतुर्दशी री
, पताई रावळ री
, पताई रावळ साको कियौ तैं समै री
, पदमकळा री

वात पन्ना री
, पन्ना वीरमदे री
, पराक्रमसेन री
, पंचख्यात वारता री
, पंचदंड री
, पंचसहेली री
, पाबूजी री
, पाहुवारी
, पिंगळा री
, पीठवै चारण री
, फीरोजसाह पातिसाह री
, पींचैजी री
, प्रतापमल देवड़ै री
, प्रिथीराज चहुवांण री नै हमीर हाहालै री
, प्रिथीसिंह पंवार री अर खूबां री
, पोपांबाई री
, फमै घोरन्धार री
, फळ द्वितीया री
, फिरोजसाह पातिसाह री
, फूलजी भाटी री
, फूलजी फूलमती री
, फोगसी ग्रेवाळ री
, फोफणंद री
, बगलै हंसणी री
, बालिमा री
, बुधास्टमी री
, बुधिबळ री
, बुंदेलां री
, बून्दी री
, बोड़ा चहुवाणां री
, ब्रह्मकूच री
, ब्रह्मचरित्र री
, भटनेर री
, भंडाण रै गांव री

वात भागवत दसम स्कंध कथासार
, भागवत दसम स्कंध व्रत री
, भाटियां री नखां जुदी-जुदी हुई तैरी
, भाटी लंजै विजैराव रा
, सुन्दरदास बीकपुरी री
, भायला राजपूतां री
, भोज री
, मधुभालती री
, मलकम्बर नै आकूत खां री
, महाराजा सुजांणसिंहजी री
, महिन्दर वीसळौत री
, माणक तोलरी री
, माम गडूकै री
, मामै भाणेजै री
, मारवाड़ रा अमरावां री
, मालदे पंवार री
, माल्हाळी री
, मूळराज देवराज री
, मेंहदरै राठौड़ री
, मोमल री
, मोहिलां री
, रतनसिंघ सूरजमल्ल री
, रतना हमीर री
, रयणसी तुंवरी री
, राठौड़ ठाकुरसी जैतस्योत री
, राठौड़ राजसिंघजी री
, राजसिंघ खिंयावत री
, राजा चन्द री
, राजा करण री
, राजा धार सोलंकी री
, राजा नरसिंघ री
, राजा नराउत री
, राजा प्रिथीराज चौहाण री
, राजा प्रिथीराज सुहवदेव परणिया तैंरी

, राजा भीम री
, राजाभोज खापरै चोर री
, राजाभोज री चार वातां
, राजाभोज री पनरमी विद्या री
, राजा मानधाता री
, राजा मोहमरद री
, राजाराणी अर कुंवर री
, राजा रिसाळू री
, राजा रै कुंवरां री
, राजा वीर विक्रमादित्य री अर नक्षत्र जातीफ री
, राजा सिधराव जैसिंघदे सोलंकी री
, राठौड़ ठाकुर सी जैतसिंहोत री
, राठौड़ नरै सूजावत खींवै पोहकरणै री
, राठौड़ सीहैजी नै आसथानजी री
, राणगदे भाटी री
, राणी चौबोली री
, राणै खेतै री
, राणै रतनसी राव सूरजमल री
, राम री
, रामचरित री
, रामनवमीं री
, रामसिंह खींवावत री
, रायधण भाटी री
, रायसिंघ खींवावत री
, राव अमरसिंघजी री
, राव कान्हड़दे री
, राव गांगै वीरमदे री
, राव चूंडै री
, राव जोधै री
, रावत लखणसेन री
, रावत सूरिजमल कुंवर प्रिथीराज री
, राव तीडै सांवतसी वेढ हुई तैं समै री
, राव प्रतापमल देवड़ै री
, राव मंडलीक री
वात राव मानै देवड़ै री
, राव राघवदेव सोलंकी री
, राव रिणमल खाबड़ियै री
, राव रिणमल महमद मारियौ तैंरी
, राव रिणमल री
, रावत प्रतापसिंह मोहकमसिंह देवगढ़ रै धणी री
, राव जगमाल री
, रावळदे सांखळै री
, रावळ मलीनाथ पंथ में आयौ तैंरी
, रावळ लखणसेन वीरमदे सोनगरै री
, रावळ लखणसेन री
, रावळ हमीर लखै जाम री
, राव लूणकरण री
, राव बीकैजी बीकानेर बसायौ तैं समै री
, राव बीकैजी री
, राव वीरमदे री
, राव सलखै री
, राव सीहैजी री
, राव सुरतांण देवड़ै री
, राव सेखै नै भातौ आयौ तैंरी
, राव हमीर लाखै जाम री
, राहब साहब री
, रिणधवळ राजै री
, रिणधीर चुंडावत री
, रिणमल री
, रिष पंचमी री
, रुद्रमाल्यो प्रासाद सिद्धराव करायौ तिण री
, रूपमंजरी मनरंजन री
, लाखै फूलाणी री
, लाखै जाम री
, ललां मेवाड़ी री
, लालजी अर हीरजी री

वात वगड़ावतां री
, वडा वडीदे वडै डहरू वानर री
, वडै राव री
, वजीर रै बैर री
, वहलिमा री
, वाडी वारै री
, वाणवेध री (प्रिथीराज रासो)
, सोणा री
, वालै चांपै री
, विणजारै विणजारी री
, विसनी बे खरच री
, वीजण विजोगण री
, वीरबळ री
, वीरमजी री
, वीरमदे सोनगरै रै अगलै जनम री
, वीसा बोली री
, वींझरै अहीर री
, वींझै सोरठ री
, वूठी ठग राजा री
, वैताल पच्चीसी री
, वैरसल भीमौत वीसल महेवचै री
, सगुणा सत्रुसाळ री
, सदैवच्छ सावलिंगा री
, सनीसरजी री
, सयणी चारणी री
, सरवहियै वीरमदै रै बेटै धनपाळ री
, सर्सीपन्ना री
, सागण वाढ़ेल री
, सांचोर रै चहुवाणां री
, सात बेटियां वाळै राजा री
, सातळ सोम री
, सादै गोहिलौत नाडोळाई रै धणी री
, साह ठाकुरै री
, साह ताल्हणसी हेमराज री
, साह रामदत्त री

वात साहणी अर मेहीवाळ री
, साहिजादै कुतुबदी री
, साहूकार रा बेटा अर नाई री
, सांई कर रहियौ तैंरी
, सांखळा दहियां सूं जांगळू लियौ तैंरी
, सांखळां री
, सांगण वाढ़ेल री
, सांगण हामू मूंजै री
, सांगमराव राठौड़ री
, सांगै पंवार री
, सांवतसी झोकाई री
, सिखरौ बहेलवै गयौ रहै तैंरी
, सिरोही रा धणियां री
, सिवरात री
, सिंहासण बत्तीसी री
, सीहै मांडण री
, सीहै सींधळ री
, सुक बहत्तरी री
, सुदबुद सालिगा री
, सुपियारदे री
, सूजै आहाड़ै अर जसै पंवार री
, सूरजमल हाडै री
, सूर सांवळै री
, सूरां अर सतवादियां री
, सूरिजमल री
, सेखावतां री
, सेतराम वरदोई सेनौत री
, सेत्रावां रा धणी राव लूणा री
, सोणां री
, सोनगिरां री
, सोनारी रै तपावस री
, सोनिगरै मालदे री
, सोमवती री
, सोरठ री
, सोळह सहेलड़ियां री

, सोलंकियां खैराडां री
, सोलंकियां री
, सोलंकी राजा बीज री
, सोहणी री
, हरदास ऊहड़ री
, हरदास मौकळौत बीरमदे दूदावत री
, हरराज रै नैणां री
, हाडां री
, हाहुल हमीर भोळै राजा भीम सूं जुध करियौ तेंरी

मूल्यांकन

राजस्थानी लोक-कथाओं सम्बन्धी साहित्य के निर्माण और संरक्षण में जैनों का योग

[अगरचंद नाहटा]

कोई भी ऐतिहासिक, पौराणिक, काल्पनिक कथा जब लोक-मुख पर छा जाती है तो वह लोक-कथा के नाम से प्रसिद्ध हो जाती है, क्योंकि उसमें लोक-रुचि के अनुसार परिवर्तन हो जाता है, लोक-प्रचलित विश्वास उसमें सम्मिलित हो जाते हैं। इस प्रकार कई एक तत्त्वों का समावेश ही किसी भी ऐतिहासिक व पौराणिक कथा को भी लोक कथा का रूप दे देता है। इन कथाओं का प्रचार मौखिक परम्परा से दीर्घ काल में होते रहने के कारण उनके कई रूपान्तर हो जाते हैं। किसी अेक कथा का कोई प्रसंग एवं चमत्कारिक व अलौकिक बातें अनेकों कथाओं में पाई जाने लगती हैं, अर्थात् लोक-कथा से एक दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं।

कथाओं के प्रचार और तत्संबंधी साहित्य - निर्माण के मुख्यतः तीन प्रयोजन होते हैं— १–मनोरंजन, २–बुद्धिवृद्धि और शिक्षा ३–धार्मिक प्रेरणा। साधारणतया तो मनोरंजन की ही प्रधानता रहती है पर पंचाख्यान आदि की कथायें बुद्धिवृद्धि और शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्रत - नियमों के महात्म्य संबंधी कथाओं में धार्मिक प्रेरणा की ही प्रधानता रहती है। किसी भी धर्म के किसी भी प्रकार को पालन करने से किस-किस व्यक्ति ने किस तरह सांसारिक एवं पारलौकिक सुख प्राप्त किया, तथा अधर्म के आचरण से किस-किस व्यक्ति को क्या दुःख उठाना पड़ा, इसी बात की छाप हृदय में जमाने के लिए दृष्टांत के रूप में इन कथाओं का प्रयोग होता रहा है। जैन विद्वानों ने प्रधानतया धर्म-प्रचार के लिए ही इन कथाओं को अपनाया, क्योंकि दृष्टांत के द्वारा धर्म-तत्व का ग्रहण साधारण जनता सुगमता से कर सकती है। केवल विधिनिषेध के वाक्यों से वह असर नहीं होता, जो उन बातों को स्पष्ट करने वाली दृष्टांत कथाओं द्वारा होता है। जैन धर्म लोक-धर्म रहा है। तीर्थंकरों का उपदेश केवल राजा-महाराजा और बड़े आदमियों के लिए ही नहीं था, पर बिना किसी भेदभाव के समस्त जनता के लिए था। मनुष्य ही नहीं, देव और पशु-पक्षी भी तीर्थंकरों के उपदेश से समान रूप

से लाभ उठाते थे। इसीलिए जैन धर्म के प्रवर्तकों और प्रचारकों ने तत्कालीन लोकभाषा में ही अपना उपदेश जारी रखा, और बिना पढ़ा-लिखा साधारण व्यक्ति भी सरलता से उसे समझ व ग्रहण कर सके, इसलिए लोक-प्रसिद्ध दृष्टांतों और कथानकों को उन्होंने अपने धर्म-प्रचार में विशेष रूप से अपनाया। भगवान महावीर के उपदेशित ११ अंग सूत्रों में ज्ञाताधर्म कथा नामक छठा सूत्र ऐसी कथाओं का वृहद् भंडार था। परम्परा के अनुसार इस सूत्र में साढ़े तीन करोड़ कथायें थीं, पर स्मृति की कमी होती गई और जैनागत सूत्र लगभग १००० वर्ष तक मौखिक रूप से ही प्रचारित रहे। इसलिए वर्तमान में प्राप्त अंश मूल परिभाषा की अपेक्षा बहुत ही थोड़ा है। ज्ञाताधर्म कथा सूत्र में अब तो बहुत थोड़ी सी कथाएं रह गई हैं पर उनमें कई कथा ऐसी हैं जिन्हें हम लोक-कथायें कह सकते हैं। इनका प्रचार जैन धर्म में ही सीमित नहीं पर बौद्ध व वैदिक धर्म के साथ साथ विदेशों में भी पाया जाता है। इसके सम्बन्ध में डा० जगदीशचन्द जैन की लिखी हुई "अढ़ाई हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ" नामक पुस्तक देखनी चाहिए। मूल आगम ग्रंथों के बाद उनकी विविध टीकाओं में अनेकों ऐसे दृष्टांत व कथाएं प्राप्त होती हैं, और ५वीं शताब्दी से तो स्वतंत्र रूप से प्राकृत भाषा में कई कथा-ग्रंथ लिखे जाते रहे हैं जिनमें कई पौराणिक व लोक-कथायें भी सम्मिलित हैं। वसुदेवहिन्डी नामक ऐसा ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। पमचरियम् में प्रसिद्ध रामायण की कथा मिलती है पर वाल्मीकि रामायण से उसमें वर्णित कथा कई बातों में भिन्न पड़ जाती है। १२वीं शताब्दी तक जैन विद्वानों के रचित अनेक स्वतंत्र कथा-ग्रंथ और कई कथा-संग्रह ग्रन्थ प्राकृत भाषा में रचे हुए मिलते हैं। वैसे संस्कृत और अपभ्रंश में ही कथा-ग्रंथों की रच जाने की परम्परा चलती रही है। १३वीं शताब्दी से सम्भवतः लोक-रुचि में एक बड़ा परिवर्तन आया। इस समय के लिखे हुए छोटे-छोटे प्रबंधों के कई संग्रह ग्रंथ मिलने लगते हैं, जिनमें कई प्रबन्ध ऐतिहासिक हैं। कुछ लोक-कथाओं पर आधारित हैं। प्रबंधसंग्रह की यह परम्परा १५वीं शताब्दी तक विशेष रूप से चालू रही। १३वीं शताब्दी से ही विक्रमादित्य संबंधी लोक प्रचलित कथायें लिपिबद्ध की गई। यद्यपि सम्राट विक्रम एक ऐतिहासिक पुरुष थे, पर उनके सम्बंध में जनता में अनेक प्रकार की ऐसी कथायें प्रसिद्ध हो गईं जिन्हें ऐतिहासिक नहीं कहा जा सकता, उन्हें लोक-कथा ही कहा जा सकता है। जैन विद्वानों ने विक्रमादित्य संबंधी कथाओं को लेकर संस्कृत, प्राचीन राजस्थानी, गुजराती भाषाओं में ६० से अधिक ग्रंथ लिखे हैं, जिनका कुछ परिचय मैं अपने "विक्रमादित्य संबंधी जैन साहित्य" नामक निबंध में दे चुका हूँ, जो विक्रम स्मृतिग्रंथ और जैन सत्यप्रकाश में प्रकाशित हो चुका है। विक्रम के संबंध में इतनी अधिक रचनायें जैनेतर विद्वानों की भी प्राप्त नहीं होती। इससे जैन विद्वानों ने लोक-कथाओं को कितने विस्तृत रूप में अपनाया इसका सहज ही पता चल जाता है। राजस्थानी भाषा में रचे गए जैन कवियों के विक्रम संबंधी कई ग्रंथ तो विक्रमादित्य के पूरे चरित्र पर आश्रित है और कई उसके जीवन से संबंधित किसी एक प्रसंग को लेकर रचे गये हैं—जैसे सिंहासनबत्तीसी, वैतालपच्चीसी, पंचदण्ड कथा, विक्रमचरित्र व विक्रमसेन, खापरा चोर, चौबोली, लीलावती, कनकावती, शनी कथा आदि। इसी प्रकार विद्याविलासी महाराजा भोज और नन्द आदि ऐतिहासिक पुरुषों से सम्बन्धित जैन विद्वानों की राजस्थानी लोक-कथाएं प्राप्त हैं।

१३वीं शताब्दी से १५वीं शताब्दी तक संस्कृत में बने हुए अनेक प्रबन्ध-संग्रह और कथा-ग्रंथों में लोक-कथायें मिलती हैं। १५वीं शताब्दी से तो राजस्थानी भाषा में भी जैन विद्वानों ने लोक-कथायें संबंधी स्वतंत्र ग्रंथ लिखने प्रारम्भ किये। वैसे राजस्थानी में रचे गये रास चौपाई आदि कथा-ग्रंथों का प्रारंभ तो १३वीं शताब्दी से ही बराबर होता रहा है, पर १५वीं शताब्दी से पहले का कोई राजस्थानी काव्य लोक-कथा को लेकर नहीं बनाया गया। जैन महापुरुषों व पौराणिक कथायें और ऐतिहासिक चरित्र ही १३-१४वीं शताब्दी में राजस्थानी काव्यों में पाये जाते हैं। फिर पूर्ववर्ती प्राकृत व संस्कृत ग्रंथों की अनेक कथायें राजस्थानी भाषा में अवतरित होती रहीं और बहुतसी नई लोक-कथा, जो जनता में खूब प्रचलित थीं उन्हें भी जैन विद्वानों ने धार्मिक रूप देकर प्रचारित किया। ऐसी रचनाओं की संख्या सैकड़ों पर है, जिनका प्रारंभ व अंत का धार्मिक प्रेरणा वाले कुछ हिस्से को अलग कर देने पर उसमें विशुद्ध लोक-कथा का दर्शन होता है। अभी तक ऐसे समस्त राजस्थानी काव्यों का सूक्ष्म निरीक्षण नहीं हो सका है, इसीलिये जैन कवियों की रास चौपाई आदि संज्ञक राजस्थानी काव्यों में लोक-कथायें कितनी हैं, इसका ठीक अनुमान नहीं किया जा सकता। श्री मंजुलाल मजूमदार का विस्तृत निबंध "गुजराती में लोक-वार्ताओं" के नाम से 'गुजराती साहित्य' खंड ५ (मध्यकालनो साहित्य प्रवाह) नामक ग्रंथ में संवत् १९८५ में प्रकाशित हुआ था। उसमें विक्रमचरित्र, सिंहासनबत्तीसी, पंचदंड, बैताल-पच्चीसी, चंदन मलयागिरी, खापराचोर, शनिश्चर विक्रम, अंबड, पंचाख्यान, कपूरमंजरी, सुकबहोतरी, माधवानल कामकंदला, ढोला-मारू, विल्हणपंचासिका, विद्याविलास, नन्द-बत्तीसी, सगालशाह, हंसावली या हंस-वच्छ, शीलवती, सदयवच्छ सावलिंगा, आदि लोक-कथाओं संबंधी जैन रचनाओं का परिचय दिया गया था। तदनन्तर श्री भोगीलाल सांडेसरा के "आपणी लोकवार्ता विषयक प्राचीन साहित्य" नामक निबंध में कुछ नई जानकारी के साथ उपर्युक्त लोक-कथाओं संबंधी जैन रचनाओं का परिचय दिया गया है। इसमें लीलावती, आरामशोभा, नामक लोक-कथाओं का परिचय और जोड़ दिया गया है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका में "लोक-कथाओं संबंधी जैन साहित्य" नामक मेरा भी एक लेख प्रकाशित हो चुका है और कई लोक-कथाओं के संबंध में स्वतंत्र रूप से मेरे और मेरे भतीजे भँवरलाल के लेख राजस्थान भारती, कल्पना, मरुभारती, वरदा, आदि पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें से कतिपय लेखों की सूची नीचे दी जा रही है—

१. सदयवत्स सावलिंगा की प्रेम-कथा, राजस्थान भारती, वर्ष ३, अंक १
२. जैन साहित्य में चंद्रराजा की प्रेम कथा, व्रजभारती, वर्ष ४, अंक १०-१२ शोध पत्रिका, मरुभारती, वर्ष ६, अंक ३
३. विद्याविलासी महाराजा भोज संबंधी जैन साहित्य, विक्रम, वर्ष ५, अंक २—गांगा तेली व भोज की कथा (गद्य में)
४. प्रियमेलक तीर्थ, मरुभारती, वर्ष ३, अंक ४
५. पुरन्दर कुमार, मरुभारती, वर्ष ५, अंक २

६. मानतुंग मानवती, मरुभारती, वर्ष ५, अक ३
७. सती लीलावती, मरुभारती, वर्ष ५, अंक ४
८. रनचूड व्यवहारी, मरुभारती, वर्ष ६, अंक २
९. पद्मावती व पद्मसी, वरदा, वर्ष १, अंक ४
१०. विद्याविलास, कल्पना
११. चंदनमलयागिरी कथा व तत्संबंधी साहित्य, कल्पना, वर्ष ८, अंक १२
१२. चित्रसेन पद्मावती, नागरी पचारिणी पत्रिका, वर्ष ४९, अंक १
१३. कान्हड कठिहारा, जैन भारती, जैन सन्देश, चरित्र निर्माण, धनदत्त कथा (जैन भारती १९३९)
१४. टीकमचंद रचित चंदहंस कथा, अहिंसा वाणी, वर्ष ७, अंक ६
१५. बंकचूल कथा, जैन सिद्धान्त भाष्कर, जैन भारती
१६. गोपीचंद कथा, साहित्य संदेश, वर्ष १८, अंक ९, विजयानंद
१७. वाग्विलास कथा संग्रह, वरदा, वर्ष १, अंक १
१८. बुद्धिबल (कथा), चरित्र निर्माण, वर्ष ६, अंक ९
१९. माधवानल कामकंदला संबंधी साहित्य, हिन्दी अनुशीलन
२०. महाकवि विल्हण की प्रेम कथा, त्रिपथगा में प्रेषित
२१. मगांक पद्मावती कथा, आजकल में प्रेषित
२२. मत्स्योदर कथा
२३. मदनशतक
२४. शुल्लक कुमार कथा
२५. रत्नपाल
२६. उत्तमकुमार
२७. ऊमासेन जयसेन कथा

और भी कई लोक-कथायें, राजस्थानी जैन काव्यों के सार के रूप में लिखी जा चुकी हैं। लोक-कथाओं सम्बन्धी जैनेतर गद्य-पद्यात्मक राजस्थानी रचनाओं की अनेक प्रतियाँ जैन ज्ञान-भंडारों में सुरक्षित हैं। इनमें से कई कथाऐं ऐसी हैं जिनकी प्रतियाँ अन्यत्र कहीं नहीं मिलतीं। अतः रास्थानी लोक-कथाओं संबंधी साहित्य-निर्माण व संरक्षण में जैन विद्वानों की देन महान् है। कई लोक-कथायें तो जैन समाज में इतनी अधिक लोक-प्रिय हुई कि १-१ कथा सम्बन्धी ५-१० रचनाऐं मिलती हैं। जैन राजस्थानी गद्य में भी १५वीं शताब्दी से कथाऐं लिखी जाती रही हैं पर उन में लोक-कथाऐं कम ही हैं, जैन पौराणिक कथाऐं ही अधिक हैं।

⁂

लोक-कथाओं की एक प्ररूढ़ि—जादू की डोरी

[कन्हैयालाल सहल]

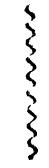

लोक-कथाओं के वैज्ञानिक अध्येताओं ने जादू की डोरी को भी एक मूल अभिप्राय (Motif) के रूप में स्वीकार किया है। डोरी जैसी छोटी-सी वस्तु भी एक स्वतंत्र मूल अभिप्राय का रूप धारण कर सकी है, यह पढ़-सुन कर चौंकने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में किसी वस्तु का महत्त्व उसकी अल्पता अथवा दीर्घता पर निर्भर नहीं करता। महत्त्व का मुख्य कारण है उसकी प्रभविष्णुता। वैसे देखा जाय तो यज्ञोपवीत भी तो एक सूत्र ही है किन्तु फिर भी उसको कितना महत्त्व दिया गया है। उसी प्रकार दक्षिण भारत में सम्पन्न होने वाले विवाहों के अवसर पर गले में जो 'मंगल-सूत्र' बाँधा जाता है, वह भी आखिर है तो सूत्र मात्र ही; किन्तु दक्षिण भारत के निवासी फिर भी उसे कितना महत्व देते आये हैं। दूर जाने की आवश्यकता नहीं, रक्षा-बन्धन को ही लीजिये—वह भी एक प्रकार का रक्षा-सूत्र ही तो है किन्तु फिर भी उसके महत्व को कौन नहीं जानता? यही कारण है कि डोरी भी यदि जादू के गुणों से समन्वित हो जाय तो फिर उसकी करामात देखने ही योग्य है। केवल भारतवर्ष में ही नहीं, विश्व के बहुत से देशों में अनेक कार्यों की सिद्धि के लिए जादू की डोरी का प्रयोग हुआ है। स्त्रियों के वन्ध्यात्व को दूर करने तथा बहुविध रोगोपचारों में जादू की डोरी अथवा डोरे का प्रयोग होता रहा है। इतना ही नहीं, आज के वैज्ञानिक युग में भी उसका प्रयोग बराबर देखने में आता है।

लोक-कथाओं के मूल अभिप्राय के रूप में प्रयुक्त 'जादू की डोरी' का जो रूप है, उसका कुछ स्पष्टीकरण कथासरित-सागर की निम्नलिखित कथा से हो सकेगा—

"वाराणसी में सोमदा नाम की एक युवती थी जो बड़ी सुन्दरी थी। वह पुंश्चली थी और गुपचुप जादूगरनी का भी काम करती थी। एक दिन उसने भवशर्मा के गले में एक डोरी बाँध कर जादू कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप भवशर्मा एक बैल के रूप में परिवर्तित हो गया। सोमदा ने इस बैल को एक ऊँटवाल के यहाँ बेच दिया। ऊँटवाल ने बैल पर जब सामान लादना शुरू किया तो एक बंधनमोचिनी नामक जादूगरनी को उस बैल पर बड़ी दया

आई। उसने अपनी अलौकिक शक्ति से जान लिया कि सोमदा ने भवशर्मा नामक एक निरपराध व्यक्ति को बैल बना दिया है। बन्धनमोचिनी ने दयार्द्र होकर उस समय बैल के गले में से डोरी निकाल ली, जब कि बैल का स्वामी उसे देख नहीं रहा था। गले में से डोरी निकलते ही वह बैल फिर भवशर्मा बन गया। मालिक ने बैल की तलाश करना शुरू किया किन्तु मालिक के लिए अब उस बैल की छाया तक भी पहुँचना सम्भव नहीं था। उधर बंधनमोचिनी और भवशर्मा दोनों साथ-साथ चलने लगे। संयोग से सोमदा भी उसी रास्ते से आ निकली। भवशर्मा को फिर से मनुष्य रूप में देख कर उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। 'खग जाने खग की ही भाषा' के अनुसार सोमदा सब रहस्य समझ गई। उसने बंधनमोचिनी को आड़े हाथों लेते हुए कहा—"दुष्टे! तूने इस भवशर्मा को क्यों बन्धन-विमुक्त कर दिया? अवश्य ही तुझे इसका फल चखाऊँगी। कल अगर तुम दोनों को मौत के घाट न उतार दूँ तो मेरा नाम सोमदा नहीं।" यह कह कर बिना किसी उत्तर की प्रतिक्षा किये ही सोमदा वहाँ से चली गयी। उसके चले जाने के बाद बंधनमोचिनी ने भवशर्मा से कहा—"कल सोमदा हम दोनों का प्राणान्त करने के लिए एक काली घोड़ी का रूप धर कर आयेगी। उस समय मैं रंगबिरंगी घोड़ी का रूप धारण करूँगी। जब हम दोनों आपस में लड़ने लगें, तब तुम काली घोड़ी को तलवार से मार डालना।

"प्रातःकाल होते ही भवशर्मा तलवार लेकर बंधनमोचिनी के घर गया। कुछ समय बाद सोमदा काली घोड़ी का रूप बना कर वहाँ आ पहुँची। बंधनमोचिनी ने लाल-भूरी घोड़ी का रूप बना लिया और दोनों में गुत्थमगुत्थी होने लगी। मौका देख कर भवशर्मा ने काली घोड़ी पर तलवार का वार किया जिससे सोमदा नामक जादूगरनी का सदा के लिए काम तमाम हो गया और भवशर्मा ने भी सन्तोष की साँस ली।"*

उक्त कथा से स्पष्ट है कि जब तक जादू की रस्सी बन्धी रहती है, तब तक जादूगर या जादूगरनी द्वारा परिवर्तित रूप से मुक्ति नहीं मिलती। जादू की रस्सी ज्योंही हटी, मनुष्य अपने पूर्व रूप को प्राप्त कर लेता है। ऊपर दी हुई कथा में यदि बंधनमोचिनी बैल के गले से डोरी न निकालती तो भवशर्मा को बैल ही बने रहना पड़ता।

कथा सरितसागर के अतिरिक्त अन्य अनेक कृतियों में 'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के बहुत से उदाहरण मिलते हैं। जैन-धर्म की एक अप्रकाशित कृति 'उत्तम चरितकथानक' है जिसमें अनंगसेना नामक नायिका राजकुमार उत्तमचरित के प्रेम में पागल हो उठती है। जब वह राजकुमार को प्राप्त नहीं कर पाती तो उसकी टाँग में जादू का डोरा बाँध देती है जिसके परिणामस्वरूप तत्काल ही उत्तमचरित शुक का रूप धारण कर लेता है। दिन में वह उसे शुक बनाए रखती और रात्रि में उसके गले में से जादू का सूत्र निकाल लेती जिससे फिर

---

* द्रष्टव्य The Ocean of Story (pp. 193-94-95)

वह मनुष्य बन जाता। इस प्रकार रात्रि में वह राजकुमार को अपनी विलासिता का साधन बनाती।"

'उत्तमचरित कथानक' से मिलता-जुलता प्रसंग ही 'चौबोली' नामक राजस्थानी लोक-कथा में भी उपलब्ध है जिसका आवश्यक अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है:—

"ताहरां मूरिखै रो नाम रतन पारखू दियौ। रतन परखावण लोक आवै। खोटै-खरै री खबरि करिदै। ताहरां कुंवरी कही—सिद्ध आगा इसी राखड़ी कराई जे बांधीजै तो सूवटौ हुवै, खोलीजै तो आदमी हुवै। एक समै सूवटौ करि बैसारियौ हुतौ सु ख्याल करतां उडियौ। जाई सहर कै राजा री कुवरी पंचकळी नै मिल्यौ। पंचकळी चंपे री कळी सूं तुलती तैसूं नाम पंचकळी कहावती। तैरै मौहल जाइ बैठौ। पंचकळी पकड़ि लियौ अर ख्याल करतां देखै तौ राखड़ी छै। राखड़ी छोडै तौ मनिख हुवौ। राति मानिख करै। दिन सूवटौ करै। इम करतां उवैसूं चूकी। "अर्थात् तब मूर्ख का नाम रत्न-पारखी रखा गया। रत्न-परीक्षा करवाने के लिये लोग आने लगे। मूर्ख खोटे-खरे की जांच कर देता। तब राजकुमारी ने किसी सिद्ध से ऐसा रक्षा-सूत्र बनवाया कि जिसे यदि किसी के बाँध दिया जाय तो वह व्यक्ति शुक हो जाय और यदि रक्षा-सूत्र खोल दिया जाय तो शुक पूर्ववत् मनुष्य का रूप धारण कर ले। एक समय राजकुमारी ने मूर्ख को सुआ करके बिठला रखा। सुआ खेल ही खेल में उड़ा और जाकर शहर के राजा की लड़की पंचकली से मिला जो चम्पे की कलियों से तुलती थी और इसलिए जिसका नाम भी पंचकली था। सुआ उसके महल पर जाकर बैठ गया। पंचकळी ने उसे पकड़ लिया और ख्याल करते हुए देखा तो उसे राखी (रक्षा-सूत्र) दिखाई दी। राखी ज्योंही छुड़ाई गई, शुक मनुष्य हो गया। इस प्रकार राजकुमारी रात को उसे मनुष्य बना देती और दिन में सुआ बना देती। इस प्रकार करते हुए वह पथ-भ्रष्ट हो गई।"

जैसा ऊपर कहा गया है 'उत्तमचरित कथानक और चौबोली की इस उपकथा में बहुत साम्य है किन्तु फिर भी उपकथा अपनी विशेषता लिए हुए है जिसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट हुए बिना नहीं रहता। लोक-कथाओं में सामान्यतः यह देखा जाता है कि राजकुमारी गले में जादू का डोरा डाल कर जिसे सुआ बना देती है, वह सुआ साधारणतः उड़ कर अन्य राजकुमारी के पास नहीं जाता। किन्तु चौबोली का शुक उड़ कर एक दूसरी राजकुमारी पंचकळी के पास पहुँच जाता है।

नावल्स (Knowles) द्वारा संपादित काश्मीरी लोक-कथाओं में एक ऐसे जादूगर की लड़की का प्रसंग आता है जो एक राजकुमार से प्रेम करने लगती है। वह राजकुमार को राजकुमारी से विमुक्त कर देना चाहती है। इसलिए राजकुमार के गले में एक जादू की डोरी अथवा सूत्र बाँध देती है जिसके परिणाम-स्वरूप राजकुमार तत्काल ही एक मेंढ़े का रूप धारण कर लेता है।

उक्त काश्मीरी लोक-कथा को पढ़ कर हमें एक ऐसी ही प्रसिद्ध राजस्थानी लोक-कथा का स्मरण हो आता है जो तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से यहाँ संक्षिप्त रूप में उद्धृत की जा रही है:—

"एक समय की बात है कि मारवाड़ के एक पहाड़ी इलाके में एक विधवा राजपूत स्त्री रहती थी। संयोग से एक रात के समय जब कि मूसलाधार वर्षा हो रही थी, उसका एक लड़का बाहर निकला। घोर अन्धकार में पानी की बौछारों से वह बालक अपनी सुधबुध खो बैठा। दुर्भाग्यवश उसका पाँव पानी की तेज धार में चला गया और वह बह निकला।

"उस समय दिल्ली में एक बादशाह राज्य करता था। उसके वजीर के कोई पुत्र न था। वजीर की आयु ढल चुकी थी तथा वह और उसकी पत्नी पुत्रहीन होने के कारण बहुत दुःखी रहते थे। वजीर नियम से नित्य प्रातःकाल यमुना-स्नान करने जाता था। एक दिन वह ज्योंही घाट पर गया, उसने देखा कि एक बालक नदी में बहता हुआ जा रहा है। वह तुरन्त नदी में से उस बालक को निकाल लाया और उसे घर ले जाकर अपनी पत्नी से कहा—"भगवान ने हमारे लिए पुत्र भेजा है, इसका पालन-पोषण कर।" वजीर की स्त्री ने बालक का रूप-रंग देखा तो वह मुग्ध हो गई।

"दिन, मास और वर्ष व्यतीत होने लगे। लड़के की आयु अब पन्द्रह वर्ष की हो चली। एक दिन तीज का मेला देखता हुआ लड़का ऐसे स्थान पर जाकर रुका जहाँ से बादशाह का महल बहुत नजदीक था। बादशाह की बेटी झरोखे में खड़ी हुई मेले की शोभा देख रही थी। वजीर के बेटे को देख कर वह उस पर मुग्ध हो गई। उसने तुरन्त एक दासी को भेज कर लड़के से कहलवाया कि आज अर्ध रात्रि के समय घोड़ा लेकर तुम मेरे महल के नीचे आकर खड़े हो जाना। मैं वहीं तुमसे मिलूंगी।

"वजीर का बेटा निश्चित समय पर वहाँ पहुंचा। बादशाह की लड़की पहले ही वहाँ घोड़ा लिए खड़ी थी। दोनों रातों-रात नगर से बाहर निकल गये। मंजिल-दर-मंजिल चलते वे कामरूप देश में पहुँचे। एक सराय में उन्होंने डेरा किया। बादशाह की बेटी भोजन के प्रबन्ध में लग गई और वजीर का बेटा घोड़ों के लिए दाना-चारा लाने बाजार गया। कामरूप देश की स्त्रियाँ जादू-टोने के लिए विख्यात हैं। वहाँ की एक स्त्री वजीर के लड़के को देख कर उस पर मोहित हो गई। उसने वजीर के लड़के के गले में एक जादू की डोरी बाँध दी जिससे वह मेंढ़ा बन गया।

"बहुत समय तक बाट देखने पर भी जब वजीर का लड़का न लौटा तो राजकुमारी ने मर्दाना वेश बनाया और उसकी खोज में निकल पड़ी। कई दिनों तक घूम कर उसने नगर की गली-गली छान डाली किन्तु वजीर के बेटे का कुछ पता न चला। नगर में घूमने से उसे एक बात का निश्चय अवश्य हो गया कि किसी ने जादू के बल से उसके प्रेमी को पकड़ लिया है। एक दिन कामरूप के राजा ने पुरुष वेशधारी राजकुमारी को देखा। राजा ने जब परिचय पूछा तो बादशाह की लड़की ने कहा कि मैं दिल्ली का राजकुमार हूँ। राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह उसके साथ कर दिया। बादशाह के बेटे ने कहा—"हमारे यहाँ ऐसा रिवाज है कि विवाह के पश्चात् सात दिन तक रात जगायी जाती है। आप नगर के सातों मुहल्लों को आदेश दे दीजिए कि हर मुहल्ले की स्त्रियाँ एक-एक रात जगावें।

"राजा के हुक्म से सभी स्त्रियाँ बारी-बारी से रात जगाने आतीं। बादशाह की बेटी बड़ी

सावधानी से उन्हें देखती। इस प्रकार रात जगाते-जगाते छः रातें गुजर गयीं। सातवीं रात उस मुहल्ले की स्त्रियों की बारी आयी जिनमें वह मेंढ़ा बना देने वाली स्त्री भी थी। वह स्त्री मेंढ़े को भी अपने साथ लाई थी। बादशाह की बेटी ने मेंढ़ा अपने पास रख लिया और राजा से उसका मूल्य चुका देने को कह दिया। वह यद्यपि मेंढ़ा देना नहीं चाहती थी, तथापि उसकी एक न चली और उसे मजबूर होकर मेंढ़े के बदले मूल्य ले लेना पड़ा।

"बादशाह की बेटी ने दूसरे दिन दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया। राजा ने उसे बहुत धन देकर बिदा किया। मार्ग में बादशाह की लड़की ने मेंढ़े के गले में बँधा हुआ मन्त्र का धागा तोड़ डाला। ऐसा करते ही मेंढ़ा वही सुन्दर वजीर का बेटा बन गया।

"बादशाह की बेटी ने राजकुमारी तथा वजीर के बेटे को सब वृत्तान्त कह सुनाया और उससे प्रार्थना की कि वह उन दोनों को पत्नी रूप में स्वीकार करके सुखपूर्वक जीवन बिताये। वजीर के बेटे ने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार कर लिया।"

इसीसे मिलती-जुलती एक कहानी लालजी हीरजी की है जिसका आवश्यक अथवा संबद्ध अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है :—

"अब लालजी बजार में जार दांणा हाळा नै तो दांणा की साई दीयाया अर फेर तमोळी कै बीड़ा लेबानै गया। सो तमोळण तो वांने मींडो कर'र बैठाण लीना। हीरजी रसोई छोड़'र लालजी नै हेरबा आया जिद देखै कांई तो लालजी तो मींडो हुया तमोळण कै भंद्या छै। देख'र उलटाई चल्या गया। ऊं सैर को राजा नार की सिकार खेलबानै रोजीना जाय अर हीरजी भी रोजीना देखबानै जाय। एक दिन नळा में अस्यो भारचो नार आ गयो सो कोई सूं ईं को मरचो नै, जिद हीरजी आपका घोड़ा माळा सूं तीर की देर ऊं नार नै मार नाख्यो। जिद राजा हीरजी नै बुला'र खैचै—रै भाई जुवान, आ, तू म्हांकी साथ रैबो कर। हीरजी साथ रैबा लागगा। राजा राजी ह्वै र हीरजी नै खैचै—भाई जुवान, तूनै चायजे सोई मांग। जिद हीरजी खैचै—और तो कांई बी मांगूं नै, सोना का सौ टका रोजीना चायजे छै। सो राजा सौ टका तो सोना का रोजीना कर दीना अर ऊंनै आपकी बेटी परणा दीनी। अख हीरजी को नांम लखटकियो जुबान पड़ गयौ अर राज कोबी सब काम वोई करबा लाग गयौ। फेर वो सब जिनावरां की लड़ाई कराई। कदे हाती की, कदे घोड़ां की, कदे कांई की, कदे कांई की अर पाछैईपाछै मींडां की। जिद सब सैर का मींडा आया अर तमोळण को मींडो भी आयौ। हीरजी ऊं मींडा को डोरो तोड़'र लालजी कर लीना। फेर आपकै देस जाबानै राजा सूं सीक मांगी। राजा वांनै नरो धन-दौलत देर, सीक देर बिदा कर दीना। हीरजी अर लालजी अर वा राजा की बाई तीन्यूं चाल्या। आगै चाल'र लालजी, हीरजी अर राजा की बाई सूं ब्याव कर लियौ अर तीन्यूं सुख सूं रैबा लाग्या। †

† देखिये Specimens of the Dialects, spoken in the State of Jeypore by Rev. G. Macalister, M. A., (pp. 53-54)

"लालजी और हीरजी में प्रेमी-प्रेमिका का सम्बन्ध था। जब हीरजी का विवाह-सम्बन्ध किसी दूसरे से स्थिर हो गया तो एक दिन लालजी और हीरजी दोनों पुरुष वेश में अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर एक साथ निकल पड़े। चलते-चलते वे एक शहर में पहुँचे। अब लालजी तो बाजार में दाने वालों के यहाँ जाकर दानों की 'साई' दे आए और फिर तमोळी के यहाँ बीड़ा लेने गए। तमोळिन ने उन्हें मेंढ़ा बना कर बिठा लिया। हीरजी रसोई का काम छोड़ कर लालजी को तलाश करने गई तो क्या देखती है कि लालजी तो मेंढ़ा बने तमोळिन के यहाँ बंधे हैं। देख कर हीरजी लौट गयीं। उस शहर का राजा सिंह की शिकार के लिए प्रतिदिन जाता और हीरजी भी रोज शिकार का दृश्य देखने जाती। एक दिन एक नाले में एक ऐसा भारी शेर आ गया जो किसी से भी नहीं मारा गया। तब हीरजी ने अपने घोड़े पर से तीर चला कर उस सिंह को मार डाला। तब राजा ने (पुरुष-वेश धारण किए हुए) हीरजी को कहा—"हे भाई नौजवान! आ, तू मेरे साथ रहा कर।

'हीरजी ने साथ रहना स्वीकार कर लिया। एक दिन राजा ने प्रसन्न होकर कहा—"नौजवान, तुझे जो चाहिए माँग।" हीरजी ने कहा—"मुझे और तो कुछ नहीं चाहिए, प्रतिदिन सोने के सौ टके चाहिएँ।" राजा ने हीरजी को सौ टके प्रति दिन देना स्वीकार कर लिया और अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया। अब हीरजी का नाम लखटकिया जवान पड़ गया और राजा का भी सब काम वही करने लग गया। फिर उसने सब पशुओं की लड़ाई करवाई—कभी हाथियों की, कभी घोड़ों की, कभी किसी की और कभी किसी की और अंत ही अंत में मेंढ़ों की। जब सब शहर के मेंढ़े आये तो तमोळिन का मेंढ़ा भी आया। हीरजी ने उस मेंढ़े का 'डोरा' तोड़ कर उसे लालजी बना लिया। फिर अपने जाने के लिये राजा से छुट्टी माँगी। राजा ने उन्हें बहुत सा धन-द्रव्य देकर बिदा किया। हीरजी, लालजी तथा उस राजा की लड़की, ये तीनों चले। आगे चल कर लालजी ने हीरजी तथा उस राजा की लड़की, दोनों से विवाह कर लिया और तीनों सुखपूर्वक रहने लगे।"

'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के सम्बन्ध में जो दो राजस्थानी लोक-कथाएँ उद्धृत की गई हैं, उनमें विवरणों का कुछ अंतर होते हुए भी दोनों की आत्मा एक है। एक कथा में मेंढ़े को प्राप्त करने के लिए 'रात्रि-जागरण' का आश्रय लिया जाता है, जब कि दूसरी कथा में पशुओं की लड़ाई का आयोजन किया जाता है।

किसी भी मूल अभिप्राय के सम्बन्ध में दो बातें द्रष्टव्य हैं—एक तो यह कि मूल अभिप्राय एक कथानक-रूढ़ि के रूप में प्रयुक्त होता है जिसका तात्पर्य यह है कि किसी एक देश-विशेष की लोक-कथाओं में ही नहीं बल्कि अन्य देशों की लोक-कथाओं में भी सामान्यतः उसकी बार-बार आवृत्ति देखी जाती है। दूसरी बात यह है कि इस प्रकार का मूल अभिप्राय कथानक को आगे बढ़ने में भी सहायक होता है। 'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के स्पष्टीकरण के लिए जिन लोक-कथाओं के उदाहरण ऊपर दिए गए हैं, उनसे यह बात स्पष्ट है कि 'जादू की डोरी' कथा को गति देने में सहायक होती है। गति ही क्यों, कथा की परिणति में

भी अनेक बार मूल-अभिप्राय का हाथ रहता है। अंग्रेजी के (Motif) शब्द के लिए कथा-नक—रूढ़ि, मूल-अभिप्राय आदि शब्दों का प्रयोग होने लगा है किन्तु (Motif) के लिए 'प्ररूढ़ि' शब्द अधिक उपयुक्त है, और यही शब्द प्रकृष्ट-रूढ़ि तथा कथाङ्कुर दोनों के अर्थ में व्यवहृत होना चाहिए।

कथा की बात

[कोमल कोठारी]

प्रकृति एवं जीवन के सत्य को उद्‌घाटित करने के दो मुख्य साधन हैं। एक—मनुष्य के वैज्ञानिक मानस से सम्बन्धित है एवं दूसरा—मनुष्य के कलात्मक चिन्तन में निहित है।

विज्ञान मनुष्य के भौतिक जीवन की आवश्यकताओं का विश्लेषण करता है, उसे सुखी एवं समृद्ध बनाने के लिए अन्वेषक का रूप धारण करता है, प्रकृति की अपरिमित शक्ति को पहिचानने की कोशिश करता है, और प्रकृति को जीवन के अनुरूप ढालने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है। विज्ञान का सत्य मनुष्य के हित के लिए तो अवश्य है किन्तु यह सत्य मनुष्य से निरपेक्ष रहता है। विज्ञान का लाभदायक उपयोग और विनाशकारी उपयोग मनुष्य की मानसिक गतिविधि पर निर्भर करता है। विज्ञान निर्माण भी है और विनाश भी है।

जीवन के सत्य को उद्‌घाटित करने वाली अन्य सत्ता का नाम है—कलात्मक चिन्तन। कला का श्रेय एवं प्रेय है—मनुष्य का दैनिन्दिन जीवन, उसका सद्‌व्यवहार, उसकी नैतिकता, सौन्दर्य भावना, समाज के प्रति मंगल-कामना एवं उसके सुसंस्कार। कला मनुष्य-सापेक्ष है, समाज-सापेक्ष है। विज्ञान, क्षण भर के लिए ही सही, मनुष्य के हित का आँचल छोड़ सकता है; कला को मनुष्य की शुभ-कामना के साथ छाया की भाँति लगा रहना पड़ता है।

विज्ञान, अपने अन्वेषण की दुनिया में अनेक-अनेक हिस्सों में बँट जाता है। कला भी अपने अनुभूतिपूर्ण संसार में अनेक भागों में बँट जाती है। चित्र भी कला है, संगीत भी कला है, भवन-निर्माण भी कला है और साहित्य भी कला है। सब कलाओं का प्रयोजन एक है और सभी कलाओं का उद्‌भव मनुष्य के संवेदनशील एवं अनुभूतिपूर्ण सौंदर्य भावना की अभिव्यक्ति में सन्निहित है।

सामाजिक जीवन की प्रारंभिक अथवा आदिम अवस्था में विज्ञान एवं कला में भेद नहीं था। जो विज्ञान था—वही कला थी। आदिम-समाज में टोने और टोटके, 'टेबूज़ और

टोटेम', जादू और धर्म की जो धारणायें थीं—वही शनैः शनैः समाज की विकसित अवस्था में विज्ञान एवं कला का रूप ग्रहण करती गईं। किन्तु एक महत्वपूर्ण बात है—मनुष्य की चाहे वैज्ञानिक-क्षुधा हो अथवा कलात्मक-क्षुधा हो—दोनों ही के लिए मनुष्य ने अपने सामाजिक इतिहास में बार-बार कथाओं का, उदाहरणों का, दृष्टांतों का सहारा लिया। मनुष्य अपनी बात कहने के लिए, अपने मन के रहस्यभरे और अस्फुट विचार को व्यक्त करने के लिए कहानी और दृष्टांतों की शरण में गया है।

मनुष्य के आदिम-मानस पर कथा-कहानी का अद्‌भुत प्रभाव पड़ता था। उसके सभी प्रकार के विश्वासों के पीछे एक सुसम्बद्ध कथा का आधार हुआ करता था। वह शिकार के लिए जाता तो पशुओं के व्यवहारों और उनको चतुरता से बचने के तरीकों की कितनी ही कहानियाँ सुनी हुई होती थीं। वही कहानियाँ उसकी शिकार-शिक्षा थी। इसी प्रकार हवाओं के रुख पर कथा-कहानियाँ होती थीं। सूरज का उगना, चाँद का अस्त होना, पेड़ का पैदा होना, वर्षा की बूँदों का आना, नदियों में पानी का बहना, पानी के किनारे-किनारे पशुओं का चरना—अर्थात आदिम जीवन की सभी आवश्यकताओं के अनुकूल एवं अनुरूप कथा-कहानियाँ बनी हुई हैं। प्रकृति के इन उपकरणों के अलावा मनुष्य के सामाजिक जीवन को सुसंगठित बनाने की दृष्टि से भी अनेक कथानक अस्तित्व में आये। व्यक्ति और उसकी वैयक्तिक समस्याओं ने भी कथा का स्वरूप ग्रहण किया। कहने का तात्पर्य यह कि आदिम समाज का संपूर्ण कलात्मक एवं वैज्ञानिक जीवन 'कथाओं' के माध्यम से व्यक्त होता था।

कथाओं के मुख्यतः दो रूप हो सकते हैं। एक—वे कथायें जो सहज, स्वाभाविक और यथातथ्य घटनाओं का ज्यों का त्यों वर्णन करें; अर्थात कथा के पात्र, घटनायें, चरित्र सभी कुछ जीवन के यथार्थ पर निर्भर करें।

कथा का दूसरा स्वरूप—वे कथायें जो कल्पना के सानुपातिक उपयोग द्वारा अनुभूतियों एवं घटनाओं के यथार्थ को विरूप (Deform) करके जीवन के सत्य को उद्‌घाटित करें। आदिम-जीवन की सभी कथा-कहानियाँ 'विरूपात्मक' हैं और 'विरूप' के माध्यम से वे संकेतात्मक अर्थ प्रदान करती हैं। परियों, जादू-टोनों, असंभाव्य घटनाओं एवं पशु-पक्षियों की कथाओं के पीछे जीवन की संकेतात्मक अनुभूति छिपी हुई रहती है।

कथाओं के यही दो मुख्य बीज हैं। इन्हीं बीजों को सामाजिक भूमि पर मनुष्य के अनुभवों का जीवन-दायी पानी मिला और कथाओं की लता जीवन के नानारूपात्मक संकेतों में पल्लवित एवं पुष्पित होने लगी।

कथाओं का क्रम, मनुष्य के सामाजिक जीवन की ही भाँति, अविच्छिन्न एवं सतत् प्रवाहशील रहा है। इन कथाओं ने अपने मुख्य विभाजनों के आधार पर इतिहास, समाज, दर्शन, शिक्षा, धर्म, राजनीति, आचार-विचार एवं नीतिशास्त्र संबंधी अनेक जीवन-प्रसंगों में यथार्थ का सहारा लेकर कथा शैली एवं विषयों को विकसित बनाया। इसी प्रकार 'विरूपात्मक' शैली में मनुष्य के सूक्ष्म एवं अमूर्त विचारों को अभिव्यक्ति मिली।

यह दोनों प्रकार की कथा-शैलियाँ, समाज की विकसित अवस्था पर पहुँच कर, बहुत कुछ अन्योन्याश्रित होने लगीं। ऐतिहासिक आख्यानों में असंभाव्य घटनाओं एवं रचनात्मक सूक्ष्मताओं का प्रभाव पड़ने लगा और दूसरी ओर कल्पना-जन्य विरूपात्मक कथाओं में यथार्थ का प्रभावशाली अंश आने लगा।

प्रारंभिक अवस्था में, जब मनुष्य के पास अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए केवल वाणी का सहारा था, तब वह कथा कहता था और सुनता था। बाद में, जब उसने भावों एवं विचारों को वाणी के संकेतों (अर्थात् लिपि) में लिखना सीख लिया तो वह कथाओं को लिपि-बद्ध करने लगा। किन्तु उस समय की लिपि-बद्ध भाषा में आज जितनी सहजता एवं यथार्थ को निश्चित स्वरूप में व्यक्त करने की शक्ति नहीं थी। अतः उन कथा-कहानियों को ऐसा स्वरूप ग्रहण करना पड़ा जो सांकेतिक शब्दों के माध्यम से गहरे एवं सुन्दर भावों को व्यंजित कर सके और इसीलिए उस समय के कथाकारों को 'पद्य' का सहारा लेना पड़ा। पद्य-बद्ध कथा लिखने के पीछे कुछ और कारण भी थे। उस समय के कलाकार के सामने अपनी 'बात' को व्यक्त करने के लिए एक ओर भाषा की सीमा थी और दूसरी तरफ प्रारम्भतम प्रयत्न होने के कारण भाषा स्वयं ही छन्द का सहारा लेने लगती थी। साथ ही 'बात' को स्थायित्व प्रदान करने के लिए कथा को ऐसा स्वरूप देने की कोशिश की जाती थी जिससे वह सहजता से मनुष्य के कंठ में जीवित रह सके। उस समय लिपि का जन्म तो हो चुका था किन्तु उस लिपि का सम्पूर्ण समाज में प्रचार होना संभव नहीं था। अतः लिपि के जन्म के साथ ही साथ कथाओं के सुनने एवं सुनाने का क्रम निरन्तर चलता रहा। सच बात तो यह है कि लिपि का सही-सही उपयोग तो छापेखाने के बाद ही हो सका है। उसके पूर्व का जितना भी साहित्य है वह सब तो कथात्मक अथवा कथनात्मक साहित्य ही है।

भारतीय कथा-साहित्य को एक विहंगम दृष्टि से देखें तो पता चलेगा कि चाहे वे कथायें वेदों की हों, चाहे पुराणों-उपनिषदों की कहानियाँ हों, चाहे जातक की आख्यायिकायें हों, चाहे बृहत्कथा सरित्सागर, हितोपदेश, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी के किस्से हों—सभी कथाओं की लिखने की शैली में 'कहने के प्रकार' का प्राधान्य है। इन सभी कथाओं में 'सुनने एवं सुनाने' का भाव निहित है।

इस बात को समझने के लिए आप किसी भी प्राचीन कथा को ले लीजिये और उसकी तुलना आधुनिक कहानी से कीजिये। आज की कहानी का अपना टेकनीक है—उसकी अपनी शैली है। कहानी केवल कथा ही नहीं है। वह अपनी शैलीगत विशेषता के कारण विशिष्ट भी है। प्रेमचंदजी अथवा शरतबाबू की कहानी को पढ़ कर आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है जब हम उन्हीं के द्वारा लिखे गये रूप को पढ़ते हैं। उनकी लिखी हुई कहानी को हम बयान करके वह आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। किन्तु प्राचीन कथाओं में लेखक की इस 'वैयक्तिकता' का नितान्त अभाव है। कथा को लिखने वाला अथवा कहने वाला कथा से सौ-फी-सदी निरपेक्ष है। जो कुछ है—वह कथा ही है। उस कथा को जो

कुछ कहना वह लेखक की शैली अथवा वैयक्तिकता के बिना ही कह सकती है। उन कथाओं का यह सर्वश्रेष्ठ गुण भी है और संभवतया उनकी सबसे महत्वपूर्ण दुर्बलता भी है।

कथाओं की विकासमान यात्रा की एक अद्‌भुत कहानी है। जब केवल वाणी थी—उसका स्वरूप एक था। जब लिपि का जन्म हो गया तो उसके स्वरूप ने पलटा खाया। समाज की आवश्यकतायें एवं नैतिक मान्यतायें बदलीं तो उसे अपना पथ बदलना पड़ा। ज्यों-ज्यों मनुष्य के ज्ञान की परिधि विस्तृत होती चली गई—त्यों ही त्यों कथाएँ जीवन की गहराई में उतरती चली गईं। कथाओं ने कभी समाज के आदर्शों को व्यक्त करने की कोशिश की, तो कभी आदर्शों की रूढ़िवादिता और कठोरता को भंग करने की कोशिश की। कभी कथा ने इतिहास को अपने में समाहित करने का प्रयत्न किया, तो कभी उसने दर्शन की गुत्थियों को सुलझाया। कभी कथा ने रीति-नीति की बात की, तो कभी उसने रीति-नीति की व्यर्थता को साबित किया। कभी कथा ने समाज को बलवान बताया तो कभी उसने एक व्यक्ति के चरित्र को ही समाज की मर्यादा बना दिया। सूर्य की रोशनी समाज और व्यक्ति के मन के गहरे अंधेरे में पहुँची या नहीं पहुँची नहीं कह सकते; किन्तु कथा की उज्जवल किरणों ने अवश्य समाज और व्यक्ति के अन्तर को प्रकाशवान बनाया है।

कथाओं के सामने एक ही भाषा कभी बंधन बन कर नहीं आई। विश्व भर के सभी मनुष्यों की सभी भाषाओं में उसने अपना रूप बदला। वह एक देश से दूसरे देश की सीमा में ठीक हवा की भाँति जा मिली। और दूसरे देश में जाकर वह पहिचानने जैसी भी नहीं रही। उसका देशीय अथवा राष्ट्रीय स्वरूप न मालूम क्यों और कैसे बदल जाता है ?

किन्तु; साथ ही यह बात भी स्पष्ट है कि कथाओं का अपना राष्ट्रीय स्वरूप होता है। भारत की कथाओं में भारतीय आत्मा का निवास है। यदि कोई भारतीय कथा, अन्य किसी देश में चली गई है तो उस कथा ने उस राष्ट्र की आत्मा को ग्रहण कर लिया है और अब वह उस राष्ट्र की सम्पत्ति बन चुकी है। इसी प्रकार कथाओं में हमारे अतीत के अनुभवों एवं इतिहास के घटनाओं की छाप भी होती है।

इसी जगह हम विश्वजनीन कथा साहित्य को अपने देश और काल की सीमा में बाँध सकते हैं।

भारत एक बहुत बड़ा देश है। यह देश अनेक संस्कृतियों का पवित्र संगम है। इसके इतिहास में अनेक 'देश अथवा राष्ट्र' बने और बिगड़े। इस भू-भाग पर अनेक भाषायें बोली गईं—लिखी गईं; कितनी ही भाषायें अतीत में अपना भाग अदा करके विलीन हो गईं। कितनी ही भाषायें निरन्तर रूप से बदलती रहीं और उनका सतत् विकास होता रहा। भारत के भूगोल, इतिहास एवं संस्कृति की अपनी अपनी कहानियाँ हैं। इन कहानियों ने भारत को निश्चित भागों में बाँटा और सभी भागों को निश्चित 'अनुभवों' और 'आवश्यकताओं' के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया। इसीलिए हम भारत को विभिन्न संस्कृतियों का एक महान देश कहते हैं

भारत के पच्छिमी छोर पर एक प्रदेश है जो राजस्थान के नाम से जाना जाता है। इतिहास के ऊहापोह और विभिन्न कबीलों के निकट संपर्क के कारण धीरे-धीरे यह प्रदेश अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता के तत्वों को एकत्रित करने लगा। प्रारंभ में राजस्थान की सांस्कृतिक सीमायें एकदम स्पष्ट नहीं थीं, जैसी आज हैं। इतिहास के दौर में अनेक बार राजस्थान की सांस्कृतिक सीमायें पंजाब, सिंध, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं गुजरात की सीमाओं में प्रवेश कर जातीं और कभी-कभी इन पड़ौसी प्रदेशों का गहरा प्रभाव राजस्थान की सीमा पर पड़ने लगता। मध्यकाल में अनेक राज्य बनते और बिगड़ते थे—उनके सीमा-परिवर्तनों के साथ-साथ प्रदेशों का स्वरूप भी बनता और बिगड़ता था। किन्तु इसी दौर में धीरे-धीरे, भारत की वर्तमान राज्यों की निश्चित सीमायें बनना प्रारम्भ हो गई थीं—इन सीमाओं के निर्माण के पीछे आर्थिक ढाँचे की सम्पन्नता, राजनीति अथवा राज्यों की स्थिति, रहन-सहन, खान-पान, भाषा एवं संस्कृति की एकता तथा इतिहास एवं भूगोल के अनुभवों का पुष्ट आधार था।

इन्हीं मुख्य आधारों पर राजस्थान की सांस्कृतिक इकाई का जन्म हुआ। इस प्रदेश की भाषा—राजस्थानी ने अपना विशिष्ट भाषागत स्वरूप ग्रहण करना प्रारंभ किया। वह अपभ्रंश से जन्मी, किन्तु उसने अपने निकट के प्रदेश गुजराती एवं पंजाबी से पृथक ही स्वरूप ग्रहण किया। अपभ्रंश के ठीक पश्चात राजस्थानी भाषा के निर्माण का काल सातवीं शताब्दी के बाद से प्रारंभ हो जाना चाहिये। इसी काल से विभिन्न अपभ्रंशों का स्वरूप विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में समाहित होकर निश्चित स्वरूप लेने लगा था।

जब राजस्थान प्रदेश की सांस्कृतिक सीमायें बनने लगीं और उसकी भाषा का स्वरूप स्थिर होने लगा तो सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर राजस्थानी भाषा में साहित्य-सृजन होना प्रारंभ हुआ। १३ वीं शताब्दी तक आते-आते तो राजस्थानी भाषा में महत्वपूर्ण और सुन्दर ग्रंथों की रचना होने लगी। साथ ही यह भी निश्चित है कि राजस्थानी की रचनायें भारतीय संस्कृति की ही एक पवित्र धारा बनी रही। उसका मुख्य प्रेरणा-स्रोत संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश का वाङ्मय ही था।

राजस्थानी भाषा के निर्माण में राजस्थानी बातों अथवा कथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। यह कथायें पद्यबद्ध भी लिखी गईं एवं गद्य में भी लिखी गईं। साथ ही साथ कथाओं की दो अन्य समानान्तर धारायें राजस्थान में प्रवाहित होती रहीं। एक धारा तो उन कथाओं की थी जिनको लिपिबद्ध स्वरूप मिला और दूसरी धारा वह थी जो राजस्थान के निवासियों के कंठों में ही जीवित रही—अर्थात यह कथायें केवल कही व सुनी जाती रहीं—उन्हें किसी ने लिखने का प्रयत्न नहीं किया।

प्रस्तुत राजस्थानी बात-संग्रह में राजस्थान की लिपिबद्ध गद्य कथाओं का संपादन किया गया है। यह सभी कथायें प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त हुई हैं। इन कथाओं का, कथा-स्वरूप के अतिरिक्त भी, बहुतकुछ महत्व है। राजस्थानी भाषा के स्वरूप, गद्य

की सशक्त परंपरा, भाषा-विज्ञान एवं व्याकरण की दृष्टि से इनका अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

इन कथाओं की कथा-शैली के रूप में समीक्षा करते समय एक बात समझ लेना बहुत आवश्यक है। यह सही है कि यह कथायें गद्य में लिखी गई हैं। इनमें कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण आदि---सभी कथा के गुण मौजूद हैं। किन्तु साथ ही इन कथाओं का मुख्य प्रयोजन कथा लिखना नहीं था—अपितु कथा को भली प्रकार कह सकने के लिए, उसके मुख्य स्वरूप को स्मृति के रूप में लिपिबद्ध कर लेना मात्र था। राजस्थान की संस्कृति से परिचित लोग भलि भाँति जानते हैं कि मध्यकाल में सभी मुख्य राजघरानों एवं ठिकानेदारों के यहाँ लोकगायकों की ही तरह कथाकार भी रखे जाते थे। उनका काम ही कहानी कहना था। वे कितनी ही रातों एक ही कहानी कहा करते थे। वह कहानी क्या—एक अलिखित बृहदाकाय कथ्य उपन्यास ही होता था। इन कथाओं का आन्तरिक रूप-विधान 'कहने की प्रणाली' पर निर्भर करता था। बात कहने में, कहने वाले के स्वरों का उतार-चढ़ाव, उसके हाथों-आँखों के अर्थवान इशारे और सुनने वाले के साथ उसका एकदम निकट सम्पर्क रहता था। इस कारण सारी कथा में सुनाने वाला एवं सुनने वाले एकाकार हो जाते थे। कहीं-कहीं तो श्रोता ही, कहने वाले के वाक्य को पूरा करते थे। कथा कहने की इस कलात्मक प्रणाली में बोलचाल की भाषा, नाटकीयता और सुन्दर पद्य-बद्ध पदों का प्रयोग होता था। कथा का सम्पूर्ण सौन्दर्य उसके सुनने में था। यही सुनाई जाने वाली कथायें धीरे-धीरे कागज की सुविधा के कारण लिपिबद्ध की जाने लगीं। लेकिन कथा का अभिव्यक्त स्वरूप वही 'कहने के तत्त्व' पर निर्भर बना रहा। लिखते समय वह विस्तार एवं स्वतंत्रता नहीं मिल सकती थी—जो बोलते समय होती है। इसलिए लिपिबद्ध कथा को केवल कही जाने वाली कथा के कलात्मक सौन्दर्य की ओर संकेत मात्र समझना चाहिए।

राजघरानों में पलने वाली इन कथाओं के अलावा धार्मिक आख्यानों का रूप भी मुख्य रूप से सुनाने का ही था। जैन मुनि अथवा नाथ-संप्रदाय के लोगों ने राजस्थानी बात साहित्य को बहुत समृद्ध बनाया और ये धर्मगुरु अपने जीवन-दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए कथा का सहारा लेते थे। इन लोगों द्वारा लिखी गई कथाओं में भी 'कहने का तत्व' ही महत्वपूर्ण रहा।

तीसरे प्रकार की लोक-कथाओं का अस्तित्व राजस्थान के जन-साधारण में था। वह कहते थे, सुनते थे, हँसते थे, सीखते थे और उन्हें भूल जाते थे। कहावत, मुहावरे और पहेलियों में वे अपना आत्मानुरंजन करते थे। इन लोक-कथाओं को बहुत कम लिखा गया और आज भी असंख्य कथायें लोगों के कंठों में जीवित हैं।

राजस्थानी बात संग्रह में कुल आठ कथायें हैं। इन कथाओं का विषयानुकूल विभाजन हम इस प्रकार कर सकते हैं—

१. प्रेम संबंधी : ढोला-मारू री बात
जलाल-बूबना री बात

२.	इतिहास संबंधी	:	अमरसिंह गजसिंहोत री बात पदमसिंह री बात सूरे-खीबे कांधळोत री बात
३.	प्रतीकात्मक	:	डाढ़ाळा सूर री बात
४.	पौराणिक	:	पलक दरियाव री बात
५.	हितोपदेश	:	पलक में खलक

राजस्थानी भाषा में प्रेम-संबंधी कथाओं का विपुल भंडार है। उनमें से कुछ ही कथाओं के नामों का उल्लेख करना चाहता हूँ—नागजी-नागवन्ती, खींवजी-आभलदे, जस्मादे-ओढ़ण,, लाखां-फूलांणी, रागो काछबो, रतनां-हमीर, मूमल-महेन्दरो, निहालदे-सुल्तान, बींझा सोरठ, एवं जेठवा-ऊजळी। इन सभी कथाओं में प्रेम की प्रशस्ति गाई गई है। समाज की नानारूपात्मक परिस्थितियों एवं घटनाओं के बीच में अजर, अमर और शाश्वत प्रेम के पुष्प को प्रस्फुटित किया गया है। इन प्रेम-कथाओं में प्रेमियों का अशक्त, सहज और मानवीयता का प्रबलतम पक्ष अभिव्यक्त हुआ है। इन प्रेम-कथाओं में जातीय, राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक बंधनों का इंद्रजाल नहीं है। यहाँ सभी सहज मानव हैं और प्रेम ही उनका जीवन-लक्ष्य है। और लक्ष्य तक पहुँचने में कोई भी कृत्रिम बाधा उनके लिए बंधन नहीं है।

इन प्रेम-कथाओं के संसार में से बात-संग्रह में ढोला-मारू एवं जलाल-बूबना की बातें ली गई हैं। राजस्थान की प्रेम-कथाओं में इन दोनों कथाओं का अन्यतम स्थान है।

ढोला—राजस्थान का सहज, सहृदय, वीर, बलवान और एक औसत नवयुवक है। उसका पालन-पोषण सामन्ती व्यवस्था में हुआ। वह राजकुमार है। उसके हृदय में प्रेम की औसत मात्रा है। वह परिवार में सीधे-सीधे जीवन बिता लेता यदि बचपन में ही उसके माता-पिता उसका विवाह मारवणि से न कर देते तो। ढोले का मोह सुन्दरता से था। उसने जब मारवणि का विरह-दीप्त संदेश और उसके सौन्दर्य का वर्णन सुना तो उसके औसत मन की प्रेम-भावना जागृत हो उठी। इस संदेश से पूर्व ढोला को अपने शैशवकालीन विवाह का ज्ञान नहीं था। उसे अपने वैवाहिक कर्त्तव्य का ध्यान भी आया। किन्तु इसी बीच में उसके पिता ने उसका विवाह मालवा की एक राजकुमारी माळवणि से कर दिया था। उसके मन में एक क्षण के लिए भी संघर्ष उत्पन्न नहीं हुआ कि वह मारवणि के प्रेम-संदेश को ठुकरा दे। वह चलने को उद्यत हो जाता है।

ढोला-मारू की कथा का नायक-प्रेम कथा का एक साधन मात्र है और साधन होने के नाते वह वे सब कार्य सम्पन्न करता है जो परिस्थितियाँ उसे करने के लिए बाध्य करती हैं। ढोला के व्यक्तित्व की बागडोर परिस्थितियों के हाथ होती है। इसके विपरीत इस कथा में मारवणि एवं माळवणि का चरित्र कहीं अधिक सकारात्मक है। मारवणि को ज्योंही ज्ञात होता है कि उसका विवाह ढोला के साथ हो चुका है वह नवयौवना अपने जीवन की संपूर्ण एकाग्रता से ढोला को प्राप्त करने की कोशिश करने लगती है। वह ढोला तक संदेश पहुँचाने

की कोशिश करती है। उसके पिता ब्राह्मण को भेजना चाहते हैं किन्तु मारवणि तो ब्राह्मण को 'शीतल जात' कह कर भेजना नहीं चाहती । अंत में ढाढ़ियों को भेजा जाता है। मारवणि इससे भी संतुष्ट नहीं है। वह स्वयं प्रेम-संदेश को रूप देती है। ढाढ़ी उसी के संदेश के कारण ढोला के मन पर काबू पा सके।

ढोला जब पूंगळ आ पहुँचता है और मारवणि के साथ वह वापस लौटता है तो ऊमर-सूमरा के चंगुल से निकालने के लिए मारवणि की ही चतुराई काम में आती है। ढोला तो निपट मारू के प्रेम का 'साधन मात्र' है जिसका मानो निर्माण ही मारू के प्रेम की अभिव्यंजना के लिए किया गया हो। ढोला तो एक रसिक प्रेमी है जो मारवणि का सौन्दर्य-वर्णन सुन कर उसकी ओर लालायित हो उठता है और जब उसे मारू की वृद्ध अवस्था या असुन्दरता की खबर मिलती है तो निराश हो जाता है। किन्तु मारू के सामने ढोला के रूप या सौन्दर्य का कोई अर्थ नहीं है।

मारवणि के समान ही मालवणि का चरित्र भी सकारात्मक है। वह चतुर, क्रूर, गर्वीली और अपने पति पर एकाधिकार चाहने वाली निरंकुश स्त्री है। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए वह अमानवीय कृत्य करते हुए भी नहीं झिझकती। अपने स्वार्थ के सामने वह साधारण शिष्टता को कुछ भी नहीं गिनती। मालवणि की इस उद्दण्डता एवं क्रूरता की वजह से ही मारू के प्रेम के प्रति अद्भुत सहानुभूति जागृत होने लगती है। ढोला और मारू के मिलन में सबसे बडी बाधा मालवणि की ही थी।

ढोला-मारू की प्रेम-कथा एक साधारण यथार्थ शैली की कथा ही होती यदि इस कथा में इतने सुन्दर एवं हृदयग्राही काव्य-प्रसंग और सजीव एवं सशक्त काव्य-अभिव्यंजना नहीं होती। इस यथार्थ कथा में दो प्रसंग ऐसे हैं जहाँ 'तथ्य' को कथा-सौन्दर्य के लिए 'विरूप' किया गया है। यह प्रसंग है ऊंट से मालवणि एवं ढोला की बातचीत तथा इन्हीं दोनों पात्रों के बीच में तोते की बातचीत। पशुओं के बोलने अथवा उनके मानवीय व्यवहार का यह आरोप लोक कथा का प्रभावशाली गुण है।

प्रेम की दूसरी कथा है—जलाल-बूबना। ढोला-मारू से यह कथा एकदम भिन्न है। ढोला एक औसत नवयुवक था। जलाल औसत नहीं, असाधारण है। वह वीर है, गर्वीला है, चतुर है, कल्पनाशील है, अपने निश्चय का पक्का है। ढोला परिस्थितियों के वश रहता था, जलाल परिस्थितियों को वश में रखना जानता था। इसी प्रकार इस कथा में बूबना भी चतुर, चालाक, सुन्दर और अपने निश्चय की दृढ़ नायिका चित्रित की गई है। दोनों की चतुरता के कारण ही उनका प्रिय संबंध निभ सका।

इस कथा का एक अद्भुत पक्ष यह है कि जलाल अपने मामा की विवाहिता बूबना से प्रेम करता था। जलाल का विवाह बूबना की बड़ी बहन मूमना से हुआ था। बादशाह अगतमायची के हरम में जाकर अपनी प्रियतमा से मिल कर आजाना जलाल के ही साहस का काम था। बादशाह को जलाल के इस अनैतिक कार्य के बारे में उसकी अन्य पत्नियाँ बार-बार कहती थीं। किन्तु जलाल या बूबना कोई न कोई ऐसा हल निकाल लेते थे जिससे

बादशाह का संदेह मिट जाता था। बादशाह को अपने भानजे जलाल की बहादुरी का गर्व भी था, इसलिए वह उसे कहना भी नहीं चाहता था। कठिन से कठिन परीक्षाओं में भी जलाल बूबना के पास जाने में नहीं हिचका। उसने सांपों, शेरों और पानी के पहरों को पार किया, फूलों के ढेर में छिपा रहा, चौकीदार को जान से मार डालना पड़ा, किन्तु जलाल अपने प्रेम की बाजी में शह खाने को तैयार नहीं था। इस कथा में सुन्दर चरित्र-चित्रण हुआ है। कथा की घटनाओं के मुड़ाव भी बहुत कलात्मक हैं। जलाल की बुद्धिमानी की पृष्ठभूमि में बादशाह अगतमायची की विश्वासभरी बेवकूफी के कारण पाठकों के होठों पर निरन्तर मुस्कान रहती है। अजीब बात तो यह है कि अपनी मामी को प्रियतमा बना कर स्नेह करने वाले प्रेमी पर पाठक का क्रोध नहीं, सहानुभूति उमड़ती है। प्रेम का ऐसा सहानुभूतिपूर्ण चित्रण उपस्थित करना निश्चय ही कला की उच्चता का उदाहरण है या प्रेम के क्षणों का जादू है।

ऐतिहासिक कथानकों के सभी पात्र इतिहास-सम्मत हैं। सही बात तो यह है कि इन कथानकों के सामने एक स्पष्ट लक्ष्य महसूस नहीं होता। इन बातों का ध्येय न कथा कहना है और न पूरे अर्थों में इतिहास को सुरक्षित रखना है। इन कथाओं का जब इस कथानक की दृष्टि से विश्लेषण करते हैं तो इतिहास की गुत्थियों में उलझ जाते हैं और जब इनमें इतिहास की तलाश करते हैं तो कथानक की रचना हावी होने लगती है। ये कथाएँ, इसलिए, इतिहास और साहित्य के बीच की एक अत्यंत दुर्बल कड़ी हैं। किन्तु इनका एक महत्व है। इन कथाओं में इतिहास की केवल इतिवृत्तात्मक प्रवृत्ति नहीं है, इतिवृत्त में मनुष्य की सजीवता का अंश है। इसलिए अमरसिंह या पद्मसिंह इतिहास की कठपुतली की भाँति महसूस नहीं होते बल्कि वे सजीव प्राणियों अथवा पात्रों की भाँति जीवित-से महसूस होते हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक नहीं है कि अमरसिंह और पद्मसिंह वीर पुरुष थे, अभिमानी थे और अपनी वीरता की वजह से वे दिल्ली के बादशाहों के यहाँ आदर एवं भय की नजर से देखे जाते थे।

इन ऐतिहासिक कथाओं के विश्लेषण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है—उस समय के समाज का यथातथ्य चित्रण। इन दोनों कथाओं का सम्बन्ध भारत की एक मुस्लिम सत्ता से है। दोनों ही कथाओं में राजस्थान के रजवाड़ों एवं दिल्ली की सत्ता के आन्तरिक सम्बन्धों का पता चलता है। मध्यकाल में सामन्ती राज्यों के षड़यन्त्रों का ताना-बाना कितना उलझ चुका था यह इन कथाओं से स्पष्टतया समझा जा सकता है। चारों ओर युद्ध, चारों ओर विग्रह, मार-काट, जीतना, हारना। और इन्हीं के बीच में वीरता के मापदंडों का अतिशयोक्ति-पूर्ण वर्णन। मध्यकालीन भारत की सर्वशृंखलित सामाजिक स्थिति का दिग्दर्शन।

सूरे एवं खींवे की कथा—अन्य दो ऐतिहासिक कहानियों से भिन्न है। इस कथा में इतिहास के साथ ही साथ कथा के गुण भी हैं। सूरे एवं खींवे का अपने मौसेरे भाई राजूखां के यहां जाना और बालक के स्वभाव की उद्दंडता के कारण एकदम झगड़ा हो जाना कथा

को शुरू से ही आकर्षक बना देता है। पाठक की उत्सुकता बढ़ने लगती है। राजूखाँ का वह व्यंग सूरे एवं खीवे के चुभ जाता है कि क्या वे उसकी घोड़ी ले जायेंगे ? बात ही बात में वीरोचित दंभ के कारण इस छोटी सी बात पर झगड़ा हो जाता है। दो मौसेरे भाई लड़ पड़ते हैं। भूधर मीणे की चालाकी से घोड़ी को उड़वा लेते हैं। राजूखाँ, घोड़ी के विरह में, फकीर होकर निकल जाता है। घूमते-घूमते फिर एक दिन अपने मौसेरे भाइयों के यहाँ जा पहुँचता है। वहाँ उसकी घोड़ी बंधी हुई होती है। उसे ले भागता है। युद्ध होता है। सूरा-खींवा भी युद्धस्थली में काम आ जाते हैं।

सामन्ती-व्यवस्था का शासक वर्ग दंभी और बात की टेक पर मर मिटने वाला होता है। बात चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो ! इतिहास में इसके अनेकानेक उदाहरण मिल जाते हैं। राणा प्रताप और शक्तिसिंह की लड़ाई इसी बात पर हो गई—सूअर को किसने पहले मारा ? बड़ा भाई छोटे भाई की पहल स्वीकार नहीं कर रहा था और छोटा भाई बड़े भाई की सतर्कता पर सन्देह कर रहा था। वही बात सूरे एवं खीवे की कथा में भी है। उसके तरकश के बालक का हाथ लगाना ही चिन्ता की बात हो गई। यहीं से कथा का बीज बढ़ते-बढ़ते युद्ध भूमि की विकराल स्थिति में बदल जाता है। निरपेक्ष वीरता काच के समान नाजुक इज्जत और प्रतिशोध की अग्नि इन्हीं तीन बातों में सामन्ती-व्यवस्था के सामन्त का मानसिक चित्रण उपस्थित किया जा सकता है।

सूरे एवं खींबे की बात का एक और महत्वपूर्ण सामाजिक महत्व है। सूरा एवं खींबा, दोनों भाई राजपूत थे किन्तु उनका मौसेरा भाई राजूखाँ मुसलमान था। उनमें परस्पर स्नेह भी था। एक दूसरे के प्रति भाईचारे का निश्चित भाव था। यदि आपस में झगड़ा नहीं होता तो उनके स्नेह में कमी नहीं आती। हिन्दू एवं मुसलमानों के इस पारिवारिक संबंध को कथा ने अत्यन्त स्वाभाविक भाव से निभाया है।

इन कथाओं के पश्चात 'डाढ़ाळौ सूर' एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कथा है। यह प्रतीक शैली में लिखी गई एक वीरता की कहानी है। यहाँ वीरोचित कार्यों का आरोपण एक सूअर परिवार पर किया गया है। यहाँ यह कह देना भी आवश्यक है कि अन्य मानवीय मूल्यों की भाँति 'वीरता' का मूल्य भी समाज-सापेक्ष है। कल जिस कार्य में वीरता का भाव था वह संभवतया आज उस रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता। मुगल दरबार में खड़े होकर पद्मसिंह जिस वीर-भाव से किसी का गला गाजर-मूली की तरह उतार सकते थे वैसे ही आज की जनतंत्रीय पद्धति से चुनी विधान सभा का कोई सदस्य यही व्यवहार नहीं कर सकता। अतः 'डाढ़ाळौ सूर' की वीरता का प्रतीक अपने युग की वीर-भावना के अनुकूल एवं अनुरूप है। किन्तु सहज ऐतिहासिक कथा और इस प्रतीक कथा में एक बहुत बड़ा अन्तर है। सूअर का प्रतीकात्मक चित्रण होने के कारण उसमें साधारणीकरण का भाव आ गया है। इसलिए 'वीरता' स्वयं पात्र एवं घटना में निहित न होकर एक अमूर्त तत्व के रूप में व्यक्त हो सकी है। इसलिए हमें कथा के माध्यम से काल की परिधि में और परिधि से परे वीरता का अमूर्त भाव ग्रहण करना पड़ता है।

'प्रतीक' के ही कारण इस कथा में भी एक प्रकार से सत्य का विरूपात्मक प्रयोग हुआ है। वीरता के तथ्य का सूअर के परिवार पर आरोपण किया गया है। और उसके बाद सूअर की व्यवहारगत और स्वभावजन्य परिस्थितियों के आधार पर मानवोचित वीर-भाव की अभिव्यंजना की गई है। सूअर के जीवन से उन्हीं घटनाओं अथवा व्यवहारों को लिया गया है जो मनुष्य के कार्यों के सम-तुल्य रखे जा सकते हैं। यहाँ यह कहना भी असंगत नहीं होगा कि प्रत्येक विरूपात्मक कथा में एक बार तथ्य को एक विशिष्ट प्रकार से मोड़ देने के बाद कथाकार को उस 'मोड़' के अनुसार ही संपूर्ण सम-तुल्यता का अनुपात बिठाना पड़ता है। 'डाढ़ाळा सूर' की कथा में यह 'विरूप' एक वीर-सूअर परिवार के प्रतीक रूप में स्थापित किया गया और सफलतापूर्वक निभाया भी गया।

इस कथा में एक वीर परिवार का प्रतीक सूअर-परिवार को बताया गया। आबू की गिरि-कन्दराओं में रहने वाले—वहाँ के निर्द्वन्द वीर सूअर को किस बात की कमी थी? सूअर के परिवार के लिए आबू का प्राकृतिक सौन्दर्य, फली-फूली और झूमती हुई वनस्पति, कलकल करते बहने वाले झरने और आकाश को चूमने वाले विकट पहाड़। ऐसी ही सुन्दरता और भयानकता के बीच में सूअर का परिवार रहता था। उनके पाँच पुत्र हुये। पाँचों की जन्म-पत्रियाँ बनीं और इन जन्म-पत्रियों के बहाने से कथाकार ने भविष्य की ओर पहिले ही संकेत कर दिया।

इस कथा में सूअरनी और सूअर का युद्ध-वर्णन, उनकी सहज वीरता की पारस्परिक बातचीत, भय का अंश मात्र भी नहीं, साहस, अपने बालकों को युद्ध की शिक्षा, अन्य किसी के राज्य की सीमा पर अनधिकार किन्तु निश्चित अधिकार, सेना को तितर-बितर कर देने की अतुलनीय शक्ति और आक्रमण को सहने में असीम धीरता का परिचय मिलता है। इस कथा के पीछे एक और अनुभव की बात भी है। राजस्थान में सूअर का शिकार स्वयं राजाओं का एक मनपसन्द खेल रहा है। सारी कथा में सूअर के कार्य-कलापों एवं युद्ध के तरीकों का सूक्ष्म वर्णन हुआ है।

'डाढ़ाळा सूर' की बात में कुछ ऐसे धार्मिक संकेत भी आये हैं जिससे 'प्रतीक' का भाव स्पष्टतर हो गया है। यह सूअर एवं सूअरनी वस्तुतः पशु नहीं थे। ये कुबेर के यक्ष थे और कुबेर के श्राप के कारण ही इनको बारह वर्ष की तपस्या करने के बाद जीवन-संसर्ग में आने का अवसर मिला। सूअर, अन्त में, मरते समय कहता है कि मैं वीर के हाथ से मर कर वीर गति को प्राप्त हो रहा हूँ। कथा में नाथों की महत्ता, शिव की आराधना और श्राप व तपस्या का वर्णन भी आया है। यह सब बातें, कथाकार इसीलिए कहना चाहता है कि कहीं पाठक यह न समझलें कि यह केवल सूअर की स्थूल वीरता का चित्रण है। सूअर को मनुष्य बनाने के लिए 'श्राप' की कल्पना सहज ही करली गई है।

इस कथा को 'व्यंग' कथा नहीं कहना चाहिए। क्योंकि कथा का मुख्य प्रयोजन हास्य नहीं है— अपितु एक गंभीर भाव 'उत्साह' और 'वीरत्व' है। इस कथा में कहीं भी यह भाव नहीं आया है कि वीर पुरुष का प्रतीक—सूअर एक पशु मात्र है। सूअर के परिवार की

वीरता का संकेत हमें 'व्यंग' में नहीं, प्रतीक में ही खोजना चाहिए।

राजस्थानी बात संग्रह में एक मनुष्य के हित के उपदेश की बात भी है। हितोपदेश की इस कहानी में घटना ही प्रबल है। पात्रों का प्रयोग तो केवल एक उपदेश की बात को व्यक्त करने के लिए किया गया है। सर्प और उससे बचाने वाली ऐसी कथायें विभिन्न देशों, विभिन्न भाषाओं और एक ही भाषा में विभिन्न रूपों में प्रचलित हैं। किन्तु 'पलक में खलक' कथा के बीच में एक विलायत के बादशाह की सुन्दर प्रासंगिक कथा है। प्रासंगिक कथाओं का प्राचीन बातों में खूब ही प्रयोग होता था। हर आदमी अपनी बात कहने के लिए एक नई कथा का आधार लेता था। वृहत्कथा सरित्सागर में इसी प्रासंगि-कथा-पद्धति का आधार लिया गया है।

विवेचन की अन्तिम कहानी है—पलक दरियाव री बात। मैंने इस कथा को 'पुराण संबंधी' कहा है। वेद, ब्राह्मण, उपनिषद एवं पुराणों में अनेकानेक प्रसंगानुकूल कथायें हैं। किंतु सभी कथाओं का जीवन के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण है और साथ ही उनका पृथक-पृथक ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं सामाजिक आधार है। पुराणों की कथाओं में वेद, ब्राह्मण और उपनिषदों की कथाओं की स्पष्टता नहीं है। भारतीय संस्कृति के विकास में पुराणों का उद्भव बहुत बाद में हुआ है; इसलिए पुराणों की कथाओं में हर प्रकार की चमत्कारिता और देवी-देवताओं के अलौकिक कार्यों के अतिरंजनापूर्ण वर्णन आने लगे। उनमें अनेकानेक कथाओं का एक साथ ही समावेश होने लगा।

अवतारों के मंगलकारी कार्यों का वर्णन, मनुष्यों की कठिन परीक्षाएँ, ईश्वरीय सत्ता से संपूर्ण होने वाले अद्भुत कार्य और ऋषियों-मुनियों के अलौकिक अनुभवों से पुराणों की कथाएँ परिपूर्ण हैं।

पलक दरियाव री बात सीधे पुराणों की कथा नहीं है, किंतु उसका कथात्मक कलेवर पौराणिक कथाओं के समान है। यों पुराणों का बहुत कुछ आधार वैष्णव व विष्णु के स्वरूप पर भी निर्भर है। यह कथा भी विष्णु के अलौकिक कार्यों की प्रशस्ति के रूप में लिखी गई है।

इस कथा में से, यदि हम अलौकिक तत्व को निकाल देते हैं, तो कथानक बहुत सहज और मनोरम बन जाता है। इस कथा में भगवान विष्णु की लीला का तत्व कथानक की प्रभविष्णुता को तीव्रतम बनाता है। इस अलौकिक तत्व के कारण ही देवीदास और कुंवर विचित्र—एक ही 'व्यक्ति' बने रह सके। कुंवर विचित्र के जन्म से युवक होने तक के कुल वर्ष—कुछ ही क्षणों के रूप में बयान किये गये हैं। अपने पिता के पास से उसका पुत्र देवीदास विष्णु भगवान की पूजा के लिए गया और वहीं लक्ष्मी की अनुकम्पा से वह भगवान से 'पलक दरियाव' का तमाशा देखने का आग्रह करता है। उधर उसके पिता भोजन की थाली पर पुत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इन्हीं कुछ क्षणों में देवीदास राजा कनकरथ के यहाँ जन्म भी लेता है, विवाह भी करता है और उसके पुत्र भी उत्पन्न हो जाता है। अन्त में राजा के यहाँ से मृत होकर वह वापस देवीदास बन जाता है, और जब वह वापस अपने घर लौटता है तो उसके पिता

उसी थाली पर बैठे हुए हैं। देवीदास--कुंवर विचित्र की सारी जिन्दगी जीकर, कुछ ही क्षण में वह अपने पिता के पास आ जाता है। यहाँ काल की यथार्थ सीमाओं के अतिक्रमण के पीछे एक अलौकिक अथवा दिव्य चमत्कारी सत्ता के विश्वास की गहरी नींव डाली गई है। इसलिए काल के अतिक्रमण की ओर हमारा यथार्थवादी मन जाने का प्रयत्न नहीं करता।

कथा के तत्वों की दृष्टि से यह इस संग्रह की सर्वश्रेष्ठ रचना है। घटनाओं का उठाव, पात्रों का निश्चित व आवश्यक स्थल पर उद्भव, आगे आने वाले महत्वपूर्ण परिणामों का पूर्व-संकेत, पाठक के मन को साग्रह आकर्षित करने की शक्ति एवं कथा की सब संघर्षमयी घटनाओं का समग्र और चरम तक विकास—यह सभी गुण इस कथा में हैं। यों तो इस कथा का पौराणिक प्रयोजन भगवान विष्णु की अपरम्पार माया, उनकी कृपालुता, उनकी अलौकिक शक्ति और अपने भक्तजनों पर स्नेह है, किंतु यदि हम पौराणिकता के इस तात्विक पर्दे को हटा कर देखें तो हमें सांसारिक मनुष्यों के मन की अद्भुत स्थितियों के दर्शन होते हैं। पिता का अपने पुत्र के प्रति प्रेम, देवीदास की अपने कार्य के प्रति लगन, कुंवर विचित्र का मित्र भाव, रामदान आदि की स्वामिभक्ति सभी सामाजिक जीवन को संभव बनाने वाले तत्व हैं। इन्हीं भावों के पोषण पर कथा के घटनाओं का क्रम निर्मित हुआ है।

राजस्थानी बात संग्रह की कथाओं में राजस्थान के निवासियों के उत्तर-मध्यकालीन विश्वासों एवं परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। यदि हम इन कथाओं के द्वारा उस समय के समाज को परखना चाहें तो पर्याप्त सामग्री मिल सकती है। उनका रहन-सहन, खान-पान, खेल-कूद, वेषभूषा, मकान-महल, यात्रा के तरीके व रास्ते, युद्ध की सामग्री, राजाओं के पारस्परिक एवं बादशाहों से संबंध, आम आदमी का साधारण जीवन, सुकाल और दुष्काल की समस्यायें, देश-वर्णन, पुरुष का स्वामित्व और स्त्री का समर्पण, सामाजिक संबंध, पति-पत्नी, सास-बहू, पिता-पुत्र के संबंध, मुगल-राज्य की हकीकत, राजपूतों का मुसलमानों से संबंध, राजनैतिक चक्रव्यूह आदि आदि जीवन के अनेक प्रसंगों का विवरण इन कथाओं में मिलता है। किन्तु यह सभी प्रसंग तो मनुष्य के बाह्य-जीवन से सम्बन्धित हैं। उसका अन्तरतम 'मन' तो उसकी अनुभूतियों, विचारों, आकांक्षाओं और कार्य-कलापों से ही जाना जा सकता है। राजस्थान का उत्तर-मध्यकालीन औसत मनुष्य सहज ही वीरत्व और गौरव की उद्दीप्त भावना पर मर मिटने वाला सहज व्यक्ति था। उसके मन में भी अपने यौवन के सुकोमल क्षणों में प्रेम का सौरभ महक उठता था। वह अपने देश पर, अपनी मातृभूमि पर न्यौछावर होना जानता था, अपने मित्रों के लिए सभी कुछ करने को तत्पर था, अवस्था के अनुभव को मन ही मन पूजता था, अपनी बात का पक्का था, दृढ़-निश्चयी था, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में जीवन की बाजी लगाना उसके बाएँ हाथ का काम था, धर्म-भीरु था, अंध-विश्वासों का भार उसके कन्धे पर था, ईश्वर और समाज के विधान को ज्यों का त्यों स्वीकार करता था, स्वामिभक्त रहना जानता था, नीतिवान था, समय पड़ने पर अपनी शक्ति और बुद्धि का निश्चित ही प्रयोग करता था, जीवन को

जीना जानता था, कोई न कोई लक्ष्य उसके सामने था, निष्प्रयोजन जीवन उसके लिए मौत थी, उसके जीवन में एक सुनिश्चित दर्शन चाहे न हो—किन्तु जीवन के कार्यक्रम की मोटी रूपरेखा उसके सामने स्पष्ट थी। अपने व्रत, उत्सव, त्यौंहारों में वह मस्त रहता था, और अन्त में वह मनुष्य के अविरल विकास का सहायक बनना चाहता था। वह ऐसे जीवन-मूल्यों की स्थापना करना चाहता था जिनसे मनुष्य का भविष्य उज्जवल हो सके। यह सभी तथ्य इन्हीं कथाओं से उद्‌घाटित होते हैं। यह सही है कि इन कथाओं में अनेक ऐसी बातें हैं जो समाज एवं काव्यसापेक्ष होने के कारण आज के जीवन-यथार्थ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण मे खोटी दिखाई देने लगी हैं किन्तु उनके पीछे जो तथ्य और संकेत है उन्हीं को ऐतिहासिक मूल्यांकन के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए। हम उस समय से बहुत आगे निकल चुके हैं। इसलिए उस सामाजिक मनुष्य से हम कहीं अधिक उमर वाले हो चुके हैं, अतः बहुत हद तक उनकी कलापूर्ण क्रीड़ाओं को 'वात्सल्य भाव' से देखना भी आवश्यक है।

कथा, काव्य-कला का एक अंश है। काव्य के सभी प्रयोजन कथा के भी प्रयोजन हैं। इसलिए अनुभवों की विविधता और अनुभूतियों की अमूर्त-छायाओं के संसार में मनुष्य कथाओं से संतुष्टि और अपने जीवन-दर्शन का तथ्य ग्रहण करता है। कथाओं के माध्यम से पाठक या श्रोता घटनाओं के संघर्षशील विवेक और मनुष्य के व्यवहारों की गहराई में उतरने की क्षमता प्राप्त करता है। कथायें—लोकजीवन की संघर्षपूर्ण यात्रा की हरावल में चलती हैं। और इन कथाओं में कुछ तत्व ही ऐसा है कि साधारण मनुष्य निश्चित होकर इनके सहारे अपने दैनिन्दिन जीवन के कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्णय ले सकता है। इन कथाओं का गुण अथवा अवगुण केवल मनोरंजकता और धर्म की सुलाने वाली शक्ति ही नहीं है। यह जीवन को क्रियाशील, कर्त्तव्यवान और कर्मप्रधान बनाने में विश्वास रखती हैं। इन कथाओं को समाज की किसी बलवान सत्ता ने बचाने का प्रयत्न नहीं किया। जन-साधारण के बीच से ही रसिक पाठकों ने अपने लिए हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करवाई हैं। और सौभाग्य से वह कथायें हमारे लिए सुरक्षित रह गयीं। कथा के साथ ही साथ उस समय के जीवन का सही प्रतिबिंब हमें सुरक्षित मिल गया।

कथाओं की सुरक्षा सहज नहीं थी। इन कथाओं को जीवित रखने के लिए राजस्थान के अनेक अनाम साहित्य-सेवियों ने अपना परिश्रम, कल्पना और समय दिया है और वह भी बिना किसी आशा और आकांक्षा से, मानों कथा-साहित्य को सुरक्षित रखना एक निरपेक्ष तपस्या थी।

मानव-जीवन के पल-पल पर कथाओं के संकेतों का पहरा रहता है। जब मनुष्य अबोध शिशु होता है तो कथा तुतलाती भाषा में चिड़ियों के पंखों पर और नानी की बूढ़ी गोद में बैठी हुई—शिशु के साथ जागती है और उसी के साथ सोती है। वही मनुष्य जब बालक हो जाता है तो कथा की भाषा में कुछ स्थिरता आ जाती है। तब वह अपना रूप बढ़ा लेती है। बालक के सहज औत्सुक्य को बनाए रखती है और उसका निदान कर उसे संतुष्ट

करती है। जब वही मनुष्य छात्र बन जाता है तो कथा शिक्षक बन कर उसे रीति-नीति, ज्ञान-विज्ञान और जीने के तरीकों को समझाती है। मनुष्य जब नवयुवक होने लगता है, उसकी मसें भीगने लगती हैं तो कथा—प्रेम, उदारता त्याग और मनुष्यता की गरिमा लेकर उपस्थित हो जाती है। लेकिन मनुष्य की यह अवस्था बहुत विकट होती है। उसका मन कसे हुए बलवान और मनचले घोड़े की तरह चंचल और अस्थिर रहता है। कथा इस नव-जवान युवक पर लगाम का बंधन रखती है। मनुष्य के जीवन का यह अग्नि-परीक्षा-काल होता है। कथाएँ मनुष्य को जसनाथी साधुओं की तरह इस आग से सुरक्षित निकाल लाती हैं। आदमी के बुढ़ापे के साथ कहानी भी बूढ़ी हो जाती है। वह लोक-परलोक की चिन्ता में ही अपने जीवन के साथी के साथ घुलने लगती है और अन्त में सच्चे मित्र की तरह मनुष्य की मृत्यु के साथ उसकी चिता की चिन्गारियों में विलीन हो जाती है। और इन्हीं चिन्गारियों के रूप में बिखर कर वह वापस मनुष्य के शिशुत्व के अबोध भोलेपन में पुनर्जन्म ले लेती है।

यही कथा का चिर क्रम है। यही कथा की बात है।